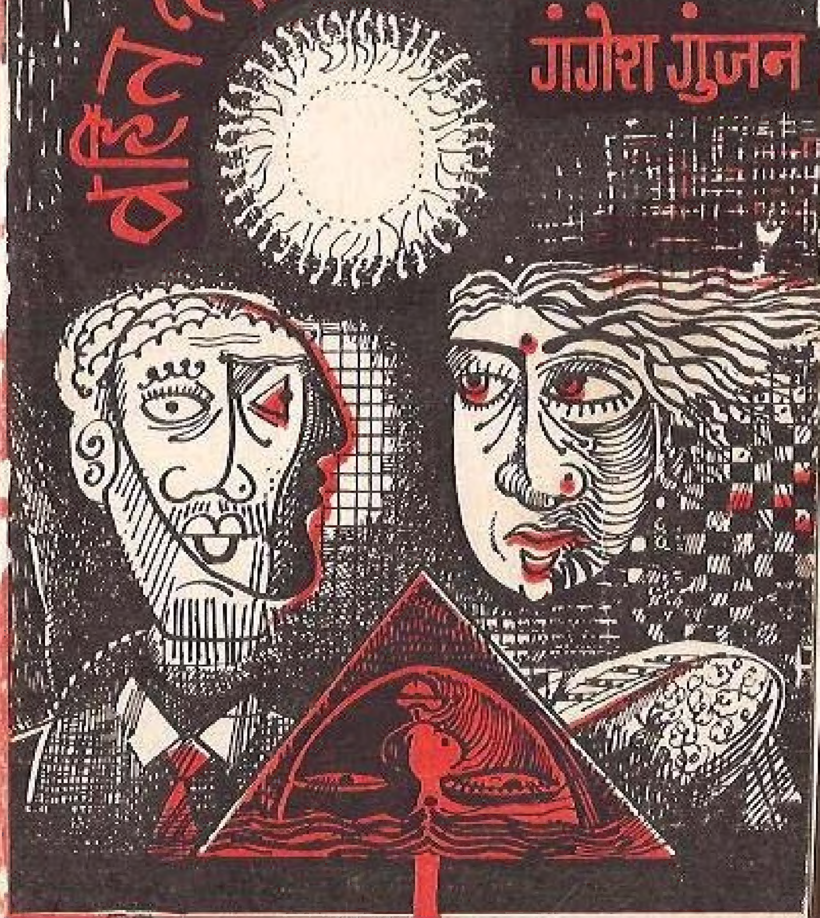

बहिर लोक. पहिल लोक.
गंगेश गुंजन

लेखकक दिसँ

□ पहिल लोक हमर दोसर उपन्यास। पहिल 'माइर वन' मि०मि० मैथिली साप्ताहिकक कार्यालयमे चोरी भ' गेल। हेराय गेल। मूल पाण्डुलिपि हेराय गेला सँ स्वाभाविके जे ओ प्रकाशित नहि भ' सकल।

□ अपन कोनहु रचनाक विषयमे मनमे कोनो प्रकारक पूर्वाग्रह रोपबाक हम अपन कथा, चरित्र आ विचारकेँ बोध बनायब तथा बोधक स्तर पर पाठकवर्गकेँ अनन्तर्से न्यून बूझब मानैत छी। पहिल बात अपन अक्षमता, दोसर पाठकमे अनास्था – ई दुनू बात अनुचित। तेँ कोनो लेखकीय वक्तव्यक मेलसँ नहि लेल जाय एकरा, प्रत्युत एक टा रचनाकारक स्वाभाविक उत्साहक निष्कपट उद्देश्यसँ ई उद्गार राखि रहल छी जे ई उपन्यास थिक। एकर अध्याय सब शीर्षकबद्ध छैक।

□ कोनहु कृति प्राप्त इतिहासक्रमक ज्ञान आ सामाजिक चेतनाक सार्वजनिक विकासक संदर्भहिमे मूल्यांकित होइत छैक। तेँ हमरा जनैत कृतिकार हरदम कोनो लोकक अदालतिमे ठाढ़ रहैत अछि। हमहूँ छी। हमर पात्र सब सेहो। लेखकक व्यक्ति-अनुभव, महत्वाकांक्षा आ दृष्टिकोण तथा पात्रक चरित्र-विकासक जटिलता एहि कृतिक अनिवार्य परिस्थितिक छैक। तेँ एकर ढाँचा किछु पाठककेँ क्षणभरिक लेल अनगढ़-अनचिन्हार जकाँ लागि सकैत छनि। पहिल लोक हमर दस वर्ष पुरान उपन्यास।

□ व्यापक सामाजिक संगतिमे अपनाकेँ ई प्रासंगिक बना सकय से चेष्टा-आकांक्षा हमरो अछि। तखन पाठकवर्गसँ हमर एकटा निवेदन अवश्ये जे 'गुंजन' जी बड़ कठिन आ दुरूह वस्तु लिखैत छथि ताहि धारणामे नहि पड़ि क' कृपया पोथी पढ़िये क' कोनो धारणा बनाबी।

□ अपना आर्थिक साधन रहैत तँ ई पोथी कएक वर्ष पहिने छपि चुकैत जे कि एहि कथाक उद्देश्य छलैक। आब हमर एहि उपन्यासक सभटा चरित्रक वयस प्रायः दस वर्ष आर बेशी भ' गेल होयतैक। संभव छैक, किछुकेर समझदारी सेहो विकसित भ' गेल होइक, संभव छैक किछु केर समझदारी कुंठित भ' क' थाकि-ठेहिया गेल होइक। तेँ सामाजिक व्यापक एतेक पुरान

युद्ध मे ई सब बनब-बिगड़ब चलितहि रहैत छैक। लेखक आ पाठकक दृष्टिकोण फरिछाइत चलबाक चाही आगाँ-आगाँक संघर्षक लेल; ताही उद्देश्यक लेल लेखक संकल्पित रहैत अछि।

☐ श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार जी, व्यास जी, योगा बाबू, गोविन्द बाबू तथा श्री मदनेश्वर मिश्रजीक प्रति हमरा मनमे अशेष कृतज्ञता अछि।

☐ प्रभास जी एहि पाण्डुलिपिक प्रथम पाठक आ मोहन भारद्वाज मित्र। तेँ एहि दुनू गोटेक वास्ते आभारी एकदम्मे नहि छी हम।

☐ हमहूँ अनेक मध्यवर्गीय परिवारक भारतीय बेटा जकाँ अपना माँ-पिताकेँ जीवित रहथि तखन किछु नहि द' सकलहुँ आब आइ एक टा साहित्य-पोथी लिखि क' उऋण होयबाक अति सीमित चेष्टा करैत मन-मस्तिष्क मुक्त करबाक एकटा लेखकीय उपक्रम करैत छी।

ई उपन्यास माँ-बाबूक स्मृतिमे, ओहि अमृत-विचार-वाक्यकेँ समर्पित :

—"ककरो अनिष्ट नहि सोची, नै करी। धैर्य राखी, साहस करी। ताहिसँ बाट बनैत छैक, डराक' परास्त भेलासँ नहि।" बाबू बुझबथि हमरा लोकनिकेँ।

—बड़ी-बड़ी काल माँकेँ हाथ जोड़ने भगवती-भगवानक आगाँ देखैत अकच्छ होइत पुछियैक—माँ गै, तोँ भगवानकेँ गोड़ लागि क' की-की कहैत रहैत छहुन ?

—"इष्टदेवताकेँ कलजोड़ि क' इएह कहैत छियैन जे हे इष्टदेवता संसारमे सभक लोकवेदकेँ कुशल-क्षेमसँ रखियौ, ताहि संगे-संगे हमरो धिया-पुताकेँ।"

कहब

हम एकटा सम्पूर्ण कथा कहय से कहि रहल छी। कथा माने खिस्सा, कहिनी नहि। शब्दकें एना अर्था-विक्षाक' कहय अहाँ कें अधलाह लागि जायत, सेहो अन्देशा भेलए। तैयो हम कहब आ चाहब जे अत' धरि हमरा ई खिस्सा सम्पूर्ण बूझल अछि ओत' धरि यथावत सुनी। अहाँ कें हमर एहू बातमे अहंकार बुझायत, मुदा ताहू हेतु माफी दिअ। हम 'यथावत्' खाली घटनाक सम्बन्धमे कहलहुँ अछि। घटना, चरित्र आ व्यवहार सभकें मन पाड़ि-पाड़िक' कहि देबाक इच्छा भेलए। आ ई आवश्यकता बुझा रहलए जे एहि प्रसंगकें अहाँलोकनि पढ़ि ली, सुनि ली। एहिमे भाषा लागत कतहु अँटका रखैवाली, कोनो ठाम अनसोहाँत बुझा जाय सेहो सम्भव, कि चरित्रे सँ एहन बुझा जाय जकरा पर अहाँकें ने तामस उठय ने करुणे होअय। से सब सभटा सम्भव अछि। तकर कारण किछु नहि छैक। मात्र ई मात्र दुरूह आ एतबे कारण जे लेखक आ चरित्र-रचनाक प्रक्रियामे एकटा एहन स्थल भ' जाइत छैक जे आगू धरि पाठक आ लेखक आ पुस्तक मध्य एकटा टुटल पुल जकाँ ठाढ़ रहैत छैक। हम एहि टूटल पुलकें स्पष्ट बुझा देबाक अपन उत्तरदायित्व बुझा रहलहुँए। कोनो आन उद्देश्य वा भाव नहि अछि मनमे। संवाद-सम्प्रेषणक टूटल पुलक विषय।

आब जेना देखियौ जे हम सुस्मिताकेँ ओ सभ नहि कर' कहलियैक जे ओ राजूवा'क संग कयलक— अर्थात् नितांत अप्रत्याशित आ कय तरहेँ तेहन घटना जकरा समाज आइयो नहि स्वीकारैत छैक, परन्तु ओ नहि मानलक। स्वयं राज,—हमरा आश्चर्य होइत अछि जे ई एहन 'कुपात्र' कोना भ'गेल ? कुपात्र एहि दुआरे कहि रहल छी जे ई अपन तरहक एहन धर्म-भीरु संकोची आ नैतिकता पसिन्द करबुक युवक अपन सभटा संस्कारकेँ काटल अंगा जेकाँ देह परसँ उतारिक' नूर-गोबरौड़क' देलक। हम बीच-बीचमे कयबेर ओकरा चेतौलियैक—सोझां-सोझी भने नहि कहलियैक, परन्तु जेना बाखिग नेना के लोक कहि सकैये—तेना भ' क' कय-कय बेर मोड़' चाहलियैक—"ई तँ करार नहि छलौक, तोँ ई बात बड़ गलती केलँ। तोँ करार केलेँ तुरंत घुरि जयबाक, से रहि गेलेँ कय-कय दिन। आ ठहरबाक बात जहाँ धरि कयलेँ ताहिमे सुस्मिताक घर निश्चित नहि रहौक, से नाटक क' क' स्टेशनसँ ओकरा कत' ठहरि गेलेँ। खैर, ठहरबो कलेँ तँ नहि क्षति, परन्तु अपन सम्बन्धकेँ तोँ एहन नव स्तर किएक देब' गेलेँ ? आ तोँ जे एकटा घोंघा से तोरा बुते एतेक कोना पार लगलौक— ई एहन-एहन व्यवहार, आचार क' सेब ? हमरा पूर्ण क्रोध भेल। ओ चुप रहल। कहलक जे हम किछु नहि जनैत छी। हम सत्ये अहाँकेँ जे सभ गछने रही तकरा नै पालन क' सकलहुँ। तेँ हमरा खेद अवश्य अछि। मुदा हम ओना, आ ओतेक रास ओ सब, किएक क' गेलौँ से, भगता ईश्वर, हमरो नहि बूझल अछि। ओ मुड़ी झुका लेलक। हम की करितियैक ओकरा। ओ अपन करार पर नहि रहि सकल कायम, तँ हम की बड़ दितियैक। हम स्वयं बन्हा गेल छी ओकर एहि चरित्र-परिवर्त्तन सँ। तेँ चुप्पे छी। ई बात नहि जे राजूक चरित्रक ओ सभ बात नहि आयल छैक ओकर व्यवहार मे। परन्तु, किछु रूपान्तरक संग आ से किछु नवो भ' क' जे कि हम एखनहि अपने कहि देलौहेँ। अहाँ कहब — कहि देने तँ नहि भ' गेल समाधान ? एकर की निराकरण होअय ? हमरा बूझल रहय अहाँ इएह सवाल करब। तेँ हम एहि विषय पर राजूके कय बेर पुछलियैक। ओ सब बेर ओएह मूक राजू भ' क' व्यवहार कयलक। आ अहाँकेँ विश्वास नहि होयत, ओकर आकृति नहायल-धोआयल लोकक आकृति सन टटका आ अम्लान छलैक। ओकर चेहरा पर कोनो अनैतिक आचरणक प्रायश्चित्त-छाया तक नहि छलैक। ओ बिल्कुल दुरुस्त छल। हमरा अपने आश्चर्य भेल जे एहन-एहन ऊटपटांग बातक आयल से केहन गाय बनल ठाढ़ अछि ? परन्तु ओकर आकृति पर सत्ये कोनो अपराध नहि रहैक। हम सशोधिक'

रहि गेलौँ। कारण, कयबेर एहन नहि होइत अछि अहूँ लौकिक जीवनमे जे बुझैत रहैत छियैक फल्लाँ बात अवस्ताह भेलैये, नहि होयबाक चाही। परन्तु ओकरो हृदयेमे कोनो सवाल-तर्क नहि भेटैत रहैए आ हाथ पयर एकटा अनदेखल बन्हनसँ जकड़ल रहि जाइए। अहाँकेँ किछु कयने ने किछु बनैए।

इएह छलैक राजूक कविता। तँ ई इएो हमरा उलहन देब' आयलि। बड़ स्वाभाविक छलैक। एकटा ई चरित्र छल जे बड़ सटीक आ संक्षिप्ते आक्रमण सँ मुदा ठाँय पर ठाँय कह' वाली। हमरा कनेक घबड़ाहटि भेल। से हम अपने गछै छी। आ जे हमरा भय छल सएह भेल। ओ अपन एकहिटा प्रश्न से हमरा निरुत्तर क' देलक आ जेना हमरा आगू राजू मूड़ी निहुरा लेने छल तहिना हम इलाक सोझाँ मूड़ी निहुरा लेलौँ। ओकर आँखिक उज्जर पानि हठात् लाल भ' गेलैक, कुंदाबोर लाल। ओकर प्रश्न छलैक —हमरा अहाँ एना भ' क' धोक किएक क' देलौँ ? हमर विवशता पर राजूकेँ जे फुरलैक से कहि अयलैक सुस्मिता दी केँ। हमरा सुस्मिता दी सँ कोनो शिकायति नहि अछि। हमरा सभ दिन बूझल छल जे ओ हमर मनकेँ देखि गेल अछि आर-पार। तेँ हम ओकरा अपन पैघ बहीन आ शुभेच्छु मानैत छियैक। तैयो राजूक मुँहेँ अपना सम्बन्धक ई खिस्सा-पिहानीवला गप्प हमरा बड़ तकलीफ पहुँचौलक। आखिर ओ एना भ' क' हमर जीवनकेँ ठट्ठा किएक बना देलक ? हम तँ राजूके मुँह खोलिक' किछुटा तेहन नहि कहलियैक, बल्कि ककरो नहि—एत' धरि जे अपन अम्मा तन सखिकेँ पर्यन्त नहि। तेकरा राजू एहन भ' क' विज्ञापन कयलक से हमरा आत्मासँ अप्रिय लागलए। हम राजूकेँ एहन नहि बुझैत छलियैक। ओकर स्नेहमे हमरा बड़ सागति लगैत छल आ त्याग। मुदा ओ तँ एना बदलि गेल जे हम ने तँ कानि सकैत छी, ने हँसि सकैत छी। ओ केहन दुःखी भ' गेलए ! ओकरा हृदयमे बहुत क्लेश छैक। हम एहि बात लय मानैत छी जे हमहूँ किछु दोषी। परन्तु हमर दोषक जेहन चित्रण भने बड़ बुद्धिमानी आ शिष्टाचारे सँ राजू कयलकए से एको बेर अहाँकेँ कहल नहि भेलए, ने ओकरा। दुनियामे ओएहटा तँ दुःख नहि उठा रहलए। संसार बदलि गेलैए। लोको बदलि गेलैए। हमहूँ लोके छी। एही संसारमे जीबैत छी। तेँ हम एहीमे छी। किन्तु सभटा सत्य कि एहिना सहजहि हाथमे धरा सकैत छैक ? एतेक जे एहन-एहन परिस्थिति छैक तेकरा अहिकेँ कोनो उत्तेजना आ असंयम किंवा तुच्छ भावुकता सँ देखल जा सकैत छैक ? तथापि, हमरा जे अहाँ बुझलौँ जे राजू

बुझलक था जे सुस्मिता दी—सभ अहीँ लोकनि ठीक रहलौँ। तखन एतबा क्लेश अवश्ये होइए जे एतेक राम जे हमर खेरहा पसारल गेलए ताहिमे हमर दोष कतहु किछु नहि अछि—जे अछि आ जतबा से एहन नहि जे एतेक विस्तार सँ ओकर निन्दा कयल जाय। राजुएकेँ अहाँ पुछियौक जे जतेक बात अपन कष्टकेँ आओर गँहीर बनयबाक चेष्टामे हमरा विरोधमे बाजलए ताहि सभमे ओकर अपने विश्वास छैक? ओकरा ई विश्वास छैक जे हमरा दुनू गोटेक एहि टुटलाह सम्बन्धमे एकसरे हमहीँ वा ओएह अछि, किंवा जतेक किछु ई वातावरण भेलैए से तेकरा एकसरे बनाओल गेलैए? कि ई वातावरण एक्के दिनमे बनलैए? ई बात राजूक अपने मनमे स्पष्ट नहि छैक। अपने ओ हमर सम्बोधन बदलैत रहल—कखनो पंछी तँ कखनो मइनाइ, कखनो मित्र तँ कखनो इला। ई सभटा सम्बोधन ओकरे कयल छियैक कि नहि, कनी ओकरा पुछबै तँ। आ ओकरा इहो पूछि लेबै कनी जे हम ओकरा आइ पर्यन्त राजूक अतिरिक्त कोनो दोसरो सम्बोधन देलियैक?

अहाँकेँ ई बात नहि बुझल अछि। अहाँ कहब—बताहिए अछि ई छौंड़ी। तँ से तँ राजुओ कहय स्नेह सँ। तहिया तँ लागय जे सिनेह सँ बताहि कहय—नाक पकड़ि क' डोला दियय तँ लागय जे स्वर्गक स्पर्श भ' गेलए परन्तु आब बुझाइए जे ओ हमरा सत्ते बताहि कहैत-कहैत एहि बातमे विश्वास कर' लागल। नहि तँ हमर मामूली एकटा व्यवहारकेँ एहन भयावह बनाक' एकटा निर्णय किएक ल' लैत, सेहो एकटा गलत आ भ्रामक निर्णय? ओ हमरा सँ विवाह नहि करैत—साफ-साफ कहि दैत। तुकौनक किएक? हम ई बात अवश्ये कहने रहियैक जे—प्रेम मतलब विवाह मानैत छी हम। तथापि हमरा एहि कहबाक मतलब ई त' नहि भेलैक जे ओकर मन, मनक तीशाक, लाचारी हम नहि बूझि सकितियैक? ओ हमरा एतेक कम आ संकुचित किएक बूझि लेलक? हमरा तेकर अचरजह लागलए। आ विवाह नहि होयबामे ओ हमर कमजोरी कहि रहल छैक सभकेँ। ई अन्याय नहि छैक—मिथ्या अभियोग?

—एएह बात तँ राजुओ कहलक हमरा कय बेर जे इलाक निर्णय निश्चित नहि छैक। कहि लेलथी कहैए जे विवाह करब, परन्तु ओकरा घर छोड़बाक साहस नहि छैक। तखन हमरो घर छोड़बाक साहस किएक नहि अछि? तँ हमरा एहि दुआरे नहि अछि जे हम जँ ई बात मानी तँ की हएत फलाफल? कोन पूजा पर शंख बाजत? हम ओकर इच्छा-शक्तिक अभावमे

एहि सम्बन्धकेँ कत डेग घीचि क' ल' जा सकब? हम तँ अपने भारी झंझटि मे पड़ि गेलौँ। ओकर ई अभियोग, ओकर ओ अभियोग!

तखन खाली एकटा एहन भेल एहि सम्पूर्ण घटना-प्रवाहमे जे कोनो शिकायत नहि कयलक। यद्यपि गहीँर भ' सोची तँ अन्ततः ओहो सुनाइये देलक: हम जेँ कि अहाँक 'सीच' मे बिन मोतल चौक जकाँ टपकि गेलौं तेँ बरनी की करितहुँ तँ हमरो अभ्यागतक सम्मान देलौँ। अहाँ हमर ओछाओल पात पर परसि देलौँ, तथापि आभारे मानब भरि जन्म। हमरा तँ कहियो जगितो ने छलब। राजा भाव सेहो ने। हमहूँ कि राजा भावकेँ कनियो जनियति पहिने! खाली पढुआ बाबू आ शौक। आ से तेहन शौक निकलला जे……।

ई बात शिकाइत मे नहि। बल्कि ओ कनी मुसकियाइते कहलक जँ हम यदि हुनकर लिखल डायरीक दुनू रित्ती-रित्ती फटलाहा पात नै पढ़ि लितियनि तँ भरि जन्म बुझलो रहैत? सुस्मिता सँ बड़ स्नेह छनि, परन्तु हिनका लोकनिक स्नेह एहन छनि से कोना बुझितौँ! हम पुछलियै—की? ओ संकुचित भेल। फेर एकटा फराक कागत पर एक ठाम यत्न सँ साटल फटलाहा डायरीक पुर्जी सभ सोझामे राखि देलक: अपन एहि खसबाक विषयमे किछु कहाँ बूझल छल। एकरा कत' बेकार रकलौँ। माथमे आगि धधकैये।

ओ किएक नै रोकलक? ओ किएक बिर्डुसि क' खसा गेल? दुनू हर-हत्थी सँ गरदनि किएक दबलक आ ओतेक रास ओहन तिनेह कयलक……? दोष तँ हमरे। पुरुष तँ हमहीँ…… मुदा देहमे जे सन-सन बसात बहय लागल……!

करुणा संतुष्ट आ निर्विकार भाव सँ कहलक: 'हमरा लेल एतबे बहुत जे हिनका मनक सोह सुखायल नहि छनि। हमर ई अपन छथि। कहियो बैसिक' अपने सबटा खिस्सा कहताह। हम सुनबनि।'

हम एतबे कह' चाहब। ई खिस्सा अनचोखहि खतम क' देलौँ तकर कारण हमरो अपना नहि बुझल। सभ पात्र जेना हमरा पर खौँझायल अछि। तहिना हमअहाँ लोकनि पर खौँझाइत छी जे हमरा किएक नहि बुझल अछि से। अहाँ लोकनिक दुआरे नै बुझल अछि। □

अन्हार पलायन

हमरा होब' लागल जे हम एकटा विस्तृत खलाओन अन्हारमे पैसि रहल छी। गामक छिमान पीठ पाछाँक सत्य जकाँ अनाकर्षक आ बेकार लाग' लागल। बथी ककरो सोर पाड़ैत छैक, सेहो भ्रम खतम भ' चुकल छल। एकटा बैलगाड़ीक पाछाँ-पाछाँ मेहीँ धूरा उड़ियाइत आबत छलैक आ तकरा पाछाँ हम। बड़ी दूर पैदल चलबाक छल। गाड़ीक हड़बड़ीमे सटकारैत हमर डेगमे खाली सन्हिया गेल छल बीड़त। आ नाकमे कने-मने सुरसुरी। सौंसे बाटक दुनू कात पसरल बाध रहैक। बाधमे एक-आध लोक सभ। अजान कोन-कोन सागल, से झलकल। उएह परिचित स्वरमे लोकक हाक। बेर-बेर भय होअय। कतहु माँ बजबा ने लेअय। कतहु ओकरा हमर शहर जायब व्यर्थ ने बुझाय लगैक, आ ओ ककरो पाछाँ सँ दौड़ाक' हमरा घूरि ने आब' कहय। हमर पयरमे तेँ चिन्तासँ आरो बेसी फुर्ती आबि गेल।

कान्हपरक झोरी कागत जकाँ हल्लुक बुझाय लागल आ सभ किछु बीच बाटपरक वन-बैरीक ठुड्ड झाँखुर, पैंघ-पैंघ पातबला बैंगनी डारि, उजरा रंग-कला आक। आकपर टहलैत हेँजक-हेँज सुगा कीड़ा। ई सभ किछु मिथ्या छैक।

हम आ हमर एकटा मित्र शहरमे एक दिन कत'-कत' ने बौआ अयलहुँ। एही बड़का पातबला आकक गाछ ताक', जकर बैंगनी उज्जर फूलक माला बनैत छैक। महादेवकेँ बड़ प्रिय छनि। कपिलेश्वर कि विदेश्वर सभतरि एहि मालाक ढेरी भेटत। हुनका पूजामे जेना आक-धथूरक फूल विहित, तहिना ई माला! हमरा हँसी लागल। सैह, एही आक लेँ हमसभलोकनि दू गोटे कत'-कत' ने बौअयलहुँ, कतहु भेटय? एकटा असन्तोष भेल रहय। जे-से, एखनो गाम केर गामे। एकटा मामूलियो वस्तु शहरमे नहि भेटत। यद्यपि एहि आकक फूलक नहि भेटब, सेहो ओहन पैघ शहर मे, कोनो अर्थ नहि

रखैत छैक, तथापि सन्तोष भेल रहय। से एखन मन पड़ल। आ ओ मित्र खगेन्द्र! पाछाँ जखन झूर-झमान भ' क' हम दुनू गोटे चाहक अपन प्रिय रेस्त्राँ मे बैसल रही तँ कहने रहय—"बाज अयलहुँ बाबू! तोहर विचित्र-विचित्र धंधा छौक। ई सौंसे मोहल्ला-मोहल्ला आ कालोनी-कालोनी बौआ देलेँहे, अछिञ्जलाह! आ कथी ले, तँ आकक गाछ ले'! तोँ बताहो नहि छेँ—घताह!"

—'अरनी चुपचाप चाह पी! हमरा कहाँ लागल ई बौआयब एको रत्ती व्यर्थ! सत्ये कहैत छियौक! कोनो मनक बात ले' सौंसे-सौंसे धरती बौआ आइए लोक। तखन शान्ति भेटैत छैक।' ओ हमर विस्तृत भाषणसँ उबिया गेल आ बाजल—सुन, बन्द कर! परीक्षा तोरा ले' बैसल नहि रहतौक, आ ओहिमे हुसलेँ तँ बुझि लिहेँ-पूरा हुसि गेलेँ बौआ! हमरा बुझल रहय। अपना समयक थकनी आ निराशाकेँ ओ हँसी-ठट्ठा मे खतम करबाक जेनपन क' रहल छल। हम चाहक घोँट लेब' लगलहुँ। एक क्षण लेँ ओकरा मुँहमे खापुट लगलैक। हम कनडेरिये ओकरा देखलियैक। ओ बाहर सड़क परक भीड़-भाड़ देखि रहल छल। ताबत ओकरा सोझहि सँ एकटा रिक्सा-पर पिण्डश्याम वर्णक एकटा छौंड़ी गेलैक। हम ध्यान देलियैक, ओकर आकृति जेना फेर मिझा गेलैक। हमरा दिस तकलक ओ। एह, आइयो मन अछि। फोटो जकाँ ओ दृश्य। अनायास। ओकरा ई बात बुझा गेलैक जे हम ओकरा ओहि छौंड़ी केँ देखैत देखि लेलियैक। कने लजा जकाँ गेल। हम दोसर दिस ताक' लगलहुँ। ओकर मूड़ी निहुरि गेलैक।

—'की भेलौ? एना मन किए हुस भ' गेलौ?'—हमर स्वर मे मुलायम ममता छल।

—'हुँ, तोरा ई आकक गाछ तकबाक कोन बतहपनी अयलौ माथमे आइ!' ओ हमर प्रश्न केँ धकिया क' कात क' देलक। हम ओकरा खोलबाक यत्न कयलहुँ। मुदा ओ खूब सतर्क रहय। ओ छुट्टा जवाब नहि देत, से हम ओकर सखनुक चेहरेसँ बुझि गेलियैक। हमरा चुप होब' पड़ल।

जानि नहि, हमर पयर किएक नहि चलि रहल अछि खूब जोर-जोर सँ। गाड़ी अयबा मे आब देरिये कतबा छैक? मुदा जतबो दूर हमरा आब जयबाक छल तकरा खगेन्द्रबला प्रसंगक अतीत हमरा खूब सुभितगर क' देलक। हमरा बुझाइये नहि रहल छल, परंच अतबा कालमे जतेक बाट चलि चुकल रही से बुझा देलक जे हम अपन डेग झटकारि क' नहि बढ़ि रहल

छी । तैं बड़ स्थिर चलि रहल छी । ई सन्देह हमर निराधार छल । से बात हम सोचलहुँ । तखने खगेन्द्रक बात मन पड़' लागल—'मनमे जहाँ कोनो सन्देह पैसलो कि सत्यानाश ! गेलें ।' ओ बड़ प्रबुद्ध हँसी हँसल रहथ । हम ओकर गम्भीरताकें आर गहीं र करैत कहलियैक—"तोरामे तथ्य छौक, परंच अनुभव नहि । अनुभव क' लेब बड़ पैघ बात होयतौक तोरा लेल ।' हमरा बात पर ओ किछु उत्तेजित भेल । से ओकरा चेहरासँ लागल । मुदा शांत रहल । एक क्षण हमरा तौललक । फेर चाहक पेनी सोख' लागल । —"तोरा बुझल छौक, कोनो अनुभव कोना होइत छैक ? परंच छोड़, जाय दहीक ई तर्क-वितर्क । एकटा बात सत्ये लगैए हमरो आब, जे मैथिल बिना तर्कें पानि नहि पीबि सकैए । पहिने ई विशुद्ध गप्प लागय ।'

—'आब नहि लगैत छौक तकर आधार ? किंवा कहु—अनुभव ?' फेर एहू' अनुभवक प्रश्न उठौलक ।

—'आब, जेना देखैं । आइ हमरा लोकनि एकटा अर्थहीन वस्तुक पाछाँ एगारहु बजे सँ बौआ रहल छी । तोंको बुझयौ तैं बताह नहि, बूड़ि कहतौ । परंच हमरा दुनू गोटे चलबा बौआ-ढहना अयलौहें ताहिमे कतेक जीवनी रहय ? एहन धुनि सँ आक ताकि रहल छयौं जेना कोनो मेघपर जयबाक तांत्रिक बात ताकि रहल होइ ।'

—'तोहर बात बेसी ओझरा गेलौ, साफ कर ।' हम बीचमे टोक देलियैक ।

—'साफ की ? मानि ले व्यर्थ । एकटा निर्गीधि भावनासँ भले, मुदा आक तकैत तँ रहलौं दुनू गोटे ! से किएक तकलौंहें ?' ओ एक क्षण चुप रहि क' फेर संयत उमसाह स्वरे बाजल —"मुदा तों ई प्रश्न अरबधि क' क' रहल छें । तों हमर अर्थ बुझि रहल छें । अनठा रहल छें । असल बात ई जे हमरा दुनू गोटेक ई अनुभव, भले विश्वक कोनो महान आविष्कारक प्रक्रियाक अनुभव नहि भ' पाओत, परंच अपना आन्तरिक संसारक एकटा अविस्मरणीय आ ऊँच अनुभव भ' क' नहि पड़ैत-फुलाइत रहत भरि जीवन ? तों सत्त-सत्त कहु राजू ?' ओ उदास भ' गेल । फेर बाजल—'तों कहु, फेर पूछै छियौक—ई आक तोरा कोना मन पड़लौ ? आ ताहि आककें तों एहि महान शहरक गलीमे किएक ताक' विदा भेलें ? भरि दिन कोन भावनाक दबावमे तों एना कयलें ? तोरा कोन बात बाध्य कयलकौ ?"

—'गाम मन पड़ल ! तकरा बाद सम्भव छैक, दलानपरक आकक गाछ

मन पड़ल । से गाछ एकटा बड़का होममे काटि-काटि क' स्वाहा क' देल गेलैक ।' —'फेर एक टा अन्तर बा कहु जे लाथ लगा क' बाजि रहल छें । निश्चिते सोझ-सोझ तोरा कोनो 'बात' गड़लौ आ से आकक सदर्भसँ गड़लौ । तों अय भ' क' घुमलेंहें । हमरो बोर कयलें । यद्यपि कोनो अभियोग नहि तोरा पर । हम कम सँ कम तोहर भावनाक लग-पास घूमि-फिरि गेलियौ । जे तोहूँ बुझने होयबें । ओना बात टारै छें । हमरा लें विशेष अन्तर नहि पड़ैए । हम तँ वैह बुझबै जे हमर अनुभवक पाँच बैटरीबला लाइट देखाओत ।'

—'अनुभवक बड़ जोर छौक मनमे—बल्कि कहु जे गौरव ! सम्भव छैक निराधार होउक ।' हम कने किचकिचाइत कहलियैक । ओ क्षण भरि हतप्रभ रहल । फेर सम्हरल—'आय दहीक बात । चाहक पाइ दहीक आ चलक । कथ गोटेकें मैथिलीमे गपसप सोनगर लागि रहल छनि !' हम ओकर एकांगी टिप्पणी कें कटलियैक ।

—'सम्भव छैक, जीवनक प्रतिवादी परिस्थिति हमरा बेसी लागि जाइत अछि । तोहर स्वभावमे काफी माधुर्य छौक । चट्टी जकाँ जीवैत रह, बताशामे घर बनबैत रह ।' ओकर ई व्यंग्य हमरा चुभ-द' लागल । मुदा तेहन नुकायल आघात कयने रहय जे हम किछु बाजि नहि सकैत रही । जेना अपने लोकसँ नुकाक' राखल, नुकायल कोनो वस्तुक चोरी भ' गेल हो तँ अहाँ बाजि नहि सकबैक । हम जखन ओकरा दिस तकलियैक तँ निश्चिते हम बड़ निरीह लागल होयबैक ओकरा । कारण, ओकर उत्साह फेर ठंढा भ' गेल रहैक आ ओ हमर हाथ धरैत कहने रहय—'चल जल्दी । बाप रे बाप, दसो मिनट कोनो होटलमे बैसब पराभव-पराभव । हमर तँ प्राण औनाय लगैए । आ तोरा लगै छौक नीक ।'

—'फेर वैह एकतरफी बात । नीक की कोनो हमरा बासा कि मन्दिर लगैए होटल ?' हम किछु तुनकल स्वरमे कहि देलियैक से ओकरा लागि गेलैक ।

—'से हम नहि कहैत छियौक । मुदा, भने चाहेक लेल, तों आबिक' बैसैत तँ छें । आ कि सेहो नै ?'

हम चुपचाप ओकरा देखैत रहलिऐक ।

'हँ । नीक लगैए । चाहो नीक लगैए आ होटलमे बैसबो । कखनो-कखनो सोचैत छियैक तँ मन धिक्कारैए—ट्यूशनक कमाइ सँ पेट चलतनि से उपायें

नहि छनि आ एतेक-एतेक बेर होटलमे चाह पीब' अपने करताह। मुदा, तोरा तँ बूझल छौक—मात्र चाह। थिकै अधलाह बात। मुदा मनुक्खकेँ कए बेर अधलाहे बात सभ महाआत्मीय बन्धु भ' क' सहायक भ' जाइत छैक। ई बात हम अपन अनुभवसँ कहैत छियौक।' हमर बात समाप्त होइतहि ओ उत्साहित भ' उठल।

—'अनुभव! तँहू तँ कहलियौक। आब तोरा चाहसँ, कि होटलसँ की लगैत छौक—की जानी? हम तोरा सङ्गे विशुद्ध भावनात्मक मने बैसैत छियौक। यद्यपि सत कहैत छियौ, बेसी काल हम अपने विषयमे सोचैत रहैत छी। तोरा बातमे हुँकारी दैतो, हम सोचैत रहैत छियौक अपन बात सभ। कारण, तोरा लगैत रहौ जे हम तोरा सङ्गे छियौ, सेहो जरूरी लगैये आ कि हमरा चाह-काह ओतेक पसिन्न नहि पड़ैए आ तथापि पीबहि पड़ैए तेँ अपन आने बातमे मन बहटारने रहैत छी'।

—'एहन कोनो बात नहि छै। हमरालोकनि कोनो वैचारिक बात नहि करै छी?'

—'कोन 'वैचारिक' बात रौ? कने एतेक दिनक होटल बैसकी आ चाहक दौड़ा-दौड़ीक एकोटा दिन मन पाड़ै ने, जहिया 'वैचारिक' बात कयने होइ हमरालोकनि? बेसीसँ बेसी क्लासक छौड़ा-छौड़ी सभक चरित्र-चित्रण कि भविष्यक विषयमे कार्यक्रमक चिन्ता। सेहो एहनियेँ ओहुनीमे। कोनो गम्भीर दायित्वबोध सँ नहि! तखन ई नहि बुझ जे तोरे टा छौक ई बात! हमरालोकनि सभ क्यो एहिना करैत छी। प्रायः एहिना करहु पड़तौक। की करबै? भोरका अखबार देखलहीक?'

—'कोनो विशेष समाचार छैक की?'

—'कतेक दन इंजीनियर बेकार, आ कतेक दन डाक्टर! अपनालोकनिक भविष्य बुझि ले! 'कुत्र गच्छो गणेश: !'—हमरालोकनिक वार्ता एही चिन्ता-वाक्यसँ खतम भेल रहय।

हमरा आगाँ एकटा आर बैलगाड़ी लग भेल जाइत रहय। यद्यपि ओकर दुनू बड़दकेँ बहुत्समान बड़ ललकारा द'-द' क' हाँकि रहल छलैक तथापि भरिसक ओकर पयर थाकि गेल होइक। पता नहि, कोन गामसँ आबि रहल छलैक। साँझ आब अपन रङ ध' लेने रहैक। गाछ-पात आ बग-पास धूर्ख जकाँ पसरल। हमरा बुझायल जे प्रायः आब गाड़ी औतैक। यद्यपि एखनो

हमरा पाव भरि जमीन चलबाक छले। बुझाय हेँजक-हेँज चिड़ै, छोट-पैंघ सभ अपना खोँता दिस जा रहल-ए। चिड़ैबला प्रसंगपर मन एकाएक एकटा हमानी उदासीसँ बोझा गेल। पयर बस वेग बड़ शिथिल पड़ल। फेर झटकारलहुँ।

—'साँझ होइत बेरी घर घूमि आबी।' इला कहने रहय एक बेर। माय सकाँ ओकर ई मातसर्य नीक लागल रहय। प्रायः तेँ मन पड़ि गेल एहि घर छूटैत एकसर साँझमे।

— 'कोन घर? अपन की अनकर घर?' हम कने तीख भ' व्यंग्य क' देने रहियैक। ओकरा लागि गेल रहैक। हमरा अपन करनी पर स्वयं बड़ क्लेश भेल। ओकरा एकसँ एक कटाह् कथा कहि जायमे हमरा कहियो सोचहु नहि पड़ल। मुदा, पाछाँ फेर ओही कटाह् कथाक लेल पश्चात्तापक कतेक घोर यन्त्रणा उठौने छी से हमर हृदय साक्षी अछि। ई बात इलाकेँ बूझल छैक। भरिसक ओकरा हमर ई मन बूझल छैक। तामसमे ओहो रूसि रहल कतेक बेर। खिसिआहि अछिए. दिनक दिन गुमकी लधने रहि गेल-ए। मुदा ओ जे अछि से हमर भविष्य अछि।

—"घर पहिने मान' पड़ैत छैक। अपन आ अनकरक बात पाछाँ उठैत छैक। घर बनब' पड़ैत छैक। रहबाक स्थिति बाबक छैक। अहाँकेँ कटु बजबाक आदति भेल जाइत अछि। अधलाह बात। अहाँकेँ की शिकायत अछि? शिकाइतकेँ विषाह् नहि बनाबी रंजू, प्लीज।' से ओकर प्लीज एहि बाधमे कोना गूँज' लागल से हमहुँ नहि बुझलिऐक। खाली एतबा धरि लागल जे हम ओहि अनुगुंजनक आर लग भ' रहल छी, जे हमर अभीष्ट अछि।

—'बेसी उपदेश नहि ने छाँटी, देबौ दू चाट। कोठलीमे जाक' कनबे' अढ़ाइ घंटा।'

—'यथार्थ कहू तँ ठट्ठामे उड़ा देबै। अहाँक ई स्वभाव अधलाह अछि। की तँ चाट' दौड़बी, की ठट्ठामे उड़ा देली। अपने नहि सोचै छिऐक बातकेँ?'

—'हमर सती तोँही सोचै छेँ गे? परीक्षामे जे पैसठि प्रतिशत अंक अबैये से तोरे लिखलाहा। लगती चाट, तखन सुझती उपदेश!'

—'छोड़ू। परीक्षाकेँ हम मोजरे दैत छिऐक? कलहुसँ क्यो उतारि

देलक आ आबि लेलक प्रथम श्रेणी ! अयुको प्रथम श्रेणीक कोनो मोजर ? आ, जहाँ धरि अहाँक बात, तँ से अध्यापकलोकनिक परीक्षाक बुद्धिकेँ कोना बनरा नाच नचाओल जा सकैये से अँटकर अपना लागि गेलए; तेँ ऊपि लैत छी पैंसठि कि सत्तरि प्रतिशत अंक ! ई अंक आनब नहि, ठकब छैक ! गुरुजी काव्यशास्त्री, चेलाजी कवि ! बात पटि जाइये, तँ बजबाक मौका आबि जाइये—एतेक प्रतिशत ! मुदा एतेक प्रतिशतक मोल की ? ग्राम गुड़व,—ग्राम । तैयो प्रोफेसर बनल ओएह सभ जकरा ईहो प्रतिशत नहि छैक—ओकरे समाजमे प्रतिष्ठो रहैक आ जीवन, जीवनक सुभीतो रहैक । अहाँकेँ रहत काव्य-शास्त्री अध्यापक लोकनिक तुच्छ स्नेह आ अपन बांझ कविता ।'

इलाक स्वर नियंत्रित नहि छलैक । ओकर कहबामे बहुत किछु अहुरिया काटि रहल छलैक । ओ स्वयं संयत भावेँ बेश कटुतापूर्ण बात कहि रहल रहय । तैयो जानि नहि किएक क्रोध नहि उठल । हम खाली ओकर नेना जकाँ हाथ भाँजिक' गप्प करब देखैत-सुनैत रहलहुँ आ ओकर मुखाकृतिक उतार-चढ़ाव । ओकरा अपन प्रगाढ़तासँ देखैत, हमरा हरदम ई अनुभव भेल जे हम स्वयं अपना आगामि अपनेकेँ देखि रहल छी आ अपनाकेँ अपने देखिक' काफी संतोषक अनुभव भ' रहल अछि—एकटा अद्भुत सुखक अनुभव । से सुख बहुत कम भेटल अछि जीवनमे, मुदा किछु तेहन स्वाद जकाँ जे आदमी कहियो बिसरि नहि पबैए जीवन भरि ! हम मुस्किआइत देखैत ओकरा सिनेहसँ कहने रहियैक—"बड़ बजन्ता भेल जाइछें । आब चभेटो नहि, धुधुक्का लगतौ । चुप रह । आ जल्दीसँ चाह पिया । आब एको मिनट देरी करबेँ कि हम कहि देबै रमेशकेँ जे ओरा नहि रहलापर हमरा क्यो मोजर नहि दैत अछि ।"

'आ हा हा ! डर अछि की ? काजमे काज ऐह चाह । कहि देबनि, नहि मोजर दैए क्यो । हमरा डर नहि अछि । अपने बजार जयबाक अछि । टूटा-टूटा पोथी नहि अछि आ परीक्षा रोज दिन लगे भेल जाइए । आइयो कहने रही अहाँ कथ बजेक नाम ? छौ बजे ?'

'हम तँ ठीके समयपर अयलौहँ ? देखही !'

—छौ बजे । जेहन छी ने, से छीहे अहाँ । अहाँ छौ बजे कहने रही ? की तँ बिसराइ छी, कि बारी सुट्टा । कहने रही कि नहि जे क्लास खतम क' क' सोझे डेरे आयब आ पढ़ा देब । क्लास खतम भेल तीन बीसपर । जे-से,

टहलान मारैत संभव छैक जे विश्वविद्यालयसँ डेढ़ो मील आब' मे लोककेँ जँ डेढ़ घंटा लागि जाय, तैयो तँ बेसीसँ बेसी पाँच बजे धरि अबितौँ........।"

—'ओ ! तँ अपने तमरा क' किताबे कीन' दोकान दिस भ' रहल छलहुँ ? गेल जाओ । रिक्शा बजा दिय' ?"

—'रह' दिय' । बीक नहि छी हम । रिक्शा बजा लेब ।' ओ सत्ते तमसायलि रहय । आब जाक' हमर ध्यान गेल । ओ बाहर जाय लेँ तैयार रहय । अपन प्रिय पोशाक सलवार कुर्त्ती आ ओढ़नी चप्पलमे । कुर्त्ती मद्धिम नील, उज्जर सलवार आ उजरे ओढ़नी ! ओ सीढ़ी उतर' लागलि ! हम अपेक्षाकृत बेसी चंचलता देखबैत चट द' ओकरा पाछाँसँ ओकर जुट्टी पकड़ि क' खिचलियैक । प्रायः ओकरा हमर एहि व्यवहारक आशा छलैक । एकरत्ती बनावटी 'इस्स्' कयलाक बाद ओ ठमकि गेलि । फेर कहलक—'छोड़ जुट्टी ।'

—'पहिने हमरा चाह बनाक' पिया दे । तखन जो !'

ओ एकाएक नेना हँसलि जेना चढ़ल तारक मधुर बाजाकेँ कोनो नेना जल्दी-जल्दी अङ्गुरीसँ बजा देने होइक । हमरा खूब नीक लागल । ओ घूरिक' एक बेर देखलक आ फेर जेना गंभीर होइत आ चेतबैत कहलक—ई धोपा-पूता जकाँ जे करैत रहैत छी से नीक बात छैक ? एकदमसँ बुड़्ह छी अहाँ, बुड़्ह ! एक रत्ती ज्ञान नहि अछि अहाँकेँ । हम यथेष्ट चाह उताह्-लियेक लावत दौड़िक' चल गेलि । किछु सेकेण्डमे हमरा कानमे केटली खड्-हारबाक आ प्याली-तस्तरी सरिअयबाक ध्वनि पड़ल तँ मनमे तेहनाहे सन आश्वास पड़ल जेना चारि दिन बोखारसँ उठलाक बाद लोककेँ पथ्यक तैयारीतँ होइत छैक । हमरा हँसी लागि गेल । हमरा मनमे कोनो तामस वा उलहन आ कि अभियोग नहि छल । हमरा लेल तखन सभ परिस्थिति काम्य छल । कोनो परिस्थितिसँ प्रतिवाद वा आपत्ति नहि । हम तँ ओहि मानसिक स्वच्छन्दता आ मुक्तामे चल गेलहुँ जे यदि आइ स्वयं इला कहय जे आइए एखने ओ कतहु जा रहलि अछि—हरदमक वास्ते जा रहलि अछि तकरो निराशा नहि होयत—किछु नहि । हम खाली निश्चिन्त आ उत्साहित आ सन्तुष्ट लोक छी मनमे सभ परिस्थितिकेँ वरदान मानिक' जीब'बला विशुद्ध लोक ! हम एहिना, ऐह रह' चाहैत छी । आश्चर्यो नहि होइत अछि जे हमरा एहन-एहन अलौकिक गुणसँ भरि देनिहार कारण कतेक नगण्य, छोट ? ई इला ! एकरे नेनमति व्यक्तित्व ? ओकर ओहि खिलखिलीक अनुगुंजन हमरा पयरमे लेपटा क' अपना दिस घीच' लागल । हम जोर-जोरसँ

चल' लगलहुँ। आब स्टेशन पर ठाढ़ किछु मालगाड़ीक डिब्बाक अन्हार आभास देखाइ पड़' लागल।

स्टेशनक दहिन गुमटीपर चढ़ैत काल गामक एकटा हेँजे भेटल। हम चाहलहुँ जे बाँचि जाइ। संभवे नहि भेल। एक गोटे घेरि लेलक—"की बच्चा, बिदा भ' गेलिऐक ? गामसँ जा रहल छिऐ ?" हम मूड़ी डोला देलिऐक। भरिगामक ओ सभ अपनामे हमरा मादे गप्प करैत बढ़ि गेल रहए। "बड़े आयल छलाह गाम बस' ! अंगरेजिया बाबू सभके' कतहु गाममे नीक लगैक। रे, ई सभ तँ लोके दोसर भ' जाइत छै ने ? ने कोदारि धर' जोग ने खुर्पी। बैसीसँ बेसी होल्डरसँ मोसियानीमे डुबा-डुबा कागजपर लिख' चोन। बस्स। एहिसँ फाजिल नहि।" स्वयं हम बढ़ि तँ गेलहुँ, मुदा सोचैत रहलहुँ जे किएक हम गामक लोकसँ बचिक' एना जाय चाहि रहल छी ? की हम हारल व्यक्ति छी कि चोरि क' क' जा रहल छी ? हम किएक नुकायल जकाँ जा रहल छी ? हमर कुंठाक कारण की अछि ? ताहूमे एकर ? बाप क' जखन ओ बेचारा एतेक अपनैतीसँ पुछलक जे गामसँ जा रहल छी, तकरो हम नीक जकाँ स्वाभाविकतासँ किएक नहि कहलिऐक उत्तर, जे कोनहुना मूड़ी डोला क' एम्हर चल अयलौँ ? हमरा अपने मन अपराधी कह' लागल। कय गोटे गाम आयल छथि पढ़ि लिखिक', फेर समय अयलापर अपनो वृत्तिक' चलो गेल छथि। तखन शहर घुमलासँ कुंठित होयबाक हमरे की कारण ? किएक हम चुपचाप जा रहल छी ? किएक हमर ई शहर घुमब अपनेकेँ बड़ अधलाह लागि रहल अछि ? जतसँ गाम घुरि आयल रही—अर्थात् ओ शहर सेहो हमर पराजित पौरुषक युद्ध-क्षेत्र छल। फेर ओतहु जायब तँ बेहु बात भेल। तथापि ओत' जयबामे कोनो ग्लानिक बोझ मनपर नहि अछि। यदि किछु अछि तँ गामे छोड़बाक विवशताक बोध। तेँ हम बिदा होयबासँ ल' क' स्टेशन पहुँचबा धरि बिल्कुल निसबद्द रह' चाहलहुँ जे लोक बुझय नहि। हमरा गाममे रहल पार नहि लागल आ हम हारि-थाकि क' फेर शहर घुरि गेलहुँ। ओहुना आइ काल्हि ई प्रवृत्ति बेस बढ़लैक अछि जे कोनो भद्र लोक यदि दू टा खढ़िये क' रहि जाइत छथि तँ पड़ोसी ओकरा धकियबैत धकियबैत ठेका दैबे धारक काश ! भलमानुस लोकके' आइ एैह प्रतिष्ठा ! जहाँ कि गामवला बुझलक जे ई कोनो नदगे चुम्मा छथि वा झगड़ा झंझटिसँ फराक रहनिहार लोक छथि कि अहाँपर, अहाँके' जे चारि कट्ठा भूमि अछि ताहिपर, अत्याचार शुरू भ' जायत। मतलब जे अहाँ अहिना परदेसिया लोक जकाँ कयलौँ कि अहाँक घरक कोड़ोसँ लोक लहुने अपना घरक दालि बड़काओत। अहाँकेँ

रह' पड़त। कारण, अहाँ तँ गामक रहितो गौँआ लोक नहि, प्रवासी थिकहुँ। तखन की द' चिन्ता भेल। एकसरि रहैये। ताहूपर हरदम दुखिताहि। जानि नहि, एहि डीह परक टूटल-फाटल ऐ घरसँ एकरा कोन धार्मिक माया छैक ? कतबो बुझाक' माँकेँ एतसँ फराक नहि कयल जा सकलैक। एत' एकसरि रहैये। क्यो देखनिहारो नहि। सभ अपना-अपनी क' व्यस्त आ मस्त अछि। आब कहाँ छैक ककरो फिकिर आनकेँ ? सभ अपन कर्त्तव्यकेँ बड़ सीमित क' लेने अछि। ई बात नहि जे गामक सामाजिकता बड़ निस्वार्थ छैक। एतबा दिन रहिक' जे हाथ लागल रहय से एकटा सर्वथा नवे अछि। लोक एत्तहु आत्म केन्द्रित शहरे जकाँ भ' गेलय। खाली किछु आचरण एखनो भावना आ सौहार्दता बाँचि गेल छैक, सेहो पुरनका लोक सभमे, जे भरि-भरि दिन चोसि सुड़कैत छथि खाक' आ तमाकू खाक' खिलाड़ाह दिनक बातपर खेवैत छथि। बेटा-पुतोहुक दुर्व्यवहारकेँ झंपबामे सामाजिक शान बेटा-पुतोहुवला लग किछु-किछु बजैत छथि। ओ लोकनि सभ व्यवहारक जड़िमे धर्मक सिफत द' क' औचित्य रचबाक अभ्यस्त छथि। मुदा सेहो ओएह पुरने लोक। माने पाकल केश आ थुरकुट आकृति-रखबावला !

नवका लोक सभ तँ धुर-धुर ले' साकांक्ष आ आकामक। भाला-गड़ासक गर्म-गर्मी सप्ताहमे दू बेर तँ अवश्ये होइत छैक। कखनो डोलक नामपर, कखनो आरि-धूरक झगड़ामे। मुदा, से होइत रहैत छैक। सुनल अछि, हाल-हालधरि गाममे कोनो झगड़ादन नहि। लोक खूब सौमनस्यसँ रहैत छल। एक दोसराक काज-प्रयोजनमे देह तोड़ि क' मेहनति करैत छल आ निमाहि दैत छलैक। बयो होथि, समाजे हुनका उत्तीर्ण करैत छलनि। आब तँ लोक मानबो नहि करैत छैक। सर्वस्व मानतिहार 'छौड़ाक' भीड़ गाममे अनेरे भेटत। चोरिये नहि बढ़ल छैक, घरदेसियो। आ लोक फुसियेटा नहि बजैये, फूसिक गवाहियो देबाक कय गोटे पेशा धयने अछि। ई परिस्थिति छैक अपन गामक ! सोचि क' मन दुःखी भ' जाइत अछि। परंच, जे समाजक प्रमाथ छैक से दिन-दिन पसरले जा रहल छैक ! आब हम प्लेटफार्मपर ठेकि गेल रही। जकरा हम माल गाड़ीक डिब्बाक आभास मानैत रही सैह छल गाड़ी। आ से धुपकी द' चुकल छल ! गार्ड साहेब सेहो सीटी भरिसक देबऽवला छलथिन ! हम कोनहुना दे दरबरिया टिकट घरमे धँसलहुँ। संयोगे छल जे टिकटो भेटि गेल। कोनहुना प्लेटफार्म पर पहुँचलहुँ तँ गाड़ी हमर अपेक्षा करैत ससरि चुकल

छल । फट्टुना चौड़िक' हम पछिला डिब्बा धयलहुँ । भीतर पैसैत-पैसैत पैसलहुँ । ओहिना साँस फुलैत रहय । हकमैत रही । ताहिपरसँ ई कोंचमकोंच लोक । मथहु खौं ध' लेलक । कतहु गड़र बैसाब' चाहलहुँ, सौंसे आँखि दौड़ैलहुँ । कोनो गुंजाइश नहि । सभ लोक अपन-अपन स्थानपर फिट । हम एक कात एकटा डंटा ध' क' ठाढ़ होयबाक प्रयत्न कर' लगलहुँ । गाड़ी रेस भ' रहल छलैक । कोनो दोग-दागसँ एक रत्ती बसात सेहो आब' लगलैक । कनेवर लागल तँ सौंसे देह पैसि गेल । बड़ सुख लागल । हमरा ककरो आकृति चिन्हार नहि लागि रहल छल । ओतेक रास अनचिन्हार लोकक बीच हम ठाढ़ शरीर डुलबैत-डोलबैत गाड़ी पर जाइत रही । अपना रोजीक भविष्य दिस । से एकदम अनिश्चित भविष्य आ अनिश्चित रोजी । गाड़ी छक-छक करैत जा रहल छल । बाहर दुनू कात अन्हरिया ठाढ़ रहल होयतैक, हम सोचलहुँ आ ओतेक कालक बाद पहिल बेर अनुभव भेल जे हमरा ठाढ़ होयबामे आनो कोनो असुविधा अछि, जगहक कमीक अतिरिक्त जे हम नहि बूझि पाबि रहल छी । भेल जे सम्भवतः लोक सभक ई घोल-फचक्का आ सिक्का, तमाकुल चुनयबाक चाट'''ईह सभ । मुदा सेहो हम स्थिर नहि क' सकलहुँ । अपन पयर स्थिर करबाक प्रयास कर' लगलहुँ तखनहि पहिल बेर बुझायल, ओत' हमर घुट्ठी बड़ जोरसँ दुखा रहल अछि । एक्के ठाम एतेक कालसँ ठाढ़ रहलाक कारणेँ आब जाक' पता लागल जे सौंसे देह थोतेक नहि सकेक खाली घुट्ठी दुखा रहल अछि । हम कनेक उदास भ' गेलहुँ । गाड़ीक गति हमरा सबसौं तीव्र भ' गेल । हम अपन मनक उदासीसँ पड़ाय चाहैत छलहुँ । हमरा सारि राति प्रायः एही स्थितिमे यात्रा करबाक अछि । काल्हि कथ बजे धरि जाक' पहुँचबग' ? जानि नहि, लोक हो एखन वा नहि । जकरा चिट्ठियो लिखने छिऐक, सेहो वा नहि—सुस्मिता । वा महेन्द्र ! बजौलक अछि उएह । आ बहुत सम्भव, उएह नहि हो । तखन ? इलाक होयबाक विषयमे अनुमान करैत हमर आँखि नरिसक अनायासे मुना गेल आ हम एक हाथ तागान राख'बला बर्थक कोरपर टिका, ओहि बाँहिपर दाढ़ी टेकि गाड़ीक गतिपर डुल'-डोल' लगलहुँ ।

जे अनुभव हमरा गामक सिमान छोड़ैत काल भेल रहय तकरेमे हम फेर घुरिआय लगलहुँ । खाली ओहि काल अन्हारमे किछु दीप आ आकृति लोक सभ मिलि गेल रहय, जे लोक सभ हमर व्यक्तित्वक निर्माता अछि ।

□

शरणार्थी उमेदवार

उतरैत बेरी सबसँ पहिल बात हमरा मनमे अएह उठल—घर । 'घर पहिने मान' पड़ैत छैक ।' ओना मनमे आबि जरूर गेल, परन्तु स्वीकार नहि भेल । घराक विषयमे हम एखन कोनो तरहेँ व्यस्त नहि होब' चाहैत छलहुँ । किएक नहि चाहैत छलहुँ, से हम स्वयं नहि जानि सकलहुँ । खाली एक रत्ती मन उदास भ' गेल । एहो अधलाहे लागल । बजैत होयतैक सोचिकलाँ राहुक आठ । ओना स्टेशन, प्लैटफॉर्म किछु नव नहि रहय, तथापि कनेक अनचिन्हार जकाँ लागल । चौक-तौक, खम्हा आ घड़ी, कल आ स्टॉल अपना जगहेपर रहैक आ अपने ढंगसँ तैयो किछु कराक लागय । कैकटा नव सिनेमा सबक पोस्टर सभ सजाबयाक' राखल रहैक । हमरा भक द' बेनर स्यान आबय । एएह । मात्र ई नवका पोस्टर पछैत समयक अन्तर बुझा दैत छैक ।

पोस्टरमे एकटा अभिनेत्री बहुत पैघ कारी पृष्ठभूमिपर एकसरि ठाढ़ि रहैक । ओकरा आँखिमे बेस पसार आ उदास हेरायल जकाँ । पाछाँमे उज्जर छोट सन एकटा पुरुष दौड़ल दिस चल जाइत । बाँकी कारी-कारी । माने अन्हार । लगैत, जेना ई पोस्टर कोनो अत्यन्त पुरान फिल्मक छैक । वा भ' सकैत अछि, उतारब बिसरि गेल होइक पोस्टरबला । नहि तँ एना कतहु रहितैक !

हम प्लैटफॉर्मसँ झटकारि क' बहराय चाहलहुँ । ई अभिनेत्री खगेन्द्राकेँ बड़ प्रिय रहैक ।

पत्नी खगेन्द्रेक ओत' । गेटसँ बाहर होइत ओरी सम्हारैत हम एक क्षण ठमकि क' सोचलहुँ । वा ठाढ़ भ' गेलहुँ । फेर लगले विचार बदल' पड़ल । एक तँ खगेन्द्र होयत नहि । होयबो करत तँ आब पितीक संग रहैत अछि । रिलिग्राइल छैक मड़ा अधलाहि । हमरा हेतु ओकरा कोनो असौकर्य भ' जाइक सेहो अनुचित । अथक' तँ कतहु अन्तहि पड़त ।

स्टेशनक हातामे रिक्सा-टिकिट गाड़ीक हल्ला गुल्ला आ व्यस्तता कम भ' रहल छलैक । लोक सेहो पतरा गेल रहैक । हम आगाँक मुक्त आ नियन लाइटक चकमकाइत बैसैत रहलहुँ एकटा नेताक कुतूहलक संग । बुझायल, ईहो हमरा देखल नहि छल । जानि नहि, आगाँ आर की सभ परिवर्तन भेल होइक जे हमर पहिलुका देखल नहि हो । परन्तु एहू चिन्तासँ हमर पयरमे गति नहि आयल । ठाढ़ रहलहुँ । आखिर जाब' जयब आ कोन ठामे जायब !

एकर निर्णय होयब जरूरी छल। एक बिरर्ख सभ दोस्त, परिचितक नाम भजिया गयलहुँ। कतहु मन प्रसन्न नहि भेल। तखन हारिक' छोटी लड़का पहिने एक प्याली चाह पीबिक' निर्णय करबाक विचारे ढुकर' लगलहुँ।

ओहि दोकानपर उएहे पुरना भीड़। चुकड़ीक चाह। सोन्हायल गंध आ मनपसिन्न रंग। दू चारि घोंट ओठसँ उतरल तँ अनेक स्फूर्ति भेल—हुनी नहि आब। तुरन्त कोनो निश्चय क' रिक्शा धरब आ पहुँचब। बड़ घायल लगैत अछि मन।

सुस्मिताकेँ चिट्ठी भेटि गेल होयत संभवतः। भेटले होयतैक। आ ईहो उमेद जे ओ डेरामे प्रतीक्षो क' रहलि हो। ताहि हिसाबेँ आब विलम्ब भ' रहल अछि। अबेरे बेचारीकेँ असुविधा होयतैक। हम जल्दी-जल्दी रिक्शा ठीक क' विदा भेलहुँ खजांची रोड। आय रिक्शेक चालि मिरहिसी बुझाय। अनुराइत कहलियैक—"कनी फुर्तियेसँ चल' हौ भाइ।" ओ पाँच-सात डेगधरि तँ बेस फुर्तीसँ चलौलक, मुदा फेर उएह चालि। तामसो उठल। होअय जे अपनै चलब' लागी रिक्शा आ एकरे कहियैक "बैस' आरामसँ सौंसे। नालायक नहि त' न!" परन्तु से संभव कहाँ भेल! इंजोतसँ नायब सड़क निर्धारित गहींस बना रिक्शाक पाछाँ-पाछाँ चलैत रहल। हमर मन सड़क आ चौबट्टीक एहि भीड़मे फेर उदास भ' गेल आ निर्णयहीन सेहो। कतेक चिन्तित! अपन परिस्थितिकेँ हम एको क्षण बिसरि क' नहि रहि सकैत छलहुँ। सभटा वातावरण उएह रहितो हमरा हेतु बोहने लागय जेना अन-चिन्हार समाजमे होइ। सभसँ पहिने तँ स्टेशनक 'चौराहा' देखिक' अकचका गेल फुरल रहल। हठात् भेल, कोनो आगे स्टेशन तँ नहि उतरि गेलहुँ! परन्तु से भ्रम बेसी काल नहि रहल। स्टेशन ठीके रहैक। खाली ई चौराहेटा परिवर्तित भ' गेल रहैक। कोनो दुब्बर-पातर बाल संगीकेँ जेना कतोक वर्षक बाद कियो देखय आ बहुत मोटा गेलाक कारणेँ, ओकरा चीन्हि कुटि सकबाक कारणेँ चीन्हि नहि सकय। हमरा सैह लागल ओहि चौबट्टीकेँ देखि। आ मने-मन संवादो तहिना भेल ओकरा संग—तुर परबा, तोरा तँ चिन्हले ने भेल! तहिना ने 'जबर्दस्त' मोटा गेलेहेँ जे ...। रिक्शापर हमरा हँसी लागि गेल। फेर मन अबेरे गंभीरो भ' गेल। हम ताहि दिन जाहि होटलमे नियमित चाह पीबी तकरा आगाँ द' क' रिक्शा । रहल छल। हम चिन्ह् पहुँचाने देखलियैक। लागल, जेना ओ जगजियार नहि होइक।

सभटा जेना मनहूसीपे आ विषन्नता किस खाहि रहल छैक। आ ई समय? एहिमे कोनो निज मोहायल कतसँ? सभ जुआनीए'मे बुढ़ारी जीब' लागल अछि। दिन कटबाक मुद्रामे। जतय निज मन पड़ैत अछि, सभक चेहराक खोकड़ी खोखचि गेल छैक। शहर भरि जेना खोखचि गेलैक अछि। दू मकानक बीचक खाली गली पर्यन्तमे मकान तान ठाढ़ भ' गेलैक अछि। शहर आब कतहुसँ फैल नहि लगैत अछि। एक घरक ठीक पाछाँ पहुँचमे लोकके आधा मीलक चक्कर काट' पड़ैत छैक।

धन्हाद-इजोत सड़कपर हमर रिक्शा कखनो एकसर नहि अछि। आगाँ लागल पचीस रिक्शा आ पाछाँ सेहो चालीससँ कम नहि। बेस पैघ पतियानीक बीचमे हमर रिक्शा? ट्राफिक पुलिस अपन तरहत्थीसँ पूरा पतिनीकेँ रूपने ठाढ़ अछि। ओकरा मुँहमे लटकल सीटी लगैत छैक, जेना चूनक ढेप लटकल हो! हमरा हँसी लागि जाइत अछि।

मनुष्य कोनो स्वचित क्रिया व्यवस्थाक प्रति अपन कोनो तरहक घृणाकेँ आब खोल-पोल व्यक्त नहि क' पबैत अछि। कोनो उत्पात घृणा व्यक्त करैत अछि। 'मुँह चून सन लगैत छैक' पुलिसक से भाव 'ठोढ़मे लटकल चून' गढ़िक' सन्तुष्ट भेल। जेना चौकी देत बड़द हरवाहक छिटकारीपर खूब तेजीसँ आगाँ तँ बढ़' लागल हो, मुदा चौकीक एक कातक बड़द्दी खुजि गेल होइक। पाछाँ-पाछाँ चौकी जन्ने घिसिआयल जा रहल हो। रिक्शावला सभ फुर्तीसँ उचकि-उचकि क' होरब शुरू कयलक। हमर साँस छूटल। हः! ई शहरक चौबट्टी सेहो शेष होइत अछि। उत्साहमे, जल्दीमे, हड़बड़ीमे कहाँ अंत हतने भागल आइ। चौबट्टीपर पुलिसक तरहत्थीक बाट ठाढ़ रहल! माने एकटा जबर्दस्त अर्द्ध विराम! नगरक अर्द्ध विराम। ई सोचब हमर पूरा रिक्शा-यात्रा कोना तय करबा देलक से हमरा ठेकान नहि। खाली खजांची रोड दिस अपन मुख्य सड़कसँ रिक्शा पैस' लागल तँ पुस्तकक दोकानक प्रकाशकक साइन बोर्ड देखि क' चौंकलहुँ। हमरा मन पड़ि गेल। आ घृणा आयल। फेर तामस उठल—ई प्रकाशक आधा पोथीसँ ऊपर, माने छ-आठ फर्माक शुरू पढ़ब क' पाइ नहि देलक—यद्यपि से शुरू हम बी० ए० परीक्षाक समयमे रातिमे जागि-जागि क' देखने रही पाइक अभावमे। रोड दौड़ैत रहल। स्वाभिमानकेँ ठीक नहि बुझायल। मने-मन ओकरे प्रतिपक्ष-स्वाच्छन्द क' देलियैक। ताहि दिन बड़ शान्तिवादी आ आदर्शवादी रही। धनको अभावमे अपने कोनो दोष बुझाय, ई रहय

मानसिक अवस्थाता ! जाय दे ''' । पातरोमे पातर गलीक मुँहे पर, फल छुर-छुर-छुर-छुर ओहिना बहैत— अहती धीड़ाक मूलय परै । इएह एकटा वस्तु तँ परिचित पुरान भेटल !

हम रिक्शासँ उतरलहुँ । पर्याप्त देलियैक आ अन्हारमे देत' लगलहुँ । हमरा बुझायल, हम हरतीक एहि घर-घोर अन्हरियामे पहिल बेर उतरि रहल छी ।

हमरा किछु नहि सूझल अछि—वत' की छैक ? कोन वस्तु कियेक छैक आ ककरा हेतु ? खंभ पोस्टपर मेहो अन्हरिया सटपाल । हमर डेग यक-भकायल भावेँ बड़ स्थिरेँ बढ़ि रहल छल । ओत' पहुँचिक' मनमे आबि रहल छल जे बेकार अयलहुँ—एत' । घूरि जयबाक चाही''' किंवा कोनो होटलेमे भरि राति''' ।

तीन सीढ़ी चढ़लापर बरंडामे आबि सकैत छी । बरंडाक बल्ब ओहिना नहि रहि पबैत छैक तीन दिनसँ फ्यूज । जेना खुजल बरंडा हो तँ कहूँक बल्ब नहि रहि पबैत होयत, कारण कयो खोलि क' ल' जाइत होयत । तेँ दोसर सीढ़ीक अन्हार तर हम ठाढ़ गुलशनिमे घरक वर्त्तमान वातावरण जानि लेबाक हिसाबेँ कान लगौने रहलहुँ । भीतरसँ खाली कलशेँ भरल बाइल बाल्टीनक स्वर आबि रहल छल । हमरा लेल अनुपयोगी । आ कोनो निखाश खसबाक सुगबुगाहटि । तकर तुरन्ते बाद बामा दिसक कोठलीसँ पुरुष स्वर उठल— 'विचित्र हालत छैक घरक । के रखने छल गिलास एहि रैक पर ?' फेर स्त्री स्वर ! हम धड़धड़ाइते चढ़ि गेलहुँ बरंडापर । लागल, केबाड़केँ जेना धकधकौलियैक जेना हम अपन परिचितक घर नहि, कोनो तेहुल्लाक केबाड़ लग ठाढ़ होइ । नाथ रहिल देकैक । सन्तोष भेल । केबाड़ बाहरबला कोठलीक खोलल गेल । इजोत बारल गेलैक । हम बीच चौखटिक प्रकाशमे ठाढ़ रही ।—'अरे, अहाँऽ ?' सुस्मिता दू डेग हमर दिस बढ़ि आयलि । देखलक । ओ खूब सुन्नर साड़ी हल्लुक गुलाबी छींटक पहिरने रहय । गुलाबी साड़ी । ठोढ़ोपर भरिसक गुलाबी लिपिस्टिक आ सबका लुबी, ई बूझा ओकर विशेष बात छैक । सुस्मिता बेस प्रसन्न आ आनंदक ठाढ़ि रहय । हमर मुँह केहन लगैत होयत से हम नहि कहि सकैत छी । हँ, एतबा बुझायल जे ओ कतहु बाहर जयबा लेल तैयार अछि । फेर जेना ओकरा किछु फुराइ । ओतहिसँ चिचिआयलि—'सुनै छी, एम्हर आउ देखियौ । के ?'

—इएह कनेक 'नोट' ठीक करैत छी । अयलहुँ । के ?' योम्हरसँ पुरुष स्वर ।

—"आउ ने । ठाढ़ कियेक छी । ओहि कुर्सी पर नै, नेनाक-मुड़का पानि हेरा देने छैक । एम्हरका पर बैसू ।" हम नवागंतुक जकाँ बैसि गेलहुँ । सुस्मिता खाली देखिक' बिहुँसि देत छलि । हमहुँ जबाबमे बिहुँसि दियैक । ओ ठाढ़िये रहय । हम कोठलीक परिवर्त्तन-परिवर्द्धन देखबामे आँखि घिरा रहल रही । एकटा खूब सुन्दर नव फोटो पिचाओल गेलै अछि—एम्हर । ओहि रैकमे राखल छैक । हमर आँखि टिकि गेल ।

—'ई कोना छथि ?' सुस्मिता पुछलक । हम ओकरा दिस देखलियैक —'ठीके छैक । तोरा लोकनि ? आ तोहर बाल गोपाल सभ ? देखैत नै छियैक ?' हम पुछलियैक ।

—'बाँकी स्कूल ।' ओ किंचित लजायलि जकाँ बाजलि । तकर हमरा अर्थ नहि लागल ।—'कँटा छौक ?' हम पुछलियैक ।

—'अरे अरे, वाह वाह ! कोम्हरसँ ओ । ई अचानक ?' हमरा संतोष भेल । चिट्ठी नै भेटलैक सुस्मिताकेँ । ठीक भेल । हम चुपचाप हँसैत बैसल रहलहुँ । खाली हुनक अभिवादनक प्रतिअभिवादन क' देलियनि ।

—'दू बर्खेँ काम नहि भेल भेंट भेना हमरा लोकनिक, नै ? ओ पुछलनि । हुन मूड़ी डोला देलियनि । सुस्मिता अपन घरक एहि बातपर हँस' लागलि । जे-से । ओकर ई मौलिक हँसी कतहुसँ कुण्ठित नहि भेल छैक आइयो । ईहो हमरा संतोषक विषय लागल । एकटा उत्साहवर्द्धक समाचार ।

—'तखन कोना की ? की कार्यक्रम ?' ओ पुछलनि अर्थात् श्री विष्णु-चन्द्रजी—सुस्मिताक पति ! हम अपन फन्हुँक ओरी कालो राखि देलियैक । सुस्मिता कुर्सीसँ उठलि आ ओकरा दोसर घरमे जाक' टाङि आयलि होयति । ओहि घरमे टंगतो छैक प्रायः ओही देवाल पर । ओना कोठलीमे काफी नवो नव वस्तु, वातावरण सभ बदलित छलैक । हमरा एकरत्ती अपरिचित सन अनुभव भेल । तकरा रेयाङिक' मनसँ भगौलहुँ ।

—'मुँह हाथ धो लिय' ने । गाड़ीसँ उतरलौहेँ ने ?' सुस्मिता पुछलक । नीक लागल ।

—'उठै छी । कोनो हड़बड़ी अछि ? पहिने एक प्याली चाह पियाउ सुस्मिता । भरि बाट कतहु टेसनपर चाह नै भेटल-ए । मन विकल अछि ।' ओ फेर खूब जोरसँ हँसलि । वरो हँसलथिन । ओ हमर 'विकल' शब्द पर सबाक' हँसलि । फेर मनसा दिस गेलि । हमरा नीक लागल ।

एके मिनटमे ओ घुरि आयलि । कातमे बैसि गेलि । हम आश्चर्य भावेँ ओत दिस देखलहुँ । विष्णुचन्द्रजी घड़ी देखलनि, फेर अपन कनियाँ दिस देखलनि । ओहो देखलकनि । ओकरा आँखिमे किछु विवशताक भाव रहैक । हमरा किछु अनुमान भ' गेल । हम अपन आँखि अनमनायल रखबाक यत्न कयलहुँ— जेना हम किछु देखिये नहि रहल होइ । किछु क्षण नितान्त चुप्पी रहलैक ।

—'कतेक बजलै ?' हम अनठियबैत पुछलियनि ।

—'पाँच मिनट छै बाँकी नौ बाजमे ।' हुनकर जेना तोंता मुक्त भेलनि ।

'तखन आर की कार्यक्रम अछि ?' हमरा मनेमन हँसी लागि गेल । बाहरसँ बेस गंभीर रहलहुँ । विष्णुजीक आदति ।

—'अहाँलोकनिकेँ विलम्ब तँ नहि होइत अछि ? जेना कोनो कार्यक्रम हो ?'

—'हँ ! हमरालोकनि बस निकलिये रहल छलहुँ । तुरन्त । सिनेमाक टिकट कटबा लेने छी । चलब अहूँ ?' ओ बेस हुलसुक भेलाह अपन कार्यक्रमक सूचना द' क' ।

—'नै नै । हमरा इच्छा नहि अछि । मन बड़ भारी लगैए ।' हम हुनका मुनत कयलहुँ ।

—'सत्ये, राजूदा कथी ले अयताह । थाकल ठेहिआयल होयताह । आराम करताह । घुरनाकेँ हम बुझा देलिऐक अछि । जल्दी चौका देलनि । चाह चढ़ा आयल छिऐक । जे घड़ी ने आबि जाइए । राजूदा''सुस्मिता हमरा दिस बड़ असमंजस भावेँ देखलक । हम बुझलिऐक ओकर मन । कतेक हँसी लागल, कते दुःख भेल । मुदा ओकरा मुक्त करैत हम कहलिऐक—'हँ-हँ तोँ चिन्ता नहि कर । हम कोनो पाहुन नहि छी एहि घरक । अपन सुभीता हम बना लेब । जाइ जो । आब तँ छूटि जयतौ ।' हम उत्साहित कयलिऐक ।

—'हँ-हँ चलू । फेर रिक्शो-तिक्शो भेटमे समये लागत ।' विष्णुजी हड़बड़ा क' उठि गेलाह ।

—'ठीके तँ छैक । कनेक चाह पीबि ली, राजूदा संग । एतेक विलम्ब भ' गेलाह''

—'अहूँ की औपचारिकतामे लागि गेलौं' ? विष्णुजी कनेक खीझ होइत बजलाह पत्नीकेँ ।

—'ठीके तँ । जो ने तों । हम पीबि लेब ।' मुदा ओ मुँह खसौने बैसलि रहलि । ओकर ई जिद हमरा बड़ पैघ संतोषो देलक । ओकर एहन बात छैक जे हमरालोकनिक सम्बन्धबोधक सेतु अछि । कहियासँ ने । बहुत दिनसँ । हम फेर चुप भ' गेलहुँ ।

छौंड़ा चाह अनलक अछि घुरना । बेस गमैया । चुपचाप आबिक' चाह धरा गेल । हम पीब' लगलहुँ । विष्णुजी आदतिक विरुद्ध फोंटमे ढारि क' पीब' लगलाह । सुस्मिता एक बेर तँ हुनका देखलकनि, फेर अपने भावेँ पीब' लगलि । जेना ओकरा कोनो हड़बड़ी नहि होइक । हमरालोकनि आधे पीने होयब चाह तावत विष्णुजी प्याली-तश्तरी टेबुल पर ससारि क' राखि देलथिन आ रूमालसँ ठोढ़ पोछलनि । हमहूँ जल्दी-जल्दी पीब' लगलहुँ—तकतीको हारिक' । सुस्मिताकेँ आभार देबा लेल अपन ई व्यवहार हमरा नीक लागल ।

हबीगढ़क हालति एखनो सैह छैक समाजमे, पुरुषमे । विष्णुजी उठलाह । सुस्मितो उठि गेल । कोठलीसँ बहराइत विष्णुजी सूचना देलनि—'देर तँ केर भोर नष्ट होयत ।' हम हँसलहुँ । तीन चारि डेग बरंडापर चल गेलाक बाद सुस्मिता घुरि आयलि । बाजलि—'नहयबाक मन हो तँ साबुन छैक स्नानघरमे । नहा लेब । आ चाहक इच्छा हो तँ दोकान क' नहि पठायब, घुरनाकेँ कहबै, बना देत । ठीक ?' ओकर खिड़ँसी आ 'दोकान नहि पठायब'क अर्थपर हमरो हँसी लागल । ओ चल गेलि । ओकर ई तम कहबाक समर्थनमे बरंडासँ विष्णुजी सेहो बजलाह—'हँ' से दोकान नहि पठायब राजूदा ।' हमरा हँसी लागल । ओ लोकनि तीन सीढ़ी उतरि गेल होथि संभव । हम कुर्सीसँ उठिक' गाछी-गाछी चारि डेग गेलहुँ । गलीमे ओ लोकनि जा रहल रहथि । हम घुरिक' आबि फेर कुर्सीपर बैसि गेलहुँ । फेर बच्चा सभकेँ देखबाक स्मरण भेल । हम टहलि क' भीतरवला कोठलीमे गेलहुँ । दुनू बच्चाक मुँह उघार रहैक—दुनू निश्चिन्त सुतल । हम निहुँरिक' देखलिऐक । बेटी पैघ छैक । चारि वर्षक, छिड़रयाम । एकर जन्म भ' गेल रहैक । बेटा छैक दू वर्षक, गोर-नार, नीक छवि-छटामे । हम नाम मात्रक दूरीमे सूतल दुनू बच्चाकेँ बेरा-बेरी छूबि अनुभव कयलिऐक । फेर नहि रहल गेल तँ बेटीकेँ चूमा लेलिऐक । कनेक तृप्त भेल मन । फेर कनेक उदास भ' गेल । चारूकात देखलिऐक—विशेष किछु परिवर्तन नहि । पत्रिका सभ, अखबार, कपड़ा-लत्ता, पलंग आ शृंगार-मेज । समटा वैह सभ रहैक । टंगनीपर एकटा फाइल-चीटल ब्लाउज टाङल रहैक । सुस्मिताक । देखिक' हमरा कचोट भेल । अद्भुत अछि देहो । एकरा

एना टकने अछि जेना दर्शनीय वस्तु होइक। हम ओहि कोठलीसँ बहराक' बाहरवला बरंडापर टहल' लगलहुँ।

घुरबा भरिसक रोटी पका रहल छलैक। हमरा भेल जे एक बेर मनसा भरि हुचकी दिऐक। मुदा से कयलहुँ नहि। टहलिक' स्नान-घरमे पैसि गेलहुँ। बत्ती बारलियैक तँ सामा दिसक लस्तागर सावुनक टटका डिब्बा। हम प्रसन्न भ' उठलहुँ। भेल जे नहा ली। सेहन्तगर बुझायल नहाएब। मुदा फेर आलकसि भ' गेल। अनठा देलिऐक आ घुरि अयलहुँ। बाहरवला कोठलीमे एकटा कुर्सीपर बैसि गेलहुँ। कातमे ट्रांजिस्टर राखल रहैक। नवे लेलक अछि भरिसक। लगौलिऐक। फेर एक्के मिनटमे बन्दो क' देलिऐक। हम फेर टहल' लगलहुँ। कोठलीभरिमे एक चक्कर। मन तुरन्ते उबिया गेल। इच्छा भेल जे आँखि-मुँह पर ठंढा पानि छीटी। संभव जे मन किछु हल्लुक हो। उठलहुँ आ स्नानघरमे आ आँजुरे-आँजुर पानि छीटलिऐक मुँहपर। कतेक स्वाद पड़ल। ओरयरक तौलियासँ मुँह पोछैत अयना लग ठाढ़ भेलहुँ। ई अयना एहन पैघ आ सुन्दर नहि रहैक एहि घरमे। आब तँ पूरा एकटा आदमी एहिमे ठाढ़ देखा जाइत छैक। हम केम फेरैत शीशाक प्रशंसा कर' लगलहुँ। ओतऽसँ उठिक' गेलहुँ पत्रिका सभ दिस। फिल्मी, गैर फिल्मी, व्यावसायिक पत्रिका इत्यादि छैक। बहुत दिनसँ प्रायः देखल नहि गेलैक अछि। ईहो सभ जे देखल जाइत छैक तकरो कारण अद्भुते रहैत छैक। बेसी काल तँ सिनेमा देखबाक इच्छा आ पाइक अभावमे सनेहि क' देखल जाइत छैक। सिनेमाक बड़ चाट छैक हुनु व्यक्तिकेँ। कोन आश्चर्य यच्चौ सभके "एहुने भ' जाइक। हमरा अनेरे हँसी लागि गेल। ई सभ चिन्ता बेकार थिक। निष्प्रयोजन थिक ई सभ। हमरा नहि किछु फुराय। एकटा पुरान धर्मयुग उनटाक' देखलिऐक। सभटा नवा —चाउकौथ दरबसँ ल' क' चाल जगत आ डाइभैं आगाँ घरौसा। पुस्तकालयक विज्ञापन धरि। सभटा बैह बासि-तेवासि। मन उबिया गेल। अपन कोठरी घाकिक' अनलहुँ। कागतपत्रक फाइल बहार कयलहुँ। एक दिनक मूड खाजिक' अयबाक चसक-गनीपर व्यानिपूर्ण हँसी हँसलहुँ। फेर यौक गुँह मन पड़ि गेल तँ उदास भ' गेलहुँ। ऐन्डरब्यू छैक काल्हि बारह बजे। आइ नहि। गाममे अबुता क' पठयबा लेल एक तारीख पहिने काल्हिक' हम गोकेँ हड़बड़ा देने रहियैक। हमरा शहर अयबाक ब्योँत जएह करति, तेँ से कहने रहियैक।

□

अमूर्त यथार्थक स्पर्श

'ओकरा मनमे बड़ मनोरथ छैक जे बेटा 'पोरफेसर' होइक। लोक 'पोरफेसरक' भारक कतेक मान-दान करैत छैक। बेटा बड़ कष्टसँ पढ़लकैक तेँ नीक दरमाहाबला ई 'पोरफेसरी' अवश्य होइक, जीवनमे आबो सुख भेटैक। बिआह-दान करबो, अपन खूब नीक डेरामे रहबो सभ।'—एखवा माथो सोचैत माँकेँ उपासीक घरोहि धर' लगैत छैक। ओकर कुर-कुरू भ' गेल दखनाक आकृतिमे उनटवा-उनटवा पर झूनू आँखि, जेना सिकुल भ' क' लटकल रहि जाइत छैक आ तेँसे शरीरक जे दू-चारि बुन्द शोणित, से पेहरेपर आबिक' जमा भ' जाइत छैक। हमरा ओकर एहन आकृति देखबाक साहस कहियो नहि भ' सकल। हम, अपन ओकरा उकासी उठैत छैक, तँ आन दिस मुँह कयने खाली ओकर खों-खों-खोंकेँ सहैत रहैत छी। सहिते चल जाइत छी कान-कपारपर ठक-ठक। ओकर साँस फुलैत रहैत छैक

आ हमरो टा पोंटाहा रहैत अछि, कि तँ जुदनाक धमकि क' ढलानपर चल जाइत छी, आ टहुल' लेल लम्बोदर ओत'। ओहो कोषक क' भाड़क ओरियाओनमे नहि रहिक' कुसियारक पतोहि किंवा घास लेल बाध गेल रहैत अछि तँ घुरिक' टुटलाहा दलानक ओहि चौकीपर ओलड़ि रहैत छी जकर एकटा तख्ती बीचो-बीच बहरा गेल छैक। कुनु कालसँ पीठ दू बित बँटायल रहैछ आ बीचवला पीठ ओहि खलियाहा जगहमे गड़ल रहैत अछि। अनमन तख्ते जकाँ। बड़ी काल पड़ल-पड़ल आँखि लागि जाइत अछि आ खिदल कहाँदन सभ देख' लगैत छी। एकटा बड़का विशाल पहाड़। वन-झाँखुरवला रोइयाँक तरसौं विशाल पहाड़ बड़ी दूर धरि पसरल जाइत छैक। जेम्हरे कनेक एक-बट्टी अथवा इजोत बुझाइ पड़ैत अछि कि लंक ल' क' ओम्हरे पड़ाइत छी। परन्तु पहुँचिक' पबैत छी बड़का दुर्गम पहाड़क एकसर भयाओन वातावरण। अन्हारक ठहक्का। आ जंगली जानवर सभक गुम्हरब-बाजब। देह भुलकि जाइत अछि। आ होइत अछि जे पड़ाइ कतहु लंक ल' क'। मुदा सभ दिस तँ घेरने अछि। एकटा भीलायम गाछक ठाढ़ि जकाँ अरड़ा क' खसि पड़ैत छी ओहि जंगल झाड़क महारोग सरहुक खरहोड़िमे नपता जकाँ। अचेत भ' जाइत छी। तखन ओहूमे विस्तृत पहाड़परक एकटा चोटीपर उज्जर दप दप टोपीवला पहाड़ भगवान जकाँ बिहुँसैत अछि आ आशीर्वाद देब' चाहैत अछि। हमर आँखि खुजि जाइत अछि। ओहीमे एक मिनटक भीतर हजारसँ बेसी लोक। सभक माथपर टोपी। सब टोपीपर किछु ने किछु लिखल। हमरा ओ भगवान जकाँ पहिल टोपीवला लोक कहैत अछि—लग आब' आ सब टोपीपर लिखलाहा बात पढ़'। हमर आँखि चोन्हिया जाइत अछि। हम किछुहुँ नहि पढ़ि पबैत छी। ओ जाहि लिपिमे लिखल छैक से हमरा पढ़' नहि अबैत अछि। हम फेर पढ़लाहा विद्याक सभ सूत्र सिड़बैत छियैक। मुदा तैयो नहि।

ओ हमरा बिहुँसिक' पुछैत अछि—'तोँ पढ़ल छेँ'? बूड़ि नहि तन! एम० ए० पास छ'। जा डूबिक' मरि जा।' ओ हमरा एकटा हहाइत-फुफिआइत बड़का समुद्र देखा दैत अछि आ हम ओहि दिस जादूसँ ठेलायल चल जाइत छी। हम बहुत दुःखी आ पराजित भावेँ बढ़ल जाइत छी। हमरा पीठ पाछाँ कएटा टोपीवला लेना बड़ दुर्व्यास करैत हो एहि बातक, तहिना खूब चिक्कन सीमे संवाद दोहरा रहल अछि—हुँह, एम० ए० पास। जकरा टोपी पढ़लेँ नहि होइतैक सेहो पढ़ले लोक भेल ?

हम जखन ओहि समुद्र लग पहुँचैत छी तँ एकटा पहाड़ ओहि विस्तृत पानिपर बत्तकक झुंड जकाँ प्रेमसँ हेल' लगैत छैक आ हमरा सामने आबिक' एकटा अलच्छ नढ़िया ठाढ़ भ' जाइत अछि। ओ नढ़िया जाहि ढेँनकापर ठाढ़ हमरा दिस मनुष्य जकाँ देखि रहल अछि से ढेरी माँस-सौंस कटौक मनुष्यक अस्थिपंजर छैक। हमर देह सिहरि जाइत अछि। आतंके हम आँखि मूनि लैत छी। तखन हमरा खूब विकराल, चुनौतीसँ भरल हँसी सुनाइ पड़ैत अछि आ ओहि आवाजमे—'धिक्कार! तोँ नढ़ियोक भाषा नहि पढ़ि सकैत छ' आ पढ़ल-लिखल छ'?' हम साहस क' क' आँखि खोलैत छी। नढ़िया टोपी पहिरने अछि उज्जर बग-बग। हमरा आश्चर्य प्राप्त जाप लगैत अछि। नढ़ियाक पाछाँ हजारो नढ़िया। दाँत खिसोटने, टोपी पहिरने। ओकर एहि सामूहिक उपस्थितिसँ हम तेना घेरायल लगैत छी जे कोनो बाट नहि देखाइत अछि। हमरा अपन पीठ आ कन्हापर प्रतिपल दबाब बेसी पड़ल जाइत अछि आ हमरा ओहि आतंक आ विवशताकेँ सहबासँ नीक रहता लगैत अछि डूबिक' आत्महत्या क' लेब। हमर पीठपर धक्का लागि रहल अछि। मुदा ई नढ़िया-समूह हमर शेष जिजीविषापर व्यंग्यसँ दाँत बबैत अछि आ जेना एके संग सैकड़ो थोलक पाहुठी बजाओल गाय थनगन तहिना आवाज करैत अछि। आ फेर खिलिश' कह' लगैत अछि—एहि समुद्रमे कतेक मूर्ख मरि गेल अछि, नहि बुझल छ'? हमहूँ सभ मरिये गेल रही। मरहि लेल ठेलि क' पठाओल गेल रही। मुदा संयोग कह' जे बाँचि गेलहुँ। रच्छ रहल भगवानक, साफ बाँचि गेलहुँ। नढ़िया बनि गेलहुँ। फेर विकायल हँसी।

हमरा बुझहिमे नहि आबछ जे मारल जायवला लोक नढ़िया बनि गेने बाँचि कोना जाइत अछि। मनुष्य नढ़िया कोना बनि सकैत अछि? आ एके जन्ममे मनुष्यके नढ़िया बना के' सकैत छैक? हमर ओहन हताश आ त्राससँ भरल मनमे ई प्रश्न बड़ तेजीसँ फुरायल। मुदा बाजल नहि भेल। दयनीय भावेँ एक बेर आँखि उठाक' देखबाक दुस्साहस कयलहुँ। समस्त नढ़ियाक आकृतिपर मेंही-मेंही सोनाक तारक जाली लपेटल रहैक आ सभक भाव बड़ आत्मीय भ' गेल रहैक। सब स्थिरेसँ भाकड़ि डोला रहल छल आ ठाढ़ छल। ओकरालोकनिक एहि शान्तिजुलूसमे अपनाकेँ एक क्षण आश्वस्त पयबाक अनुभव भेल आ ताहि उत्साहमे हम बड़ चिकरिक' बजलहुँ—'मनुष्य कोना नढ़िया बनि सकैत छैक? मनुष्यकेँ के नढ़िया बना दैत छैक? मनुष्यके नढ़िया के बनबैत छैक?' हमरे प्रश्नकेँ दोहराक' समवेत स्वरमे ओ सभ

तेना भयाक' हँसल जेना हम कोनो भारी मूर्खता क' देने होइऐक ओकरा-लोकनिक बातमे। ओ सभ बड़ी काल हँसैत रहल। फेर ओकरा सभक पाछाँ-सँ कारी-पीयर धुआँक बसात उठ' लगलैक आ आँखि कड़ुआय लागल। मुदा हम ततेक भयभीत भ' गेल रही जे हमरा अपन आँखि मीड़ब पर्यन्त पार नहि लागल। मूनियो नहि सकैत छलहुँ।

—'नों तँ जथान छ'। नेना नहि छ'। मनुष्यकेँ नढ़िया मनुष्य बनबैत छैक। आइ-काल्हि मनुष्यक समगलिंग बड़ चलि रहल छैक। तेँ नढ़ियाक आबादी जंगलमे नहि अँटलैक तँ ओ शहरोमे जाक' रह' लगलैक अछि। भगवान बेचारेकेँ चले नहि छनि। ओ तँ अपना कोटासँ ओतबे नढ़िया बनबैत छथि आ पठबैत छथि। मुदा मनुष्यकेँ ओतबे नढ़ियासँ काज-प्रयोजन चलि नहि पबैत छैक, तेँ बाघ बाघ-बन, जंगल-झाड़सँ नढ़ियाक तस्करी कयल जाइत छैक। गामो-घरमे तैयार कयल जाइत छैक। हमरोलोकनि कौलिक रूपसँ नढ़िया नहि छी। बनल छी। बड़ मुसीबतमे छी। खड़ो नहि चिबाव' पड़ैत अछि। खाली माछहि डोलाब' पड़ैत अछि। आ दाँत चियार' पड़ैत अछि। बस।' सभ निर्लज्जतासँ बिहुँसल।

हमर माथामे चक्कर देब' लागल। अद्भुत छैक। चारूकात धुआँसँ मेघ बढ़ल आबि रहैक। से देखिक' अन्हार आर गाढ़ भेल जाइक।

—'की सोचल'? एकटा पुछलक। हम मूर्ख जकाँ ओकरा देखिते रहलियैक। हमर चुप्पीकेँ अनुकूल बूझि ओ सभ हमरा चारूकातसँ घेरि लेलक आ हू-हू-ऊँ-ऊँ कर' लागल। हमर देह सिहरि गेल। दुर्गन्धे नाक फाट' लागल। उत्साहमे ओ सभ हमरा झम्होर' लागल। ससरि कुर्ता फाटि गेल होयत आ बाँहिपर, पीठमे, नछोर लागि गेल होयत। धुआँक धूकसँ भरि देह लस-लस कर' लागल। भय आ घृणासँ दाँत कटकटाय लागल। ओतेक रास नढ़ियाक बीचमे हम स्वयं एकटा नढ़िया भ' गेल रही। एतेक लगहेँ पहिल बेर अनुभव भेल जे सभ नढ़िया सभ तरहक छैक। ककरो गर्दनिमे कंठी लगबिचार, ककरो कपारपर भव्य ठोप, ककरो रामनामी टोक्का, ककरो किछु। ककरो देहमे उज्जर दक-दक जनौ! हमरा आश्चर्यो नहि भेल ठीकसँ, खाली ओतेक रास टोपीबला नढ़ियाक बीच हमहूँ नढ़िया बनल नछोर खाइत दुर्गन्धि घोंटैत, खसैत-पड़ैत जीवित रही। धुआँक कड़ुआहटि आब आँखि, नाक, कान, मुँह बाटे भीतर छातीमे पसरि रहल छल। हमरा देहपर भाऊ

जकाँ अचारि होब' लागल। हम आब असहाय भ' गेल रही। हमर सम्पूर्ण चेतना मात्र नढ़ियाक बोली, हँसी, स्पर्श आ आक्रमणेसँ घेरा गेल रहय। हमरा लगातार पाँच मिनट धरि लागल जे हम नढ़िया छी—आब हमहूँ नढ़िया भ' गेल छी। कि तावते एकटा नढ़िया बड़ी जोरसँ कूदिक' गर्दनिपर एक हुबक्का देलक आ सभ हुआँ-हुआँ कर' लागल। हम चिन्ता आ आतंकसँ प्रायः अचेत भ' गेल होयब।

हमरा कन्हापर ठीक गर्दनि लग एकटा बड़ मोलायम पाँखिक चिड़ै आबिक' बैसल। ई अनुभव हमरा ओहि मनःस्थितिमे एकदम नव आ अलौकिक छल। आँखि खोलि क' देखबाक साहस नहि भेल हमरा। मात्र अनुभव करैत रहलहुँ। ओ चिड़ै अपन लोलसँ हमर गालकेँ छूलक। हमरा बड़ ध्यान पड़ल। बुझायल, जेना हम नीकेँ भ' रहल छी। ओ चिड़ै कय क्षण धरि स्नेहसँ अपन लोल हमर गर्दनि, गाल आ माथपर सोहरबैत रहल आ दुलार करैत रहल, जेना हम नेना होइ। ओकर लोल जेना मखमलक बनल रहैक। ओकर एहि स्नेहसँ हमरा भीतर किछु शक्ति आयल आ हम आँखि खोलि क' देखबाक चेष्टा करैत रहलहुँ, करीब दू मिनट धरि। जेना किनो दुन्दुटा फूटल बासन जकाँ रेति देल गेल रहय। खुजल आँखि आ हम अपन बाम कन्हापर बैसल चिड़ैकेँ देखलियैक। लाल टेस। गमगम। हमरा तथः बुझायल जेना ई चिड़ै नहि, लौकिक कोनो। हम मूड़ी निहुरा लेलहुँ चिन्तामे। तावत फेर उएह हुआँ-हुआँक अन्हर-बिहाड़ि! हम गहने नजरिसँ चारूकात देखलियैक। कतहु मनुख नहि। मात्र नढ़ियाक संसार! कोम्हर जायब, कोना जायब?

हमर एहि चिन्ताकेँ ओ चिड़ै जेना हमर गर्दनिक नवक दुकदुकीमे पढ़ि लेने हो। अपन लोल हमरा कान लग सटा देलक आ चुन-चुन क' किछु बाजल। हमरा बुझायल किछु नहि। खाली ओकर बोलीक ममत्वसँ जबर्दस्त भरोस भेल जे आब किछु होयतैक। किछु अवश्ये होयतैक। की, से नहि कहि। ओ चिड़ै अपन रोइयाँसँ, पाँखिसँ हमरा कन्हाकेँ थपथपौलक आ फेर लोलसँ खोलक तँ हमरा बुझायल जेना ओ बिहुँसल हो। लोल हमर कुर्ताकेँ कन्हा लगसँ ध' लेलकैक आ दू बेर पाँखि फड़फड़ाक' फुर्र द' उड़' लागल। हमरा एके क्षणमे बुझायल जेना माटिपरसँ उठि गेल छी। आ उठले जा रहल छी। बेस ऊँच दिस। नढ़िया सभक कोहराम बढ़ले जाइत छैक। सभ एक-दोसराक देहपर ढनमनाइत हमरा दिस दौड़' चाहैत अछि। हुआऽऽऽ आसमर्दसँ मेघ

फटबापर बिर्त्तें छैक। परन्तु हमरा कानमे ओ सभ आवाज क्रमशः कम होइत-होइत बिला जाइत अछि। हम बैरायल छी जे एकटा चिड़ैक खोलमे एकटा सौंसे मनुष्य एतेक ऊँच आकाशमे लटकल छी। कोनो क्षण खसि सकैत छी आ किछु पता नहि चलत। परन्तु से चिन्ता हमरा घेरा नहि सकल। हम ओकर मखमल सन खोलक बीच अपनाकेँ सुरक्षित आ सार्थक बुझि रहल छलहुँ। हम डरेँ आँखि मुनने रही। खाली हमरा शरीरपर सिमसिम डोलयबाला हवा लागि रहल छल भरिसक, जे चिड़ै पाँखि जे मारैत छलैक तेँ। ओ अनुभव हमरा मनकेँ बड़ भरर देलक। शक्ति देलक। सुरक्षा देलक। हम आँखि खोलिक' देखलिऐक नीचाँ। अथाह। बाप रौ, स्पष्ट नहि की, मुदा बुझायल जेना नीचाँ अन्हारक समुद्र बिलाओल हो! हमर आँखि फेर मुना गेल।

हमरा बुझायल अन्हारक नहि, जलक महासमुद्रपर उड़ि रहल छी मात्र एकटा चिड़ैक गोलाकार खोलक भरोसे, ओकरे सामर्थ्यपर नहि जानि, भविष्यक। एहवा सोचैत लगले बुझायल जेना चिड़ै खूब तेज हबोर्में बेसी गतिमे पाँखि चलाब' लागल। खूब तेज। आरो तेज। ओकर एहि तेजीसँ प्रभावित हमहूँ अपन दुनू हाथसँ हेल' लगलहुँ। हमरा सन्तोष भेल चिड़ैक संग हमहूँ उड़ि रहल छी। किछुए कालमे चिड़ै नीचाँ दिस उतर' लागल। ओ एकटा बड़का झीलक कातमे उतरि गेल। हमरा तेहन हिसाबसँ माटिपर रखलक जेना हम चलितो फलक अभिसार देश पयने होइ, बस।

ओ हमर कुर्ता छोड़ि, उतरि क' झीलमे पानि पीलक। हमरो बड़ पियास लागल रहय। ताल। हमहूँ अँजुरे-अँजुरे पानि पीलहुँ। बड़ मधुर आ शीतल पानि। कतेक कालमे रहैक बेस पैघ कमल फूलक पतिपानी सभ। आब हम अपनाकेँ अपना जीवनमे पाबि रहल रही। चिड़ै आयल। हमरा फेर खोलमे बबलक आ फुर्र भ' गेल। हमरा चुपचाप किछु नहि फुराय, एहि बेर ओ बड़ नीचाँ उड़ि रहल छल। एतेक जे इजोरिया रातिमे नीचाँक विस्तृत जल-संसार हमरा साफ-साफ देखा रहल छल। ओ रहैक दूर धरि पसरल अथाह समुद्र। एक बेर फेर हमरा कपड़ भय भेल आ रोइयाँ सिहरि गेल। मुदा बड़ी काल ई मृत्यु-भय सहलाक बाद एकटा कनबहि भेटलैक। समुद्रक पार भ' गेल रही। मुदा दूर-दूर धरि किछु कतहु नहि। चिड़ै फेर ऊँचे दिस उड़ल चल जाइत रहय। बारी ऊँच। हमर छातीक साँस जेना बन्हर भ' क' छातीकेँ फाँक कयने आ रहल छल। हम ओकरा ओतेक तेजीसँ नहि उड़' देल

आग्रह कर' चाहैत छलिऐक। मुदा बोहि कंठमे सटि गेल रहय। नहियेँ कहल भेल। ओ उड़ले गेल। बड़ी दूरधरि जा जाक' लागल जे आब संसार शुरू भ' गेल छैक। आब गाम-घर आबि गेल छैक। चिड़ै धुरबार अपन मुलायम पाँखि मारि रहल छल। हमरा एतेक कालमे पहिल बेर चिड़ैपर मारसयँ भेल—अहा, हम एतेक भारी लदुआ सभरा एतेक दूर उघने आबि रहल अछि। एकर पाँखि मारि ऐंठि गेल होयतैक, सोस दुखा गेल होयतैक आ रोइयाँ ने कहीं एहन तीव्र प्रतिकूल बसातमे झरि गेल होइक। ओहि लाल चिड़ैपर हमरा ततबा मारसयँ भेल जे मनमे आयल, एहन सुन्दर पक्षिक एहि कष्ट यात्रासँ नीक हमरे मृत्यु! हम देखलिऐक, हमरा नीचाँ घर आङनक स्पष्ट संसार! यद्यपि एखुका चुप्पी आ सन्नाटा। एकटा भयाओन वातावरण। किछु रहस्यो। चिड़ैक उड़ब किछु स्थिर भ' गेल रहैक। हमरा भेल जे ओ थाकि गेल अछि। फेर ममता भेल।

—'कतहु सुस्ता ले। दू क्षण सुस्ता ले। तोँ थाकि गेल होयबेँ बाइ।' ओ उतरल नहि कतहु। खाली हमरा बुझायल जेना ओही बातेँ बेसी तत्पर भ' क' उड़ैत रहल हो। हम अपना नीचाँ साफ-साफ देखलिऐक चकीटा बस्ती। खड़-फूसक घर सभ। पछुआरमे जामुन आ अरड़नेबाक गाछ। गाछी स्न। आ एकटा बिसम्भ उजड़ल-उपटल आङन। चार खसल घर। ताहि खसलाह चारसँ देखायल जे एकटा बुढ़िया माटिपर ओहिना पड़लि अछि सुरकुट बूढ़ि। हम नहि चिन्हैत छिऐक। मरणासन्न छैक भरिसक। हमर हृदय भरि जाइत अछि। हम सोचैत छी, एहि बुढ़ियाकेँ लगसँ चिन्हितिऐक, कतेक लगसँ। हम माटिसँ करीब दू बीत ऊपर होयब कि हमरा बुझायल जेना हम लाल चिड़ैक खोलसँ छूटि गेल छी। आ नीचाँ खसल जाइत छी—हमर हाथ-पयर सुन्न भ' जाइत अछि। आ करेज फाँक भ' जाइत अछि। थाकैक नैसि जाइत अछि। आ चिन्ता भ' जाइत अछि, कतहु ओहि बुढ़ियेक देहपर नहि खसि पड़िऐक आ हमरे देहक भारेँ-आघातेँ ओ मरि ने जाइक! हेऽऽ' खसलहुँऽऽऽ'…

हमर निन्न टूटि जाइत अछि। घामे-पसेने देह तरबतर। चेहरा-मोहरा क्यो तत्काल देखय तँ हरफ एक-एक रेखकेँ साफ-साफ चीन्हि जाय।

दलानपर उकरैत दिनक उदासी लेढ़ा रहल छैक। हम चौकीक खाली सफ्तामे चित्त कोनहुना करोट बदलैत छी आ बामा दिसक बड़का मुखातस पोखरिक कातमे ओलरा जाइत छी। ओनाहू लगैत छी। एतेक राम करमीक लत्ती जे कहब—पोखरिक पानिकेँ मुक्त करब! हमरा तेक अबूझ

लाग' लगैत अछि जेना हमरे तकर भारा हो—हमरे करबाक हो वारगीक नहुआल । फेर हम आँखि मूनि लैत छी । हमरा माथ प' लेलक अछि । हमर आँखिमे ओ तखन चिड़ै उदास भ' गेल अछि । ओ कोन चिड़ै थिक ! केहन चिड़ै थिक ? ई स्वप्न की थिक ?

आइनमेँ मोन ताबड़तोड़ उकासी आब' लगैत अछि तँ उठैत छी चौकी-परसँ आ आङन दिस बढ़ैत छी । माँक उकासीक लग पहुँचैत छी । भप होइत अछि, यद्यपि एकदम लग आ रहल छी । ओ खोँखी करैत निहुँरि जाइत अछि । हम लगमे आब' ठाढ़ भ' जाइत छिऐक । ओ ओहु उकासीक बीचमेँ हमरा किछु पूछ' चाहैत अछि—मरिचाक ई के कत' खल' ? मुदा खोँखी नहि पूछ' दैत छैक । हम अशोराक फाटल बीचक हमेली ध' क' स्वयं ठाढ़ भ' जाइत छी आ दोसर दिस अबैत माँक उकासीक तोड़ लेब बन्द होएबाक प्रतीक्षा कर' लगैत छी । दोसर ड्योढ़ीक टाट लग बूढ़ा कुकुर कराहब कर' लगैत छैक । ओगती लग टहलैत कौआ उड़िक' महुआक धार पर चढ़ि जाइत अछि आ दलान दिससँ चर्रमर्र करैत कोनो बैलगाड़ी जाय लगैत छैक । ई सभटा फराक-फराक घटित भ' रहल छैक । आ धीरे-धीरे जेना सभटा 'फेड आउट' भ' जाइत छैक । ओकरा ऊपर भ' जाइत छैक माँक खोँखी । हम अपनाकेँ अत्यन्त टूटल आ विक्षिप्त ठीक मान' लगैत छी । माँक खोँखी तोड़ लैत छैक । ओ किछु क्षण स्थिर होएबामे लगबैत अछि । ओकर आँखिमे नोर बहि रहल छैक आ आँखिक शिरा सभ पीजल पात जकाँ लगैत छैक । पूरा चेहराक रंग लगैत छैक जेना कारी रंग फेँटल कोनो कम लाल दुखिताह मुड़त हो । ओ प्राणहीन एकटा मुहउ मात लगैत अछि । हम ठाढ़ रहैत छी । ओ अपन चौखटि लग सिबलाहा टाटमे ओठङिक' आगाँ टाङ पसारि क' बैसलि अछि ।

—'की बेरहुट करब' ?' ओ हकमैत पुछैत अछि । हम मूड़ी डोला क' किछु नहि कहैत छिऐक ।

—'चिए, एक भोर भेलह । भूख नहि लागल हेत' ?' ओ चुप भ' जाइत अछि । ओकर चेहरामेँ साफ-साफ बुझाइत अछि जे एखन हमरा नहि खएबामेँ ओकरा मनमे आश्चर्यितमे गेलैक अछि । भरिसक छैक नहि कोनो इन्तिजाम घरमे तथापि पुछि रहलि अछि । जे किछु सामान्यतः भ' सकैत छैक ताहि सभसँ अपना पयबाक इच्छाकेँ ततेक बेर ठकि चुकल छिऐक जे आब विरक्ति

होइत अछि । आब तँ बेसी काल भूखो नहि बुझाइत रहैत अछि । कोनो मन अस्वस्थ हो वा नहि, ओहिना । ओहोँ हू सोत मानसे करबाक जे उद्योग कर' पड़ैत छैक ! आ हम मुक्ति चाहैत छी ओहि सभसँ । जल्दी त्राण भेटओ ।

मागो पाबहु । कारण, ताहि बेसी-पचासीक संकल्प ल' क' गाम घूरल रही से सभ घोसड़ि गेल अछि । कतहु कोनो गुंजाइश नहि छैक । अपना इच्छेँ-तामसियेँ छाड़ि घर' आइलहुँ अछि एतेक दिन, मुदा कहाँ बरायल ? सभ चिन दुःखद आन गामक लेहुलना जकाँ मानैत रहल लोक, ई समाज । आ लेहुन-लेहुन पथर छान'बला स्नेही गप्प-शप्प, लगाब'-बझाब' करैत रहल जे बझले रहि गेलहुँ । दिन-दिन आर बन्हने पड़ल चलि गेल । कमलाक पाँकमे धँसलापर निकलबाक प्रयत्ने करैतमे आर धँसैत गेलहुँ तरर आ खतम भ' गेलहुँ । आब कहियोँ उबरि सकलहुँ । कहियो उबरियो सकब कि नहि से नहि जानि । उपटल-विपटल जकाँ आङनसँ दलान, दलानसँ बाध आ बाधसँ दलान आ फेर दलानसँ आङन करैत रहलहुँ । कोनो बात नहि बना सकलहुँ । ने कोनहु सहजिऐक हुरजोली आ कोनो देख कि भाग करब फलित लागल बीतल । नहि कोनहु सहजिऐक एहि तुआरेँ जे तकर विशेष सार्थकता नहि लागल । मन लगाब' लेल कतबो गप्प करैत गेलहुँ अपन भावनाकेँ भीतरे-भीतरे तैयो । जेना हाबाक दुःखमे कोनो अदृश्य मनुक्ख पानि मिज्झर करैत गेल । पूरा भावना पसरे मेल गेल आ सिक्ता । मन दिन-दिन अशुद्ध होइत गेल । सभ दिन अपना मिज्झर गेल जाइत प्रकृतिक रसानि बहुते गेल आ आत्मप्रवंचनाक जबर्दस्त शिकार होइत रहलहुँ । एहि मानसिक दुविधाने अपने सभकेँ, माँकेँ उपेक्षित कर' पड़ल । भाइकेँ, आन सम्बन्धीकेँ । संभव जे ओहालोकनि हमरोसँ बेसी प्रवंचित भ' आ क' रहल होथि सम्बन्धकेँ । परन्तु हमर आत्मसंगतिक ई बड़ पैघ घोँच छल जे कोनो प्रकारक भाषा आरम्भ कयनाइर ओहि गरीब लोककेँ कष्ट पहुँचबैत छैक जकरा लग एकेटा अंगा-धोती आ सेहो आगाँमे फाटल रहैत छैक । ओकर मन खसि पड़ैत छैक । यद्यपि घरसँ बहुराएब अनिवार्य रहैत छैक तेँ ओ बहुराइत अछि । जेना हमहूँ बहराइत छी । सभ क्यो कथू लेल बहुराइत अछि ।

ई बात हमर जननी खूब नीक जकाँ बुझि गेल अछि । ओकरा कोरिका पुत्र-रत्न छथिन । सभसँ छोट रत्न हम, से एखन धूरक आइ-एस-सी पढ़ल रहैत छी । बहुत दिनसँ पढ़ल छी । परन्तु हमरा जननीकेँ ई भरोस हमरहि बनल रहैत छनि जे चारूमे छोटके हुनकार सभ होयतनि । ओना तँ सभ तनाने छनि

—एक रंग ममता आ चिन्ता आ मनोरथ, मुदा कोनो-ने-कोनो कारणें सभसँ नग छाड़ि जकाँ भेल छनि। सभ अपना-अपनी क' नीके-ना रहैत छथिन। एकटा जेठ जन दिल्लीमे, माझिल जन पटनामे, ताहिसँ छोट टाटानगरमे। सभ परिवार लेने छनि। दू वर्ष, तीन वर्षपर दशमीमे गाम आबि पाबइत छथिन। जाइत काल दसटा टाका हाथमे दैत छथिन कोनो पुतोहु—'राखि लेथु माय! की करबै, बँचबे नहि करैत छैक। सभ दिन किछु-ने-किछु लगले रहैत छनि। आमदनी तँ बैह मास भरिक बन्हल टाका। ओहीमे सभ कथू, हींगसँ हरदि धरि। मसल्ला सन पदार्थ सेहो तँ कीनिए क' अबैत छैक। तीमन-तरकारी तँ जे महग छैक ओत'। नेना सभक स्कूलक दरमाहा सेहो बाहर-भीतरक भाव जकाँ कोनो-ने-कोनो नाथें बढ़बिते रहैत छैक ······।" इत्यादि।

हमर माँक मन होइत छन्हि एतेक विस्तृत भाषणक फलस्वरूप जे अपन प्रिय राजरानी बहुआसिनके दश टाका बाहर मिलाइये क' घुरा देथि। मुदा से नहि क' सकैत छथि आ जेना होइत छनि, मर-मसल्लाक पोटरी धरि साँठिये दैत छथिन। आ ई घुमा फिराक' प्रायः सभ बेटा आ बहुआसिनक वार्त्ता चलिते छनि। खाली भाषाक अन्तरसँ शहरी खर्च-वर्च आ 'हिनकर' सीमित दरमाहा आ बढ़ैत महगीक करुण वृत्तान्त धैने आबइत छैक। माँ धैर्यपूर्वक अपन छाती-फाड़ उकासीकेँ साधि-साधि क' सुनैत छथि आ बुझैत छथि। फेर हुनका देल कोनो-ने-कोनो ओरियाओनमे लगैत छथि।

हम रही भीतर कोठलीमे सूतल जकाँ। बेक पहर माँक बहिनपा अयलथिन। होइत छथिन पैघ देयादिनी, लगैत छथिन बहिनपा। बड़ सिनेही छथिन। हुनकालोकनिक गपसपसँ पड़ले-पड़ल निन्न टूटि गेल। सून' लगलिऐक। माँ अपन दुखनामा सुना रहलि छलथिन। विषय ओना बेटे-पुतोहु रहनि।

हालेमे माझिल जन सपरिवार आबि क' किछु दिन रहल रहथिन। ताहि बीच जे सभ भेलैक से समाजसँ छपित नहिये रहि सकैत छैक। किछु गोटे बेटा-पुतोहुक निन्दा कयलनि, किछु गोटे लगायल-भजायल जकाँ भावेक आलोचना कयलनि। जेना-तेना जखन जे अन्न-पानि बेचि-बिकिन क' किरायाक टाका जुमौलनि आ मर-मसल्ला, अचारसँ 'महुगीक सामना' कयल भ' सकलनि—से कहैत गेलथिन। परन्तु तकर चर्च धरि भ' गेलैक

भरि गाम। माँ पहिने तँ खूब कनलीह, फेर चुप भ' गेलीह। अपन एक-चुल्हिया कुशलानि आ हमरा लेल निन्हुका चढ़ौलनि। ई खोर हमरा बिसरल नहि अछि तेँ बाढ़ि रहल छी। ओना, हम अपने किछु पलायनवादी लोक, तेँ लाल भाइ आ लाल भौजीक शुभागमनक चारिम दिन गामसँ चल गेलहुँ नानिक। चल तँ जइतहुँ दोसर दिन, मुदा हुनकालोकनिक अयबाक दोसर दिन गाम छोड़िक' चल जयबाक मतलब छलैक भारी खतरनाक। माँ ई बात बुझलक। यद्यपि ई बात नहि जे लाल भौजीकेँ हमर नानी-गाम जायब बड़ अधलाह लगलनि। लाले भाइकेँ। कारण, एखन नानी-गाम जयबाक कोनो विशेष उपलक्ष नहि रहैक। तकरा तैं जे-से, हम गइलहु अपन।

लाल भाइ अयलाह त' लाहा तँ नवकीक बाड़न कुमोड़िटाट दिस चल गेल, खाली लाल भैया इष्टदेवताकेँ गोड़ लागि क' दलानपर अयलाह। गोड़ लगलियनि। दुनू काकाजीकेँ गोड़ लागि चौकीपर बैसलाह। एक मिनट चुप्पे, फेर काकाजीकेँ कुशल-क्षेम कहलथिन।

—'तोहर तँ कतहु नहि भेलह किछु?' हमरासँ पुछलनि। जानि ने किएक, हमर आँखि डबडबा गेल। हम मूड़ी डोला देलियनि।

—'रिजल्ट तँ बढ़ियाँ भेलह तोहर। हमरा नहि छल भरोस।'—हम चुपचाप ठाढ़ रहलहुँ, असोरासँ नीचा ताकैत रहलहुँ। सोचलहुँ 'भरोस रहबाक नहि चाहैत छल। से रहैत तँ उत्तरदायित्व सेहो अनुभव होइत ने जे भाइक लेल किछु करिऐक। सेँ नहिये भरोस रहब अहाँकेँ सुविधापर होयत।'

—'ओहिठाम टाटामे एकटा नव्वे कालेज खुजलैन्ह। गप कयलौहें ओकर सेकरेटरीसँ। जाय लागब तँ एकटा आवेदन-पत्र लिखि क' द' दिह', मोन पाड़ि क'।'

अपना प्रति लाल भाइक एहि शुभचिन्तासँ हमर हृदय भरि गेल। भाइ, भाइये होइत छैक।

—'तोँ बड़ दुब्बर भ' गेल'हुँ। केहन सुन्दर देह छल' तोहर। किछु मन-तोन खराब रहैत छ' की?'—पुछलनि। हम मूड़ी गोँतने ठाढ़ रही। कारण, हमर आँखिमे पानि भरि गेल रहय। हम नुकायले रह' चाहैत रही। बड़का काका कहलथिन—'एहि मामलेमे तँ बुझले अछि। हेतनि की? एक तँ पढ़ि लिखि क' कथ माससँ गाम ओगरने छथि। मनस्तापे होयतनि! उचिते छैक। एते-एते पढ़ि-लिखिक' गाममे रहब, दुःख तँ हेबे करतनि। आ सभ

दुःखक बाढ़ि तँ चिन्ता ! बहुलोकनि सेहो नहिये जकाँ देखलियनि। लगता-क' एना जे माटि ध' क' रहब। से रहब तँ माटि ध' क' परन्तु आब माटियो की छैक ? 'हमरालोकनि गृहस्थीमे पैसलौं तँ असकरे खोकरीएसँ वर्ष भरिक उपजि जाय। बकला भाइ रहथि। पाँकदरक उपजा। आब तँ सेहो नहि। सर्पक वर्ष, बरखे नहि होइत छैक। माटि की बचतै ? आ की लोक उपजाओत !' फेर किछु हमरा दिस सहानुभूति देखबैत कहलथिन 'हिनकर दोष नहि। बेचारे लागल तँ छथि। से फेर बहादुरी हिनके कही। आन छौंड़ा अछि गाममे, मधुबनी हाइ स्कूल पास कयलक अछि आ हरवाहकेँ पनपियाइ धरि द' अयबामे लाजलाज बुझाइत छैक। ताहिमे एम०ए० फर्स्ट क्लास पास। ई खेतक ढेप कोड़ैत छथि। ढेप फोड़लासँ तँ चासबास ने ? उपहु ओतबो कयलनि। कोन धराहिए बीया-बालिक ओरियाओन कयलनि। खेत तैयार कयलनि। जनमबे नहि कयलैक। आब एकर कोन जबाब ! अदृष्टेक दोष ने ! लोक की करओ ? की क' सकैये ? एकटा हर, एकटा बड़द लेल कोन-कोन ने लोककेँ पराभव उठाव' पड़लैये, पड़लैये की, आब दिन-दिन पड़तैक। आ, से ओहिना बेकार बहि जाइत छैक, अपन की साध्य ? हमरो जेठ उनका मन हरदम रहैत छनि उदासे। मुदा अपन हाथमे की ? हम कहलियनि – एना मन छोटे रखने की हेत' ? भगवान छथिन ! किछु-ने-किछु तँ सयोग हैबे करतैक। यद्यपि हमहूँ बुझैत छियैं ई बात, हमर ई विश्वास अहाँलोकनिकेँ सँ फाब नहि देत। परन्तु हमरालोकनिकेँ तँ आइ धरि एहने भरोस रहल-ए, एहू आधार ! हमरा तँ एखनो ई ईश्वरेक लीला लगैये बाबू। आखिर फेर सुख भोगि रहल छैक की नै ? ओना, ई नहि कहब जे चिन्ता की दुःख नहि अछि मनके। से बहुत अछि। पूजा पर बैसैत छी। नहि मन लगैये। कतबो मन लगबैत छियैक, ध्यानमे ने अटकैत अछि। की करबै ? एक दिस जेठ जनके दिन-राति गलैत देखैत छियैक आ खरिहान देखैत छी सून, तँ मन खोला भ' जाइत अछि। होइत अछि जे खेत-खेल बौआ आबी, खेतकेँ जगा आबी। मुदा से तँ कोनो रस्ता नहि भेल। सभ टोकियो तँ देए। आब बूढ़ो भेलौं। शरीर दुर्बल भेल। तँ बैह, पूजाक आसनपरसँ दलानपर आ दलानपरसँ भोजनक पीढ़ीपर आ फेर दलानपर ओ दलानपरसँ पूजाक आसनपर। ताहिपरसँ कतहु ने कतहुसँ किछु-ने-किछु समाद अबिते रहत। कोनो नेना दूरि होयबाक तँ किछु टाकाक कोनो ठामसँ मँगतिक हेतु। एहनामे मोन छोटे टा होअय। आर की उपाय ! बड़ खराब आ रहल छैक समय, धार-धोर ढँक लोकक मन। हा कृष्ण !'

ई 'हा कृष्ण !' अहुका काकाक एक मनःस्थितिक समाप्त होयबाक सूचना दियकनि। हम सोचलहुँ। काका आध घड़ी काल धरि चुप रहथिन आ नोचि मुड़कथिन। मास्टर-अबैत आँकि रात बढ़ौही नम नमस्कार करतनि तकर जबाब देथिन। आ तेसरियो बेर कोनो ने उपटथिन कोनो बदमासी करतनि तँ, बस। एहि रूपेँ को बड़ी काल धरि चुपे रहताह। हम ओहि बातकेँ बिसरि नहि सकलहुँ जे काकाक मनमे लाल भाइकेँ दुःख आ तामस उठए होयतनि—काकाक एहि आरोपपर जे 'अहूँलोकनि बड़ो भोटे तकलियनि नै।' जे-से, ताहि लेल हम निश्चिन्त भेलहुँ। कोनो हम अपना मुँहेँ तँ नहि कहलियनि अछि, कि माँ नहि कहलकनि अछि। काका कहलथिन अछि। तँ समाजक मुँह तँ नहि बान्हि सकबैक। अवश्यहु बातो ठीक नीक। समाज तँ कहिते छैक सभकेँ। मुदा लालो भाइ चुप्पे-चाप सुनैत रहथिन। छोटका काँ सेहो चुपचाप रहथिन। हम दूधिक' भानसी घर दिस ताङा लग गेलहुँ। बक्सा-पेटी उतारबाक आवश्यकता रहैक, मन पड़ल। सम्भवे, एखन धरि ताङाबला ठाढ़े रहैक। खाली घोड़ा धरिकेँ खोलि देने रहैक घासपर। हम पहुँचलहुँ तँ दुहू गोटे मिलिक' पहिने छोटका-छोटका वस्तु-जात अपना ओसारापर राखि अयलहुँ। तकर बाद लाल भौजीक सन्दूकक बक्सा। माने, बड़का बक्सा। बेस भारी। नहि जानि, की सभ भरल होयतनि। ओना लाल भौजीक एकटा बड़का बक्सा सभ दिना छनि। एहन भारी-भड़कम जे तीनो गोटे मिलिक' उठायब तँ बुझाइते रहतैक जे बेस भारी छैक। जे-से। मिलि-जुलिक' उठाक' हकमैत राखि तँ देलियैक, मुदा हमरा मनमे एकटा अनावश्यक प्रश्न उठल—'लाल भाइ हमरा किएक नहि कहलनि ई बात, समान उतारबा लेल ?' लाल भाइ हमरा ई बात नहि कहलनि से हमरा खराब लागल आ अपने पर सन्देह होअ' लागल जे कतहु ई तँ हम लाल भाइ आ लाल भौजीक पैरवीमे ने तँ कयलहुँ अछि ? कोनो प्रतीक आशामे ? हमर मन सून भ' गेल आ हम कातबला कोठरीमे जाक' बड़ी काल ठाढ़ रहलहुँ। यद्यपि हमरा एहू बातक प्रतीक्षा रहय जे भौजी ओहि ठामनेँ जल्दीसँ आबथि जे हम पयर छूबिक' गोड़ लागि लियनि। मे तँ कतहु चल गेलहुँ आ हुनका गोड़ लागमे देरी भ' गेल तँ तखन हुनका बड़ अधलाह लगैत छनि। परन्तु एखन तँ अपने काकीलोकनि हुनका भगवती ओसारापर चढ़िया विछाक' बैसौने छथिन आदर भावसँ आ गान-दान भ' रहल छनि। आ ई बात मोंकेँ अधलाहु लगैत छैक। ओकरा विचारेँ, कतहुसँ बयो

आबओ तँ भगवतीकेँ गोड़ लागि इष्ट देवताकेँ गोड़ लागओ तखन बताबा बाबू आ बत' मन होइक बैसिक' गप्प करबो । ओ कतेक रोखाक' आजलि । हम ओकर ई भाव बुझलिऐक । तावत लाल-बुन्द बुशर्ट आ पैंट पहिरने एक पयरमे पीयर मोजा जूता आ एकटा पयर खालीए बौआ टहलैत आयल । अनचिन्हार जकाँ ठाढ़ भ' गेल । हमरा बड़ जोर हँसी लागि गेल । ओकरा हम कोरामे उठा लेलिऐक, दुलार कयलिऐक आ कहलिऐक—'दादी माँ छथुन । गोड़ लगहुन ।' ओकरा ल' क' हम निहुँरि गेलिऐक माँक पयरपर । दुनू हाथ ओकरा जोड़बा क' चाहों कि पयर छुआब' लगलिऐक माँक, कि माँ हाँ-हाँ क' उठलि ! 'अहींके इष्ट देवताके गोड़ लगा लेबहुक ! माँक आवाज फाटि गेलैक । ओ कान' लागल छलि । आँखिमे नोर । हम बौआकेँ ल' क' इष्ट देवताकेँ गोड़ लगा अयलिऐक आ बाहेरपर लेने फेर दलान दिस अयलहुँ । कका सभकेँ गोड़ लगबौलिऐक । ओकर ई एक पयरमे जूता-पयताबा आ एक पयर ओहिना देखिक' बड़को कका भभाक' हँसलथिन । फेर छोटको कका । नालो भाइकेँ एकटा संयमित मुस्की छुटलनि । बौआ एकटा अनचिन्हार बूढ़ लोकक एहि भभाक' हँसबापर हतप्रभ जकाँ छलाह । निस्तब्ध ! हम कहलियनि—'बौआ, बड़का दादाजी छथिन, आ ई छोटका दादाजी छथिन !' तखन कनेक ओ सामान्य भ' सकलाह ।'

हमर कन्हापर चारि वर्षक बौआ छलाह । हुनिका विषयमे हमर बहुत-बहुत कल्पना सभ रहय । जखन हम पढ़ैत रही कालेजमे तँ हुनकर होयबाक सूचना भेटल रहय । कय दिन धरि हर्षित रही ओहि साँझमे । हमरा अपन एहि भातिजक विषयमे तात्कालिक आ भविष्यक कय टा कार्यक्रम सभ रहय । जेना तत्काल हुनका लेल खूब बढ़ियाँ खेलौना आ पैरेम्बुलेटर कीनब आ भविष्यमे मोटर साइकिलपर मेडिकल कॉलेज विदा करब ...से आइ हम कय वर्षपर देखिने रहल रहियनि । सुन्नर रहियनि से बड़ नीक छथि । गंभीर छथि आ बुधियारो छथि । हुनका कन्हापर यो हमरासँ परिचय करबाक चेष्टा जेना बैसल रहथि आ हम मने-मन हुनका ल' क' कहि गाम टहलि अयलहुँ आ कतेक गोटे पूछलक जे—'ई बच्चा केँ ?' सभकेँ हम कहैत गेलिऐक—हमर बड़का बेटा ! सभ हँसि देअय । 'बच्चा, एखन धरि अहाँक बियाहुक ठेकाने नहि आ बेटा भ' गेल ?' बड़का भाइ अपलाह अछि कनिकार बच्चा तँ नहि ?' हम तकर जबाब नहि द' क' आगाँ बढ़ि जाइत छी ।

□

सुरझल सम्बन्ध-फूल अर्थात् मौलायल पारिजात

लाल भाइ उठिक' आङन दिस देलाह । पाछाँ-पाछाँ हमहूँ । माँ साजीमे फूल आ तुलसी पात ल' क' बहरिसक जा रहलि छथि—भगवती आङन । लाल भाइकेँ देखिक' ठमकि गेलि । भाइ गोड़ लगलथिन । एक बेर खूब गाढ़ नजरियें देखलकनि । ओकर चेहराक भावमे ई स्पष्ट बुझाइत छै भाइक व्यवहारमे ओ दुखी भेलि अछि । आब हम देखलियैन तँ पहिल बेर सामने ओ भाइ ओहुना पार छलाह से कहियोँ नु आगि रहल छथि । माग नँहक किछु बेस पाकल । चेहरा मुरझायल । ओ बेस लटल छथि । माँ किछु बाजलि नहि, खाली ओकर आँखि डबडबा गेलैक । हम ई बात बुझलियैक । —'कनेक मोजाद कि खड़-पात आनिक' चैनलीमे चाह चढ़ा ले बेटा । दू चुल्हिया पर ई । एक चुल्हिया नीपल छै न ।' माँ हमरा कहलक । 'भाइकेँ बिदीन चाह

बना। हम कने अबैत छी भगवतीघरसँ।' ओ असोरासँ उतरि गेलि। आगाँ कमरथी साफ भोरे गेलैक तकरा कोठलीकेँ नीक जकाँ साफ-सूफ क' क' ओना देब' कहलथीक जे थोड़ेक कालमे सुखा जाइक। हम बौआकेँ कन्हापरसँ उतारि दलान दिस गेलहुँ। दू-चारिटा खड़-पात आ पुरान वस्तु-जात कट्ठी हुँच्चीसँ पहुँचलहुँ। आ केतलीमे पानि भरि क' राखि, सलाइ तकलहुँ तँ नहि भेटल। मानिये तँ नहि छैक।

—'बौआ आउ, दादी-माँ गेलीहे, हुनका पुछियौन, सलाइ कत' छैक?' हमरा विश्वास नहि छल जे हमर ई असिस्टेंट एतेक चुस्त बहुरअताह आ संगोर्थे ढुबकल नहि रहताह। ओ फुर्र भ' गेलाह। आ दू मिनटक भीतर एकटा सलाइ सहित उपस्थित।

—'वाह बेटा, कुलक नाम करबेँ!' ओ हँसलाह आ लगमे आबिक' ठाढ़ भ' गेलाह। हम सलाइ धरकिक' खड़ पजारलहुँ। आ बत्ती सभ जोड़ि देलियैक। आँच होब' लगलैक। बौआकेँ विश्वासे नहि भेलनि। बजलाह—'अहाँ केँ चाह बनब' अबैये?'

—'हँ औ। हमरा चाह बनब' अबैये। हमरा खिच्चड़ि बनब' अबैये, सन्ना बनब' अबैये अल्लुक सन्ना....'

—'खिचड़ी हमरा नीक लगैये।' बौआ उत्साहित भ' क' बजलाह।

—'काल्हि हेतैक खिच्चड़िये! अँय?' हम पुछलियनि। ओ समर्थनमे हँसलाह। चुल्हासँ आँच उठिते रहैक। भौजी भरिसक बैरायहिये रहथि।

चाहक पानि खौलि गेलैक। घरबला चौकीपर लाल भाइ भरिसक पढ़ि गेल रहथि। अपन ओही मुद्रामे दुनू पंजा जोड़ि क' टीक लग राखि, तकियामे ओठंगि एकटा ठेहुनपर दोसर पयर जोड़ि क'...

—'बौआ ओह घरमे बाँकी तरमे एकटा चङेरी छैक....' हमर बात पूरो ने भेल छल कि फुर्र भ' गेला बौआ। हम सोर कयलियनि—पूरा सुनू ने, बात सुनब ने कयलहुँ। परन्तु ओ बीत सेकण्डक भितरे पूरा चङेरी मेटगर उठौने अपरथीत पहुँचि गेलाह। ओहिमे दू जोड़ी कंटी टुटलाहा प्यालियो तश्तरी रहैक आ चाहो चिन्नी। आनिक' कहुएँसँ हमरा कातमे राखि देल। —'आबैँ औ, अहाँ तँ भारी हड़बड़िया छी बौआ। अधे बात सुनिक' पड़ाइ छी।' हमर एहि आरोपसँ हुनका कनेक लाज भ' गेलनि। मजा जकाँ गेलाह। लजायल नेनाक सुन्दरताक जोड़ नहि किछु! छोटकी पीढ़ी देलियनि—'बैसू ऐठाम।' ओ

नहि बैसलाह। हम पत्ती चीनी मिलाक' फेर प्यालीमे छनलियैक। तावत माँ घुरि गेलि रहथि। —'क' देल'? 'चाह छनैत देखिक' माँ पुछलैक। 'चाह छानब सैतो देखाक बाद बौआ चुपचाप ठाढ़ रहथि। हम हुनका देखलियनि—'बाबू-जीकेँ चाह द' आयब हुनत ने?'

—'हुनका नै हेत। हम दादि नाइ छी।' ओ पराजित जकाँ कहलनि। माँ प्यालीमे क' भाइकेँ देब' गेलनि। बौआकेँ दोसर प्याली ल' क' कहलियनि—'बौआ ई चाह ककर छी?' एक क्षण सोचलनि। बजलाह—'दादी माँ के।'

'आ केतली-महँक चाह ककर?'

—'माँ के अहाँ के हमरा...' हमरा हँसी लागि गेल। कहलियनि—जाउ तँ, दादी-माँकेँ बजा आनू। हुनका भेल जे ई हिचकिचाइताह। मुदा नै, बजा अनलनि। माँ कहए लगलि—'नहि पीयब हम। तोँ पीलैह, बहुआसिनकेँ बजाक' कहुन।—'छैक चाह। तोँ ले ने।' हम बड़ा देखियैक तैयो।

—'बौआ औ, आउ तँ, अपन माँकेँ बजा अनियौन। की कहबनि?' ओ पुछ। —'कहबनि जे चाह ठंढा होइये। जल्दी चलू।' —'नै औ तँ चाह पीने छथिन।'—बौआ बजलाह। हमरा कनेक ठेस जकाँ लागि गेल। बात सेहन अधलाह नहि रहैक, तैयो बड़ खराब बुझायल। —'ओहीठाम बाल सेहन चाह पी लेलनि! अहाँ देखलियनिहेँ?' ओ मूड़ी हिलौलनि, हँ। हम एक क्षण चुपचाप रहलहुँ। फेर कहलियनि—बौआ, जाउ तँ, चौकी-तरमे एकटा गिलास हेतैक। दोसर क्षण बौआकेँ गिलास समेत चाह छानिक' देलियनि। ठोढ़ धाकि गेलनि। हमरा चाह पीबाक इच्छा नहि रहय। आइ तीन दिन भ' गेल रहय चाह पीना। माँकेँ तकर कलेश छैक। आइ ओ सेँ हमरे चाह बनब' लेल कहा देलक जे तैयो हम पीबी चाह। हमरा इच्छा नहि अछि। केतलीकेँ फेर मिलायल आँचक चुल्हापर राखि देल छियैक। आ उठिक' भाइबला कोठली दिस अबैत छी। आइसँ ई कोठली भाइबला कोठली कहौतैक। फूल भाइ अबैत छथिन तँ एहह हुनकार कोठली कहाब' लगैत छनि। एखेदा हउ कोठली छैक, सेँ जे रहैत छैक तकरे कोठली। हम ओत' आबिक' जहाँ ठाढ़ भेलहुँ कि माँ चाहबला खिस्सा कहि रहल छलनि भाइकेँ। भाइ मात्र 'हुँ हाँ' क' रहल छलखिन। हम ठाढ़ भ' गेलहुँ। सेहन मुद्रामे जेना ओहिना हम ठाढ़ होइ, कोनो उद्देश्ये नहि। बौआ अपन चाह पीबि क' गिलास राखि रहल छलाह।

—'पूरा की कहियनि? बहुत दुःखी रहैत छथि। परसूसँ चाह छोड़ने

छथि, कि तँ अनेरेक एकटा झगड़ा अछि ई। बेकारेमे पत्नी-चीनी पर खर्च। यद्यपि परसूसँ तेहन मन्हुएनी अबने छनि जे छाती फाटि जाएत देखि क'। देखैत नै छहुन—हाड़-हाड़ उगल। तोरा सभ भाइमे सभतँ नीक देह छिनके रहलि आ से आब देखि लहुन। हम की करियौन। छिड़ी छथि, से एक नम्बर! चैह बात सूर आगस सँह करबाये जान धी बरोगये छी। आब तोँही कहू, बढ़ियो गेलाह तोरा लोकनि बेतक आखिर? आ से की तँ गृहस्थी करब। खेती करबाक बिजोह छनि एखन। खेतीक जे हाल छैक से बेह। घरेक विवाद लोक नीक करैये। एह, किछु उपजै छैक? सभटा लखरी भ' जाइत छैक।"

माँकेँ खोंखी उठलनि। कोनहुना क' जनगनि—'किछु नहि पुराइये। तोरा लोकनिक भगवान जेहन-तेहन इन्तजाम करौलथुन! सैह छथि पहल। जे इष्ट देवताक इच्छा। सभ दिन गोड़ लगैत काल आइ-काल्हि छिनके द' कहैत छियनि। फेर लाज होइत अछि—धिक्कार मनकेँ; करै छी भक्ति आ मङैत छी बेटाक नोकरी, बेटाक सुख! एहन कोन भक्ति! परन्तु की करू, नै रहल जाइत अछि। जखनेर छिनक उतरल, चिन्तित मुँह देखा जाइये तय बेर कोंढ़ चर्र द' फाटि जाइये। हिनकेहेतु भगवान साथ चल गेल छथिन।" माँ भरितक कान' लगलीह। भाइ चुपचाप सुनैत छलथिन—गंभीर। निस्तर।

—'तोरा सभ धुरे नै कतहु ऑफिसमे कोनो छोटोछिन काज लगा सकतनि?' माँ जेना अनुनयसँ पुछलकनि।

—'तोरा बुझाइ छौक हमरा तुरै छोड़तनि तँ दुखिया रहितथि? हमहुँ की करबै? एक ठाम कालेजमे दरखास्त करैलीहेँ, देखा चाही।' ओ कहलथिन। माँ एहि आश्वासन पर खूब निश्चिन्त आ प्रसन्न भेल होएतीह से हम अनुमान कयलहुँ। हमरा ठेके-ठाक हँसी लागि गेल। हमरा कानमे बौआ ठाढ़ छलाह। हुनकर मुख-मुखश पोनायन केशमे आङुर सन्हियाक' हम हुनका दुलार करैत अनुभव कयलहुँ जे हम कोनो भूतक चच्छा छवि रहल छी। आ हाथ बाढ़े ओकर छुआछि हमर देहमे पैसि रहल अछि। हम गम्भीर उत्साह अनुभव क' रहल छी।

दुपहरियामे ओहि दिन सभ बड़ो माङीरा अन्हारल सूति रहलाह। बौआसँ तेहन निकता भ' गेल जे ओ हमर एकटा अनुयायियो भ' गेलाह आ जखन माँ हमर कोठलीसँ, (आइसँ आलमाइरा) सतरंजी, कम्मल आ पटिया-गेड़ु आ निकालि क' हमरा हाथमे देलक तँ मनमे एकटा नव दायित्वबोध भेल। माँ

बाजलि किछु नहि। खाली सभटा बेरबेगी बचा देलक। छोटका गेड़ुआ बौआ सम्हारलनि। हम सभ ओछाओन-बिछाओनक संग विदा भेलहुँ दलानपर। सपूतू सखली सुबक चौकी। दलान तीन दिससँ खुजल। खाली ओकर चारि देहुन नीचाँ छरि झसल छैक जे अगेरे सँटायल लगैत रहैत छैक। हमरा जानि ने किदन हुँसी लागि गेल। चौकी लग जखन आबि क' ठाढ़ भेलहुँ तँ बौआकेँ हठात् विश्वासे नहि भेलनि। ओ हड़बड़ाक' बजलाह—'चौकी तँ टुटले छै'! हम हुनका देखिक' कहलियनि—'हँ बेटा, टुटल छैक। ठीक भ' जयतै।'

—'के ठीक करतै?' ओ गेड़ुआ सम्हारने अवरुद्ध जकाँ पुछलनि।

—'हम ठीक करबै। रुपैया हेतैक तँ हम करबै ठीक।' हम ओहि पर पटिया खोलिक' पसारि देलियैक। पटिया देलाहुँ तखनाक खटियाहा जगह कनेक भरा जाइत छैक।

—'हुनका तुनैया अछि।' बौआ कहलनि। हम हँसि देलियनि। ओ कनेक लजा गेलाह। हमरा ताहूपर हँसी लागि गेल। हम क्रमशः कम्मल, तकरा बाद सतरंजी बिछाक' गेड़ुआ ध' देलियैक आ पड़ि रहलहुँ। बौआकेँ दोसर कात रखलियनि—अपने दुलराहा तकरो दिन रहलहुँ। बड़ रौद रहैक। एखनो गाम-घरमे लूक झरकी बाहर जकाँ तँ नहियेँ लगैत छैक ने ओ कलकत्ताक गंधक हवाक छुरा जकाँ छोंके, तैयो गर्मी तँ लगिते छैक।

कतहु बसात नहि डोलि रहल छैक। दलानक सड़ले बाम दिस जिलाक बोर्डक कच्चो सड़कपर कोनो आबाजाही नहि छैक। खाली कतहु कोनो एकटा स्त्रीगण वा लोक माथपर छाता, आ ताखिपर खरही रखने, अरसौत, मधुबनीतँ घुरल जाइत अछि। किंवा कोनो लोक फाटल चेकड़ी ओढ़ल छाता ओढ़ने चल जाइत अछि। ई चेकड़ीवला छाता तखन हम बहुत देखने रहियैक, जखन गाम आयल रही तँ मनमे एक दिन, दू दिन, तीन दिन धरि एकटा प्रश्न उठल रहय—सभटा छाता हम चेकड़ीयेवला किएक देखैत छियैक? सभ बरोहीँ गीआ-अनगौआँ सेहो जेना अबैत जाइत छैक, तकर कमानी टेढ़ आ डंटी टुटलाहे आ कपड़ा चेकड़िवाह किएक रहैत छैक? सभटा छाता पुराने वा काज चलाउओ नहि, मात्र काज चलाउ होयबाक सन्तोष देब'वला छैक?

'तँ कतहु होइछ? सभ लोकक छाता ओढ़ने देखल अछि हमरा? सम्भव छैक, सब आ बढ़िया छत्ता सेहो होइत लोकके। जनीक अशोही जाइत-अबैत छैक, सभ पर तँ ध्यान नहि जाइत छहु ओहर। सभ लोक गरीबे नहि ने अछि—निश्चाय।'

—'से ठीक छैक। मुदा छपासला अनुभव पर हम कहू छी। लगातार कथ-कथ दिन धरि हम लोकके आइत-जाइत खाली रौद आ एहि छतेपर ध्यान रहाक' देखलियैक अछि—प्रायः सभक छत्ता टुटले-फाटले आ बेकहीये लागल। आ बूझि पड़ैत अछि जेकी व्यवहार करैतासँ पुरान भ' गुजलाक कारणे कारी नहि रहि क' उजराह-मटियाह वा एकटा तेसरे रंग भेल। नव छत्ताक चकमक कारी रंग देखल हमरा मोन नहि अछि। ई अनुभव मतेनन हमरा एकटा सचरल सामाजिक स्तरपर उदास क' देलक। हम सभ बटोहीके नहि चिन्हैत छियैक, हम तँ अपन सभ गौआँके पर्यन्त नहि चिन्हैत छियैक। तँयो एहि अनुभवसँ मन खिन्न भ' गेल। ई बात हम ककरो कहू' चाहैत रहियैक —कोनो मित्रके। भेटिलय, जेना हरा कि महेन्द्रा, कि ओ कि धयो? से ओहि गाममे ककरो कतसँ भेटितय हमर ई बात सुन' लेल आ एहि पर किछु बाज' लेल? हम वसमोहिफ' पढ़ि रही आ आँखि मूनने कतहु कोनो गामसँ चलल बसातक प्रतीक्षा करैत रही। बसात कथ-कथ दिन नहि बहैक आ शरीरक पसेनाये ओधरि होइत-होइत हमरा शरीरपरक कहुरी गंजी पहिने पियराय लागल, फेर गाढ़ मटियाह पीयर भ' क' ठाम-ठाम कलात्मक रूपसँ फाट' लागल, फेर एकदममे फाटि गेल। माँ दुःखी भ' क' कहलक एक दिन— 'की ओ गुदड़ी झूलकौने रहैत छ'? लोको की कहैत हेत'? आइ आ मधुबनी, आफ' एकटा गंजी कीनि लैह। बोलहु ओ गंजी।'

हम हँसैत कहलियैक—'की हेतैक? वा, से, फेंकि दैत छियैक। मुदा एहि रौदमे मधुबनी जायब?' हम पुछलियैक।

—'कने बेर खस' दहक। कत्तो नहि छ', एहन रौदमे कोना जयब'—ओ बाजलि। हम चुपचाप दलानपर पसरि गेलहुँ। अखड़ा चौकी पर बैसलहुँ आ सड़कपर ओस्राओल रौदकेँ देखैत कयटा बातक अनुभव कयलहुँ। एहि रौदक वर्ष अपन बदलि गेने, बदलि जाइत छैक, पुरान भ' जाइत छैक। नव भ' जाइत छैक, प्रसन्नता भ' जाइत छैक, उदासी भ' जाइत छैक, हर्ष विषाद किछु भ' जाइत छैक। मुदा सभ रौद चला जागल, किन्तु दुपहरियामे प्रधान बात रहहू रहैत छैक, कोनो अदन मनक पुनर्निर्माण। मनक सुखायल कियारी सभमे भावुक जल-सिंचन क' अतीतकेँ अँकुरायब आ प्रचंड रौदमे डाहि देब। एतबे नियति। आ एहिसँ फराक करबाक आधारो की ओकर? खाक' ओहन एकटा लोकक हेतु जे पराजित भावसँ अपन सभ सम्बन्ध, सम्बन्धीसँ, दोस्त-महिमसँ कहिक' एक कात आक' चुपचाप रहि रहल होअय। जकर मनमे हजार-हजार

सोचल, कल्पना कयल आ भोगल किछु दिवस शेष होइक आ आइ जकरा लोकाने ने कोनो रस्ता आ ने कोनो स्पष्ट लक्ष्य होइक। जे पूर्णतः स्वस्थ आ हाथ-पयर रखैत भवितव्यतापर तहास कर्त कहायल आ रहल होअय परिचित समाजक आँखि आगाँ एकटा नितान्त अनचिन्हार लोक जकाँ। ई बात असह्य होइत छैक। हम कहि रहल छी ई बात, अत्यन्त कठिन बुझाइत छैक। लोक ते आँखि मूनि लैत अछि आ लोक तें अपना मनक अन्हारमे पैंठि पंजा गाड़ि ताकि क' छैंधि चल आइत अछि आ अपना चारू कातक ऊँच-ऊँच अन्हार देवालमे अपन अवहाल घयाहू नहुँसँ कोनो खिड़की, कोनो गवाक्ष काढ़' चाहैत अछि आ तौनिते-तौनितास भ' क' अपन पंता आ आकुर लहक बियाह पाब गेने, जे दू वर्ष, चारि वर्ष बीयाक नागपर जीबैत अछि आ खनम भ' जाइत अछि। ओकर मनक अन्हार जखन भीतरसँ आँटि नहि सकैत छैक तँ बाहर पसर' लगैत छैक। फेर पसरैत-पसरैत बेस दूर धरि पसरि जाइत छैक। आ लोक ओकरा कहु' लगैत छैक अलग-अलग ढंगसँ किछु-किछु।

खड़ी काल हमरा गुम्म पड़ल देखि बौआ ठबिया गेलाह। हमरा दिसि लुगिक' पुछलनि—'मदका यौ, अहाँकेँ कुशियाल लोट' अबैबे?'

बौआक ई प्रश्न नीक लागल।

—'हँ यौ। अहाँके कुसियार नीक लगैत अछि?' हमरा हँसैत देखि लजा गेलाह ओ।

—'हँ, बड़ छौ।'

माथक केश छुबैत कहलियनि—'बेनने छै। मुदा कुसियारवलाके अहाँ अपन मौसीसँ बियाहु करा देबै, तखने देत ओ।' हम गभीर भ' क' कहलियनि।

'मौछीक तँ बियाहु भ' गेलनि। हमरा मामाजी पीला बुच्चट देलनि। बुच्चट द' देबै?' ओ चिन्तित भ' गेलाह। हमरा हँसी लागि गेल।

—'बै गै, ओहिना कहलौं। हम अहाँके चारि छड़ कुसियार आनि देब। खायल होयत?'

'हँ, कुसियार खूब खायल होइए।' ओ सन्तुष्ट छलाह आ उत्साहित।

फेर कनेक कालमे हुनकासँ हम एकटा तेहन प्रश्न कयलियनि जे ओ हमर मुँह तकैत रहि गेलाह। हम पुछलियनि—बौआ औ, अहाँके नवका छाता नीक लगैये कि पुरना छाता?

—'नवका छाता खूब सुन्नर होइ छै। ओपुरो ने पिचाइ छै!'

हमरा अपनो पर हँसी लागल । ई तँ सहज बाल-मनोविज्ञान छैक । कोनो नव वस्तु ओकरा प्रिय होइत छैक । नव अनुभवसँ भ' क' बस्तु धरि । फेर हम अपने प्रश्नपर अपने गंभीर भ' गेलहुँ । आ जहाँ धरि पहुँचि सकल, ओहि दौड़ौलियैक, एकटा परम बूढ़ि मुआरिन मरि ठेहुन गर्द लेने सड़क पर घुसकुनियाँ जकाँ काटि रहलि छलि । माथ पर एकटा मोटरी रहैक । साँसे देहसँ घाम छूटल ! हमरा असह्य जकाँ होअ' लागल । के एहन अत्यन्त दायित्वहीन मनुष्य अछि जे एहि बुढ़ियासँ एहन रौदमे मोटरी उघवा रहल अछि ? काज ल' रहल अछि ? मुदा से लोक, हमरा तामस भेलहुँ, नहि देखायल । कियो देखाइयो नहि सकैत छल । ई घटना अर्थात् ओहि बूढ़ि स्त्रीसँ काज लेबाक घटना हमरा अपनो मनक घटना भ' सकैत छल ।—कोनो अन्तर नहि छैक । ओहि कष्टमे पड़लि सड़कपरक बुढ़ियामे आ तोहर गाँक बकासीपर उकासी करितो धूआँमे बैसिक' भातस करबामे कोन अन्तर छैक ? ओ मनुष्य तोहीं किएक नहि, जे ओहि बुढ़ियाक सदृश्य कोनो सम्बन्धी लोक ?

हमर अगो मुँहक ई बेलौंसी जेना अपने मुँहपर थथले चमेटा देलक । ग्लानि भेल । इएह छैक ओ दूरी, सिद्धान्त आ आचरणक बीचक दूरी । जे बात मनकेँ अधलाह आ अनैतिक बुझाइत अछि—ताही बातकेँ आचरण आ व्यवहारमे स्वीकारि क' चलैत रहैत छी । चलिते रहैत छी आ बहुत दिन धरि तें ने चलैत अछि । अपन ई अन्तर्विरोध नहि देखाइत अछि । आ मानैत रहैत छी, भरिँ जीवन चलि रहल छैक । फेर उएह सोचबो करैत छी जे सम्बन्धक शोषण नहि होयबाक चाही, शोषण नहि करबाक चाही । आ फेर वैह करैत छी, रोगी भातसँ भातस कर्बैत छी, थारीमे खाइत छी । दलानपर पड़ल सड़क पर जाइत बूढ़ि स्त्री लेल सहानुभूति रखैत छी, मुदा ओकर माथ परक मोटरी ओकरा घर धरि नहि द' आबि होइत अछि । धिक्कार ! 'धिक्कार ! हमरा हुनका रहबासँ एकटा तेसरे दायित्व बुझायल । हम एकसर एकान्तमे अपनाकेँ धिक्कार' चाहैत छलहुँ ।

—'बौआ, आङनमे जाक' सूति रह माँ लग ।' हम देह डोलाक' कहलियनि । ओ मूड़ी डोलाक' आँखि मूननहि इनकार कयलनि । निन्न गाढ़ भल होयतनि भ' गेल । छोड़ि देलियनि । हमरा तेसरे तरहक दायित्व फेरसँ बुझाइ देलक । देहपर, पीठपर, सरहदीसँ ओकरपबाक इच्छा भेल । बौआ खूब गोर छथि । चुनमुनी निश्चय छैक । चुनमुनी जानि नहि आबो इलेक करैत लागिक' सूतैत छैक कि माय लग सूतल अछि आब । हमरा बहुत जोरसँ जेना अपन सम्पूर्ण चरित्र आ भावुकताक संग इला मन पड़लि । आ

हम अपनामे निरन्तर असह्य भ' गेलहुँ । हम दहाय लगलहुँ । ओहि दहायबमे रही तीनू गोटे—हम, इला आ चुनमुनी । चुनमुनी हमरा दुनू गोटेक बीचमे रहनिहारि एहि दहबबामे कोनो दिस भसिया गेलि अकस्मात । हम दुनू गोटे हाथ-पयर फेकैत ओकरा तकैत रहलहुँ परन्तु ओ धारमे कतहु भसिया गेलि । चुनमुनीकेँ बाढ़ि नहि भेलैक । एखन पाँखि बाहरी भेल छलैक अछि । तें उड़ि नहि भेलैक । इला ठेहुनमे मूड़ी द' क' कान' लागलि हिचुकि-हिचुकि क' । हम ओकरा कातमे भीजल वस्त्र पहिरने ओकर कन्हापर हाथ रखलियैक तँ ओ आर जोरसँ कान' लागलि । हमरा कोरामे मूड़ी गाड़िक' जोरसँ हिचुकैत रहलि ।

साँझ भ' गेलैक । हम ओकरा उठबैत आ ओकर मूड़ीपर अपन दाढ़ी रिकबैत बौहि ध' क' कहने रहियैक —'इला, ई चुनमुनी, अपना दुनू गोटेक ई चुनमुनी, कतहु गेलीए नहि, देखिअही, जहाँ कि पाँखि भ' जयतैक कि उड़िक' आबि जयतो । तों जुनि कान । 'ओ मूड़ी उठाक' देखलक हमरा दिस । भरिसक हमर स्वर आ आकृतिपरक भावसँ ओकरा हठात् विश्वास भ' गेलैक । ओकर विवर्णाम चेहरापर स्वरस गोर सलाओन भ' गेलैक, से वोसोने नक द' उठलैक । हम ओकरा खूब स्नेहसँ बाँहिमे ल' क' चल' लगलहुँ । बड़ी दूर धरि चलैत-चलैत ……जानि नहि कोन देश रहैक, तत' एकटा एकसर मन्दिर जकाँ रहैक । मन्दिरमे कोनो पुजारी नँ, ने कोनो देवते । हमरा दुनू गोटेकेँ आश्चर्य भेल । थाक नीक जकाँ तकलियैक । फेर थाकल रहबे करी—एक कात सीढ़ी लग बैसिक' दुनू गोटे प्रतीक्षा कर' लगलहुँ । कनेक-कनेक बसात सिहक' लगलैक । इलाक पयरमे फोका भ' गेल छलैक । ओकरा देखिक' हमर मन आर दुखी भ' गेल । ओकर आँखि लागि गेलैक । हमरा जाँघपर मूड़ी ध' क' ओ पयर पसारने रहलि । जँ-जँ ओकर पयर ससरल जाइक तँ-तँ नहीर चेन्ह भेल जाइक ! आब जाक' हम अनुभव कयलियैक जे ई तँ बालु छैक बाहिपर हमरालोकनि छी । आ चारू कात बालुए छैक । हम कनेक विचलित भ' गेलहुँ । आब ? एहि रेगिस्तानमे ? हमरो आँखि मुना गेल । तावत जेना हमरा कोनो बात फुराय, आँखि खुजि गेल । देखलियैक जे एकटा खूब सुन्दर सिड़ै लाल धोती पहिरने अछि आ पातर अर्गी चानन कयने अछि । हमरा लग आबिक' बैसैत अछि । हमरा कोरामे माथ ध' क' सूतलि इलाकेँ देखिक' ओकरा आँखिसँ नोर बह' लगैत छैक । हमरा बड़ आश्चर्य होअ' लगैत अछि—ई किएक कानल ? इलाकेँ देखिक' ई कानल किएक ? तों एकरा चिन्है छहीक ? तों एकरा देखिक'

छिएक कान' लगलें ? ओकर मुँह हमर चुनमुन्नीक मुँह भ' गेलैक । हम हर्षे रोमांचित भ' गेलहुँ । इलाकेँ लक्खोरि रहल छलियैक तेँ देखलियैक जे ठाढ़ भिजुँ खि रहल अछि । चुनमुन्नी कह' लागलि जे—"हम अहाँ लोकनि लेल एहि मरुभूमिक मन्दिर बनि गेलौहुँ ।"

—'हमरालोकनि लेल माने ? तोँ मरुभूमिक मन्दिर किएक भ' गेलेँ ?', हम आश्चर्यसँ पुछलियैक ।

'हम अहाँ दुनू गोटेक विवाहक पुरोहित भेलहुँ । अहाँ दुनू गोटेक ।' जानि नहि, कोना इलाक निर्लो खुजि आइत छैक । ओकरा चुनमुन्नी एकटा पटोर आनि क' देल छैक । पटोर पहिरक' जेना एकदम परी भ' जाइत अछि ।

फेर चुनमुन्नी हड़बड़ा क' कहैत छैक—'शीघ्र होउ । शुभ लग्न कतेक काल छैक ।' ओ मंत्रसँ वातावरण शुद्ध करैत अछि । ओ जेना-जेना कहैत अछि तेना-तेना दुनू गोटे पढ़ैत रहैत छी । आ जे-जे कहैत अछि से-से करैत रहैत छी । होमो होइत छैक आ फेरी सेहो देल जाइत छैक । फेर पुरहित हमरासभकेँ बैसाक' दू मिनट बाद अबैत अछि घुरिक' । अपना संग ल' जाइत अछि आ एकटा ओहार जकाँ घर छैक, ताहिपर ओछाओन छैक एकटा उपर इलाक फेरलाहा साड़ी । आ बालुक गद्दीपर हमरा दुनू गोटेकेँ बैसाक' चुनमुन्नी चल जाइत अछि । दोसर दिस हम आ इला एक दोसराकेँ मुँह देखैत रहि जाइत छी । हँसी लगैत अछि आ होइत अछि जे मनक हर्ष कोनो ठोस वस्तु रहितैक तँ दुनू ओहिमे धँसि जेतहुँ । मुदा हम दुनू गोटे एक दोसराकेँ बाँहिमे समेटने बालुक गद्दीपर बैसल छी । जत' बैसल छी तत' गहींर भेल जाइत छैक आ ओछाओन वाड़ी थाक कातसँ समटायल जाइत छैक । एक दोसरकेँ स्नेहसँ चुमैत छी, फेर प्रगाढ़ होइत आर चुमैत छी आ फेर बालुपर सुति रहैत छी । हम इलाकेँ अपनामे, एकदमसँ अपनामे साटि लेब' चाहैत छी । हमरा लोकनिक साँस फुल' लगैत अछि आ हम इलाक साँससँ पहिलहि जाठि छूबाक विजय-परिश्रमसँ हकमि रहल छी आ हँसि रहल छी । साँसे पोखरिमे एकटा विलक्षण हिलकोर उठि रहल छैक । ई हिलकोर हमरे बाँहि आ पयरक आघातसँ उठल छैक । आ हँसैत काल जतेक बेर हम मुँहसँ पानिक कुड़ुर फेकलहुँ अछि से सैकड़ो रंग गुलाबी नील हरियर पीयर सभ रंगक हिलकोरसँ पोखरि दलमलित अछि । हम जाठि लग पहुँचाक' नहि, फेर हेल' लगैत छी । अपन श्रम आ इलाक हँसि-हँसिक' किछु कृत्रिम लागल, हमरा रोकि रहल अछि—"आब नै । थाकि गेल होयब । एतेक नै ।"

ओ हमरा देह, मुँहपरक जलकेँ अपन पटोरसँ पोछ' लगैत अछि आ मुस्कैत रहैत अछि । हमरा आश्चर्य लगैत अछि जे इला किएक हकमि रहलि अछि ? ई तँ नहि हेललि अछि । मुदा तखने ओकर खूजल देहपर नजरि पड़ैत अछि । देखैत छी, ओकर सर्वाङ्ग भीजल छैक । साँसे देहपर कतहु सीस, कतहु झुकनी जकाँ मोती चकमक क' रहल छैक । ओ हमर शरीरकेँ पोछि रहलि अछि आ हकमि रहलि अछि । हम किछु उत्साहित भ' क' फेर कूदि जाइत छी । ओ फेर हँसिक' मना करैत अछि । कहैत अछि—'एतेक नहि हेलू ।' हमर सफलीपर ओकरा मात्सर्य जकाँ होइत छैक । यद्यपि, ओकर हँसमुख आपत्तिसँ स्पष्ट बुझा रहल अछि जे हमर लगातार हेलबाक बहादुरी ओकरा बड़ नीक लागि रहल छैक । मुदा एहि बेर जेना हमरा हेल' सँ ततेक उत्साहित भ' जाइत अछि जे ओकर आँखि झाँपा गेलैक अछि । ओ भितरसँ देहे कोनो बच्चा जकाँ हमर जाँघपर पड़ि रहैत अछि । अपन जाँघ पर इलाक भीजल आ तीव्र श्वाससँ उठैत-खसैत देह हमरा नीक लगैत अछि । लगैत हमरा बुझाइत अछि जेना कोनो चिक्कन माछ हमर भीजल देहपर छलकि रहल होअय । ओ माछ इलाक हाथ छैक—पाँच आङुरक एकटा परम आत्मीय आ सघन गति ।

पोखरिमे उठल हमर बाँहि आ सम्पूर्ण शरीरक गतिक हिलकोर आब नहुँ-नहुँ शान्त भ' रहल अछि आ जतेक रंगक लहरि रहैक, ततेक रंगक गाछ सभ उगि अयलैक अछि । सभमे एकटा अपरिचित फल लागल छैक, अपरिचित फूल आ सुगन्ध लागल छैक । आब ओ पोखरि पोखरि नहि, फुलवाड़ी भ' जाइत छैक । फेर कतेक बसात डोल' लगैत छैक आ अपना संग एकटा इजोत लेने अबैत छैक ।

ओहि बालुक बसगोड़ल तोसकपर जखन हमरा लोकनिक निन्न टुटैत अछि, तँ भोर भ' गेल रहैक छैक । ओहारक चौहद्दीक भीतर हमरालोकनि जत' सूतल रही, तत' सँ कैक हाथ फराक पड़ल रही ऊपर-खापर बालुपर । इलाक फेरलाहा ओघरायल-तोबरायल साड़ी हुस्ने, ओहि ठाम पड़ल । हम खूब प्रगाढ़ भ' क' इलाक बाँहि छुलियैक, कतेक दबा क' ओ बिहुँसैत आँखि फोललक आ तखन बुझलक जे हमरा दुनू गोटेक मध्य किछु पड़ल अछि । से जखन देखलियैक तँ लाज भ' गेल । हमरा दुनू गोटेक मध्य पड़ल रहय चुनमुन्नी निफिकर—हमरालोकनिक विवाह-पुरोहित । बड़ ध' मा गेलहुँ दुनू गोटे, चिन्ता भेल । कतहु पिचा-तिचा ने गेल होअय, मुदा ओ दुरुस्त रहय । यद्यपि

ईहो आश्चर्य जे हमरा आ इलाक शरीरक बीचमे कोनो रिक्त स्थान नहि छलैक, जाहिमे ओ रहि सकैत, तखन कत' रहल ? आ सेहो जीवित ! चुनमुन्नी अपन पाँखि फड़फड़ौलक आ इलाक गालपर अपन ठोर रगड़' लगलैक । इला ओकरा अपना हाथेँ सोहराब' लगलैक । हम आश्चर्यसँ देखैत रहलहुँ ।

—"तोँ कत'सँ चल अयलें ?" हम पुछलियैक । ताहिपर इला बिहुँसलि, मूड़ी गाड़ि लेलक ।

"हम माँक पेटमे नुकाति रही, एखन आबि गेलहुँ ।" हम चुपचाप ओकर ई बात सुनि लेलहुँ । ओ खन हमरा दिस देखय, खन अपन माँ दिस आ कने गंभीर भ' जाय । फेर एक बेर उड़लि आ माथकेँ ठोड़सँ दुलार कयलक । हमरो दुलार कयलक । बाजल—"हम एहि मरुभूमिक ई मन्दिर बनलहुँ अहीँ सभ लेल । आब हम धर्मशाला बनि जाइत छी । अहाँ सभ जखन चलैत-चलैत थाकि जाइ तँ हमरामे विश्राम करब आ जँ कतहु हेरा जाइ पयो, बाट भोतिया जाय तँ हमरे लग आबि जायब । फेर दुनू गोटेकेँ भेँट होयत, दुनू गोटे मिल-जुलि क' रहब । आब हम सभ ठाम धर्मशाला रहब । हम 'चुनमुन्नी धर्मशाला ।'"

ओकर आँखि नोरा गेलैक । इला उदास भ' गेलि । हमहूँ विचित्र भ' गेलहुँ । चुनमुन्नी कतहु चल गेल । ओकर लाल ओहारमे हम आ इला ओकर चल जयबाक घटनापर दुखी होइत रहलहुँ । इला फेर हिचुकि-हिचुकि क' कान' लागलि । हम ओकर कपारपरक लेभड़ल दुहदुह लाल ठोपपर अपन मुँह रखैत चुपचाप ओकर पीठ थपथपबैत रहलियैक—बड़ी काल । ओ कनैत रहलि, पुछैत रहलि—चुनमुन्नी किएक भ' गेल धर्मशाला ?

ओकर एहि प्रश्नक कोनो जबाब नहि छल हमरा लग । तेँ हम खाली ओकर पीठे थपथपा सकैत छलियैक । आ, ओ लगातार अपन ई प्रश्न पुछिते जा रहल छलि—"किएक चुनमुन्नी धर्मशाला भ' गेलि ? अहाँ किएक ओकरा होब' देलियैक से ? आ आब सभ दिन धर्मशाले रहति ? अहाँ बजैत छी किएक नहि ? अहाँ जबाब ने किएक दैत छी ? हम अहीँकेँ पुछैत छी, कहू हमरा, चुनमुन्नी किएक भेलि धर्मशाला ?" ओ हमर छातीपर अपन कपार पटकि-पटकि क' पुछि रहलि छलि । हमरा लग कोनो जबाब नहि छल । हम खाली ओकर उत्तेजना आ कलेशकेँ समेटि क' राख' चाहैत छलहुँ । ओकरा शान्त आ सुखी कर' चाहैत छलहुँ, मुदा ओ अस्थिर छलि ।

हम की करू ? अपना विषयमे हम सोचयहुँ आ गुम भ' गेलहुँ । फेर बड़ी जोर बन्हड़-बिहाड़ि उठि गेलैक—साँसे बन्हार ।

नील फूल

सिरमा लग प्याली-तश्तरीक टुनटुनीसँ आँखि खुजि गेल । आ, लाल पारदर्शी चूड़ी देखा गेल । हम मूड़ी घुमाक' देखलहुँ तँ माय दिस मुस्किता झुकलि रहथि, प्याली राख' लेल । हम घड़फड़ा क' उठि गेलहुँ । साँसे देह पहिने चद्दरि ओढ़ि लेलहुँ । ओकरा कने हँसी लगलैक । हमहूँ हँसलहुँ ।

—'बैसू ।' हम कहलिऐक । भोरे-भोर ओकरा कतेक दिनपर देखि रहल छलिऐक । हठात् विश्वासे ने हो जेना ।

—'अबैत छी, कने अपनो चाह लेने ।' ओ चल गेलि । फेर एक मिनटक भीतरे घुरि आयलि । बामा हाथमे प्याला-तश्तरी लेने आ चम्मचसँ टुनुर-टुनुर चीनी मिलबैत । आबिक' पयर बिछा कुर्सीपर बैसि मूड़ी झुका लेलक । आकृति कचनिमाहे उठल सन लागि रहल छलैक । अवस्था तँ कम नहि छैक । तेहन मेनाओन मुँह छैक जे एकरा देखि क' हमरा हृदयमे एकटा तेहने मोह उपजै-ए जे एकटा कोनो स्नेही मैनाकेँ देखि क' उपजि सकैत छैक ।

—'बिष्णुजी उठलथुन ? तोँ बड़ सबेरे उठि गेलें ? आइ-काल्हि बेस चुस्त भ' गेलेहें ? की बात ?'

—"एहिना निन्न टूटि गेल । चुस्त की कपार होयब ? दफ्तरमे किछु जरूरी व्यवसाय अछि, सेहो बात !" ओ चाह पीलक एक घोँट । हमहूँ पीलहुँ । हमरा दुःख भेल । ओकर सबेरे उठि जयबाक कारण हम स्वयंकेँ मानि रहल छलहुँ । हमरे दुआरे ओ सबेरे उठल-ए ।

—'ओ गेलाह अछि एकटा मित्रक ओत'। घंटा भरिक बादे घुरताह। एखन तँ बाजबो कयल-ए छ'बे ने ?''

—''की, छथे बजलै-ए ? वाह !'' फेर पुछलिऐक—''कोन मित्र छथिन, जनिकर हम नाम नहि जनैत छियनि ?''

—''सत्ते, नहि जनैत छियनि। नव मित्र छथिन। बुनू गोटे मिलि क' सहकारिताक आधारपर कोनो विजनेस सोचि रहल छथि।'' ओ मात्र एक टा तटस्थ सूचना जकाँ द' क' हमरा दिस तकलक। फेर आँखि झुका लेलक। हम देखलिऐक, पहिने जकाँ सुस्मिता सुन्दरि नहि अछि आब। थाकि गेलै-ए। कने आर गुमरि भ' गेल-ए। तथापि, ओकर आकृति परक ओ विशेष बात कतहु लुप्त भ' गेलै-ए। हम बड़ गम्भीर भ' क' ओकर आकृति, आँखि आ पातर ठोढ़-परक रेखा सभ ताक' चाहलहुँ, जे किछु वर्ष पूर्व बड़ जीवन्त आ तीव्र छलैक ओकरामे। से सभ एकटा शान्त उदासीमे बदलि गेलैक। ओकरा संबन्धमे ई अनुभव क' आ सोचिक' बड़ क्लेश भेल।

—'चाह पीबू ने राजू दा ! ठंडा भ' जायत। एक प्याली आर चढ़ा अयलहुँ हें। हमरा मन पड़ि गेल। अहाँ तँ दू प्याली पीबैत छी एखन क'।''

ओ एक रत्ती बिहुँसलि। हमरा नीक लागल।

—'तोहर बाल-गोपाल सभ कुशल्य रहैत छहु कि नहि ?'' हम पुछलिऐक।

—''कपार रहत ? किछु-ने-किछु होइते रहैत छैक। साहिपरसँ दफ्तरक चक्कर। ई अपन दफ्तर, हम अपन दफ्तर। दाइपर सभकेँ छोड़ि क' रह' पड़ैत अछि। सेहो जँ ठेकनगरि रहय तखन ने ! मुदा, उपाय की ? नोकरी छोड़ि नहि सकैत छी। छोड़ब तँ चलत कत' सँ ? कोना ? आब तँ एहि घरेक किराया डेढ़ सय टाका क' देलक अछि। कहाँदँ चलतैक ? ओ तँ दुनू गोटेक दरमाहा मिलाक' कोना ना खींचि-तीरि क' चलल जाइ-ए, सैह ! नोकरी हुनको मन तीत रहै-ए। की दुर्योग जीवनक ! आब तँ हम एकदमसँ परिवारक रखी जकिते ने छी ! अनका तँ नहिएँ जे अपनोकेँ नहि लगैत छी। धरती। जखन लोकक खाइखाल बढ़ि जाइत छैक तँ ओकरे पूर्ति करैत-करैत आकर आ तखन ओ बढ़ल आइकाल्हि बुझाइ पड़ैत छैक अनिवार्य आवश्यकता। तँ की करी ? कहियो सोचलहुँ ने रही जे नोकरी कर' पड़त—सेहो एक टा कार्यालयमे। मुदा, आइ नोकरीयो करैत पाँचम वर्ष बीति रहल अछि। मन घोनाइत भ' जाइ-ए। ऊबि गेल छी। होइत रहै-ए जे सभ दिन हम अपनाकेँ किछु आर अनचिन्हार आ किछु आर अन्हार बनबैत जा रहलि छी। सभ दिन किछु आर भेल जा रहलि छी। सोचि क' धकड़ाहटियो होइत अछि आ जीबैत सेहो चल' जा रहलि छी। बिझायने कि ने ?'' ओ ओळकसँ, लाचारीसँ बिहुँसलि।

—''बुनू टा नेना से पैघ भ' रहल-ए। एकर पढ़ाइ-लिखाइ चाही। गाममे हिनकर परिवार, हुनक माय-बाबूजी। ओ लोकनि पचास प्रतिशत निर्भर हमरेलोकनिपर। हुनकालोकनिक दबाव। फेर, एत' अपन सामाजिकता, तकर निर्वाह आ बात-विचार। होइ-ए कखनो-कखनो जे अपन गरदनि अपने हाथे मोकि ली किंवा कतहु छोड़ि-छाड़ि क' पड़ा जाइ। मुदा, से कएलो कहाँ होइ-ए ? किछु ने। फेर वैह दफ्तर जाइए पड़ैए आ सभ टा देख' पड़िते अछि। मन घोर रहै-ए। जखन दफ्तर जाइत काल दुनू नेना बरण्डापर ठाढ़ हमरा दिस टुगर बकों देखैत रहै-ए तँ आँखि मिलयबाक धैर्य नहि रहै-ए, राजू दा ! वैहो यंत्रणा एकसरे छैक संसारमे। मुदा, एहू यंत्रणाक तँ आब अभ्यासित भ' चुकल अछि मन। रोज-रोजक ई कचोट आब बड़ सामान्य भ' गेल-ए मनमे। मुदा, कतहु बड़ गहीँर, अदृश्य रूपेँ मनमे जेना तरहरा घूमि रहल-ए आ हम भयभीत बनलि रहैत छी। ओकरा सभसँ आँखि बचाक' दफ्तर जाइत छी। तैयो कहियो क' कोम्हरोसँ आबि क' कोनो नेना साड़ीक खूँट ध' लेत आ कहत—''आइ नै जाउ मम्मी ! आइ रहि जाउ हमरे लग।' तँ ओकर अबोध आँखिक ई अपेक्षा मनकेँ चोटा दैए। हम ओकर एहि आग्रहक लेल इस्तीफा धरि द' देबाक संकल्प क' लैत छी। मुदा, से छैक सम्भव ? जेहो पानियेँ फेटल एक पाव दूध ओकरा भेटल जाइत छैक, काल्हि कत' सँ भेटि पौतैक ? तखन तँ ओहिना गलीक आवर्त गरीब नेना सभ जकाँ अधंड भेल निवस्त्र बौआयल फिरत। फेर अपन संकल्प अपने तोड़ैत छी। कोनो वेदना आ लाचारीसँ निरपराध नेनाकेँ लोहुछा दैत छियैक, फेर कोठलीमे बैसि क' कनैत छी। मन हल्लुक भ' जाइ-ए। हिनकर हाल तँ कुशल अछि। दफ्तरक अतिरिक्त किछु टा कयल नहि लाकथि से बिन्ने।'' ओकर आँखि डबडबा गेलैक। गरा सेहो भरि गेलैक। हमरा ओकर मुँह देखबाक इच्छा नहि भेल। ओकर हाथमे चाहक आधो प्याली ओहिना।

—''तोहर चाह सेरा गेलौक सुस्मिता !''

ओ चाहक घोंट लेलक आ खिड़की दिस ताक' लागलि। हमर मन उदास भ' गेल। हम ओकरा पुछ' चाहैत रही जे एहि बीचमे की सभ

लिखैक-पढ़ैक अछि ? कोनो नीक पोथी ? मुदा, ओकर एहि प्रसंगसँ मन खिन्न भ' गेलै । ओकरा प्रति एक टा तुच्छ सहानुभूति सँ हम चुप रहि गेल छलहुँ । ओ किछु कहि क' जेना भीतरे-भीतर अपनाकेँ सहज बनबैत चुपचाप बैसलि रहलि । हमहूँ भोरक प्रकाशमे कोठलीकेँ देखलिऐक । सभ किछु ओहिना अवेरल, अस्तव्यस्त आ विछिन्न । हम तखन फेर सुस्मिताकेँ देखलिऐक । ओ हमरे दिस ताकि रहलि छलि । हमर आँखिसँ मिलिते ओकर आँखि झुकि गेलैक ।

—"सभ टा समय छैक । तों बेकार चिन्ता करैत छेँ । अपन भरि नीक सोचि क' करैत जाइ, बस । आइ मनुक्ख एहिसँ बेसी कैयो की सकै-ए सुस्मिता ? हम तँ कहैत छियौक, कयो की क' सकैत छैक ? सौंसे, चारू दिस, एकटा बात छूटि रहल छैक सभक पछिसँ । लोक एहि छुटलाहा बातक कारणेँ कैयो रहल-ए आ भोगियो रहल-ए । एक नहि, अनेक लोक । जतेक अछि, से सभ अपना-अपनी क' आत्मीय लोकक अस्तित्वक लेल एकटा विपरीत परिस्थितिसँ संघर्ष कर'मे लागल अछि । ओहो विपरीत परिस्थिति, कोनो बुझितहुँ जे महत्वक छैक, सेहो नहि । ओहने-सन जेना दिनभरि कार्यालयक काज करू आ रातिमे डेरा आबि क' जारनि चीरू कुरहरि ल' क' । आब, ई जे, परिस्थिति छैक से तेहन अकच्छाह आ रचनाहीन छैक जे मनुष्यकेँ एकटा बेकार बर्थ लेल, प्रस्तुत कहू जे मात्र रोटी-नोन जोड़' टाले, तोड़ि क' जर्जर क' दैत छैक आ से लोककेँ जर्जर होब' पड़ैत छैक । उपाय ? पेटमे अन्न नहि जयतैक तँ संस्कारक लोको तँ नहि सुझतैक ? आखिर की करय लोक ? लोक रोटी-दालि मात्र लेल सौंसे सामर्थ्य बरोपि रहल-ए, तैयो पेट भरैत नहि छैक, ने ओकर, ने ओकर स्वजनक, ने समाजक अधिकांश लोकक । की गाम, की शहर, सभ ठाँ ।"

हमरो मनमे बहुत रास बात छल जे हम कहु' चाहैत रही । कोनो अभिन्नकेँ कह' चाहैत रही—मुक्त होब' चाहैत रही । मुदा से भ' नहि सकैत छल । एखन भोरे छलैक । आ भोरे-भोर एहन समस्या-बातमे गम्भीर भ' जायब कने कठाइन लागल । तेँ विवेकसँ काज लैत चुप भ' गेलहुँ, एकाएक । सुस्मिताकेँ ई बात बुझा गेलैक । ओकर आकृतिपर व्यस्तताक रेखा देखार भ' गेलैक ।

—"अहाँ चुप भ' गेलहुँ राजू दा ? हमहूँ भोरे-भोर बोर क' क' ध' देलहुँ अहाँकेँ, नहि ?

—"बोर की करबेँ ? से काज आइ-काल्हि हमरे भ' गेल अछि । हमहूँ तँ भावक बेढ़ देखितैक तोरा । छोड़, जाय बहैक । ओहर दोसर प्याली चाह होअइ दार्जिलिङसँ आबि रहल छौक ?" हमर एहि व्यंग्य-जिज्ञासापर ओ हँसलि नहि, ने अपना स्वभावक अनुकूल खूब तेज कोनो जवाबे देलक । तखनहि लागल जे ओ कतहु बहुत उदास अछि । हमरा कोनादन लागल । हमहूँ अपनाकेँ कनियो उत्साहित नहि क' पौलहुँ । ओ उठिक' गेलि आ एक प्याली चाह ल' क' आइलि । हम आधा प्याली ओकराके दैत कहलिऐक जे आइ डेढ़ प्यालीएँ चलि जयतैक । दुनू गोटे चाह पीबैत चुप रहलहुँ ।

—"अहाँ आइ दूक बदला डेढ़े प्यालीसँ तृप्त भ' जाइ छी आ हम एकक बदला डेढ़ प्यालीसँ तृप्त होइ !" एतेक कालमे एखने टा ओ विशिष्टताकेँ कनेक देखार होअ' देलक । एक प्रकारसँ हमरा दुनू गोटेक सम्बन्धक बीच ओकर ई कहब एकटा अपेक्षा-आमंत्रण जकाँ लागल । हमरा उत्साहक अनुभव भेल ।

—"एहि बीचमे की सभ लिखलें-पढ़लें, से कहु ।" हम पुछलिऐक ।

—"किछु नहि । किछु फटीचर तरहक उपन्यास, किछु जासूसी आ एकबार, फिल्मी पत्रिका ।"

—"सत्ते-सत्त बाज । लिखलेहेँ किछु की नहि ?" हम अपनत्व व्यक्त करैत पुछलिऐक ।

—"अहाँक सप्पत राजू दा ! बस एतबे । मगो नहि करै-ए । होइत अछि, की होयतैक । लिखिये क' की होयत ? कैक ठामसँ चिट्ठी आयल । अहाँकेँ तँ बुझले अछि । पाँच-सात टा वस्तु जावत छपल तावत बड़ नीक लागल, तकर बाद बड़ महत्वहीन बुझाय लागल । ताहूपर जी मास पहिने प्रकाशित कथाक प्रतिक्रियामे दू-दू चारि-चारि पन्नाक पाठकक पत्र । पहिने ताहूमे बड़ मन लागय । मुदा, अागाँ जे हमर ओहिनो रचनाक विषयमे कतेको प्रतिष्ठित आदमी आ स्थापित साहित्यकारलोकनिक तेना ने प्रशंसात्मक पत्र सभ आब' लागल जे बड़ बेजाय बुझना गेल । हमरा साफ-साफ बुझायल जे सांघलो छैक, शोषण । हम रचनाकार होयबाक कारणेँ जानि रहलि छी जे हमरा अमुक कथा लिखबामे किछु लागल नहि, ने समय, ने अनुभव । ताहूपर जँ प्रशंसा आ मांग हो तँ सन्देह स्वाभाविक छैक । तेँ आस्ते-आस्ते मन विरक्त होब' लागल । अहाँकेँ आश्चर्यो होयत जे अहाँक मणीकान्तो सेहो बड़ भावोच्छ्वसित पत्र लिखलनि, कथ टा ।"

हम एहि नामपर सत्ते चौंकलहुँ। ओ व्यंग्यसँ हँसलि। हम अर्थ बुझलिऐक।

—'राजू दा, सत्य पुछी तँ नर्गोसेवीक पत्र हमरा एकटा विजयक संतोष देलक आ एहि अनुभवक समर्थनमे एकटा सशक्त प्रमाण, जे अहाँक प्रश्नक उत्तर भ' सकत। हमरा इच्छा भेल रहय जे ओ पत्र यथावत् अहाँक पलंगपर पटा दी, मुदा नहि जानि किएक, अहाँसँ भेँट होएबाक प्रतीक्षामे रहलहुँ। ओ पत्र अहाँकेँ देखाएब। मुदा, एखन रहऽ दियौक। एखन अहाँसँ गप्प करी, सैह इच्छा होइ-ए। तखन यैह बुझू जे आब डेढ़ वर्षसँ बैसी भ' गेल लिखना। भरिसक आब लिखबो नहि करब। की होएतैक लिखि क' ? सभ सार हरामी होइ-ए। वासकेँ नहि चीन्हत, ने चिन्हबाक यत्नो करत। बलत्कारकेँ चीन्हत आ स्कैंडल करत। देखत आकृति आ मांसु। हे तेहन खराप आ बैमानीक बात सभ-ए जे साहित्य हमरा नजरिमे आब मात्र एकटा ढोंग 'अन्हार बिजास गृह'मे जयबाक अव्वल सीढ़ी मात्र बुझाइ पड़ै-ए। एहिमे संघर्ष किछु नहि, आ लिखि क' कवि सभ संघर्ष, अ:, संघर्षक नाटक करै-ए। बस। हम आब एहि विषयमे सोचि क' खौंझा जाइत छी। आ, हम पत्रिका सभ लेब बन्द क' देलहुँ। बेकार! एम्हरसँ ओम्हर पढ़ि जाउ, एकोटा रचना अहाँकेँ कतहुसँ नहि प्रभावित करत। फोटो सभ तँ सुन्दर रहत। लहक-चहक बेस। मुदा हमरा तँ एम्हर बुझायल अछि जे कोनोटा रचना अपन समयक सोझाँ ठाढ़ नहि भ' सकत। से किएक नहि हो? आखिर कवितासँ लोक की अपेक्षा करै-ए? कोनो कवि-सम्मेलन की? मासक मास नीक वस्तु एकोटा पढ़ब से नहि भेटि सकत, जखन कि एतेक-राश पत्रिका-पोथी सभ छपि रहल अछि, ओकर विमोचन भ' रहल अछि। थाकल साहित्यसेवीलोकनि अपन कर-कमल आ मुखारविन्दसँ पैघानक राशि प्राप्त करैत छथि आ कावक नव-नव 'वाद'मे महाग्रंथ लिखैत छथि, ताहुमे की छैक? समयपर छापल ओहिना सूदि-दर-सूदि, जे ओ अमुक लोकसँ ओसूल करैत ई केहुन दयनीय आ भ्रष्ट बात छैक? की करबैक? ई तँ अपन साध्य अछि ने जे ओहि बैमानीमे अपनाकेँ साझी नहि करी! खराब बात आ विपरीत वातावरणमे अपन व्यक्तित्वक, भलेँ नगण्ये, सहयोग नहि करी। अपना तरहेँ जे ठीक आ नीक हो, सैह करैत जाइ। आ, लिखब कोन महान बात छैक? लिखबो कयलहुँ आ सचिवालय दौड़ैत रहलहुँ—सरकारी प्रकाशनक लेल। ई की महत्त्वपूर्ण आ महान! ई त भारी क्षुद्रता थिकैक। एहि क्षुद्र मनुष्यक स्तरपर हमरा नहि उतरबाक मन होइत अछि।'

ओ किछु उत्तेजित भ' गेलि रहय, किंचित् हकमिओ गेलि रहय, बजबाक एकाग्रता आ उत्तेजनामे। हमरा ओकर सभ बात नीक लागल आ संतोषो भेल जे अपनाकेँ कतहु छोड़ि क' नै बढ़ि गेल-ए। एकर अनुभवक समूहकेँ एकर अपन चिन्ता आ दृष्टि एकटा बाट देखा चुकल छैक। ई पूरा समकालीन जीवनक सन्दर्भमे साहित्य आ कलाक औचित्य पर एकटा मुखर आ अनिवार्य प्रश्न लगा रहल-ए, सर्वथा ज्वलन्त आ चिन्तन-परक। हमरा ओकर एहि रचनात्मक स्तरपर जीवित रहबाक अनुभवसँ तेहने हर्ष भेल जेना कोनो पिता अस्सी कोस बनारस जा देखय जे ओकर प्रवासी संतान कुशल-क्षेमसँ छैक। हम सुस्मिताकेँ देखलिऐक।

—"हम बड़ी काल उठलहुँ राजू दा! अहाँक ई बुहल कापी पढ़ि लेलहुँ।" पहिने सुस्मिता कोनो एहन बात करय तँ दुष्टतासँ पहिने हँसय। आइ जखन एहि बातपर ओ गम्भीरे सूचना देलक तँ मन खिन्न जकाँ भ' गेल। हम कनडेरिये किछु सतर्क जकाँ अपन कापी देखलहुँ। राति नहि मन लागल तँ भेल रहय जे किछु लिखी। से किछु संकोचो भेल। भेल जे अनेरे ओ हमर कापी पढ़लक।'

—"ई समटा अहाँ अपनेपर लिखि रहल छी ने?" ओ पुछलक। पुछलक नहि, कहऽ लागलि—हमरा होइत छल जे गाम जा क' अहाँ प्रसन्न छी। गामक लोक छी तँ गाम जा क' अहाँ प्रसन्न होएब। मुदा एतेक विवश आ मृतप्राय जीवन भ' गेल होयत अहाँक, से हमरा सोचलो ने पार लगै-ए। एना किएक भेल अहाँक संगे? अहाँ जखन एतसँ गेल रही तँ भेँटो नहि कयने रही। किछु कहनो नहि रही, तैयो लागल रहय—गाममे अहाँ खूब नीक जकाँ रहब, तेँ गेलीहेँ। एहि शहरी हर-हर-खट-खटसँ दूर! मुदा ई सभ पढ़ि क' दुःख भेल। अहाँ गाम जाक' एकटा भारी उदास आ निष्क्रिय जिनगीक बीक पात जकाँ लगैत छी हमरा! एहन अखन जीवन अछि थोत' तखन किएक नहि ई शहरे? ट्यूशन किंवा मुफरीकरी? हमरा तखेँ कष्ट भेल समटा पढ़ि क'।" ओ चुप भ' गेलि।

—'बेकार पढ़लौँ तोँ।' हम टार' चाहलिऐक हँसि क'। यद्यपि, ओकर समटा बातमे हमरा चारू दिससँ घेरि लेने रहय। निकलि नहि सकितहुँ हम। से यतनो नहि कयलियैक। एक बेर ओकरा देखलियैक, एक बेर अपन कापीकेँ। चुप रहलहुँ।

—"इला कोनो चिट्ठी लिखैत अछि ?" हमर माथ झन्न द' क' उठल सुस्मिताक एहि प्रश्नपर। आँखि आ नाक कड़ुआ गेल। हम खिड़की दिस ताक' लगलहुँ। ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भेल। ई हमर सभसँ सुन्दर आ हारल अंश छल। हमरा सभैत छल जे हमरा आ इलाक अतिरिक्त क्यो नहि जनैत अछि। इला हमर कल्पित सम्बोधन थिक जे कोनो अत्यन्त पवित्र आ अगाध क्षणमे हम एकटा कालेजिया लड़कीकेँ देने रहिऐक पहिले-पहिल, आ स्नेहसँ ओकर दुनू हाथकेँ अपन दुनू हाथमे खूब भावावेशमे दबैत ओकर आँखि देखने रहिऐक, जाहिमे हमर एहि नव नामकरणक अवसरपर लजायल गौरवसँ भरल एकटा धड़का जेना लागि गेल रहैक। ओ हरिण जकाँ चौंकि-चौंकि उठय। हमरालोकनिक ओहि एकान्तक कोनो साक्षी नहि अछि। मात्र हमर कल्पित नाम—इला। आ ओकरा मनमे जानि नहि की? एकाएक हमरा लागल जे किछु बेसी काल धरि हम चुप रहि गेलहुँ। साध' चाहलहुँ स्थितिकेँ।

—"तोहर ई दुर्गुण छौके सुस्मिता! ई हमरासँ सम्बन्धित जिज्ञासा कोना मानि लेले-हेँ? तोरा ई नीक जकाँ बुझल छौक जे हमर कोनो परिचितामे इला ककरो नाम नहि छैक। एकटा कल्पित कथापर, एतेक भरोस पाठक क' सकैत अछि, मुदा तोँ जे स्वयं रचना करैत छेँ, आ हमरा एतेक लगसँ जनैत छेँ, तकरा ई सन्देह कोना भेलैक? बेकार आ निष्क्रिय बैसल-बैसल बैह सभ किछु-किछु लिखैत रहैत छी। दुपहरिया कटि जाइ-ए। सेहे-सेहे अनेरो बौआइत छी। समय ससरि जाइ-ए। बस। तेतक आरियोपर रहैत छी एही कागत आ कलमक मनःस्थितिमे, से धरि ठीके।"

—'हम कोनो आन भावे नहि कहलहुँ-हेँ राजू दा! अहाँक ई इला बैह थिक, चिरश्याम चुप्पी छौंड़ी—कविता। अहाँक ताला लागल कोठली देखि क' अनगनित बेर उदास घूरि आबयवाली कालेजिया छौंड़ी। अहाँ ओकरासँ विवाह कर' चाहैत छी। ओ नहि तँ ओकर स्वप्न अहाँकेँ बेहारि रहल-ए। अहुँसाँ ओकरा बिसरि नहि सकलहुँ अछि।" सुस्मिता कहैत गेलि। हमरा विरोध करबाक इच्छा नहि भेल। की करितिऐक? मूड़ी लटकौने बैसि गेलहुँ। हमरो बूझल छल जे हमर इला के थिक, तँ सुस्मिताकेँ बूझल छैक—ठीक-ठीक बूझल छैक। तैयो झाँपने रही बातकेँ। ओ ओकरा साफ क' देलक। हमरा एकटा संतोष भेल, हमर मनक एकटा नितान्त नहीँर अभाव

थिक कहने क्यो एकटा बन्धु जनै-ए आ मनेमन सिनेह रखै-ए। हम कृतज्ञ भावसँ सुस्मिताकेँ देखलिऐक।

—'राजू दा! अहाँ रहि जाउ एतहि। कोनो-ने-कोनो प्रबन्ध भैये जयतैक।' हम हँसलहुँ ओकर एहि प्रस्तावपर। कोनो-ने-कोनो प्रबन्ध, से ओकरो ने बूझल छैक। ओकर एहि आग्रहमे भावनाक महत्त्व बहुत, परंच तत्वे।

—'कोन प्रबन्ध? आ ओना ई शहर आब हमरा रहबा योग्य लागय वा नहि, सन्देह होइ-ए।"

—'किएक? एहि शहरमे की भ' गेलै-ए? शहर तँ केहन बढ़ियाँ बहुते सेल आ रहलै-ए।"

—"से नहि। जकरा छोड़ि चुकल छी, तकरा फेरसँ अनुभव करबामे असौकर्य नहि होइत छैक? आ पूरा व्यवस्था फेरसँ जमाबी, से साहस नहि होइत अछि।"

—'किएक? एहिमे साहसक कोन बात? कोठलीक किराया आ खयबाक खर्च अहाँ कोनो उद्योगेँ नहि निकालि सकैत छी?" ओ अविश्वाससँ पुछलक।

—'कोन उद्योगसँ? कोना?'

—'एतेक अखबारे निकलैत छैक एत' सँ। किछु स्तम्भो लिखब तँ पाइ आबिये जायत।" ई स्तम्भ लिखबावला प्रस्तावपर एकटा बात मन पड़ल। हमर आकृतिपर कोनो एहन भाव अवश्ये उतरि आयल होयत जे सुस्मिताकेँ देखबामे आबि गेलैक।

—"किछु मन पड़ल-ए ने?" ओ पुछलक।

—"तोरा मन हेबतौक, परीक्षाक बाद किछु दिन बेकारे पड़ल रही ने! तँ एक बेर भोरे-भोर ओ आयलि रहय। ओकर केवाड़ खटखटयबाक अंदाजेसँ हम चीन्हि गेलिऐक—उएह थिक। सएह रहय उएह। कोठलीमे आबि क' पयर लग बैसि गेलि, ओछाओनक कोनपर। किछु टा नहि बाजलि। भोरे-भोर ओकर अयबासँ जतेक प्रसन्न भेल रही से बिला गेल ओकर आकृति देखिक'। एकदम उदास आ सुन्न जकाँ। आँखि उतरल। कनेक चिन्तित भेलि। किछुटा नहि बाजलि। ताहिपर ओकरा हल्लुक कर' लेल किछु-किछु कह' लगलिऐक, तैयो ओ चुप्पे रहलि, एकोरत्ती हँसबो नहि कयलक। पाछाँ हमरो बेकार लागल अपन नाटक।

—'तोँ तमसाएलि छेँ। बूझल अछि। की होइतैक आबिक' ? कोन सुख ?'' ओकर आँखि डबडबा गेलैक। हम देखलिऐक। मुड़ी झुका लेलक। केहन जिजिविषा आ गुम्मा अछि, सेहो तँ बूझले हेतौक। किछुओ नहि बाजलि। कोनो अभियोग नहि, कोनो बात नहि। यद्यपि, हमरा बूझल रहय। हम कते दिनसँ ओकर भेँट नहि कयने रहिऐक, तकर ओकरा दुःख रहैक। अपन स्वाभिमानसँ ओ कय दिन धरि नहि आयलि। फेर ओहि दिन आयलि। दुःख आ भावनासँ टूटिक' आयलि रहय। ई बात प्रधान रहैक। ओकर आकृतिसँ ई बात देखाइत रहैक। ओहिना मन पड़ैए—ओ भरि राति सूतलि नहि छलि होयति। हम ओकरा लग चल गेलिऐक। ओकर कान्हपर बरहत्थी रखलिऐक। ओकर आँखिसँ ढब्ब द' नोर खसलैक। मुदा, शरीर कतहु हिलबो नहि कयलैक। सिसिको भरि ने।

"की करिऔक ? तोँही कह ने ? हमरा किछु नहि सुझैए। एहि बेकारी आ एकतरफ संघर्षमे भरिसक हमर समटा बाते छूटि रहल-ए। हमरा किछु नहि भेटल एकरा पाछाँ, एत' धरि जे तोँहु नहि। हम नै चिन्ता करैत छी, से नहि। मुदा, हम की करू ? तोहर सोझाँ झोंपवाक ताकति नहि होइत अछि। हीनताक बोध होब' लगैत। हम की करू ? हम जनैत रहैत छी ओहि समयकेँ। हम जनैत रहैत छी जे तोँ प्रतीक्षा करबेँ हमरा अयबाक। नहि जा होइत अछि। हम की करू ? आब कैक मास भ' गेलैक ? कैएक ठाम दौड़-धड़हा कयलहुँ, करिते रहैत छी। ई बेकारीक बोध आ एकरे हेतु लड़ाइ, हमरा जेना हृदयहीन बना रहल-ए, इला। हम तोरासँ नहि भेँट करी, एहिसँ बेसी दुःखक दोसर बात की भ' सकैत छैक ? कय-कय दिन देखबा म' जाइए। मन औनाइत-औनाइत तोरे कोठलीमे चल जाइए। कोठलीमे खुजल किताब आ कापीपर तोहर मुड़ी पड़ल छौक आ बड़ी-बड़ीटा आँखि बन्द छौक। हम उदास भ' क' घूमि अबैत छी। आब तँ ओहनो लोकसँ पाइ पैँच माङ' पड़ल-ए जकरा आगाँ हाथ पसारब जीवनक सबसँ निन्दनीय बात लगैत रहय। आत्मरक्षा लेल सेहो करैत छी। यैह हालत रहल तँ संभव छैक, शहर भरिक सम्पूर्ण परिचित लोकक नजरिमे एकटा उधारखौक, ठगी आ झुट्ठा आदमी भ' क' रहि जाइ। एहिसँ बड़ भय होइ-ए। तेँ ने बाँच' चाहैत रहैत छी, सबसँ, तोरोसँ। तोरा की देखौक हम ? मुदा, तोरा किछु-ने-किछु देबाक मन होइत रहै-ए। से अछि किछु ने। तेँ तोँ दुःखी नहि हो।"

'' अहाँकेँ पन्द्रहो मिनट फुरसति नहि भेटल ?''

ओकर इएह एकटा वाक्य गड़ै-ए आइयो। ओहि दिन एतबे मात्र पुछने रहय। बस। हमरा किछु जबाब नहि फुरल। तेँ हम ओकरा खाली कान्ह थबा क' चुपचाप देखैत रहलिऐक। ओ उठलि आ अपन छोटका पर्ससँ एकटा कागतक टुकड़ी चोपैतत देलक—अखबारक कटिंग। राँचीमे कोनो अखबारक सम्पादकीय विभागमे सहायकक आवश्यकता छपल रहैक। भोरे-भोर ओ सैह देने रहय आबिक'। ओहि दिन अनेक दिनपर बुझाएल रहय जे अपन संघर्ष हम एकसरे नहि लड़ि रहल छी, इला हमरा कातमे अछि, ओहो लड़ि रहल-ए। एहि लड़ाइमे हम दुनू गोटे छी। ई सोचिक' मन फेर हरियर आ बलवन्त होब' लागल रहय। अपन सम्पूर्ण हारिकेँ आब हम एकटा जीतसँ बिसरि जाय चाहैत रही। तकरा हेतु हम अपनाकेँ तैयार कर' चाहैत रही। ओ स्थिरेसँ कोठलीसँ बाहर भ' गेलि। हम पाछाँ-पाछाँ बाहर धरि अयलहुँ। ओ चल गेलि। हमरा किछुओ टा बाजि नहि भेल। हम बौक भ' गेल रही।

—"ओत' अहाँ कयने रहिऐक आवेदन ?" सुस्मिता पुछलक।

—'त:। अरे, ओ सभ ओहिना नाटक रहैत छैक। आब कोनो नव बात छैक ? इन्टरव्यूओ भेने बभौलक। मुदा, कयलो की जाय ? बेकार लोक कोनो आवेदन कर'पर तैयार रहै-ए, कतहु। हम तँ अपन बेकारीमे नाम पड़ा गेलहुँ। गामोसँ खेतमे उतरि गेलहुँ। यद्यपि हैहो नहि जनैत रहिऐक जे चास कथीकरा कहैत छैक। एखनो खेती-बारीक बहुत कम बात बूझल भेल-ए। ओना 'कृषि-कार्य' करैत छी।'' 'कृषि-कार्य' हम जानि-बूझिक' कने उपहास रूपेँ कहलिऐक।

—'अच्छा राजू दा, अहाँ ई सपना अपने देखलिऐक—मरुभूमि, मन्दिर, पोखरि आ धर्मशालायला ?' सुस्मिता अनमन बच्चा जकाँ पुछलक।

—"तेँ हमर सपना आन के देखि देत ?" हम हँसी कयलिऐक।

—"अहाँ हँसी करैत छी। हमर आशय छल जे अहीँक सपना थिक ने ई ?"

—'हँ, हमरे। मुदा, ई सपना इलाक सेहो थिकैक, ताहि विषयमे नहि कहि सकैत छिऐक।"

—"किएक ? विश्वास नहि रहल राजू दा ?" ओ एना दुःखी किएक भ' गेलि से नहि बूझि पड़ल।

—"नै। से बात नहि। सपनाक सोत सम्बन्ध आदमीक अपन इच्छाकें मारि मोकि-मोकिक' कब्रिस्तान बनौलासँ छैक। आब, से नहि बूझल अछि। ने भेंट भेल-ए, ने चिट्ठिये-पत्री। कोना बुझबैक? आब तँ मोन कहैये जे समटा बात एक कात भ' क' प्रवाहित भ' गेल होयतैक।'

—"अहाँकेँ ओकर अभाव नहि खटकैत अछि?" हमरा किछु नहि बाजि भेल ओकर प्रश्नपर। खाली खिड़की-बाटे अनका घरक खपड़ैल पार देखैत रहलहुँ।

—"अहाँ बियाह किएक नहि क' लैत छी दलानेँ?" हमरा सटाक् द' लेना ओकर एहि प्रश्नसँ छौंकी जकाँ लागल। मन फछमछा गेल।

—"की सोच' लगलहुँ?"

—"बियाह कोना क' सकैत छी सुस्मिता? ओकरा कत' रखबैक? की खाए देबैक? की पहिर' देबैक?" हम बड़ संयत, किन्तु तिखाह भ' क' ओकरेसँ पुछलियैक।

—"लोक की खाय पहिर' आ रह' दैत छैक? सैह देबैक। सुखसँ तँ रहब।"

—"बेकार चिन्तैक ई सभ सुस्मिता। ओ केहुन सुखितगर परिवारक अछि, केहुन बढ़िया जकाँ रहै-ए से तँ तोरा देखल बूझल छौक, तखन तँ आदर्श आ भावुकताक नामपर दू बर्ख हमरा सीमामे हमर दुःख-सुखकेँ भावि क' चलैत, तकरा बाद मन तुषितताह होइत जैतैक, काट' लगितैक मन आ फेर कएह भरि मन माहुर होब' लगितैक। पूरा जीवनमे से माहुर पसरि जइतैक आ भोर-साँझ, दिन-राति उएह अट्ठावक्कर होइत। की तँ ओ भड़िआतैल छोड़िक' आगि लगबैत कि हमही रेल-तरमे सूति रहितहुँ। एहि सभमे आब की छैक तथ्य, महत्वपूर्ण? बेकार चिन्त सभ।"

—"ओकरा विषयमे किछु चिन्ता नहि अछि अहाँकेँ राजू दा?" ई प्रश्न टेढ़ रहैक।

—"मात्र इएह जे ओ सुखी रहय आ अपन मुक्त मनसँ जीवन स्वीकारि क' जीवय। एतबे।"

—"तखन बतौक बात बजलहुँ, सभ मिथ्या चिन्त—नाटक?" ओ बाजलि।

—"से कोना कहि सकैत छी?"

—"सने कहि सकैत छी। अहाँक ई चिन्ता सिद्ध क' दै-ए हमर बातकें।"

—"देख सुस्मिता! जहाँ धरि शिकाइत वा अभियोगक बात छैक से हमरा मनमे ओकरा प्रति किछु अछिये नहि। सत्य बात तँ ई जे ओ तेहन किछु नहि कयलक-ए। तेँ हम ओकरा विषयमे कतहुसँ छूटल नहि छी। जखन ओहि बेचारीक कोनो दोषे नहि छैक तखन ओकरासँ कोनो शिकाइत किएक हो हमरा? हँ, ओकरा मनक बात तँ नहि कहबो। संभव छैक, हमरा प्रति ओकरा मनमे ई अभियोग सभ जीविते होइक आ ओ हमरा प्रतियेँ कनेको अशान्ति उठा रहल होअय तँ ताहिसँ ओकरा शान्ति भेटैक सैह, इच्छा। तेँ कहलियौक जे ओ मुक्त मनेँ अपन जीवन जीब' लागय""।

—"से मुक्त मने जीवन जीब' लागय राजू दा?" हमराओकानि दुनू गोटे विष्णुजीक एहि आकस्मिक आगमन आ प्रश्नपर चौंकि गेलहुँ। मुदा, तत्काल कहलियनि—"मनुष्य मात्र। सभक मनपर दू-दू टनक पाथर राखल छैक। लोकक देह थकुचा-थकुचा भ' गेल छैक। से सभ लोकक मन मुक्त हो, जीवनक दुःख, संघर्ष आ कटुता खतम होइक, सैह। अहाँ नहि चाहैत छी विष्णुजी?"

—"हम एहि युगक लोक नहि छी? मुदा, ई अहाँक समटा माल हमरा जनैत मात्र एकटा बातपर आधारित अछि—'साधनक प्राप्ति, आर्थिक सुभीता।' से तखनेटा संभव छैक, आवश्यकता भरि समान बटबारा। बिना रुपैया-पैसा, अनका ई सभ किछु कतहु नहि भ' सकैत छैक, बयो लाख चाहय। अपितु सैह टा सभ किछु, सैह मानवताक चाही।"

सुस्मिताक आकृति हुनक एहि भाषासँ उतरि गेलैक। ओ मूड़ी निहुरा लेलक। हमरा हुनक ई गप्प ओतेक समीचीन नहि लागल, तथापि हम कोनो विरोध नहि क' सुनैत रहलियनि। तथ्य तँ छलैक जे मन पर दबाव द' रहल रहय।

—"मनुक्ख सदाओ चाहि रहल अछि, जेहो योग्यता आ शक्ति छैक, ओतबोकेँ सनयथाक गुंजाइश नहि छैक आ आस्ते-आस्ते लोक बेसी तीव्र आ आक्रामक स्तरपर उतरि रहल अछि। बहुत स्वाभाविको छैक। आइ नहि तँ काल्हि ई सभ फसाद उठबे करतैक। आ, उठबोक चाही। एहन बात तँ नहि जे पाइ किंवा साधनक अभाव छैक। परिस्थिति खाली सैह छैक जे सभ पाइ आ साधन किछु खास हाथ ओ तिजोरीमे बन्द छैक। तेँ ओहि

बन्द तिजोरीकेँ मुक्त करबाक छैक। से भ' रहल छैक कैक ठाम। तिजोरीवला लोक वा हुनके संस्कारक आ लगुआ-भगुआ जकाँ वस्तुतो लोक, एकरा डकैती कहैत छथिन, लूटि-पाटि कहैत छथिन। मुदा, से जे मोन होइनि, कहैत रहथुन। ओहि व्यक्तिकेँ बाट कोन छैक दोसर? ओकर थोहिंसे वस रहतैक तँ ओ लेत। एके घरमे जँ चारि गोटे सुखसँ भोजन करय आ चारि गोटे भूखेँ व्याकुल देखैत रहय तँ सह्य होयतैक? कोनो मनुष्यकेँ सहल पार लगतैक? नहि लगतैक। तखन होयतैक जबर्दस्ती बँटबारा—भोजनक, वस्तुजातक, घरक। से बटबारे थिक ई छीना-झपटी। इच्छासँ बँटबारा नहि क' होइत छनि, आदमाक छोटे पूँजीपतीलोकनिकेँ तँ छूरा, बम आ बन्दूकक बलेँ बँटबा लैत छथि। कोन बेजाय? ई तँ परिवारक सम्पत्तिक बँटबारी-बँटवारा थिकैक। जे रोक-थाम करैत छथि डकैती काहि-काहि क', से करैत रहथु। ई चलतैक। ई तँ तावत्, धरि चलबाक चाही, यावत् धरि आदमी एहि मोट-मोट परिस्थितिसँ मुक्त नहि भ' जाय, समस्या आसो वैकारियेक नहि छैक, एहि अन्याय आ शोषणोक छैक। से समटा तुरन्त समाप्त होयबाक चाही। यावत् से नहि होइक कोनो प्रताड़ित आ शोषित लोककेँ चैनसँ नहि रहबाक चाही। जे सभ नपुंसक छथि, हुनकर कथा नहि होअव। जकरामे कनेको आत्म-सम्मानक भाव आ अपन अधिकारक औचित्य बुझबाक, शोषित नहि होयबाक चिन्ता छैक, से सभ लड़ाइ करत सभकेँ करबाक चाहियैक। छुच्छे बैंकेक राष्ट्रियकरण तँ सभ किछु नहि ने छैक। जाहि वृहत् समाज-कल्याणक उद्देश्येँ ई राष्ट्रियकरण कयल गेल-ए, से कत' फलित-कार्यान्वित भ' रहल-ए? देखियौक। जकरा लग पहिनेसँ दू-दूटा टैक्सीसँ नासिक दू-चारि हजारक बचत छैक तकरे पुनः बैंकसँ ऋण भेटि रहल छैक, तेसर-चारिम टैक्सी कीन' ले'। आ, जाहि रिक्सावला ले' स्कीम देबाक योजना स्वीकृत भेलैक से सौंसे शहर छानि आउ तँ जे कोनो बैंकसँ कय टा रिक्सावलाकेँ कतबा टाका कर्ज भेटलैक-ए? बकवाद थिकैक ई सभ। आइयो सभ रिक्सावला बूढ़ आ लराठी रिक्सा कोनो-ने-कोनो खटालसँ लैत अछि। छाती तोड़ि-तोड़ि क' बर्षक बर्ष चलबै-ए, ओहिना अनाथ, रोगिनाह भ' जाइ-ए। आइयो ओ जीवन भरि रिक्सावला भ' क' एकटा रिक्साक स्वामी नहि भ' पबै-ए। से बात अहाँ ककरा कहबैक? ई बात सत्य छैक जे कोनो देशक प्रधान मंत्री अहीँसँ बढ़ी नोन नहि द' सकैत छैक,मुदा, पूरा परिवेशे अक्षम एना विनाशोन्मुख, विषाक्त आ चरित्रहीन भ' चुकल छैक, तेहनामे मात्र कोनो योजना पारित भ' जयबाक कोनो अर्थ नहि छैक। प्रचार-

कन बैंड रहैत छैक। स्थानीय स्तरपर 'धाँगली' आ बेहमानी जार पकड़ैत जाइत छैक। के करतौ आदमी? कहाँ धरि? सभ ठाम जे एकटा वातावरण भ' गेल छैक तकरा सहि लेबाक सामर्थ्य कहाँ? ककरा? सभ ठाम छैक मैनेजर आ एकाउन्टेन्ट कैशियर आ ओकर मातहत सभ।'' विष्णुजी बजैत-बजैत जेना कोनो बातसँ चौंकि क' चुप भ' गेलाह। हुनका मनमे भीषण असन्तोष छनि एहि व्यवस्था आ वातावरणक विरुद्ध। हुनक मनमे बहुत रास कार्यक्रम छनि। तेँ ओ विशेष आक्रोशमे रहैत छथि। हमरा हुनक एकोटा बातसँ आपत्ति नहि छल। हम खाली चुप्पे रह' चाहैत छलहुँ।

—''अहाँ द' पुछबे नहि कयलहुँ, हम अपने एतेक रास बाज' लगलहुँ राजू।'' ओ कने संकुचित जकाँ भ' गेलाह।

—''एकटा इंटरव्यूमे आयल छी, कालेजक छैल।'' हम कहलियनि। ओ सुन्न भ' क' हँसलाह। हम अप्रतिभ भ' गेलहुँ। हुनकर हँसब बड़ बकलाह लागि गेल। अर्थ नहि लागल, से नहि।

—''सैह टा तँ छैक—मात्र इंटरव्यू। होइत तँ छैक ओकरे, जकरा हेतु विज्ञापित कयल जाइत छैक कोनो खास स्थान। तथापि, कहू ने के सभ छथि विशेषज्ञ? संभव छैक गोटी बैसि जाय कतहु। सेवा-आयोगक चेयरमैन जत सगरो लागि सकैत अछि। विशेषज्ञ जँ नाम पठा देथय तँ सिद्धि, अन्यथा·······''

—''रातिये अयलहुँ-हेँ। हमरा कोनो पता नहि, किछु। एहि बीच एको अक्षर पढ़ने नहि कयलियै-ए। समटा पछिले भरोस पर पढ़लाहा, परीक्षा देलहुँ। दोसर, ई सभ बेकार थिकैक। मात्र उपह छैक, अहीँथला—विज्ञापन आ अन्तर्वीक्षा तँ एकटा नाटक छैक। व्यक्ति तँ पूर्व निश्चित छैक।''

—''आइ-काल्हि तँ आयोगमे सीनियैंटा आर्थिक बोलबाला। ताहूमे विशेष एक टाक·········''

''बुझल अछि। हुनर एकटा अत्यन्त अभिन्न दोस्त। अहाँ ओकरा चीन्हैत छियैक, एहि जातिवादी पालपर धारक विरुद्ध ठमाओल लोक अछि। ओकरा स्वयं एहिपर बड़ भरोस छैक। यद्यपि हमरा, मात्र हमरा सन्दर्भमे ओ मुक्त अछि अपन ओहि जातिवादितासँ। मुदा बेचाराकेँ सामर्थ्य ने छैक तँ की हो? ऐँहो जे आबि गेलहुँ-हेँ से ओकरे अनुकम्पासँ। बैह आवेदन क' देने रहैक। अपने तावत सोफहिसाब कालेजमे

पड़ा रहल-ए । हमरा हेतु चिन्तित रहै-ए । एहू लें बैह आवेदन कयने रहैक । ओकरे आवेदन कयलहापर ई अजाहुठिक नाटक चिक । ई बात ओ लिखनो छलथ जे —'आइ-काल्हि त' बुझले छौक । आयोगमे जमघट छैक ओकरा-लोकनिक । एक-टू टा व्यक्तिकें थपकहुँ अछि । मुदा हमरा भरोस नहि अछि ओकरा सभक बुथानपर । विश्वासो ने करी । यो सभ कि कोनो हमरा-लोकनि खाँ जुबानपर प्राण देनिहार ? तैयो भिड़ौने तँ छिऐक टूटा पैरवी । बारी चालू लोक सभ अछि । कहलक-ए जे तोहर मदति करतौक । हम बुढ़के तोरा द' कहि देलिऐक-ए जे तों ओकरेलोकनिक जाति-भाइ थिकहीक ! तोहर कौलिक उपाधिहीन नाम हमरा मदति कयलक-ए । देखियैं तमासा । दू टा बीत । सभ कर' पड़ैत छैक राजू । तों बनल रह धर्मराज । सड़ि जयबें । समाज ओकरासँ आहत देखतौ आ एक रत्तो चिन्तो नहि करतौक । देसीसँ बेसी तोहर बदनीय हालतपर दयाभावसँ देखऔतौ । अपना ऊपर आहत अबैत ई चाल विसक दया-भाव तोरा देखरक कोढ़ि बर्बो सहन कर' पड़तौक । कथ नहि भिड़तौक । फराकेसँ दया आ फराकेसँ कृपा करतौक । मुदा फेर बैह । कोनो एकटा टोपीतर कि अंडातर आबि यो । समक आँखिमे तों निमटक भीतर बदलि जयबें । तोहर शरीरसँ पवित्रता आ चाननक गंध उठ' लगतौक । लोकक आँखिमे तोरे लेल आदर-स्वागत होब' लगतैक । वैह थिकैक चलनि आजुक । प्रतिभाशाली आ विद्वान भाने अलहुआ आ सुथनी । विद्वान-फिद्वान किछु नहि, यदि फल्लाँ जाति नहि, फल्लाँ बड़का आदमीक 'खउर-सम्बन्धी' नहि । एहना हालतो तों यदि सण्डा-डाँडीक समाजसँ फराक रहबाक जिद्दश्त धयने रहबें तँ अनेरे उलाइल-दकाइल रहबें । भरि जन्म घसि-घसि क' मरि जयबें । बरैत काल अनुभव होयतौक, एकेटाम कलैल-कलैल तोरा पयरसँ एकटा बेर पैर बाधि बनि गेलौ-ए । भरि ठेहुन, भरि डाँड़ लेने तों चिचियौर काढ़ि रहल छें । तोंसे मायक लोक कौन'सँ उनटि क' कतहु आन ठाम कोनो नीक चलबाधुबल्ला भूमिपर जाक' बसि गेल । आनन्दसँ रहै-ए । तों ओगरने रहलें एकान्तकें एकसरे । तोहर अपनो लोक बेसी काल धरि तोरा लग नहि रहतौक । ओहो तोहर अनर्गल जिद आ बकहुचनीपर तोरा छोड़ि क' विदा भ' जयतौक । मुदा, ई समटा नयने नहि होयतौक जें तों, कि तें कोनो छान्हक छाहरिमे आबि गेल कि तोरीक । वा नहि तँ कोनो पैन्हुक छला ब' लै—चुनावी चेन्हक छाप ।

□

देश-धन्धा

अपन देश-समाजमे कतेक पार्टी छैक । रोजी-रोटीपर बात छैक । सुन्दर-समृद्ध भविष्यपर बात छैक । हैं ने ! एकरा पार्टी सभ किएक बुझैत छैक ? एक प्रकारें पूँजीक लागतिसँ बड़का उद्योग-धंधा छैक । अपन जीन गाड़ी, अपन लोक । मचल अछि दौड़-बड़हा । टेलिफोन घनघना रहल-ए । कय टा बालक नव-नवकीया भ' रहल-ए । किछु एम. एल. ए., एम. एल. सी. बीमल जा रहल-ए, किछु केवल जा रहल-ए । तोरा बुझल नहि होयतौक । आब तँ अपना देशक कय टा लोक भेटल-ए जे खादी पहिरै-ए, पान चबैए

आ चौपर पड़ल-ए। कय टा भेटल-ए। कहलक—'बेकार छलहुँ, एहीमे थाकि गेलहुँ। रोजी तँ भेटल। लागल छी। समय ठीक, काल्हि सरकार बनतैक तँ हमरो लोकनिक जोर चलत। एत' तँ यैह छैक—एक टा कोनो विभागक मंत्रीक पाछाँ सचिवालयक ओ सम्पूर्ण विभागक साधन, शक्ति सेवामे लागल रहैत छैक। तकर बाद सचिवालय। एहि ठामक काज टा विभाग छैक, कय टा नीक-नीक जगह सभ छैक। सभमे कय टा तेहन लोकाकेँ भरने अछि जकरा किछु सूझि-बूझि नहि। भरि दिन ओ सभ कैन्टिनमे रहलै-ए, पान-सिगरेट करै-ए आ टेबुलपर पयर पसारि क' निश्चिन्त भ' क' सौंफ कटै-ए। पाँच बजे सबन हुलि क' डेरा धरै-ए कि बजार घूमै-ए। किछु टा काज नहि होइत छैक। चपरासीसँ भ' क' अफसर धरि मन्त्रिगणक सेवामे जुटल रहै-ए। खाली फाइलपर फाइल गेंटायल जाइत छैक। भयानक भयान फाइल। हमरा तँ बुझाइ-ए जे पूरा सचिवालयक कागज-पत्तक यदि खाटनि बनाओल जाय तँ भरि बिहारक लोकक कय वर्ष चानस-भात होइत रहतैक. चाहु अलखे हम। आ, अन्ततः यैह कर' पड़तैक। आगि लगा देब' पड़तैक सभ टाकेँ कि तँ अपन बइमानी झँपै लेल स्वयं ओ सभ लगाइए कि बइमानीक अन्त कर' लेल जनता लगा देत। सभ टा अंगरेजे कालसँ जमा भ' रहल छैक। आब तँ सचिवालयक कुर्सी सभक उड़ीहो सभ दक्खीन वर्षक भ' गेलै-ए। सभ टा भण्डारखानाकेँ डाढ़ि देब' पड़तैक। नहि जाइने, यैह फेर पिचकीदार पिच्ची साटल साइकिलक ट्यूब-टायर जकाँ बने इंगपर साइकिल पंक्चर होइत रहतैक। करबैत रहू मरम्मति, कटैत रहू दिन। सचिवालये नहि, सम्पूर्ण प्रशासनकीय प्रबन्धक यैह हालत छैक। सभ ठाम धूर-भार। से तेहन जे ओहि बाटे लोक तँ लोक, हाथी-घोड़ाक एक टा पूरा बरियाती चल जाय, आबि जाय, तेहन। तैँ से, यावत तकरा सुगम नहि बनबैक ई 'धाँधली', ई षड्यन्त्र आ अव्यवस्था हटाओल नहि जा सकै-ए।"

ओ लगातार बजैत रहलैक। ओकरा मन पड़लै तँ मन पड़ि जयतौक विवशता ! केहन रोजगार आ मुँहजोर छल से बुझने छौक। एक पाँती शुद्ध भ' क' लिख' नहि अबैक। आइ बड़का नेता जकाँ भाषण क' क' बोर क' देतौक कि सँ पूरा 'सेट अप' 'चेन्ज' क' देतौक। ओकरा देखि ले तँ किछुने फुरतौ। तेहन। खाका तँ नहि बदलि होयतैक बेचाराकेँ तखन एही खाकामे पँति क' 'फिट' होयबाक संघर्ष क' रहल-ए। पँति गेल तँ सुभीते-सुभीता

रहतैक बेचाराकेँ। जीबैत रहत। आनन्द करत। बड़ बहुत तँ उँचका खिड़कीपरसँ भीड़-सौंस बाहरक सड़क परक भुखायल-छटपटाइत लोकक समुद्रकेँ हुड़दंग-कुकुआहट देखैत रहत। आ मने-मन बड़ दयालु बनैत रहत जे एतेक राश लोक बेकार अछि, अन्न-वस्त्रहीन, घरविहीन···अहा ! सरकारकेँ किछु सोचबाक चाहिऐक। एहिमे लगभग सभ पढ़ल-लिखल छैक। एकरालोकनिक बेचारा सभक किछु भविष्य नहि छैक। अन्हार। नहि ! एहि अन्हारकेँ ई व्यवस्था दूर करओ, नहि तँ गद्दी छोड़ि देथु। ई अन्याय थिक। जनताक प्रताड़ित आ समाधानहीन ई जुलूस आब बदलबाक चाही। आ, ओ बेचारे एहि व्यवस्थाकेँ उखाड़ि क' आन व्यवस्थाक इन्तजाम करैत छथि। किछु अन्तर नहि। कोनो कमक शीर्षक बदलि क' ई लोकनि शुरू भ' जाइत छथि। कोनो मंत्रिपदक लाल नहि। पछिले कार्य-शपथ-ग्रहण करबाक बाद तुरन्त राजभवनसँ घरेर विदा भ' जाइत छथि।—"राष्ट्रक पेट्रोल व्यर्थ खर्च नहि होयतैक। हम जनताक आदमी थिकहुँ। सभ प्रतिवाद जनता देखने चलै-ए।"

जनता धीरे-धीरे अखबार सभमे अपन नव मंत्रीक एहि महाभावनाकेँ पढ़-ए आ माथा झुका लै-ए—"धन्य ! आइयो संसारमे महान् लोकक अभाव नहि छैक। स्वाहत ने एहि पार्टीमे एहन त्यागी-कर्मठ लोक सभ अछि। तखन ने एतेक कम शक्तिमे रहितो बनाओल सकने रहैत छलनिहँ पूरा इलाकाकेँ, सरकारकेँ।" आ ओही त्यागी कर्मठ मंत्रीमहोदयक यात्रा-खर्चपर अखन कार-पेट्रोलक बजाओक हजार रुपैयाक मासिक व्यय अबैत छनि तँ लोकक माथपर बजरि जाइत छैक किछु अदृश्य चोट। ओ अपमान भ' क' खसै ए। ओकरा झकझूड़ी लागि जाइत छैक। मुदा ओकर मोहभंग करबा लेल तावते कोनो नव पार्टीक गठन भ' जाइत छैक जे जनताक माझ आ ओकर जीवन-स्तर उठयबाक लेल संघर्ष आ क्रान्तिक उद्घोषणा तैयार करै-ए आ शहरक, गामक सड़कपर जुलूस निकालैए 'पछिला कुहुठा' आ देशक 'गद्दार नेता' लोकनिकेँ मारि-गंजन करै-ए जे पूर्वक मंत्रिमण्डलमे रहथि आ लाखक लाख हड़पि क' बड़का पूँजीपति भ' गेलाह। मौज करैत छथि आब। हुनकापर, हुनक बइमानी आ घूसखोरीपर कमीशन बैसयबाक अखिल भारतीय स्तरपर आयोजन कयल जाइत छैक महासभा सभ, जाहिमे यैह माङ राखल जाइत छैक जे फल्लाँक एतेक धन बइमानीक धन थिकनि, गलत धन थिकनि, गलत

शक्ति आ सम्पनक उपयोगमे आबए धन थिकनि ।—से सरकार ह्निकामे छीनैक । जनता सङ्गे ई हिनकालोकनिक विश्वासघात थिक । एकरा जनता सहन नहि करत । ओ आगि लगा देत ।

अरे आगि की लगाओत जनता ! जनताकेँ तँ अहीं शतरंजक गोटी बनौने छी । घर जकाँ, जाहि जकाँ ओकरा बिछा देने छिऐक आ अपन स्वार्थ, अपन अहंकार, अपन उपलब्धिसँ लर्ड़ैत छी । हारैत छी, जीतैत छी जनता तँ ओछाओल शतरंजी थिक । अथवा, सेहीनँ सेहो कोनो चित्र-प्रदर्शनीमे देखाओल गेल ओ चित्र, जाहिमे खाली रंग-बिरंगक रेखा सभ छैक, एम्हरसँ ओम्हर, एहि दिससँ ओहि दिस । फाटल-चूरल । ओकर शीर्षक छैक—"गूँगी रेखाओं की बस्ती" (बौक रेखा सभक बस्ती) । तँ अहीं तँ तकरो निर्माता छी । जनताक व्याकुलिकेँ काटि-छाँटि कँ बननिहार बना देनिहार लोक । जकरा सीधा हाथ अबैत अछि, से दुहैत किएक ने ओकरा । अरे, जनता तँ आब अहाँलोकनिसँ बहुत बेसी नागो नहि जनै-ए । अहीं लोकनिक चरित्र-हीनता आ 'धोखाधड़ीक चलते ओ आब अपन पूर्व पुरुष, राष्ट्रीय नेताकेँ गरियाबए रहल-ए । तखन कहू जे देशक दुर्भाग्य तेहन छैक जे तैयो अहीं लोकनि भाग्य-विधाता छी । अहीं मेसँ केओ दरभंगा जाक' भाषण क' अबैत छी, आकाश-वाणी-केन्द्र खोलबा देब ! केओ विश्वविद्यालय, केओ किछु । आ भाषा-मोहक माहुर मिलाओल गोली फेकि क' जनताकेँ राजुक सूस बनौने राखि रहल छी । जनता आ अहाँक बीचक आड़ू देल जनल जाय शोध्य परिवार आ लोक अहाँक सभा आयोजित करै-ए, शामियाना तनबै-ए, जुलूस निकलबै-ए आ लोक जुटबै-ए आ मंचपर प्रशस्ति-गान करै-ए । जकरापर प्रसन्न भ' क' अहाँ जे ओकरा अङ्कस्थताक गोआविका देने छिऐक, तहि सम्पत्ति आ अधिकारसँ ओ कोनो बड़का सरकार-संपोषित समहरि संस्थाक प्रबन्धक बनि जाइ-ए । अपन कार्यालयमे अपन कुर्सीक माथपर अहाँक बड़का फोटो टाङि लै-ए आ खूब चैनसँ जीबै-ए । बाल-बच्चा सभ बड़का घरमे पैघ लोक बनौ रहैत छैक । ओ समाजक ततेक पैघ आ प्रतिष्ठित लोक अछि जे रेडियो-स्टेशनसँ ल' क' मानक खादी-भंडार धरिमे ओकर रोआब रहैत छैक । ओकरे पैरवीसँ सभ होइत छैक । ओ सरकारमे नहियो रहै-ए तैयो सरकार ओकरा मुट्ठीमे रहैत छैक । कारण, ओ आइयो बानल करै-ए, दौड़ रखै-ए आ सुतैत छी घटाक घंटा पूजा करै-ए । सरकार आ जनताक बीचक ई रमन-चमन, पाँच लोक सभ अहींक, अहीं द्वारा संरक्षित आ संपोषित अछि !

एहि अति विस्तृत दम-संदर्भमे केओ उबिरायल नहि । गम्भीर भ' गेल । एहिमे कोनो नव प्रसंग किछु नहि छलैक । सभक बुझलो तथ्य छैक ई सभ । सभ केओ एैह सभ भोगि रहल-ए । सबकेँ अनुभव भ' रहल छैक जे ओकरा सबहक सामर्थ्य छैक । मुदा, एक टा मूढ़के डाक्टरी जाँच कराक' घोषित क' देल गेलैए जे ओकरा असाध्य बीमारी छैक, कोनो छुतहा रोग । समाजकेँ ओकरासँ फराक रहबाक चाही । मुदा से बात छैक तँ नहि । डाक्टरो तँ ओकरे लोकनिक छैक । समाजक निर्णायक अधिकार लोक तँ एहने अछि । मुदा, तेहन धूर्त होइए ई सभ जे भाइये-भाइकेँ फोड़ने रहैए । सभ समाजसँ, गामसँ, दस टा मजगूत लोककेँ कीनि क' अपन जेबीमे ध' लैए । बाहरी सेहो ओकर कारप्रदाज रहि जाइत छैक । राकेश सभक मुहल्लाक बात ओकरा लोकनिक चेटा-पोत्र । सेहो लोकनि एकरा सभक लेल मुन्हागनीसँ ल' क' पक्किक सीढ़िगक प्रबन्ध करैत छैक आ चुनाव-स्वस्थ-बूथ पर बोगस भोट खसोक बलेँ खसपवामे भीममेली सहयोग । ई कोनो एक गाम, शहर वा कस्टीचपुरलोक खिस्सा नहि छैक । सम्पूर्ण देशक खिस्सा थिकैक । लोको बुझैत छैक । आहि रे बा, एतेक भोटे भोट देलिऐ फलनाकेँ आ बीति गेलैक दहलौं । ई की भेलैक ? मुदा, एहनो दुःख तकलीफ आ वातावरणमे लोक जीब' चाहैए । तेँ सभटा उठबैए, सभटा उठा लैए । जीवनसँ एकटा अगाध प्रेम छैक लोकक जे लोक कारो-करोटे जीबैत चल आइए । ओकरा अपन तुफायल जिनगीपर लाज नहि छैक, ने ग्लानि । कारण, आस्ते-आस्ते ओकरा निर्वीर्य बना देल गेलैए । ओ तँ अपना विषयमे आब बहुत कम जनैए । आबो जनैए जे ओकरा बुझा देल गेलैए जे ओ अमुक अछि । ओ ओकर निजी अनुभव नहि छैक ।

विष्णुजी चुप भ' गेलाह । हमनि सभ हुनका देखि गेलाह । गुहिमताक आखिर भावर्ये लागल, ई बात ओकरा असहाय लगलैक । एक क्षण हमरो कठाहन लागल । फेर हँसी लागि गेल । विष्णुजीकेँ आब हम पाय वर्षसँ चिन्हैत छियनि । सेह स्वभाव छनि, एहिना अप्रत्याशित रूपेँ व्यवहार करबाक । मुदा, हमरा हँसबाक कारण ई नहि छल, प्रत्युत ई जे लोक समकालीन समस्या सभ पर बौद्धिकतासँ रूप यालेया क' दैए ? बजबाक काल गम्भीरो कतेक लगैत रहैए—जेना भरि पुराक दर्द ओकरे छातीमे होइक । मुदा, ईहो एकटा जबर्दस्त नाटक भ' गेलैए लोकक । बेसी लोक बौद्धिकता प्रदर्शित करैत रूप करत । मुदा, ओही बातक ओकर अपने कहलाहाक अनुसार यदि आचरण

कर' कहियोक तँ बात बिगाड़ि देल। ठहरि नहि सकैए। पड़ायत। ई बात पुरना वा बीचक पीढ़ीक लोक वास्तेँ तखन ओतेक लाजक विषय नहि। से तँ करैए हमरेलोकनिक पीढ़ीक लोक, सभ हटका नवतुरियागण, सेहो जे विश्वविद्यालयसँ पढ़ाइ खतम क' क' तुरन्त अयलए। ईहो तन एहि आत्महत्या, आत्मप्रवंचनाक नाटकक शिकार भ' गेल-ए। मनमे स्थिरता नामक वस्तु नहि छैक आ पूरा गांधी-दर्शन आ मार्क्सवाद गप्प करत। फटीचर सभ। ईहो सभ अपन विश्वास गमा चुकल अछि। तैयो अछिये। रहओ। मोहल्लामे कम गोटे कुकुर पोसने रहैए, बिलाइ पोसने रहैए, तकरो बोली-चालीसँ तँ लोक प्रभावित होइते रहैए। सेहो ध्यान नहि देबाक चाही एहि बातपर। आ से दिसहुँ ने छिऐक। खाली एतबा चिन्ता तँ अवश्ये स्वाभाविक छैक जे बूढ़-पुरान तँ बेचारे पाकल आम भेलाह, परंच ई सबका छौंड़ा सभ सेहो जे ओही प्रकारक कमजोरी आ अन्हारक शिकार भेल जाइत अछि से घरि अत्यन्त चिन्ता आ निराशाक विषय। हमर चिन्ता सैह अछि।

—"अहाँकेँ अधलाह तँ नहि लागल राजूदा हिनकर ई व्यवहार?" सुस्मिता पुछलक।

—"नः।" हम हँसलिऐक। "अधलाह की लागत? विष्णुजीकेँ हम चिन्हैत नहि छियनि की? ओहुना, ई कोनो हिनके टा बात छनि? बहुत लोककेँ छैक। समस्या सभ पर गप्प करबाक 'हॉबी' छैक। मुदा, अखबारी गप्प पढ़ल आ सुनल गप्प, फेर देखल आ अनुभव कएल समस्या सभपर नहि। एहि युगक युवा पीढ़ीक ईहो त्रुटि छैक सुस्मिता। धैर्य नहि छैक, ध्यानो नहि रहैत छैक। मानैत छिऐक वातावरणमे विष घोरल छैक, तेँ विषाक्त छैक, सभ किछु। आ, तेँ लोक व्याकुल, अधलाह दिस जा रहलए। मुदा, एकरा के करत निर्विष? आन देशक लोक? जाहि धरती पर रहैए तकर सफैयो तँ ओकरे कर' पड़ैत छैक। टोलक लोक तँ आबिक' नहि क' देत छैक? से, लोक सभ किएक वातावरणकेँ हँटयबाक बदलाबे आ तो पोसनहि अछि। एक-एक रत्ती क' जेना मनुष्य अधलाहपर अपन लापरवाही आ आलस्यसँ एक दिन अशक्त आ निष्क्रिय भ' जाइत अछि, तहिना विषो रहैत-रहैत एक दिन साँप भ' जायत।"

—"हमरा मन पड़ैए राजूदा, कोनो एक टा कविता रहय अहाँक 'मुझे भय है, मैं भी साँप होकर मरूँगा।'"

—"हँ, सन्दर्भसँ, अपनातेँ छुटिक' आब अपन बाप कातक, ज'न-वासक समाजसँ कुड़ि गेलए। मूल बात सैह छैक। सैह चिन्ता आइ अपनातेँ निकालि क' बढ़ि गेलए। हमर ई बात तोँ जेना अर्थो नहि मान; एकटा स्वच्छन्दताक मान, जे अपन गेनयनो एक वृद्ध लोक सबकेँ दिलौलक। मुदा भेल तँ सम्भीर सामाजिक लोक जकाँ सभ व्यक्तिशक्तिक। परंच, से सीमा एक दिन सभक चरित्रमे रहैत छैक। अपनाकेँ जखन लोक भीतरसँ निकालैए आ बाहर ठोस संसारक अधिसंख्यक सम्पर्कमे अबैए तँ ओकर सम्पूर्ण अस्तित्वक अर्थे एक तरहेँ बदलि जाइत छैक। कठोर आवरणमे नुकायल डोका होइए लोक। जीवन ओतबे प्रवक रहैत छैक भीतरमे, परंच समाजक आँखिसँ कटल—अछूते। जेँ कि डोकाकेँ सन्देह भेलैक लोक होएबाक कि ठामे नरसगात ठमकि जाइत अछि अपन फेबाइ बन्न क' क'। अपनाकेँ भीतर समेटि क' गुड़कल रहैए यद्यपि ओकरा गाड़ियोपर चलल भ' जाइत छैक। से मनुष्य जखन अपन डोका-देहक भीतर रहितो मनकेँ खोलिक' जीयब आरम्भ करैए तँ ओकर जीवनक कथटा यथार्थक रूपे बदलल अनुभव होब' लगैत छैक। तखन ओकरा बोध होइत छैक—एता किदन लागि रहलए? जेना मनमे घृणा वा प्रेम लोककेँ रहितो छैक, तैयो जखन अपनाकेँ खोलिक' आनो लोक, समाज दिस ताक' लगैत छैक तँ ओ अनुभवक, आत्मदृक एकटा नव तरहक वातावरणमे अपनाकेँ पबैए। किछुए दिन धरि ई बात नव लगैत छैक। फेर कोनो गहीँर आ वैचारिक क्षणमे लगैत छैक जे ई तँ मूलतः सैह बात छिऐक जे ओकरा मनमे बहुत दिनसँ जीवित छैक।"

हम एकाएक हड़बड़ा गेलहुँ—"अरे, आब तँ बहुत समय बीति गेल होएतैक। कतेक बजलैक? तोरो कार्यालय जयबाक होयतौ ने?" सुस्मिताकेँ पुछलिऐक। ओ जेना एहि प्रश्नकेँ महत्त्वे नहि देलकैक। खाली अनमनस्क जकाँ अपने घरपछड़ दिस ताकैत रहलि।

स्नान-घरसँ विष्णुजीक कोनो फिल्मी गीतक लयबद्ध पाठ आबि रहल छल। हमरा हँसी लागि गेल। सुस्मिताकेँ एकर अर्थ नहि लगलैक। एक बेर हमरा दिस तकलक आ फेर घरपछड़ दिस देख' लागलि।

—"तोरा तैयार नहि होयबाक छौक?" हम जेना ओकर चिन्ता करैत पुछलिऐक।

—"हमर्थ तैयार। कोनो हड़बड़ी छैक? अहाँकेँ कय बजे धरि बेनाइ तैयार भ' जयबाक चाही?" ओ पुछलक।

—"अपने मशीं छथिहें, कार्यालय जयबाक अछि !" हमरा विस्मय भेल ।

—"ओहिना कहलहुँ । आइ दफ्तर जयबाक मने नहि करैत अछि ।" ओ गंभीर भ' गेलि । हमरा फेर आश्चर्य भेल । ओकर ई गम्भीरता सेहो हमरा आन तरहक लागल । बीचमे ओ एक बेर हमरा दिस बेस अपेक्षासँ देखलक । हम ओकरे माथ पर उड़िआइत रहल घुन्चारिदार केश देखैत रही । अपना दिस देखैत देखियो क' ओ कनियो संकुचित नहि भेलि । हमरा दिस कीछ सेकेण्ड धरि लगातार देखैत रहलि । हमहीं आँखि घुरा लेलहुँ । ओकर एना भ' क' अपना दिस देखब बड़ नव आ अपरिचित लागल ।

मने-मन कतोक प्रश्न, संवाद दोहरा-तेहरा गेलहुँ । हमरा ई सोचिक' घबड़ाहटि जकाँ होअय लागल जे सुस्मिता एखनो हमरे दिस तकैत होयति । एक बेर जेना साहस क' क' देखलिऐक तँ सत्ये ओ हमरे दिस देखि रहलि छलि । मुदा, एहि बेर हमरासँ आँखि मिलैत देरी ओकर आकृति झुकि गेलैक । झुकैत आकृति पर ओकर ठोढ़क बाम भागक एकटा पातर मुस्कीक ललाओन लहरि बर्फ जकाँ हमरा आँखिकेँ छूबैत चलि गेल । ई एकदम नव अनुभव छल । सुस्मिताक सम्बन्धक ई स्तर आइ धरि अनचिन्हार छल । हमरा विविध अनुभवसँ बीत' पड़ल । खाली एतबा धरि बुझायल, जे हमरा आरो भय आबि गेलए, छूबि सकैत छी ओकरा । कारण, ओकर आत्मीय हुनू तरहक्यो हमरा हुनु नाजपर देना पड़ि गेलए जे हम ओकरा आगाँ देना जकाँ लगैत छी । ओ हमरा निश्चिन्त रख'वाली अभिभावक जकाँ भ' गेलए । हमरा सुख भेल । फेर किछु ग्लानि । ग्लानिक लहरि मनमे लगातार उठैत हुबैत रहल । हम बीतले कालक प्रवाह भ' गेलहुँ ।

—"अहाँ कहलहुँ तँ राजूदा, कय बजे धरि डेरा छोड़ब ? ई जे छौंड़ा छथि तकर हालत सँ देखिते छिऐक । हमरा अपने पैत' पड़त अनसामे । गड़ ।"

—"छोड़ ने, बाहरे बखड़ा केब । आब ई खयबाक बेर तों घनखा घरमे पैसि जो, आ गप्प-सप्प नहि कर, ई तँ कोनो बात नहि । मने बैसलि छें । तों काज पर तँ नहि जयबे एखन ?" हम अनेरे उत्साहित भ' गेलहुँ । मारिसक हमरा एकर अर्थ बुझा गेल जहा जे सुस्मिता कार्यालय किएक नहि जायत ? ओ किएक ओते राति क' सुतबाक बादो एतेक भोरहोमे उठि गेलइ ? हमरा हल्लुक सन किछु नीक लागल । फेर मनमे ग्लानि भेल । हम द्रुत भ' मनकेँ डाँट-डपट कयलहुँ ।

—"अहाँक आदति नहि बदलल । आखिर एतेक जे सांसारिक चक्र छैक से भोजनेक समस्याले ने ? लोक नोकरी करैए, पत्नी-पतनी दा अपन कोखिसँ जनमल सन्तानके अबाब बकी छोड़ि क' नोकरी कर' जाइत अछि । आ, बड़ी-बड़ी दूरसँ लोक इन्टरभ्यू देब' अबैए से खाली भोजनेक समस्या दुआरे ने ? एकरा अहाँ एतेक महत्वहीन किएक बुझैत रहैत छी राजूदा ? अहाँ कुसे भूखले रहल भ' जायत बहुत दिन ?"

—"हमरा बुझाइ-ए सुस्मिता, जे तोरा अपना नोकरी करबाक बड़ बेसी छौक आ, तियबाला बुझाइत छौक ?" ओकर मुँह उतरि गेलैक हमर एहि प्रश्न पर । हमरा तापक-माफ बुझायल जे हम ओकर मन दुखा देने छिऐक । हमरो अधलाह लागल ।

—"जहाँ धरि भूखले रहबाक बात", हम कहलिऐक —"से कियो नहि रहि सकैए बहुत दिन धरि । तकर अर्थ ई नहि पागल होइत अछि जे भोजनेक प्रबन्धमे चौबीसो घंटा, बरि जीवन झोंकि दी । नहि उचित अछि । तों देखि लेहीँ । हमर जखन विवाह होयत तँ हम अपन कनियाँकेँ कहबैक जे भानस घर एकके साँझ करय, बाँकी समयमे पढ़ाय करय, पढ़य-लिखय । विश्वभरिक कलाकृति देखय-जानय, नीक पुस्तक, नव विचार आ आन्दोलन पर सोचय-बुझय आ लिखय । खाली कथनी-करनी बिना हमरा कहने एक थाली चाह बना क' देअय । भोजनमे कते विलम्बे भ' गेले हमरा कोनो हर्ज नहि ।" हम खूब मुक्त-भावेँ कहलिऐ ।

—"राजूदा ! पहिने विवाह तँ करू, तखन कनियाँकेँ बताहि बनायब । ई तँ बुझले अछि, अहाँक नसीबमे जे सहति तकरा धरि अन्न कहन' पड़तैक । हुकम नोरे कहनाँ सो ।"

—"से किएक भय ? हम तोरा लेहन अलच्छनाइहि लगैत छिऔक ?"

—"अलच्छ, नहि, सनकी । अहाँक सनक-सनकमे कोनो स्त्री बहुत दिन धरि साबुत नहि रहि सकैए । बताहि भैये क' रहति । हम कोनो आइडेसँ नहि कहैत छी अहाँकेँ ।"

—"तीन-चारि दम्मतँ जनैत छेँ हमरा, की सुस्मिता ?" हम ठहाका लगलिऐक । ओ गम्भीर भ' गेलि । तकर हमरा अर्थ नहि लागल ।

—"अहाँ विवाह किएक नहि क' लैत छी, राजूदा आब ?" ओकर स्वर भारी छलैक । हम चुप रहलहुँ । बजबाक इच्छा भेल, मुदा चुपे रहिक'

एम्हर-ओम्हर देखैत रहलहुँ। ओ हमरा फेर पुछलक। हम एक बेर फेर देखलिऐक। हमरा हँसी लागि गेल। मुदा, ई हँसी बलहँसी छल, से हम हुनू गोंटे बुझलिऐक।

—"बाजू ने।" ओ फेर पुछलक। एहि बेर हम गम्भीर भ' गेलहुँ, सहसे।

—"कोना कह? देखैत छें जे नोकरीक देल बोआयल फिरैत छी। कत' रखबैक आ खोअबैक?"

—"हँ। हमरा अपन मोबल अछि। बेरोजगार लोकक संग बियाह भेलाक बाद हमरा अपना मोबल अछि। हम कहियो बिसरि नहि सकैत छी।" ओ बाजलि—

"सुनह राजूदा, थोड़बो अभाव आ अपूर्ण मनोरथवाला जीवनमे एक-दोसराक संग रहबाक आ मिलि-जुलिक' परिस्थितिसँ लड़बाक आत्मसंतोष बड़ पैघ होइत छैक। अहाँके बूझल अछि, जे स्पर्श—प्रतीक्षामे हेरायलि अपन स्त्रीक माड़ुरक ओ स्पर्श अहाँकेँ अछि बूझल जे थाकल ठेहिआयल घूमि क' अबलापर अहाँक बाँहि आ छातीपर पड़त? अहाँकेँ संसारमे एक टा आन बेकारी छोड़ि क' सभ किछु बिसरा आ स्नेही लाग' लागत। एत' धरि जे अहाँकेँ कोनो मुड्ड पर्यन्त नीक लाग' लागत। से स्पर्श, से संजीवनी-भरल अहाँकेँ नहि बूझल अछि ने?" सुस्मिता हमरा तेना सुनबैत रहलि जेना ओ हमरा नहि कहि रहलि हो, अपनेसँ बाजि रहलि हो।

—"की सभ बाजि रहलि छे तों? हमरा तें नहि बूझल अछि। बियाहे ने भेलए तँ कोना बूझल रहत? हम कि कोनो विचपूती छी। हुनकासँ पूछि क' जानि लैत छी।" हम फेर हँसी करबलिऐ। मुदा, ओ गम्भीर रहि गेलि।

—"से तँ अनुभव नहि भेल। अनुभवक सूचना भेल। सूचना आ घटनामे बड़ अन्तर छैक। आब हम एहि बातकेँ बड़ मान' लगलहुँ। हमरालोकनि पढ़ि क', सुनिक' बहुत काज चला लैत छी। मुदा, राजूदा ई बात केहन गलत होइत छैक तकर अनुमान लोककेँ नहि छैक। सरासरि बड़माजी थिक ई। अपना नजरिसँ कोनो परिस्थितिकेँ हम अपने जकाँ देखबाक अभ्यासी भ' गेल छी। से देखब ओहि परिस्थितिक विषयमे कय बेर एक टा आनक अनुभव द' दैत छैक। परिस्थिति तँ स्वयंमे अपने तरहक तथ्यसँ भरल रहैत छैक। हमरा-लोकनिकेँ जकरा जे फुरैए से ओकरा द' कहैत छिऐक-सुनैत छिऐक। मुदा, ई बात थिक बड़ निकृष्ट। हम मानैत छी जे लोक बड़ अभ्यासी भ' गेलए।

—"ई बात तों कोन सन्दर्भमे कहि रहलि छें? ओहूर तों अभिप्राय छौक?"

—"सन्दर्भ की? आब जेना आइ-काल्हि एक टा चलनियेँ भ' गेलैए, अपने मने नहि भ' ककरो विषयमे किछु स्कैंडल क' देलहुँ। बाद् ओ खास लोक कोनो प्रकारेँ दोषी हो वा नहि हो। मुदा, पुरुष कि स्त्रीगण, समाजकेँ एक टा स्कैंडल करबामे मजा अबैत छैक—सुनबामे मजा अबैत छैक, तेँ चालू क' दैत छैक। आब जकर स्कैंडल भ' रहल छैक तकर जीवन तबाह, जीवन नहियो तबाह तँ अशान्त तँ अवश्य। हमर घरक मिसेज बनर्जीकेँ जनिते छिऐक। आइ-काल्हि ओवरटेक कृपा भाजन भ' रहल छैक लोकक। आ कथनिहार के? तँ सुनि क' हँसी लागत—मिस्टर बाहुरी। की तँ 'एकर एहन सोसाइटी छैक, ओहेन गुण्डा आ लफंगा सभ एकर संगी छैक, राति-राति भरि पीबैए—मसूरी दार्जिलिंग करैए। अरे सालो, जब यह बेचारी यही सब करती है तो बिना नागा दफ्तर कैसे करती है?'" सुस्मिता उत्तेजनामे हिन्दी बाज' लागलि तँ चौंकि गेलहुँ। ओकरा देखलिऐक। खूब तमसायल आकृति।

—"ओ बेचारी एकसरे—पूरा समाजमे एकसरे संघर्ष क' रहलए तें बेश्या अछि। आ ओ मिस्टर बाहुरी आन नहि, अपन बहुएसँ वेश्यावृत्ति करबा रहलए, तैयो नीक लोक अछि, समाजक प्रतिष्ठित आ लोकप्रिय लोक। हमरालोकनि अहिं बनैत छिऐक कि समाजे नहि जनैत छैक? मुदा, की विडम्बना, ओहने भ्रष्ट आ पापी लोक एहि तरहक स्कैंडलक जन्मदाता होइछ आ लोकक नजरिमे विश्वासपात्र भ' जाइछ।" सुस्मिता किछु क्षण चुप रहि क' जेना किछु सोचलक। हमहुँ चुप रहलहुँ।

—"ओ तँ तेहन समाज आ परिवारक लड़की अछि जे अपन अम्हरपनीमे ओकरा विषयमे किछुओ मनगढ़न्ती सोचल जा सकैए आ तकरापर विश्वास कयल जा सकैए। मुदा हम?"

"राजूदा, अहाँ सोचि सकैत छी जे हमरा विषयमे ई मोहल्लावाला लोक सभ—स्त्री-पुरुष—की सोचैए आ कहैए? से अछि बूझल। हम अपन आर्थिक कठिनतासँ लड़ि रहलि छी। थोड़ेक सुभीता आ दू टा नेनाक भविष्यक हेतु। एहि लड़ाइमे सभ सुख संसारेकेँ अरपि देने छिऐक। पछिला चारि वर्षसँ स्त्री-स्वामीक सुख की होइत छैक हमरा नहि मन अछि। आ से एहन पैघ सुखकेँ त्यागि क' हमरा जेँ कि कोनो कार्यालयमे काज कर' जाय पड़ैए,

तेँ पड़ोस, लोकक ई अधिकार छैक जे ओ कोनो पुरुष संगेँ हमर प्रवाद जोड़य आ भरि दुपहरिया अदगोइ-बिदगोइ करय, से दैनिक रूपेँ। एक टा कठिन कार्य। जहाँ कि हम महल्लामे प्रवेश करैत छी कि कय टा स्त्रीगण ठोढ़ बिचकाओति-बिहुँसति'''। हम सभ टा बुझैत छिऐक। मनकेँ बुझा लैत छी, गमार स्त्रीगण सभ छैक। एकर येह सीमा छैक। मुदा, कय टा पढ़ली-लिखलि स्त्री अछि, आश्चर्य जे ओहो सभ हमर जीवन ओहिना मानैए। हमरा तँ तखने क्रोध आ लज्जा होइए। हमरा तँ बुझाइत अछि जे स्त्रीगण कहियो बुद्धिमती आ प्रगतिशील भैये नहि सकैए, कहियो नहि।" ओ क्रुध, चुप रहलीह। "आ स्त्रीगणेँकेँ की दोष देबैक? पुरुष सभ? कहाँकेँ विश्वास होयत जे हिनका अपने केहन केहन खराब आरोप सभ सुन' पड़ैत छनि, अपने सहयोगी-सहकर्मी कार्यालयक लोक सभसँ? की-की ने व्यंग्य सभ—"जोरू की कमाई खाता है।" की तँ, कहाँ। बजितो घृणा होइए। मुदा, की करबैक? हमरा नहि लगैए जे एक टा पुरुषक लेल एहिसँ पैघ आक्रमण दोसर किछु होइत होयतैक। परंच, हिनको सहऽ पड़ैत छनि। कारण, मात्र बीए-धरिक नहि छथि, पूरा परिवारक जीवन हमरे लोकनिपर निर्भर छैक। हम की करबैक? की क' सकैत छिऐक? आ क्रमशः ई तनाव आब हमरा दुनू गोटेक आपसी तनावमे बढ़ि गेलए। आब हमरा दुनू गोटेकेँ अपना-अपनी क' तनातनी होइत रहैए। प्रायः बकझक-मुँहा-ठुड्डी। फुल्ली। खेनाइ छोड़ब, चाह त्यागब। मुहाँ-बजी बन्द। से हत्ताक हत्ता। तखन अबोध बच्चा समपर पड़ैत छैक। हम की करबैक? माथो-धाम एना रहैतैक तँ एहि बालबोध सभक हृदय केहन तैयार होयतैक से सोचि सकैत छी। हम की करिऐक? कय दिन बुझाक' थाकि गेलनिहें—'हमरालोकनिकेँ माय-बाप होयबाक कारणेँ कमसँ कम किछु सम्हरि क' व्यवहार करबाक चाही। नहि तँ ई नेना सभ बिगड़ि जायत। अपनालोकनि एकरा कोनो तरहक नहि बना सकब। नष्ट भ' जायत। मुदा, अपन झमेल वा सन्देहमे के मानैए? तखन येह, नष्ट तँ भ' रहल अछि दुनू सन्तान। हम की करबैक? कहाँ धरि करबैक? तखन ई एक टा नपारी मनक थिक जे एखनो मन ई नहि कबूल करैए जे नेना सभ 'आया'क माथ बुझ' लागय। माथ तँ हम थिकिऐक। हमरे कहय माय। ई अपनाकेँ माय मजबपबाक-बाहुबयबाक मनक मनोरथे सभ टा अरखा रहलए। ई से बुझैत नहि छथि। बड़ मन भरि जाइत अछि तँ राति क' कनैत छी। फेर अपने चुप भ' जाइत छी। बस। उपाय?'

—सात बेखानतर हरायल जलक धार—

मुस्मिताक बजैत चल जयबाक एहि प्रवाहसँ बुझायल—सत्ये, बहुत दिनसँ एकर ई सभ मनक बात भीतरे-भीतर एकरा तंग करैत रहलैए। एकरा कोनो तेहन लोको ने भेटलैक अछि जकरा अपन दुख-दर्द ई कहि सकितैक। ओ लगातार बजैत चल जा रहलि अछि। हम चुप छी। हमरा, कोनहु मनक ई हिस्सा बूझल नहि छल। विष्णुजीक स्वागतर-गायन चलिते रहल छनि। बच्चो सभ भरिसक सुतले छैक। समय आब नओसँ बेसिए भ' गेल होयतैक। हम एक रती मने-मने हड़बड़यलहुँ। फेर मने-मन स्थिरो भ' गेलहुँ। बारह बजे छैक। कोन, एत' तँ अधवामे पन्द्रह मिनट ने बीस मिनट शार्टकटसँ। हम स्थिर रही।

—"मुदा तोँ कहैत छेँ चारि वर्षसँ एहन जीवन छौक। हमरा कोना नहि बुझायल कहियो? हमरो नहि बुझ' देलेँ तोँ? एहि बातक हमरा बहुत विस्मय अछि अपितु बड़ क्षोभ! अपन दुख-दर्द तोँ हमरो नहि कहलेँ।"

—'कोना कहितहुँ? आ की होइत कहि क'? बेसीसँ बेसी अहूँ हमर सहानुभूतिमे दुःखी होइतहुँ। मुदा, ताहिसँ तँ हमरा कोनो सुविधा नहि होइत। से नुकायेमे क' रखने नीक लागल। आइयो पता नहि कोना, कहाँकेँ एतेक रास ई सभ कहि गेलहुँ। मुदाः आब सोचैत छी जे ई सभ

टा बात अइ-ने-कालिह हम अहींकेँ कहितहुँ । तेँ बाबू अनेर नहि छथि, बाइत कहि देलहुँ । मन तैयो बड़ हुलसल लगैत अछि ।"

ई प्याली चाह ल' क' दौड़ल अयलैक । हम प्रसन्न भ' गेलहुँ आ उत्साहित । हाथमे एकटा प्याली लेलहुँ तँ बुझायल जे मनेमन जेना एखन हमरा चाहक 'तलब' भ' रहल छल । ओ चुपचाप चाह पीब' लागलि । कोठलीमे मात्र किछु, पूरा वातावरण मलाकद छलैक । हम अनेरे एक बेर चारू कात देखलिऐक ।

—"मुदा हमरा लगैत अछि, तोहर एहि सब बातक पाछाँ कोनो एकटा आनो जबर्दस्त वेदना छौक । भरिगर तोँ ओकरा नुका लेने छेँ । तोहर मनमे कोनो दैत बलेस छौक । तोँ कहु' नहि चाहैत छेँ । कहि रहल छेँ ओहि कलेशक बाहरी वातावरण ।" हम कहलिऐक । ओ जेना सशंकित आँखिये इम्हर-उम्हर केवाड़ दिस देखलक । बुझि रहल छलैक । ओकर मुँह उदास भ' गेलैक । हम फेर ओकरा दिस तकलिऐक ।

—"राजूदा, एक टा बात पूछू ?" ओ हमरा दिस भ' क' पुछलक जेना ओहि प्रश्नक उत्तरसँ ओकर कोनो उपकार होयत, से उपकार निर्भर होयत हमरापर ।

—"पूछ ने । एहिमे एतेक संशंकित आ नत होयबाक कोन काज ?"

—"हुनका एतहि अछि कि एतसँ चल गेलि ?"

—"से हमरा नहि बूझल अछि ।"

—"अहाँ ओकरासँ भेँट नहि करबैक की ?" हम ओकर एहि प्रश्नपर क्षण भरि चुप्प रहि गेलहुँ ।

—"एक बेर तकबैक तँ जा क' अवश्ये ।" हम कहलिऐक ।

—"कत' तकबैक ? एतेकटा शहरमे कोन-कोन ठाम तकबैक ? ओ अहाँकेँ एतेक कोनो पता-ठेकाना नहि देलक एहि बीचमे ? ओ अहाँकेँ एको टा चिट्ठी नहि लिखलक ।"

—"ओकरा कार्यालय नहि जयबाक छौक की ? अन्दाज कर तँ कतेक समय भ' गेल होयतैक ?"

—"कोनो मतलब नहि । नहि जयबैक बाद । जिनका हाथे बरखास्त पठबा देल छिऐक । यद्यपि एक बातपर बवण्डर ठीका-टोरी होयतैक । देखबैक अहाँ ।"

—"कबीरा ?"

—"एहीपर । हम काजपर किएक नहि जाइत छी आइ ? बड़ सन्देही भ' गेलनिहेँ आत्मा ।" एहि बातकेँ ओ एकटा दबल आँखसँ धारलि से हमरा बुझायल आ लागल जे ई कल्पना चिकनि चिक्कणीक, चाहे कोनो पत्रिकाक मुखपृष्ठ ।

—"तेँ चल जो । मन बहि ने खराब छौक । भ' अबहि । ओहुना तँ देखले रहबेँ । पढ़नाइ-लिखनाइ सहजे कहैत छेँ जे बड़ अछि कतेक दिनसँ । परंच, एक टा बात बुझि ले बुद्धिमता, तोहर अपन मतेक जे कलेश छौक, अपना जनहार । हमरा भरि एहि बातक बड़ दुःख देल जे तोँ एकदमसँ चुप छेँ—निष्क्रिय, दर्शनहीन । हमरा मनमे आइयो तोरा लेल ई अपेक्षा अछि आ विश्वास जे तोँ आगाँ एकटा-उचित पथ सिखिका बनबेँ—खूब नव तरहक, एकटा फराक व्यक्तित्व, सभक चिन्हबा योग्य, मुदा सभक हेतु ईर्ष्या करबाक योग्य । तोँ कहियो बहुत रास, बहुत नीक लिखबेँ से आशा हमर छुटैत नहि ।"

—"से सभ खतम भ' गेलैक आब, राजूदा । मनमे उत्साहे नहि उठैत अछि । से सक्रियते थकैत अछि । आदमीकेँ जखन सभ क्षण उपलब्धहीनताक बोध होब' लगैत छैक तँ ओ कोनो महान् मूल्यक बातसँ त्रुटिये ने रकैत अछि । केहीसँ केहो ओ जुटल दैनिक जीवनक रोटी आ घरक प्रबन्धक हेतु जरूरी संघर्षसँ । बस । हम तँ एम्हर खूब अनुभव कयलिऐक अछि जे, किछु नहि, हम क्रमशः खाली एकटा कामलिप्सा स्त्री भ' गेलि छी । हम आर कोनो रचना नहि क' सकैत छी । एत' घरि जे हम स्त्री छी, मुदा एकबेर बार सन्तान नहि जन्मा सकैत छी ।" ओकर स्वर गंभीरतामे तुरहि गेलैक । हम हतप्रभ ओकर मुहेँ तकैत रहलिऐक । कने काल चुप्पी रहलैक ।

—"ई कोनो कलेश नहि भेलैक । ठीक छौक, जतबे, जकरे उपयुक्त स्तर पर मनोनुकूल, मनोरथक अनुसार बना सकैत छेँ से आगाँ संतानक कामना ? एतेक सीमित आमदनीमे एतेक-एतेक पाल बच्चा''''''ई अखन राष्ट्रिय प्रश्न छैक तखन व्यक्ति''''''''''"

—"सभ पुरानो ई दकियानूसी पोंगापंथी रहैत छै । अहूँमे अछि, हम जनैत छी । हमरा अधलाहु लगैत अछि । ई अपने आपरेशन किएक नहि करौलनि ? हमर ऑपरेशन किएक नहि करबौलनि ? अहाँ बुझि सकैत छी ई अपने ऑपरेशन किएक करौलनि ?" हमरा ई बड़ पैघ अपमान बुझायल । ई बात हमरा जीवन भरिक लेल अशान्ति आ चिन्तामे झोंकि देलक ।

"एहिमे की बात भेलैक ? संभव छैक, तोहर दुख-दर्द बचपबाक लेल —"

—"आह, कलेश बचयबाक लेल गे तें ! हू टा ज जनमल छैक से हमरा बुतें कि हुनका बुतें ? ई बात नहि छैक राजूदा । साफ बात तँ ई छैक जे हमर ऑपरेशन भेलापर ओ निश्चिन्त कोना रहितथि ? अपन ऑपरेशन करा क' निश्चिन्त रहताह ।"

—"हमरा ईहो बात नहि बुझायल । तों एहि बातक एहन दृष्टिकोण किएक ल' रहलि छें ?"

"धाक करू राजूदा । अहाँ सुधमे रहि गेलहुँ । हिनका संदेह बनले रहितनि जे यदि बच्चा होइत तँ से कोनो आने संयोगसँ हमरा बच्चा भेल अछि, ओ हुनकार नहि । अपने ऑपरेशनसँ निश्चिन्त रहताह जे परपुरुष संग जयबाक हमरा साहसे नहि होयत । आ एहि प्रकारेँ हमर सतीत्व अक्षुण्ण रहत हिनका भजारिसँ । हमर सम्पूर्ण आत्मा क्रोध आ घृणासँ धह-धह जरैत रहैए, राजूदा । प्राण जरैत रहैए । कखनो काल एहि बातपर मन तेहन कठोर भ' जाइए जे हम कखटा बड़ भारख संकल्प सभ कर' लगैत छी । हमरा अपना ऊपर अपने प्रतिक्रमण भेल एहि अविश्वासक हेतु मनमे बड़ भयावह प्रतिशोधक भावना तंग करैत रहैए । बहुत । आ, आब तँ हमरा बड़ साफ-साफ बुझाइत रहैए जे हम आइ धरि भुखायल भोजन सभ जौरक स्वादो नहि बुझने छिऐक । स्वादि-स्वादि क' खायब तँ दूर, हे बिना स्वादियो क' खयने जे स्वाद भेटैत छैक, ताहूसँ हम अनभिज्ञे छी । हमरा मनमे सदा एहि बातक बड़ क्षोभ होइत रहैए । मनमे जबर्दस्त प्रतिक्रिया उठैत रहैए । हमर मन जेना अपने चारू कातसँ घेरायल धधकैत रहैए ।"

कहैत-कहैत सुस्मिता कने हकमि पड़ली रहए । सोझ तँ तीख भ' गेल रहैक । मुँह पर एक सर्वथा अनचिन्हार घृणा आ उत्साहक रेखा सभ देखार रहैक । हम देखिते रहलिऐक । फेर ओकरा लेल मनमे ममत्व भेल ।

एकटा असल बात ईहो छैक जे कखनेसँ सुस्मिता अपन ऑपरेशनवला प्रसंग उठौलक, तखनेसँ हमर मन आ शरीरक परिस्थिति ओ नहि रहि गेल छल जे पूर्वक चर्चाकालमे रहय—एकदम अनुत्तेजित आ उदात्त शान्तिसँ परिपूर्ण । हमर शरीर आब एहि चर्चाक प्रसंगे एकटा नव आशाप्रद उत्तेजक अनुभव क' रहल छल । ओकर संग एहन बात एतेक खुलि क' हमरा कहियो

नहि होइत छल । परंच, आइ एतेक साफ-साफ ई चर्चा भेलैक तँ हम बहुत यथार्थ कारणेँ अपनाकेँ ओकरा प्रति एकटा तेहन दुर्बलता अनुभव करैत छी जे हमरा यद्यपि बड़ अनैतिक लागल तैयो अत्यन्त प्रिय लागल, नीक बुझायल । भरल मनमे जेना जीवाक एकटा जिज्ञासा उत्पन्न करयवाला उद्देश्य बुझायल सुस्मिताक, देहसँ ल' क' ओकर अपन सम्बन्धक सम्पूर्ण आधार, ई नारी ! मुदा, अपनाकेँ एतेक प्रकारेँ उत्तेजित पाबियो क' मनक निन्दे करैत रहलहुँ जे छि: छि, सुस्मिताकेँ ल' क' मनमे ई भाव सभ आनब कतेक खराब आ निकृष्ट बात थिक ! आ हम अपन ध्यान ओम्हरसँ हँटयबाक यत्नमे अपस्याँत भ' गेलहुँ । फेर थाँक बेर सोचलिऐक—"कोना भेलैक ई बात ? मन एहन कोना बदलल ? किएक । एखन धरि कतेक स्वप्नोमे हमरा एहन कोनो इच्छा-आकांक्षा नहि छल, तखन ई एहि क्षणमे आइ एना भ' क' मनमे लोभ किएक जागि गेल अछि ?"

हमरा ओकरा प्रतिये एकटा जबर्दस्त मोह बुझाइ पड़ल । हम ओकरा देखलिऐक तँ ओ गुम्म रहलि ।

तावत विष्णुजी अपन शृंगार-प्रसाधन कयने, कोट-टाइ लगौने बड़ नाटकीय ढंगसँ प्रकट भेलाह हमरालोकनिक कोठलीमे । बड़ सभ्यता आ शिष्टाचारपूर्वक एकटा कुर्सीपर बैसलाह, तेहन जेना कम लेना ओ अपन घरमे नहि, कतहु आन लोकक ड्राइंग रूममे शिष्टाचार निमाहि रहल होथि । हम मने मन सोचलहुँ —ई विष्णुजी बेचारे बेहद छथि, ओहिना ! महान महत्त्वाकांक्षी आ विलास-पिपासाक आभिजात्यक सामन्ती 'गुलाम' युवा । भीतर किछु नहि, बाहर खूब स्मार्ट, सुदर्शन आ सादि शौकि क' सभ व्यवहार कयनिहार । सभ्य अत्युत अति सभ्य । अजयबीकाल ठोड़ कौंचियबयबाक तेहन विन्यास जे देखिक' सहजें लागय जे बेचारेकेँ बजबोमे तारतम्य छनि जे बाजब उचित होयत कि नहि । ततेक सभ्य ! हमरा हँसी लागि गेल ।

—"की भेल राजूदा ? अहाँ बड़ एकाएक हँसलहुँ ?" विष्णुजी अपन शैलीमे पुछलनि ।

—"किछु नहि । ओहिना । अहाँ अपन पूरा व्यक्तित्वसँ ओहिना छी । कनियोँ नहि बदललहुँ ।" हुनका हमर ई बात प्रशंसा जकाँ लगलनि । ओ पुन: बड़ सभ्य कंजूसीसँ बिहुँसलाह । किंचित हँसी हमरो लागि गेल । सुस्मिता ओम्हर दिस मुँह कयने बैसलि रहय अनुपस्थित भावसँ । हमरा ओकर ई अनुपस्थिति अप्रिय लागल । तावत विष्णुजी टोकलथिन ।

—"दफ्तर नहि जयबैक ? एखन धरि एहिना बैसलि छी अहाँ ?"

—"नहि, जयबाक इच्छा होइत अछि । एक टा दरखास्त लिने जाउ, द' देबैक कार्यालयमे ।" बाजलि ।

—"इच्छा नहि होइत अछि, ई तँ कोनो कारण नहि भेलैक दफ्तर छोड़बाक । अपने नोकरी भेलैक, अपने इच्छाक तँ प्रश्ने नहि । आ, अनेरे छुट्टी नष्ट करबाक कोन अर्थ राजूदा !" विष्णुजी हमरा संबोधित क' देलनि । हमरा मुख-मध्य दुनू बीतर । हम चुप्पेचाप तैयो सुस्मिताकेँ देखैत पुछलियैक —'शरीर अस्वस्थ छौक की ? ओ ने, थोड़ेक कालमे काढ़िक' चल अबिहें । तखैँ छुट्टी बेरबाद कथला……"

—"अहाँ कोना जनैत छिऐक जे छुट्टी नष्ट करब भेलैक ई ?" ओकर स्वर दबल रहितहुँ भारी छलैक । हमर कहबाकेँ, 'छुट्टी बेरबाद' नहि कहलक ओ, विष्णुजीक संवादक प्रतिक्रिया कयने छलि, तेँ प्रायः छुट्टी 'नष्ट' करब बाजलि । हमरा ओकर एहि चुस्ततापर फेर ओहिना हँसी भेल, जेना होइत रहल अछि । हमरा ई बात बुझल अछि जे कार्यालय नहि जयबाक ओकर कोनो कारण नहि छैक । तैयो ई बात हम मानैत छी जे यदि अनेरो नहियेँ जयबाक इच्छा छैक, तँ नहि जयबाक चाही । आ, विष्णुजीकेँ एहि बातपर कोनो प्रश्न वा उपदेश नहि छाड़िक' ओकर आवेदनकेँ दफ्तरमे द' अयबाक चाहियनि । से नहि कयने दुनू गोटेक बीचमे एकटा अनावश्यक विवाद ठाढ़ होइतनि, से बेकार । दुनू गोटे फेर तनबामे एक दोसराक प्रति । अनेरे पारिवारिक वातावरण कटु होयतनि । बेकारे ।

हमर अपेक्षानुरूप विष्णुजी किछु हमरा पक्षे होइत बजलाह—"राजूदा, सैह हमरो विचार । हिनकर स्वभावे आइ-काल्हि सैह भ' गेलनि अछि । सैह टा कहबनि चाहीमे आपत्ति क' देतीह, तकरे विरोध कर' लगतीह । अपना मनेँ जैह रहलनि, ई सैह करतीह । एना तँ नहि चलैत छैक । आब तँ नेना नहि छथि । आदमी कोनो बात-व्यवहार करय ओकर अपन परिस्थिति, वातावरण, इज्जति, व्यक्तित्व आ सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ ध्यानमे राखिक' करबाक चाही । जीवन तखने नीक जकाँ चलैत छैक । ओना तँ लोक……"

—"एहिमे इज्जति, सामाजिक प्रतिष्ठा वा व्यक्तित्व कतयसँ घुसिया गेलैक, हमर एक दिन नोकरीपर नहि जयबामे ?" सुस्मिता एकाएक किछु जोरसँ बाजलि । हम चौंकि क' देखलियैक । एहि मामूलिये दाम्पत्य-कलहमे अपन उपस्थिति हमरा कोनादन लागल । हम हड़बड़ाइत जकाँ उठलहुँ—

"अरे, हमरो आब तैयार भ' जयबाक चाही ।" आ बड़बड़ाइते बिदा भेलहुँ स्नान-घर दिस । ताहि काल क्षणमे ओ दुनू गोटे तामसे अपना-अपनी क' चुप रहथि । हम स्नान-घरमे पैसि गेलाक बादो कोनादन अनुभव करैत रहलहुँ । यदि नहि मन छैक कार्यालय जयबाक तँ एहिमे विष्णुजीक ई जिद्द करब अनावश्यक छिअनि । मुदा, बुझायल जे ई बात हम सुस्मिताक पक्ष ल' क' सोचि गेलिऐक । ओकरे किएक नहि सोचबाक चाही जे एक दिनक छुट्टी बेकार कयलासँ कोन लाभ ? मुदा विष्णुजीक पक्षसँ ई बात सोचियो क' हमरा स्वीकार नहि भ' सकल ।

किछु-किछु स्वर हुनकालोकनिक हमरा धरि अस्पष्ट जकाँ आबि रहल छल । अपनेनक बाजो दुनू गोटेक स्वरक उग्रता कम नहि रहलनि, से लागल । हमरा बुझायल जे एहि वातावरणसँ अपनाकेँ अनुपस्थित रखबाक लेल भरिसक बड़ी काल धरि हमरा स्नान-घरमे बन्द रह' पड़त । देखी । प्रतीक्षा करी हिनकालोकनिक एहि क्षण युद्ध-विरामक ।

हम जखन स्नानघरसँ बहार भेलहुँ तँ सुस्मिता एकटा पुरना झमेलुग उनटा रहलि छथि । विष्णुजीक थारीमे उनका बड़का तश्तरीमे परिवेश परोठा आ बाटीमे तरकारी राखल छलनि । ओ खा रहल छलाह । हमर उपस्थितिसँ किछु शिष्टाचार प्रदर्शनमे बजलाह—"राजूदा, क्षमा करब । हमरा किछु हड़बड़ी छल तेँ हम अहाँक संग नहि द' सकलहुँ । भोजनक काल । ई छथिये । रहतीह ।"

—"कोनो बात नहि । हम तँ एत' अपनाकेँ कोनो तरहेँ पाहुन नहि बुझैत छी । तखन अहाँलोकनि यदि हमरा पाहुने जकाँ बनाब' चाही तँ विचार' पड़त ।" हम कहलियनि । हमर स्वरक व्यंग्य हुनका ओतेक नहि, सुस्मिताकेँ लगलैक । ओकर ध्यान पत्रिकापरसँ हुटिक' पहिने अपना पतिक कपारपर गेलैक, फेर हमर आँखिपर । ओ आँखि गाड़ि देलक । हम अपना दिस ताकय लगलहुँ । अपनामे हमरा लागल जे महामल हम बड़ विचित्र, कुरूप आ असह्य छी । जल्दी-जल्दी चारि बेर केश फेरि क' एकटा कुर्सीपर आबि बैसि रहलहुँ । सुस्मिता उठलि आ भरिसक भनसा घरमे चलि गेलि । ओतयसँ आवाज आयल—"अहाँक खयनाइ लागत राजूदा, कि चाहू पीयब ?"

—"नहि भेल छौक खयनाइ तँ कोनो हर्ज नहि । आधा घंटा समय अछि हमरा । चाहोक कोनो से आवश्यकता नहि एखन ।" हमरा बजबाक किछु उत्तर नहि आयल । संभव छैक ओकरा किछु सुभीता बुझायल होइ ।

विष्णुजी जलपानो क' क' जा रहल छथि । संभव छैक, कि तें कुस्तुरियामे 'लंच'क समय घुरिक' अथवा लेल औताह वा सालेमे । हमरा, गेलाक बाद घुरबाक समय निश्चित नहि अछि । यद्यपि किएक निश्चित नहि से पता नहि चलल । कारण, एखनो धरि कोनो लोक, मित्र वा परिवारसँ भेंट कर' जयबाक कोनो आग्रह नहि अछि मनमे । तथापि, ई व्यस्तता किएक, से हम स्वयं नहि बुझैत छिऐक । हम गुम्मे रहैत छी । विष्णुजी चभर-चभर खयने जा रहल छथि । निर्हेरिक' खाइत रहबाक कारणें, टाइकें उनटा क' कन्हापर ध' लेने छथि, जेरे तरकारी-बाडीके ने खूब देब' लगनि, तें । प्रायः आब खयनाइ समाप्त क' चुकल छथि । टेबुलकें एक रती घुसका क' गिलास लेनहि उठैत छथि । कतेक सुनाइयो क' कतेक दाबियो क' एखन धरि यांत्र वेसिन नहि लागि सकबाक खेद प्रकट करैत छथि । हमरा मने मन हँसी लगैत अछि । ओ अइनाक मोड़ी दिस जा क' हाथ-मुँह धोइत छथि ।

हमरा आगाँ फेर एक प्याली चाह आनि क' ध' आइत अछि छौंडा । भाफ उठिते रहल छैक । हम एक घोँट पीबैत छी । पश्चिम पड़ि जाइत अछि । सुस्मिता अपने बनौलक अछि । ई बात दू स्तरपर नीक लागल । फेर अपनाकें धन्यित कयलहुँ मने-मन । सभ बात कें बड़ भावुकतासँ लेब' लगैत छी, नीक-अधलाह दुनू बातकें । तें होइत अछि की, तँ नीक बात सेहो अतिरंजित भ' क' नीक बुझाय लगैत अछि ओ अधलाह बात सेहो अनेक अधलाह रहैत छैक ताहिसँ कय गुना अधलाह बुझाय लगैत अछि । ई कमजोरी हमर दिन-दिन बढ़ले जाइत अछि । तावतमे अबैत अछि सुस्मिता, सेहो पुरना अन्दाजमे थालीमे चम्मच टुनटुनबैत । अपना चाहक चीनी मिलबैत । ओकर एहू व्यवहारसँ हमरा मनोवैज्ञानिक कुण्ठाक आभास लगैत अछि । एहि प्रसंगपर ओकरासँ परिचयक अवधिमे कय बेर मनमे प्रश्न उठल होयत । कारण जे ओकर ई अभ्यास छैक । सभ चाह एकट्ठा नहि बनाओल आ आनल । अपन चाह एहिना बादमे आनल, से चम्मच चलबैत चीनी मिलबैत । हमरा आश्चर्य होइत अछि जे हम कोन आधारपर सुस्मिताक एहि व्यवहारकें ओकर कोनो अप्रकट यौन कुंठासँ जोड़ि रहल छिऐक ? एहि विषयपर हम चाहैत छी ओकरासँ गप्प कर' । मुदा, करैत नहि छी । संभव छैक अप्रिय लागि जाइक । स्त्रीगणक ठेकान नहि । ताहूमे जे सम्बन्ध भावनाक आदान-प्रदानसँ बनाओल हो से तँ बड़ सम्मुख होइत छैक । पारिवारिक सम्बन्ध तँ चकुचा-चकुचा होइत रहत, तैयो चौगोठाम टिकल रहत । परंच एहनमे तँ नहि । एक टा मित्रताक विकसित बोध होइछ

ई सम्बन्ध । एहिमे आपसी स्वीकृति-अस्वीकृतिक सीमा-रेखा सभ बड़ साफ-साफ रहैत छैक । थोड़ोसँ ओकरा टपि गेने सम्बन्ध कतहुसँ टूटि जा सकैत छैक । हम किछु चिन्तित भ' गेलहुँ ।

—"राजूदा क्षमा करब । हमर समय भ' गेल । हम चलैत छी ।" विष्णुजीक सूचना—"हूँ ।" हम चाह पीबैत रहलहुँ । हमरा सुस्मिताक छुट्टीक विषय मन पड़ल जे, एकरा आवेदन पठयबाक छैक । मुदा, ओकरो निश्चिन्त देखिक' भेल जे संभव छैक फेर छुट्टी नहियें लेबाक विचार भ' गेल होइ ।

—"काय बसे जयबाक छौक तोरा ?" हम पुछलिऐक ।

—"हमरा नहि जयबाक अछि आइ । दरखास्तो नहि पठयबैक । आंसदिसँ शुभ होयत ।"

—"बड़ थोर छौक मन । पहिने चाह समाप्त क' ले ।" हम हल्लुक भाव' चाहलिऐक । ओ स्वाभाविके गतिसँ चाहक चुस्की लेब' लागलि । चाहो पीबैत काल ओ बड़ सुन्नरि लगैत अछि, से अनुभव आइ, एहेन तीव्रतासँ हमरा पहिलि-पहिल भेल । हम ओकरा देखैत रहलिऐक । ओ आवश्यकतासँ बेसी गम्भीर रहय । गम्भीर ओ, तमतायलि रहय । तें हमरो किछु पुछबा-आछबामे तारतम्य भ' गेल ।

—"अहूँकें सत्ये अछि एखन समय कि हमरापर कृपा क' क' सुमीता देलहुँ अछि ?" सुस्मिता अकस्मात् पुछलथि ।

—"सत्ये, अछि समय । कावे कोन अछि ? आ कृपा तोरापर हम करबौक की ? चाह् । कृपा तँ तों करबें हमरापर । तों तँ एखन हमर आश्रयदाता छें सुस्मिता ।" ई बात हम बड़ मधुर हास्यमे कहलिऐक तथापि भीजल दाबो किछु जकाँ ओकर आँखि नोरा गेलैक । से हमरा बुझयामे आबि गेल । बड़ ग्लानि भ' आयल । अपन स्पष्टीकरणो हम किछु नहि नहि सकैत छलिऐक । तें चाहे पीबैत रहलहुँ । सोचैत रहलहुँ जे प्रसंगवश कखनो बुझा देबैक अपन कहबाक अर्थ ।

ओ चुपचाप मुँहो निहुरौने छलि ।

—"एहि बीचमे तों बड़ दुब्बरि भ' गेलेहें ।" हम कहलिऐक । ओ खूब खिलखिलाक' हँसय लागलि । हमरा अर्थे ने लागल । एक मिनट धरि बेहू तनारि-तमारि हँसलाक बाद चुप भेलि । ओकर ई स्वभाव छैक हँसबाक । हम प्रतीक्षा कयलहुँ जे कारण कहत हँसबाक । परंच चुप ।

बीच-बीचमे फेर एक लहरि हँसि लेथय। आब हम हतप्रभ जकाँ होब' लगलहुँ।

—"तों एना हँसलें किएक सुस्मिता ?"

—"अहाँक कपड़ा-लत्ता ठीक-ठाक अछि कि नहि ? एही वयस-वानिमे वाविल भ' जयबैक विशेषतःलोकनिक समक्ष ?" हमर पूरा वयस वानिकें ओ हास्य-व्यंग्यसँ देखलक।

—"हमर प्रश्नकें टारि देलें। एखन वयस-वानि नहि, हँसबाक शप्प फेर।" हम कनेक गम्भीर भ' गेलहुँ।

—"अहाँ पूरि क' कत धरि आबि आबय राजूदा ? निश्चिन्त बाबू ! मन हुमर अस्थाथल रहत ओना। कहि देने रहब तँ फुरत रहत।" ओ बाजलि।

—"एखन निश्चिन्त कोना कहिपौक ? ओम्हरसँ खगेस्रकें सेहो भेंट कर' जयबैक। घूमैत-घामैत रातियो भ' सकैत अछि। से किएक ?"

—"कहलहुँ तँ मुदा, छोड़ू। अहाँ अपने सुभीतासँ घूमू।" ओ किंचित् दुखी भेलि, से बुझायल।

—"ताहिमे कोनो कार्यक्रम छौक तोरालोकनिक ?"

—"कोन कार्यक्रम ? ओ ओम्हरेसँ अपन कोनो मित्रक काजे एक टा एम० एल० ए०सँ भेंट कर' जयताह। हम नेना-भुटकाक कें-कों-कें-कों आ कपड़ा-लत्तीसँ माथ दर्द बेसाहब। फेर राति होयतैक। धीया-पुता सूतत। अपने पढ़ि रहब एक कातमे।—फेर बेसी राति भ' जयतैक। ओ अपन उठौताह् अखबार आ कामिक छापासँ पढ़' लगताह। हम पहिने सुतबाक यत्न करब। फेर एहि यत्नमे बड़ी कालधरि बाद सफल होयब। तखन भोर भ' जयतैक। ओ काशीक तैयारी। स्त्रीगणकें तँ दुन्ना लंझटि। एक टा बाहिये टा नहि बनब' पड़ैत छैक, कार्यालयी स्त्रीकें आर काज सब तँ पुरुषो महोदयक ओकरे कन्हापर। नहि एक तँ ताहू लेल नित्य महाभारते।"

—"एहेन महाभारत होइत छैक सुस्मिता ? तखन तँ बड़ सौभाग्यशाली छी, विवाहित नहि छी।"

—"से सत्ये। सम्भव हो तँ निबाहि लिय' एहिना। बेकार थिक ई जंजाल। निष्प्रयोजन। जे फँसि गेल छथि, तनिकार तँ छुटकारा नहि छनि, मुदा जे फँसबाक मोहमे छथि तिनका बुझा देबाक चाही। अनुभवीलोकनिक ई कर्त्तव्य छियनि।"

—"एकर माने तों एक टा विकास-क्रमके प्रतिरोध आन' चाहैत छें ?"

—"ओह, हमरा बुझें एकहरे सम्भव भ' पबैत ई महान अनिवार्य आन्दोलन !"

—"आह, अपने तँ अनुभव क' लेने छी। सबदा सुखक ने, तखन अनगार भविष्य बल्हार करबामे किएक ने मन लगतौक।" हम व्यंग्य कयलिऐक।

—"यदि अहाँकें अपन भविष्यक सम्बन्धमे कोनो प्रकारक आशा हो तँ मनहीं बहार क' ली, सैह बुधियगर होयत राजूदा। अहाँसँ कोनो कन्या विवाह नहि कर' चाहत। तखन वैह यदि निवैयो बान्हि क' तँ लोका धारमे कुदिये चाहत अछि। अहाँसँ बकर विवाह होयतैक से एक तरहें धारेमे कूदत सेहो गर्दन बान्हि क'।"

—"से तँ एखन ने सुस्मिता, जखन हम बेकार छी। बेकारी सब दिन थोड़े रहत ? नोकरी होयत। हमहुँ अपन कनियाँकें खूब सुखसँ रखबैक। बहुत राम स्वारथी नूआ कीनि क' आनि देबैक। गहना देबैक। सिनेमा देखा अनबैक। एक दिन हमहुँ एना शरणार्थी भ' क' थोड़े बौआयल फिरब।"

—"अहाँ हँसीपरसँ एकाएक आक्रमणपर किएक उतरि गेलहुँ, राजूदा ? अहुँ हमरा सैह बुझैत छी ? अहाँ हमरा ओत' शरणार्थी छी ? हम अहाँक अयोग्यता, अहाँक गरीबीकें कहियो नहि मानलहुँ। आइयो नहि मानैत छी। अहना नवाही दैत होयत अहूँक। जे अछि अहाँक अयोग्यता, से अहाँक व्यावहारिक ज्ञानक दिशसँ लापरवाही आ लोकाचारसँ अनभिज्ञता अछि, से आइयो अछि। आ लगैत अछि जे मास जाक' आर बढ़िये गेल अछि एहि 'योग्यता'मे। अहाँ एहि बेरोजगारीक परिस्थितिपर अपनाकें छोड़ि रहल छी राजूदा !"

—"हम ठीक नहि छी सुस्मिता ? हमरा मनमे कोनो आकांक्षाक अपेक्षा नहि अछि ? ई संसार, एकर नीक अधलाह घटना, समाज आ ओकर पाबनि-तिहार नहि लेल नहि अछि ? हमर सम्बन्ध-बोधक आधारपर प्रतिबन्ध नहि अछि ? हमरा एहि सभसँ कनेको प्रभावित नहि होयबाक चाही ?"

—"चाही। मुदा अहाँक येह तँ मूल्य नहि अछि, एहने ?"

—"मूल्य-तूल्य किछु नहि सुस्मिता। आइ मानि ले, हम व्यक्तिगत

जीवनमें निट्ठाहे छोड़ियो दी, विवाह नहि करी, नहि जानि गृहस्थीक सुख, तैयो चलि सकैत अछि। मुदा माँक की होयतैक? ओहि माँक जे दिन-राति एकासी करैत रहैत अछि आ हमर सभ अग्रज कहियो दस टाका पठा दैत छथिन, कहियो पचटकही, आ, तनिक ताहि चिररोगिणी बुढ़ियाकेँ एखनो हमर कोनो नोकरी लगबाक आशा छैक। हमरो विवाह करा क' हमरा दुभार नहि रह' देबाक जे स्वप्न छैक तकरा हम की करबैक? हमरा लेल ई स्वप्न ओकरा मरहु नहि दै दैत छैक।"

हमरा बुझायल जेना हम किछु उत्तेजित भ' गेलहुँ। किछु निश्चिन्त भेलहुँ। पछुबिऐक—"तखन पूछ तँ कखनो-कखनो मनमे होइत अछि जे माँ मरियो जाय सेहो ठीक। ओकरो प्राण भेटि जयतैक अपन असमारा दम्मा खोंखीसँ आ हमरा गृहस्थ बना देबाक अन्तिम मनोरथसँ, आ हमरो मुक्ति भेटि जाय टूटल चार, खायल कोठो आ सोखल सामथ असोरासँ। हम तकरा बाद मुक्त भ' क' संसारमे कतहु तँ जा सकितहुँ निर्द्वन्द्व भ' क' मोहमुक्त। कतहु। एखन तँ बन्हायल रहैत छी माँसँ। ओ बेचारी हमर एहि विवशताकेँ बुझितो ने अछि। ओ हमर जननी थिक ने! तेँ। आ सत्य पूछ तँ भायलोकनिकेँ सेहो हम दोष नहि द' पबैत छियनि। हुनकालोकनिकेँ अपन-अपन परिवार छनि, जिम्मेदारी छनि। कतेक करथिन, आ की? हमरा तँ तेहो चिन्ता भ' जाइत अछि जे विवाह कयने हमरो तँ वैह सभ ओहिना। तखन फेर एकर की होयतैक? हमहूँ काल्हि जा क' स्वयंकेँ आइयो सभ जकाँ लचार नहि मान' लागब? आ अपन आ माताक लचारी हुनके सभ जकाँ उचित आ स्वाभाविक नहि लाग' लागत? तखन एहि बुढ़ियाक की होयतैक? हम तँ अपन एहि बुढ़िया माँसँ बान्हल छी। ई बन्धन कखनो क' अपन सम्पूर्ण जीवनक एक मात्र कारण लगैत अछि। कखनो होइत अछि, सभसँ पैघ मोह, जे हमरा किछु ने कर' दैत छैक। आब तँ हम माँक शान्तिपूर्ण मृत्युक कामना करैत छिऐक। कारण, बचाइ तँ क' नहि सकैत छिऐक। मृत्यु-कामनामे तँ किछु पाइ-कौड़ी नहि लगैत अछि। सुभीतागर वैह लगैत अछि।"

हम एकाएक चुप भ' गेलहुँ। तकरा सुस्मिता अनुभव कयलक। ओ बहुत गम्भीर भ' गेलि रहय। हम ओकर गम्भीरतासँ प्रभावित भ' गेलहुँ। अफसोस भेल। ई कतेक रास अपन दुःख-गाथा की कहु' लगलिऐक एकरा? नहि कहने की बनैत नहि?

—"तथापि हमरा लगैत अछि राजूदा, जे एहनो परिस्थितिमे अहाँक दुला अहाँकेँ जीवनक एकटा तेहन आधार देने रहैत जे अपन संघर्षक कठिनता कम बुझाइत। ओहो बँटैत। ओ अहाँकेँ नैतिक बल दैत। ओ जे अहाँकेँ प्रेम करैत अछि।'

—"सैह तँ लगैत अछि सुस्मिता। हमरा आब कखनो क' बुझाइत अछि, जे हमरालोकनि आपसी सम्बन्धमे वस्तुतः जीबि नहि रहल छी—पोज करैत छी। प्रेम, मित्रता, ममता, एहि सभ भावक पोज करैत छी। जेना ककरो केओ प्रेम, दोस्ती, ममता किछु नहि करैत छैक। ई सभ एकटा समय-सापेक्ष नाटक थिकैक। नहि तँ, एतेक-एतेक दिन बिना ओकरा देखने कोना रहल भ' गेल हमरा बुते? एक दिन भेँट नहि होअय तँ बुझाय जेना तारीख नहि बिसरैक अछि—दिन अटकि गेल छैक। आ, आब एतेक-एतेक दिन बीति जाइत अछि। कोना? जीबिते छी। कोनो ने खराब भेल। तखन की मानी?"

—"ई तँ एकपक्षीय भेल। आ, हमरा लगैत किछु बेसिये भावुकतापूर्ण। क्षमा करब।"

—"ओकर जस' धरि बात छैक, ओ जानय। हमरा अपन एहि दुर्दिन, एकसरुआ जीवनमे एकांत भेलापर मनमे ई अवश्ये होइत रहैत अछि, जे ओकरा नहि बेसी किछु, मात्र कहियो क' एकोटा चिट्ठी अवश्य लिखैत रहबाक चाही। मात्र चिट्ठी। अपनाकेँ एकदमसँ कटायनि आ एकसरि तँ नहि अनुभव करब। ई अनुभव हमरा जीवनकेँ बचाक' राखि ल' सकैत अछि। नहि तँ आस्ते-आस्ते अनुरक्ति-विहीन सेहो क' द' सकैत अछि, छल, जीवनहीन! तथापि आत्मा गवाही अछि, हम ओकरा एहु बातक दोष नहि देलिऐक कहियो। एकोरत्ती नहि। सभ दिन यैह मानैत रहलहुँ जे होयतैक ओकरा सेहो कोनो लाचारी। नहि तँ पाँच मील दूर कॉलेजसँ रिक्शाक भाड़ा नहियोँ रहलापर, पयरे हमरा देख' चल अबैत छलि—मात्र एहि चिन्तापर जे काल्हि हम नहि भेँट कयलिऐक, कतहु मन तँ नहि खराब अछि हमर? से एतेक-एतेक दिन धरि हमरा शरीर-मनक कुशल द' बिना बुझने कोना जीबित रहैत? टिकट कटा क' हमरा लगैत हमरा लग नहि चल अबैत—पारिमे बिन···? जरूर कोनो पैघ विवशता होयतैक ओकरा।"

—"राजूदा"। ओ एतबे बाजिक' चुप्प जकाँ भ' गेलि अपन उपस्थितिमे। हम किछु नहि कहलिऐक। खिड़की दिस मुँह क' लेलहुँ। बिजलीक तारपर दुनू लोल चोंड़िक' एकटा पहाड़ी मैना चिचिया रहल रहय। □

अन्हार सँ विद्रोह

ई जे गपशप भेल ताहिसँ हमरा मानसिक अशिथे भ' गेल, यद्यपि ई गपशप स्वाभाविक रहैक। आ, एकरा कोनो प्रकारेँ रोकल नहि जा सकैत छलैक। ई सभ अनिवार्य जकाँ होइत गेलैक। परंच, हम अपनाके एक टा नव प्रकारक चिन्ताक अनुभव कर' लगलहुँ। ओना ई चिन्ता कोनो सामयिक किंवा युक्तिताक सबबेँ लौकिकताक अभाव, दुनियाँदारी नहि बूझि क' चलबाक नादरशाही छल। मुदा, से हमर स्वभावेँ हद भ' गेल अछि। हम ओहिसँ छूटि कहाँ पबैत छी। चुपचाप रहैत छी। मनेमन हरदम तेहन-तेहन व्यवहार सोचैत आ करैत रहैत छी जकर ठेकान नहि। से व्यवहार हमरा बुते कयल नहि होइत। कपड़ा भरिसकेँ कथारो बुते होइतैक। परंच, हम समाधान करैत रहैत छी, मनमे प्रसन्न होइत रहैत छी जे ई कयलहुँ ओ कयलहुँ। आ समाजक लोक सभ, गौआँ सभ क्षुब्ध, वेदनायल जकाँ माथ-कपार फोड़ि रहल अछि हमर कुल्ह रागपर। हमरा खूब र'गा बान्हि रहल अछि गामक लोक सभक एहि चंचल परिस्थितिपर। फेर ताहू बीच किछुने-किछु उचरुड़ क' दैत छिऐक। लोक फेर खौंझा-खौंझा क' हमरापर पंचैती बैसब' चाहैत अछि, हमरापर दंड लगब' चाहैत अछि आ बहुत रास पढ़ैबाक जरिमाना कायम कर' चाहैत अछि जाहिसँ हम भरि नहि सकिऐक आ हमर अपराध बनले रहय। हम ताहूपर हँसैत छिऐक तेँ ओ सभ हमरा बताह जकाँ बुझ' लगैत अछि। ई बात हमरा मनके अखनो अचैत अछि जे ओ गोँआसभ आब हमरा बताह बूझि क' हमर कुल्हपर ध्याने नहि दैत अछि तखन दुःख होइत अछि आ फेरोसँ किछु सोच' लगैत छी, जाहिसँ कि लोक बताहु बूझि क' हमरा अवठावय नहि। कारण, तखन किछुओ कयलाक र'ँगे की? अखन लोक स्वस्थ मनक लोक नहि बूझि बताह जकाँ बूझि क्षमा कर' लगाय तखन तेँ अंड-बंड किछुओ कयलाक र'ँगे कोन? फेर मन कोनो नव उत्पात करबाक योजना-कल्पनामे लागि जाइत अछि। से सभ टा मनेमन। तेहन मुश्किलपर प्रयोगशाला आर कतहु भेटल कत'? जाहिमे कोनो अभूतपूर्व घटना, प्रयोग आ चमत्कार कयल जा सकय?

मनक प्रयोगशालामे संगीतसँ ल' क' पशु मनोविज्ञान धरिक सफल प्रयोग

सनायासे सम्भव छैक। विश्व-भूगोलक सभ रेखा एकरा कूचिका' बनैत छैक आ मनुष्य-मस्तिष्कक सभ टा माला, 'पड़ाव' आ उपलब्धि एहि मनक प्रयोगशालामे निःशब्द घटित भ' जाइत छैक। जेना हमरा पयरपर संसारक समस्त बड़का धनिकवाहक—कत' धनक-अमेरिका-फ्रांसक—कि कत' धनक-लन्दन सभ टा सम्पत्ति वैभव—हमरा पयरपर खसल अछि। आ हमरा कोनो अपेक्षा नहि भ' रहल अछि। जेना मोहनपर जुत्ता पहिरने रही आ दस टा धनिक चिनगी पयरतर लगने छिड़ियायल रहय तँ की बुझायत? फेर, एक टा विश्व-सुन्दरी अछि से हमरा लेल भ' क' समर्पण करबा लेल व्याकुल अछि जेना कोना अर्जुनकेँ उर्वशी। हमरा मनमे एक क्षणक लेल मोह होइत अछि। कारण, स्त्री-देह विलैक, कोनो मामूली बात नहि। सेहो एक टा अनिन्द्य अलौकिक सुन्दरीक। एकर सभ टा गुण प्राकृतिक छैक, स्नो-पाउडर आ आधुनिक शृंगार-प्रसाधनक विधान नहि। तैयो हम स्थिर रहैत छी।

नहि, हम, एक टा आदिवासी मुग्धा छौँड़ीकेँ स्नेह करैत छिऐक। से हमर प्राण थिक। ओ हमरा, संसारमे जीबाक लेल ठाढ़ रखने अछि; ओ हमरा आ मात्र हमरे टा स्नेह करैत अछि। ओ हमर अपन थिक। हम ओकरे स्नेह करैत छिऐक—अपन ओही मुग्धा आदिवासी छौँड़ीकेँ। ओहि छौँड़ीक पवित्रो आत्मगौरव आ सौन्दर्यक आकर्षण एहि धर्षणीक कोनो अंगमे नहि छैक। एक टा निष्प्राण सौन्दर्यक ई पुतरा हमर अपेक्षित नहि अछि। ई अपन बाटपर चल जाओ चुपचाप।

एक टा तेहन स्वर्ग बनाओल गेल अछि हमरा चारू दिस जे पकड़ धरिते लोक बिसरि जाय सभ तरहेँ। अपना की? दीन-दुखिया, अनुभवक सम संसार सनहुँ बिसरा जाय, तेहन। हमरा ओहिमे आग्रह आ आदरसँ राखल जाइत अछि। चारू भागक वातावरण किछु तेहन छैक जे प्राण घुटकि-घुटकि क' आनन्दे रखैत अछि। मुदा, सत' धरि ओ स्वर्ग छैक तकर रकबा बड़ संकीर्ण-छोट लगैत अछि। ओना ओहि क्षेत्रमे तँ बेस इजोत—रंग-बिरंगक प्रकाश, पानि आ फल फलहरी, भोजन-भकार, महल-अटारी आ चन्द्रमा-तारा कि फूल-पात, गंध-पराग सभ छैक। मन मानि जाय तेहन मादक सभ किछु। लोकक आँखि अकबकायल होइत फेर, जबर्दस्ती खोलल जाइत सिपनी सभक तरहेँ नवीन आँखिक डिम्हा, ठोर पर-भर आ समस्त वलय नुँहुपर मेहायल सुषावस्थाक रंगीन छाहरि! ठोर बुदबुदाइत मुदा एको टा शब्द साफ नहि, अस्पष्ट। के की कहि रहल अछि, के की सूनि रहल अछि, से सभ टा अज्ञात।

आ जेना कहलहुँ—स्वर्गक सीमा धरि तँ बड़ रुचिगर, सभ किछु बड़ गौरवशाली, मुदा ओहि स्वर्गक बेड़ असलहि खतम होइत छैक कि एक टा अत्यन्त विस्तृत, प्रत्युत अनन्त दूर धरि पसरल अन्हार। से कुच्छे अन्हार नहि। ओहि अन्हारमे हरदम आक्रमण होइत रहैछ। लोकक आसमर्समे वातावरण दमघोंटि रहैत अछि। कतहु-कतहु बरबैक दोसो डिबिया जकाँ टिमटिमाइत रहत, सैह। बाँकी खाली हल्ला-गुल्ला, झगड़ा-झंझट। टूटल-फूटल घर सभ। सुन्न असोरा आ मुर्दघट्टी आङन सभ। बिजायल-पजायल चूल्हि आ बाहर फेंकल छाउरक ढेरी सभ। भूकैत कुकूर आ रोगाह पछुआ कोतवाल सभ। ताहि सभमे प्रमुख आर्तस्वर—नेनाक।

एके टा नेनाक अनवरत कानब। से सभ हल्ला-गुल्लासँ ऊपर ध्यान खीचि लेबऽवाला। ओकर कनबामे भूख-पियास आ युरक्षाक जबर्दस्त माङ छैक'''।

ते हुनर स्वर्ग हमरे लग अन्हार भ' जाइत अछि। हम एक गोटेकेँ पुछैत छियनि जे—'अहाँ औ, एहि स्वर्गक रकबाक बाद एहन अन्हार आ दुःखक समुद्र किएक छैक?

—"स्वर्गक नियति आ संसारक नियतिमे ई भिन्नता सर्वदासँ छैक। एहिना। स्वर्ग आ संसारक गौरव एहिना सुरक्षित छैक, एही भिन्नतामे।' ओ बजलाह।

—'ई सभ टा इन्तजाम जे एत' बासतेँ बेसी छैक आ बेकार खर्च भ' रहल छैक, तकरा जहाँ धरि सम्भव हो, ओहि पसरल अन्हारमे नहि पसारल जा सकैत अछि? अथवा, एहि सभ साधनकेँ, जे एतबी टा संकीर्ण स्थानमे छड़नाक फिरैत अछि, कोनो व्यवस्था नहि छैक तकर?' हम पुछलियनि।

ओ व्यक्ति कड़ुआ क' आँखि फाड़ि क' देखलनि। आ यद्यपि ओ पी क' धुत्त रहथि तैयो बड़ अनखोहुँत जकाँ हमरा देखैत, हमरा आँखिक आगाँ अपना तर्जनीसँ हवाकेँ तीन बेर कटलनि—कथमपि नहि''कथमपि नहि कथ ओ अपन शरीर स्थिर करए लगलाह।

—"किएक? एतेक कम स्थान, लोक आ अपलाइ जीवनक अनावश्यक सुव्यवस्थामे एतेक रास साधन, शक्ति धनक फैलौकाँश किएक? एकरा सभकेँ आर उपयोगी नहि बनाओल जा सकैत अछि? आर दूर धरि नहि

बाँटल जा सकैत अछि? नहि बाँटल जयबाक चाही?' हम कनेक तीख भ' क' पुछलियनि। हुनक मुँअगर ओठसँ टप-टप मद्य चूबि रहल छलनि। हमहुँ पीने रही। मुदा, हमरा एकर आत्मगौरव रहय जे हम मदिरा पीबियो क' हुनकालोकनि जकाँ अन्हुर नहि लागि रहल छी। आ ने हम अनटोटल किछु क' रहल छी।' हम किछु जोरसँ बजलिऐक।

—"अहाँ नहि बुझबैक। एकर चौहद्दीकेँ जखने बढ़ब' पड़तैक, स्वाभाविक छैक जे तखने ई सभ टा सुख बँटाय लागत। लोक लूझ' लागत। तेँ ने ई एतेक ऊँच आ मजगूत देबाल। कियो तोड़ियो ने सकय। कहियो नहि। देबालक ओहि पारसँ अन्हरिया एम्हर पैसत कि सर्वनाश! आ अहाँकेँ की बुझाइत अछि जे हमरालोकनिक ई प्रकाश यदि खोलि क' बहाइयो देल जाय तैयो ओतेक दूर धरि पसरल गहींर अन्हार समाप्त भ' सकतैक? कथमपि नहि।" आ बड़ निर्णायक ढंगसँ लटपटाइत बजलाह। से एतबा कथा संसारक थडीसँ लगभग पन्द्रह मिनटमे, तोड़ि-ताड़ि क'।

—"एक बेर भ' क' तँ देखितौक। अनेमन सोचने रही जे एतबी इजोतसँ ओतेक अन्हार दूर भ' सकत, आ सैह मानि क' चलल रही, तखन तँ सभ नहि होयतैक। मुदा, ई बात बड़ घृणित थिक—क्षमानुचित। ई देबाल तोड़ू, जाहिसँ एतेक ऐश्वर्य, वैभव, आनन्द जहाँ धरि सम्भव भ' सकय, ओ विस्तृत संसारमे पसर जकाँ बढ़ि जाइ। लोककेँ एको चुक्का क' तँ भेटौक।'

—"अहाँ बड़ उद्दण्ड आ मूर्ख लोक छी औ! अहाँ भागू एत'सँ। एत' रहबा योग्य अहाँ पाते नहि छी। अहाँ महा कुपात्र छी। पड़ाउ एत'सँ।" ओ मोछैत मद्योन्मत्त बड़ी जोरसँ चिचिआयलाह। परंच, सभ तँ ओ बड़बड़ाइत रहय, जेना गाम भरिक ब' रियर माल-जाल सभ। हमरा घृणासँ नाक फाट' लागल। मनमे क्रोध फनफनाय लागल। अपना हाथक पीबऽवाला सोनक पात्र हम खूब जोरसँ फेंकलिऐक। से बड़ लगेमे उगल चन्द्रमाकेँ लगलनि। ओत'सँ पात्र घूरि क' नीचाँ खसल आ झन द' फर्शपर बाजल। हम देखलिऐक जे आहिपर पात्र खसि क' बाजल छलैक, सैह चिन्ह नहि देखा सकबा योग्य मोटगर देबाल। आ जतबा दूर लागल रहैक ओ स्वर्ण-पात्र ततबा दूर धरि देबाल जर्जर भ' गेल रहैक, से देखबा योग्य। हम हर्षित भ' गेलहुँ। ठीक छैक। जल्दी-जल्दी उछललहुँ हम।

—"ई रकबा बढ़ब' पड़त। ई देबाल, जे धारक पानिकेँ छान्हि क' रखने अछि, तकर फाटक खोल' पड़त। ई रकबा बढ़ब' पड़त। एहि ऐश्वर्यक

इजोतकेँ बाँट' पड़त, से अहि देत छी । एक टा कोठली मात्र स्थानकेँ मात्र बूझि क' एतेक ऐश्वर्यमय बना क' रखने छी, से चलत नहि । चारू कातसँ घर निःशुन्न कयने छी । कारण तँ अहाँकेँ एम पुरवार्थ बूझल अछि । अहाँकेँ बूझल अछि जे जहाँ कि दरवज्जा आ कि एको टा खिड़कियो खोललहुँ कि मनुष्यक दुःख-कातर स्वर कानमे पड़त, से स्वर अहाँक 'रस' मे 'भंग' करत । तेँ साधन-सम्पन्न चारू भागसँ निःशुन्न कयने भोग करैत छी । स्वाद नहि बढ़' देत छिऐक । देवाल नहि तोड़ैत छी । बेस ।" हम किछरि-किछरि क' ओ भीषणँ सुना क' कहलियनि सभकेँ । आ विदा भ' गेलहुँ । हम आब अपनाकेँ चेतन बूझि रहल छलहुँ—बुझनुक ।

किछुए डेगपर हमरे फेकल चाक हमरा पयरसँ ठेकि गेल । से हमरा अनुभव भेल । निहुरि क' ओकरा उठौलहुँ तँ ओ यू टा बुझायल । जिज्ञासा भेल । उठौलहुँ तुनू । एक टा बेत हलुक छेनी आ दोसर बड़का भारी हथौड़ा । हमरा अर्थ नहि लागल । छोड़ि क' हम बढ़' लगलहुँ । हमर माथ देवालसँ लागि गेल । झन्न द' उठल । एक छन माथ ध' क' बैसि रहलहुँ ठामे । फेर किछु सुझाइ पड़ल । घुमलहुँ आ ताकि क' ओहि छेनी-हथौड़ाकेँ उठौलहुँ । फेर देवाल लग अयलहुँ । बिना कोनो तारतम्ये छेनी राखि क' देलिऐक एक टा समधानल हथौड़ा । जनाक द' उठलैक । ओहि भरिगर झनकनाहटिसँ ओ सभ लोक सडल दिवसो आ जयकत ठोड़ बीहडाला लोक सभ फड़नछा गेल, जेना सामक कानमे केयो सुइ भोँकि देने होइ । फेर सभ निःस्पन्द भ' गेल । हम दोसर, फेर तेसर, चारिम, पाँचम''अनवरत-अनवरत क' छेनीक माथपर हथौड़ा बजारैत रहलहुँ, बड़ी काल धरि''''।

पाछाँ हमर मन हार' जकाँ लागल । एहन मजबूत भयावह लोहाक देवाल हमरा बुते एकसर तोड़ल होयत ? कोनो जन्ममे ? हम माथ ध' क' बैसि गेलहुँ । हकमैत-हकमैत हमर छाती फूलि गेल रहय । बाँहि ऐँठि गेल छल ।

हम नहि कहब जे हमर भ्रम छल वा विश्वास, मुदा हमरा बुझायल, जाहि ठामसँ हम देवाल काटि रहल छी, ठीक तकरे ओहि पार कोनो नेना चेहियाक कानि रहल अछि अनाथ जकाँ । बड़ करुणासँ कानि रहल अछि । हमर मन आर हार' लागल । तकर किछुए छनक बाद कोनो स्त्रीक कातर्य भरल स्वर कुण्डमे आयल । हम चेना जागि क' उठलहुँ । अन्दाज चीन्ह'

लगलिऐक । अरे राम, ई तँ हमर वैह आदिवासी छौँड़ी थिक । हमरे''''ओहो ओहि अन्हारमे बन्द अछि । हमर मन व्याकुल होयबसँ औनाय लागल । अस्तु, ओहि अनाथ नेनाकेँ ओ कोरामे ल' लेलखीक अछि आ बुला-बुझाक' चुप क' देलकैक अछि । हमर हाथमे फेर अनायासे धरा जाइत अछि छेनी-हथौड़ा आ हम सहजोर चोट कर' लगैत छी देवालपर । हम सोचैत छी—बड़ जरूरी छैक एकर ढाहब । यावत नहि तोड़ब तावत ओहि पार ओहेन घनघोर अन्हारमे सगरो ठाढ़ लोक नहि बूझत । हम शयन आदिवासी छौँड़ीकेँ चीन्हि सकबैक ? ओ बयसे एहन कारी अछि । ओहि अन्हरियामे कोना चिन्हायत ? ओकर आत्मामे प्रकाश छैक से हमरा बूझल अछि । मुदा, से स्पर्शक माध्यमसँ मनमे पैसैत छैक से यावत चिन्हबैक नहि, तावत अनुभव कोना क' सकबैक ?

हमर हाथ गहीँर आ सम्पूर्ण ताकतिसँ हथौड़ा बजार' लागल, बिना रुकने । लगातार । झनझनाहटिक आवाजसँ सौंसे वातावरण साकांक्ष भ' गेलैक—जागि गेलैक । खाली पहरुआ संतिए सभ भिन्न भयैत, अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र पजियौने निःशमि चुप ।

हम भरि राति देवाल कटैत रहलहुँ । राति खतम होयबाक नामे नहि लैक । फेरो बड़ अयूह सकाँ लागय लागल । भेल जे नहि पार लागत जीवनमे ई एहन मोट-ऊँच लोहाक देवाल काटब । हमरा बुते नहि पार लागत होयत एम्हरसँ ओम्हर । हम माथ ध' क' बैसि गेलहुँ । एतेक कालसँ चोट क' रहल छी आ एको पैंच ने टूटल ई लोहा । तखन एकर सम्पूर्ण टुटबाक तँ कल्पनो व्यर्थ थिक । बेहक पोर-पोर ठेहिया गेल रहय आ तेहन बेकाबू लागय जे होअय ओतहि पड़ि रही । सुभीता ई बुझाय ओहि हाथकिमे जे पाथ-घर सकाँ एत' सुतबासँ पूर्व अंगपोछासँ गर्दा-गर्दा झाड़बाक प्रयोजन नहि । हम जत' हथौड़ा चला रहल छलहुँ ओतहु हमरा पयर तरमे भरि ठेहुन गर्दापर भखमल्ली तोशक ओछाओल । हम एक चोट करबामे जनबा लागति लगबैत छलिऐक तखने हमर पयर ओहि तोशकमे धँसि जाइत छल । हमरा आलस आबि गेल । अवश्ये ई आलस एक टा निराशाक आलस छल । बुझायल जे एहि तोशकपर सुतबामे पाँच सेकेण्ड पर्याप्त छैक अहीँ अचेत भ' जायब । हम पड़ि रहलहुँ । तावत बुझायल जेना कोनो भूखसँ व्याकुल नेना कान' लागल । ओकर कानब बड़ मार्मिक छलैक । पृष्ठभूमिमे किछु-किछु 'आश्वासो' भ' रहल छलैक । से बन्द भ' गेलैक । एक टा स्त्री-स्वर साफ साफ सुनाइ

पड़ल जे ओहि नेनाकेँ बुझा रहलनि छलैक—"चुप रह ! चुप भ' जाउ बुगा हमर ! 'भोर होब' दही तोरा माए लग द' अबओक दूध पिया देतौक।" ओ नेना भूखे व्याकुल रहैक। से तोड़े ने लैक कनबासँ। पाछाँ बड़ी कालक बाद बुझायल जे ओ कनैत-कनैत फेर सूति रहलैक। आ कि कोरामे लेने ओ स्त्री ओकरा बुझब' लगलैक, से नहि जानि। हम ओहि स्वरकेँ चीन्ह' चाहैत रही। हमर सालसा बहुत कम भ' गेल छल। एहि चिन्हार जकाँ स्वरक भ्रममे हम किछु सक्रिय भ' गेल रही। हमरा बुझायल जेना किछु आवाज उठि रहल छैक, किछु गेड़ा रहल छैक। ई आवाज एक क्रमसँ लगातार भ' रहल छैक, किछुए-किछुए कालपर भरिसक सेकेन्ड-सेकेन्ड पर। हमर ध्यान एहि बातपर लागि गेल जे ई कथिक स्वर थिकैक? हम अकान' लगलहुँ। बड़ी काल धरि।

एकाएक जेना हमर भक टूटय। एक बेरक आवाजक संगहि हमरा ज्ञान भ' गेल जे ई आवाज थिकैक छेनी आ हथौड़ाक। हम आश्चर्य आ चिन्तामे पड़ि क' ठाढ़ भ' गेलहुँ। ई दोसर के थिक? माथ कुड़िघबैत-कुड़िघबैत मन पड़ल ई तँ स्वरो छलैक आदिवासिये छौंड़ीक। आ बच्चा? बच्चा के? जे हो। हमरा मनमे अकाते-अकात भरि गेल जे प्रतिकूल धार पत्थरक नापक पाछ जकाँ हमरा सेहीसँ दहबैत विदा भ' गेल। एहि बेर हम आर तापति आ शीघ्रतासँ हथौड़ा बजाब' लगलहुँ, लगातार। पछिला बेर तँ कय बेर छेनीपरसँ हथौड़ा छहलियो जाय। एहि बेर सब टा आघात चापल-तौलल छेनीक कपारपर। ओकरासँ जे पदार्थ टूटि रहल छलैक से हमरा पयर लग ढेर भ' रहल छल। हमरा अनुभव भेल आ बड़ हर्ष भेल। हम आब बेर बेर ई सोचैत जाइत रहि जे भरिसक ऐह एक टा बाट छैक आहितें एतेक रास ब्रह्माण्ड ऐश्वर्य आ प्रभावकेँ बुझा कयल जा सकैत अछि आ ओहि आदिवासी छौंड़ीकेँ देखि सकैत छी, एहि देवालकेँ तोड़लेपर। हमरा मनमे खूब उत्साह भरि गेल आ थकनी ठेहीँ सब टा जेना धाम-पसेना संङे शरीरसँ बहरा गेल। सब अघातक बाद किछु आर स्फूर्तिक अनुभव कर' लगलहुँ। बाद वातावरणमे दुखा जोरसँ सामाहुतिक स्वर बड़ी-बड़ी काल धरि गूँजि रहल छलैक। ई स्वर हमरा बल भरैत छल। हमरा बुझा रहल छल जेना आइयो ठीक ओहि घटना होयतैक जेना भारतमे वालि अवतारपर भेल रहैक। कान क' कातें कोने भरिये पानी पीटल रहुँ बड़ी दूर धरि। गाँओ सभ कोदारिसँ चारिये छौ तँ देखकैक ओहि उँचका गमछुल्हा बान्हपर। कोनोक

पानी ओहि द' क' टपलैक। जखन ओतेक रास जमकल पानिकेँ एक रत्ती दऽर भेटलैक कि बान्हुकेँ तोड़ैत-फोड़ैत पानि ह'-ह' बह' लगलैक। आ बान्हु करीब-करीब दुइयो लग्गासँ बेसी कटा गेलैक। आब पानि सौंसे पसरि गेलैक। ई ब्रह्माण्डक सुख आ ऐश्वर्य सेहो अवश्य ओहि पानिये जकाँ ओहिना पसरि जयतैक देवालक ओहि पार। एक रत्ती दऽर एकरा भेटौक ने। ठेलि-ठालि क' डाहैत-डूबैत ई सब टा पसरि जयतैक चारू कात। अपन देवाल कायम रखने रहथु ई लोकनि।

ठन्, न्-न्-न्-न्। ई आवाज बड़ साफ आ आतंककारी छलैक। बड़ जबर्दस्त चोट कयल गेल रहैक। हमरा बुझायल जे एहि आवाजक डरसँ केक टा बेहोश लोकक आँखि खुजि गेल होयतैक आ फेर अनेरे सुना गेल होयतैक। हम कने चिन्तितो भ' गेलहुँ जे ई सभ यदि जागि गेल तँ रोकि लेत। बान्ह क' देत। कारण जे हम यद्यपि जतेक उचित आ जरूरी बात क' रहल होइ, तैयो लोकक नामक लेल क्रिया क' रहल होइ, मुदा ई सभ तँ एकरा अनौतिये बुझत। आ हमरा ओहि पारसँ कयल गेल एहि चोटपर कनी क्रोध भेल—एना हड़बड़ा क' सभ टा कयल-धयल चौपट्ट ने करथ। मुदा तुरन्ते सभ टा सामान्य भ' गेलैक। हमहुँ पनावन चोट कर' लगलिऐक आ ओहू पारसँ होब' लगलैक। एहि दु-तरफा चोटसँ ऊपर हमरा बुझायल जेना कियो मेँहो-मेँहो हकासि रहल हो! हमरा आश्चर्य भेल। कारण, हमरा बुझल छल, एना हकासैत अछि हमर ऐह आदिवासी छौंड़ी। हम आरो जल्दी-जल्दी आघात करैत गेलहुँ आ हमर पयर लगक टूटल वस्तुक ढेरी आर पैघ भ' गेल छल। हमर ओहि आ शरीरक मांसपेशीमे कैक टा गीरह माछ हेलैत बुझाय। हमरा बड़ सन्तोष भेल। आब हमरा पक्का विश्वास भ' रहल छल जे जे घड़ी ने भागलपा घटना भेल छैक—से घड़ी ने। एहि सूर द' क' सभ टा इजोत एक्के बेर ओझल भेलै आ एक्के घंटामे एहि देवालकेँ ढाहि क' बहा देतैक। ई बेहोश लोक सभ मुइल माछ जकाँ सुतले-सुतल बहि जयतैक ओहि दिस। गौ ने चलतैक—मुइल माछ जकाँ।

एतेक रास लोक मुइल माछ जकाँ दहाय लगतैक से सोचि क' हमरा खूब जोरसँ हँसी लागि गेल। हमरा हाथक हथौड़ा बेसी जोरसँ बजर' लागल। हम आब एहि कल्पनामे व्यस्त रही जे ओ समय कखन अबैत अछि जखन कि ई सभ बिलासी निष्क्रिय लोक सभ मुइल माछ जकाँ अनन्त जलक धारमे बहि-दहि जाय। एक-एक टा माछकेँ हम ठाढ़ भ'

क' भेंट वार्ता (इन्टरव्यू) करिऐक—"कहू, अपन जीवनक महान अनुभव" हुनका बड़े आनन्द आबि रहल छल। आनन्दक एहि लहरिमे हमर हाथ बिजलीक गतियेँ काज क' रहल छल आ पहिने जे ठेहुन भरिक पाथरमे गड्ढा हमरा असन्तुलित बनबैत छल—चोट देबामे बाधा पहुँचबैत छल, से आब हमरा पयरक लगातार ओजन आ आघातसँ धीरे-धीरे काटि भेल छलैक आ हमर दुनू पयर ताहिमे गड़ि गेल छलैक। तरबाक माध्यमे माटिक—विशुद्ध माटिक स्पर्श आ गन्ध सबने हमरा सौंसे शरीरमे पैसल आ से हमरा अनुभव भेल कि हम पूर्णतः लोक भ' गेलहुँ। लगातार आघात करबामे लागल छलहुँ।

आब हमरा विचित्र बात ई लागि रहल छल जे एहि छेनी-हथौड़ाक बीचमे किछु चूड़ी खनखनयबाक स्वर सेहो सुनि पड़ि रहल छल। ई चूड़ीक खनखनी हमर अत्यन्त चिन्हार अछि। भलें, एखन हुनका चूड़ि क' बजौलासँ नहि बाजि रहल हो, हथौड़ाक आघात कयलाक क्रममे बाजि रहल हो। से हमरा बड़ शुभ लागल। मन औनाय लागल जे कखन एक टा छोटो-छीन भूर भ' जाय एहि देबालमे। ओहि पार अछि अन्हारमे ठाढ़ि हमर धी। हम एक छन लेल किछु दुःखी भेलहुँ। परंच ई दुःख अटकल नहि। लगातार हथौड़ा बजारिते रहलिऐक। हमरा अपन बाँहि आ गरदनिमे ततेक टटका ओज भरल रहय जेना हम ओहुन कठोर देबालपर पहिल वा दोसर चोट क' रहल होइ। आब एक बेरमे दू टा छेनी आ दू टा हथौड़ाक स्वर ध्वनि-प्रतिध्वनित जकाँ गूँजि रहल छलैक। एक क्रम आ आघातक प्रायः एकके ओजनक सङ। आब हमर ताकति, अपन विश्वास आ ताहि विश्वासक एकमात्र सङीक अधिक निश्चयात्मक बल भ' गेल छल। हम आब अपन सफलताकेँ प्रत्यक्षतः देख' चाहैत छी। देखक ओहि सचार जकाँ जे रेसक अन्तिम क्षेत्रमे जान-जीसँ अपनाकेँ बढ़ा देब' लेल उताहुल भ' जाइत अछि।

एके बेर बुझायल, देबालक बीचो-बीच एक लोटाक मुँह भरि भूर देने प्रकाश जेना भू-भू क' भुभुआय लगलैक ओहि पार दिश। हमरा आश्चर्यक ठेकाना नहि रहल। ई प्रकाश एक टा मनुष्यक मुँहपर सुभुआ रहल छलैक। तेहन मुँह! तेहन कान, आँखि, नाक धपार! हमर आदिवासी पूर्वजीक आकृति ताक छल। ओकर करिऔन मुँहपर बुलि पड़ैत अछि, घामक बुन्न सब मोति जकाँ झलकि रहल छलैक आ गरदनिपरक उघार सब नसीक तार जकाँ झलमल क' रहल छलैक। हम हर्षँ अपनाकेँ व्याकुल अनुभव कर' लगलहुँ। एक रत्ती हम ओकरा छूबि क' अनुभव क' लेब' चाहैत रही। मुदा, विवशता ई छल जे हम ओतेक छोट भूर देने ओम्हर हाथ क' वा नहि चकैत छलहुँ। तखन हाथ बेढ़ा क' छूबाक प्रयासमे दू टा अनुभव भेल। पहिल ई इजोत सब टा छेका गेलैक भूर मुना गेलासँ आ दोसर हमर हाथ मरिलक देबालक चौड़ाइयो मोटाइ पार नहि क' सकल होयत। अतिशय मोट मजगूत आ ऊँच बनाओल गेल छैक ई देबाल। तामसेँ मन घोर भ' गेल। इजोत छेका गेने ओहि पार ओकरा अँदेशा भ' गेलैक। हम झटसँ हाथ घीचि लेलहुँ। अपन व्यक्ति-स्वार्थपरतापर पश्चात्ताप कर' लगलहुँ। तखन ओम्हरसँ ओ बड़ ताक कहलक—'देबालकेँ आर तोड़ू। बहुत दूर धरि। एखन एम्हर बड़ कम प्रकाश अबैत छैक। एतबो कयने किछु लाभ नहि। ई देबाल कमसँ कम आयत धरि तुड़बो लगा नहि जाहि देबैक तावत व्यर्थ।" ओ छेनीपर फेर हथौड़ा बजार' लागलि। बड़ मेहीँ चूड़ी खनखना जाइ। हम एक छन लेँ खिन्न आ निराश भ' क' छेनी-हथौड़ा धयलहुँ फेर थाकों आघात-पर आघात कर' लगलहुँ समधानि-समधानि क'। किछु तामस आ किछु जरूरति मानि क'। फेर इजोरिया-अन्हरिया बीच ठन्‌...ठन्‌क ऊँच स्वर गूँज' लगलैक।

—"आखिर एना अपना दुनू गोटे कहिया धरि ई देबाल ढाहैत रहब से कहू ने?" हम किछु उदास भ' हकमैत पुछलिऐक। एतबेमे हमर साँस फेक उमे टूटल।

—"जावत धरि ई ढहि ने जाय।" ओ हुकमैत मुदा निर्णायक स्वरमे बाजलि।

हम आ ओ फेर आघात कर' लगलहुँ।

—"हमरा नहि भरोस होइत अछि, एहि जीवनमे ई देबाल तोड़ल होयत अपना दुनू गोटे बुते?" हमर चोट आब हताशल तेँ अब्बल पड़ि रहल छलैक। ई बात हम अपने अनुभव क' रहल छलहुँ।

—"अपने दुनू गोटे किएक? अनेक लोक तोड़ि रहल छैक। हमरा-लोकनि दुइये गोटे नहि छी। अहाँकेँ हथौड़ा-छेनी सबहक आवाज नहि सुनि पड़ि रहल अछि?" ओकर कहबासँ बुझायल जेना ओ आश्चर्यमे पड़लि हो।

—"एक-एक बेरमे कय-कय सय आदमी चोट कए रहल छैक।" ओकर एहि सूचनापर हमरा एक छन विश्वासे ने भेल। ई खबरि हमरा लेखेँ तेहन जरूरी आ वजनदार छल जे भरोसे ने भेल हमरा—ई बात सत्य थीक।

—"तों चीन्हैत छहीक से सभ छैक ? एकरो चोर्टैके ?" हम व्यग्रता आ सन्देहसँ पुछलिऐक। हमरा भेल —ई छौंड़ी फुसिये हमरा भरोस तँ ने दैत अछि ?

—"एहन अन्हार गुज्जमे ककरो आकृति चीन्हब सम्भव नहि छैक; ओकरो शरीरक गति आ ध्वनिसँ बुझाइत अछि जे कने-कने दूरपर कतेक हाथ एक बेरमे उठैत छैक आ देवालपर बजरैत छैक। एहि पार तँ एहन भयावह आवाजसँ कान फाटि रहल छैक लोकक। एहि घन अन्हरियामे वातावरण आर भयाओन बुझाइ छैक। अहाँकेँ ओहि पारमे किछु ने सुनाइत अछि ?" ओ जेना चिन्ताक भावेँ पुछलक आ बड़ी जोरसँ साँस छोड़लक।

हमरा सत्य हो वा भ्रम मुदा बुझाय लागल —बड़ मद्धिम परंच एकै लय अनवरत ठन् ठन् होयबाक स्वर। उत्साहेँ हम फूलि गेलहुँ। करीब-करीब चिचियाइते कहलिऐक —"सुनाइत अछि। आब साफ सुनाइत अछि। भोर धरि पूरा देवाल ढहि जयतैक—पूरा। तखन सावधान रहिहेँ—एकदम सावधान ! ई देवाल ढहलहु सँ कत टा लोकके मिने-टेगे पड़ि रहतैक। एकको टा लोक नहि मरय तखन ने। ककरो खौंचो ने लाग' पबैक से देखिहेँ।"

एक टा बड़ वात्सल्यपूर्ण आ मीठ खिलखिलाहटि हमरा दिस वातावरणमे व्यापि क' पसरि गेल। गूँज' लागल। हमरा एके संग हर्षो भेल आ संकोचो। ओ आदिवासी छौंड़ी हमर मनक भावपर हँसलि छलि। ओ हमर मन बूझि गेलि रहय जे 'ककरो खौंचो ने लगैक' कहबाक साथे हम पाछ क' 'ओकरे' चिन्ता करने रहिऐक। से हमर कमजोरी ओ बूझि गेलि रहय तेँ हँसलि। हम चुप्पे हथौड़ा पटक' लगलहुँ।

—"एतेक विशाल देवाल ढहतै आ जे लोक एकरा ढाहत तकरामेसँ कियो दबि क' नहि मरतैक से छैक सम्भव ? ई देवाल तँ ठाढ़ छै आ सबैत छैक ओही लोकक प्राणक मूल्यपर। बिना से कयने तँ ढहतैक नहि। आ नहि ढहतैक तँ सभ टा सुख-प्रकाश एहिना एकेटा पोटली सन बन्न रहतैक किछुए परिवारक लोकसँ बन्दी भेल निमुन्न रहतैक। ओही सुख-प्रकाशकेँ स्वतंत्र करबामे लोकके देवालसँ भीड़' पड़ैत छैक।"

ओ लगातार हकमि रहलि छलि—अपस्याँत। तैयो ओकर हाथ कखनो चैन नहि छलैक। हमरा ओकर एहि गम्भीर स्वर आ बात कहबाक ध्वनिपर एक छन घबड़ाहटि भेल। तकरा हम बहुत बल लगाक' मनमे दबौलहुँ

आ अपना भरि पूरा ताकतिसँ माथसँ बहुत ऊँच धरि हाथ पीठ दिस उठा क' खूब तनसि क' आघात कर' लगलहुँ—ठन्नाक्। तकरा लगले बुझायल जेना असंख्य हथौड़ा आ छेनीक टक्करसँ उठल ध्वनिक बुआरे सौंसे पृथ्वी दलमलित भ' गेलैक अछि। ई ध्वनि लगातार भैए रहल छैक।

बाम्हके काटि क' जेना हहायल-फुफुआयल पानिक धार आगाँ दिस पसरि जाइ छैक तहिना एक टा तेहन वातावरण भ' गेलैक जे आइ धरि सौंसे पृथ्वीपर कहियो नहि भेल छलैक। माटिपर पानिक बदलामे प्रकाश आ सुख पसरि रहल छैक। आ तकरा सभ लोक अपन-अपन आवश्यकताक मोताबिक छूबि सकैत अछि—ल' सकैत आ ओकर उपयोग क' सकैत अछि। जहाँ धरि आँखि जाइत अछि तहाँ धरि यैह सभ। कत्तहु कोनो आरि-धूर नहि। बड़ी दूरपर क्षितिज। से क्षितिज सेहो नवे अनचिन्हार !

आदमीकेँ पहिले पहिल ई परिस्थिति भेटलैक आ ओ सुखसँ, अविश्वाससँ अचेत भ' गेल। फेर बड़ी कालक बाद होश भेलैक। ओकर सिरमामे आदिवासी छौंड़ी। भरि जन्मक थाकलि-ठेहिआयलि। मुदा, अत्यन्त प्रसन्न भेलि बैसलि रहैक। ओकर केश सोहुरा रहलि छलैक। आ पूछि रहलि छलैक—"की बना दियऽ खेनाइ ?"

—"की बना देबें ? जेना जे कहियौक भात, तँ भात बना देबें तेहने सन तोहर भाग।" ओकर एहि प्रस्ताव आ सन्देहपर वैह ओहने प्राणपूर्ण हँसी ओ हँसलि।

—"हँ। काल्हि भातो अनूप छल तेँ ने ई कथा बजैत छी ! आइ खायक कोनो वस्तु अलभ्य आ अनूप नहि अछि। कोनो, ककरो आश्रममे नहि छैक अलभ्य खयबाक कोनो वस्तु !" ओ कहलकैक। ओकर स्वर उत्साह आ आत्मविश्वाससँ थरथरा रहल छलैक। ओ मूड़ी उठाक' ओकरा दिस तकलक आ ओकर आँचमे मूड़ी घोसिया क' बड़ी जोरसँ साँस छोड़लक।

—"आइ किछु नहि खायब। भरि जन्म खायक लेल बड़ैत रहलहुँ। आइ खेनाइ भेटि गेल। खयबाक हड़बड़ी कथीक ? आइ तोहर कोरामे एहिना निश्फिकिर सूतब। बड़ थाकल छी। एहिना तोरा कोरामे सूतल रहब। आब तोरा लेल लड़ब। कने सुस्ताय दे।" ओ ओकर कोरामे आँखि मूनि लेलक। ओ ओहिना मातृत्वपूर्ण हँसी हँसलैक आ कपारपर हाथ ध' देलकैक।

कोना तँ, हम ओ लोक भ' गेल रही।

ई मनक प्रयोगशाला थिक हमर । हरदम किछु-ने-किछु, अन्वेषणक कड़ाही चढ़ले रहैत छैक । किछु असंभव आ अनिश्चितकेँ औंटि-औंटि क' बिना सम्भव आ निश्चित बनौने ई मन रहैत नहि अछि । भरिसक तैँ मन बताही भ' जाइत छैक । मुदा, से चिन्ता होइतो मनक प्रयोगशाला एकटा एहन औषध तैयार क' लेने अछि जे संसारमे लोक बताह ने होअय । से कोना ? बताह होयबाक सभ मूल कारणकेँ उखाड़ि क' फेंकि देबहुँ । जखन कारणे नहि रहत तँ बताह होयत किएक लोक ? सुस्मित हमरा तीन बेर टोकि चुकलि अछि—"राजूदा, अहाँक ध्यान कतहु अनतह रहैत अछि । चक्षप करबाक काल अहाँक आकृतिक हाव-भावसँ बुझाइत अछि जे अहाँ एत' उपस्थित नहि छी । किछु आन सोचि रहल छी आ आन ठाम बौआय रहल छी ।" हम पकड़ा गेलहुँ जेना । चुप ।

—"सम्भव छैक । कौखन क' अपनो संदेह होइत अछि । कोनो बातसँ मन जहाँ कि कनेको प्रभावित भेल, कि ओतहिसँ फेर ओ जाने किदामे बहल चल जाइत अछि । ओहिसँ मिलैत-जुलैत कोनो बीतल प्रसंग वा सुनल किस्सा वा सोचल बातसँ गथाएल रहैत छैक से बड़ी काल धरि बड़ी दूर धरि । जखन चेतैत छी आ फेर सोझाक यथार्थ पर घूरैत छी तँ मन-शरीर थाकल ठेहिआयल बुझा पड़ैत अछि । जनतब ओहिना जेना सबटे केओ पैदले चलि क' आयल हो ।"

—"ई बात बुझलिऐक नहि । अहाँकेँ की लगैत अछि ?"

—"किछु नहि । मन हरदम एकटा एहन काज धयने रहैत अछि जे ओहिमे घात-प्रतिघातक सिलसिला बनले रहैत छैक । हमर अंतःसंसार बनल रहैत अछि युद्धक भयावह मैदान । हम स्वयं बहादुरीसँ लड़िते छी आ करुणासँ आर्त्तनाद सेहो करैत रहैत छी परंच थोड़ीमे कुहैत छी । लड़ब एकदम जरूरी छैक । लोकक विरोधी परिस्थितिकेँ नाश करबा ले लड़ाइ टारल नहि जा सकैत अछि ।"

एहन-एहन ओझराहटि आ व्यस्तता ककरो कहियो ने सकैत छिऐक जखन कि ई हमर अपदिना समस्या जकाँ भ' गेल अछि । एहि चिन्ताक बोझ मनपर पाल्हापर हरदम रहैत अछि । तकरा हल्लुक करबाक इच्छा आ जरूरतिमे जखन कोनो आत्मीय बन्धुकेँ कह' लगैत छिऐक तँ एक टू मिनटक बाद ओ हमर बात सुनबाक नाटक कर' लगैत अछि । वस्तुतः सुनैत नहि रहैत अछि, अपन सहारेँ—बदल तरहक लोकसभक बीच बस' आन मात्र जीवनकेँ सुभीतासँ देवऽबला—तुरन्त बिना किछु कयने सुख देबऽबला गप्पपर—से चाहे कोनो स्तरक सुख होअक तकेँहीपर मग्न भ' आ सुनक जाइत छैक । से सुभीता ओना मूलतः आर्थिक सुभीताक सुभीता ।"

—"ई तँ युगक लाचारी भ' गेलैक अछि—युगधर्म । जकरा जतय सु जाइत छैक सेहि जाइत छैक । ओ अपना हेलि-ठालि क' आगाँ ससरि जा रहल अछि । से जीवनक सभ क्षेत्रमे । तखन ई बड़ स्वाभाविक छैक जे बहुत लोक भावनाक ओझरा-ओझरा बहलाकेँ जे आर्थिक स्तरपर लाभकारी नहि हो व्यर्थ आ बाधक बात मानैत अछि । अपनाकेँ ओहि बातक सेल कोनो तरहेँ लयब' नहि चाहैत अछि यद्यपि सेहो स्तर कोनो जरूरी छैक से हमरा नहि लगैत अछि । जरूर मनुष्य-व्यवस्थाक शुरुहेसँ रहल होयतैक मुदा दिनहार-दिन बढ़ैत आइ बेसी भ' गेलैक अछि ।" ओ एना छन रुकलि जेना किछु सोचैत हो !

—"एतेना देखियौक राजूदा, काल्हि अहाँ अयलहुँ । अहाँक अयबाक सूचना हमरा भोरे भेल छल—अहाँक चिट्ठी । तथापि हमरालोकनि सिनेमाक टिकट मङ्गबा लेलहुँ किएक एही कारणसँ जे आखिरी दिन रहैक ओहि फिल्मक । अहाँकेँ मालूम भेल जे पत्र नहि भेटल जखन कि फुलि बात रहैक । आ कोनो आन लोक अयबाक बात रहैत तँ फिल्म चाहे अन्तिमो दिन रहैत तँ ओकरा छोड़ल जयबाक चाहैत छलैक । से ई भेलि गेलाइ । एक बेर दू बेर नैतिक स्तरपर आ अहाँक स्वभाव मन पाड़ैत हम विरोध कयलियनि जे राजूदाकेँ खराब लगतनि । मुदा ओहो भेलि गेलाह—'अरे हुनका बुझले नहि होयतनि । हमरा हुनक चिट्ठिये नहि भेटल अछि । बस !'"

—"हम जनैत छी राजूदा, एखनो एहि जनतबसँ अहाँ दुखी भ' जायब । तथापि कहि देलहुँ । कारण से आवश्यक लागल । यदि नहि कहितहुँ तँ अहाँकेँ ई मिथ्या विश्वास बनल रहैत जे फिल्म जाइयो क' हमरालोकनि अहाँक अयबाक घटनाकेँ भावात्मक रूपेँ जोड़ायल रहलहुँ । सिनेमा जायब हमरा-लोकनिक 'लाचारी' छल अहाँ तैँ मानैत रहितहुँ । एहने भावुक लोक छी अहाँ ! ई बात अहाँकेँ प्रसन्न करैत किन्तु तथ्य तँ यैह छैक जे हमहूँ चल गेलहुँ सिनेमा देख' ।

"हमहूँ किएक चल गेलहुँ ? हमरा लगैत अछि जे संभवतः अपन फिल्म अभिरुचिक संदर्भमे हम अहाँक अयबाक घटनाकेँ कमजोर अनुभव कयने होइ वा फिल्मे चल गेल होइ । कारण हम आखिर-आखिर धरि विरोध क' सकैत

छथिनऐक। से नहि कयलिऐक। मतलब जे भावनाक स्तरपर स्वयं हुनि फराक एकटा नितान्त मामूली मूल्यक बात लेल चलि गेलहुँ गहूम कूटकें सोझाँ राखि क'। सेहो ओहि मनुष्यक सोझाँ जकर प्रसंग कोनो दोष नहि छैक।"

सुस्मिता चुप भ' गेलि। ओकर स्वरसँ ओकर दुःखी होयब लागल। हम अपनो एहि सूचनासँ आब प्रभावित भेल रही। आ अपनेपर खौंझा रहल रही जे किएक अयलहुँ एकर डेरा ठहर' ले। एहुन बात अपमानकारी लागि जाइत अछि। से असह्य अपमान।

—"अहाँकेँ ई सत्य बुझिक' अपमान जकाँ लागल अछि। अहाँक तेहे स्थिति अछि राजदा। एहि सत्यकेँ जखन नुकाओल गेल तँ ई अहाँक बड़ महान भवना-बोधक आधार बनल छल आ जखन साफ-साफ कहि देल गेल अछि, तँ अपमानकारी घटना बुझा रहल अछि। नहि?

"मुदा अहाँकेँ हम यदि ई बात साफ-साफ कहि सकैत छी तँ ईहो कहि सकैत छी जे हम अहाँक अपमान क' सकैत छी से अहाँकेँ सन्देहो नै होयबाक चाही। स्वप्नोमे नहि। कमसँ कम हम अहाँक अपमान नहि क' सकैत छी। ई बात तथ्य छैक। एखन धरि सत्य छैक।"

—'एखन हम तय क' रहल छलहुँ कतहु अनतहु जयबाक।' हम कहलिऐक।

—"नहि, से नहि चलत। अहाँ ईंटरनू द' क' नहि आयब। यावत् धरि कोनो व्यवस्था नहि भ' जायत रहबाक, तावत अहाँ एतहि रहब। नहि, साथ चल गेलहुँ, तखन तँ कोनो बाते नहि।" ओ कहलक आ उठि क' विदा भ' गेलि। मरिसाक भनसा घर।

बड़का जवरा तस्तरीमे भात, स्टीलक बाटीमे दालि आ छोटकी तस्तरीमे तरकारी लेने सुस्मिता उपस्थित भेलि।

—"खा लिय'। अहाँक समय भ' रहल होयत।" कहलक। सभ टा छोटका सिपाइ पर सरिया क' राखि देलकैक। हम हड़बड़ा गेलहुँ।

—"आहि रे बा, तों खेनाइ ल' अयलें? हम तैयार······"

—"खाइए क' भ' लेब तैयार। हमरा बुझाइत अछि, अहाँक समय भ' गेल अछि आ ताहि दिस अहाँक ध्यान नहि अछि। चलू उठू। ऊठूऽऽऽ।" ओ हमर बाँहि खिंचलक।

विचित्र बात। □

चिन्तित आकाशमे चुनमुन्नी

सड़कपर चलैत काल मनमे दुइये टा चिन्ता छल। पहिल तँ ई जे एक टा नीक मित्र जखन संसारक चकमे, युगक भड़फड़ी आ जीवनक भागा-दौड़ीमे छूटि जाइत छैक तँ ओकर स्थानपर एक टा नव मित्र अनायास कोना आबि क' ठाढ़ भ' जाइत छैक—ओतबे स्नेह, संरक्षण आ सङ देबाक लेल? शरितक ई मित्र भेटबाक प्रक्रिया सेहो, प्रकृतिक तेहे नियम छैक, जाहिमे कोनो अभावक कारणेँ मनुष्य-मनक भहरैत विश्वासकेँ, एक टा दोसर विश्वास रोपि क' ओहि अभावसँ टूटबकेँ संतुलित कयल जाइत छैक। तकरो कोनो तेहने गणित आ हिसाब-किताब छैक, नहि तँ एत' आबि क' हमरा सर्वथा ई सभ नव, विश्वास करबाक योग्य एतेक रास वस्तु, लोक नहि भेटि जाइत।

हम तँ अपन कन्हापर लटका क' चलऽवाला झोरीमे तेहू दू टा दऽ कुर्त्ता-पैजामा धयने आयल रही, जे सबुना क' माँ ध' देने रहथ। ओहिना कोंचायल-मोचड़ायल। से पहिरि क' हम अन्तर्वीक्षामे उपस्थित होइतहुँ। महेन्द्रा तँ भेँटो ने कयलक अछि जे पहिने जकाँ अपन धोआयल धोती आ सजायल कुर्त्ता पहिरा क' विदा करितय। आ, एहि बात ले तैयार नहि होइतिऐक तँ मारि लोकक ओकरामे कनैठी बेथ' लगितय, जाहि मेहनतिक डरेँ तत्काल ओकर बात मान' पड़ितय।

तखन आब हमरा मनमे एतेक दिनक बेकारी आ गामक जीवन जीबि लेलाक बाद ई सभ संकोच आ विचार नहि अछि—मैल वस्त्र आ फाटल-चीटल वस्तु कोना पहिरब, कोना निकालब। गाममे नव वस्त्र देहपर चढ़ैत छैक, तकरा बाद मैल चिक्कट होइत-होइत फाटि जाइत छैक तँ शरीरसँ उतरि जाइत छैक। साफ कपड़ा खिचबाक कारण बुझाइत रहैत छैक, तेँ कुर्ता-पैजामा चल छल। पहिरियो क' जे आयल रही से देखि क' हुनू व्यक्तिकेँ चिन्हबे योग्य नहि भ' सकलियनि। हमर मन लाजसँ पछताए लागल। एत' किएक एहर' अयलहुँ।

मुदा जखन हम कपड़ा-लत्ता धारण क' सुस्मिताक सोझाँ ठाढ़ भेलिऐक ते—"कने सोरी का बौआ। घललघुन आब राज-राजेश किछु विदेपत-लोकनिकेँ बैसाक' पढ़ब'। हुनकालोकनिकेँ हमर अद्वितीय योग्यतापर एकको पाइ भरोस नहि छनि तेँ किछु छपलाहा कागज सभ माङिपत्रि देखबाक लेल आ देखबाक नाटक करबाक लेल। जकरा आइ-काल्हि कियन-किदन सब—प्रमाण-पत्र तँ आचरण-प्रमाण तँ डिग्री तँ किदन सभ कहल जाइत छैक...। सभ हा ओरियाओल छैक। लेने आ सोरी। लोक जेहन चाहुथ, सैह करी। मनःतोषार्थं।"

—"अरे सुस्मिता! तों ठाढ़ि भ' क' एना किएक देखि रहलि छे हमरा? जल्दी कर। आन सोरी।" ओ ठाढ़िए रहलि। हमर सभ टा अपन ई मुलुक-फल्लुक चंचलताक नाटक बिला गेल। सुस्मिताक आँखिक कोरपर कियो सुरू सम पातर बुन्द जल' क' मात्र पानिसँ ढौरि खिचि देने छलैक। ओकर ई रूप देखि हम स्तब्ध रहि गेलहुँ।

—"की बात छैक मीता?" हम स्वयं गम्भीर स्नेहक अनुभवक करैत पुछलिऐक।

—"अहाँकेँ हम पुछने रही। अहूँ झूठ बाज' लगलहुँ अछि आब। एही वयस्थानीमे गेल जयतैक इन्टरभ्यू देब'?" एना हम नहि जाय देब। ईहो कोनो तरीका थिकैक। एतबा कालमे भोरसँ खिचा जाइत, ओहो भ' सकैछ।"

ओकर ओहिपर हम बलईसी हँसिलिऐक, खूब जोरसँ। यद्यपि भीतर हम कतहु बड़ गहींर दुःखी भ' गेल रही अपन स्थितिपर जाहिपर ओकरा अनावश्यक करुणा आबि गेल रहैक। बेकार थिकैक ई सभ। हम बड़ कटु भ' गेलहुँ अछि, हम सोचलहुँ। ओ एक छन सोचलक आ बाजलि—"उतारू पैजामा-कुर्ता। जल्दी करू।"

ओकर कहबाक ध्वनि अनमन तेहने रहैक जे हमरा मन पड़ि गेल ओ भौजी जे हमर चरित्र बनाक' हमरा ठाढ़ क' देने अछि। अपने परिवारमे बैसैत अछि। बड़ी दूर। भेँट भेल तँ कालहु आयल। कोना मासक मास तू पातो चिट्ठी पर्यन्त नहि लिखैत अछि। ई स्वर तँ ओकरे थिकैक। ओहुने 'हकुमी' आ भरिगर। हमरा बुझाइत जे ई मानसिक परिस्थिति हम बेसी काल नहि सहि सकैत छी।

—"तमाशा करैत छे! एखन आब ई कुर्ता-पैजामा खोलबाक माने?"

—"बेकार समय खराप नहि करू। खोलू। हम लुंगी आनि दैत छी।"

—"वाह, बेस कार्यक्रम छैक। लुङ्गिये पहिरि क' चल जायब? ओहो सब बुझत जे कोनो 'स्कालर' आयल अछि।"

—"ठहू छोड़ू। लिय' लुंगी। जल्दी उतारू ओकरा।" ओ खौंझायलि।

आज्ञाकारी बालक जकाँ हम अपन वस्त्र उतारलहुँ। भेल—भरिसक लोढ़ा क' देतै। मुदा निश्चिन्त छैक ईहो छौंडी। बतहिये छैक। ले, सैह आज्ञा सैह क' देलियैक। हम लुंगी धारण क' बैसि गेलहुँ कुर्सीपर। ओम्हरसँ तावत ओ एक टा फुलपैंट आ बुशशर्ट लेने उपस्थित भेलि। हमरा तँ देखिते मायर देह सिहरि गेल—"बाप रे! ई बंडोलवा पैंट बुशशर्ट कथी ले, हमरा लेल? पागल छे' तों? ई हमर..."

—"जल्दी उठू। पहिरि क' देखियौक। उठू जल्दीऽऽऽ। कय बाजि गेल, से अछि ठेकान? उठूऽऽऽ।" ओ बाँहि घिचलक।

—"उठलहुँ बाबू।" भेल जे एहि ढंगोत सम्भावीक इन्टरभ्यू आइ विलक्षण होयतनि। पैन्टमे पयर घुसियबैत काल एकटा बालसुलभ प्रसन्नतो भेल। गामो नहि अछि, कतेक दिनपर पैन्ट पहिरि रहल छी।

बारह बजे राति क' प्रवेश आ भौजी सबे पैन्ट-बुशशर्ट किनने पैकेट कर-करबैत कोठलीमे आयल रहथ—"भोरे तों चल जयबहीं जे इन्टरभ्यू देब' ले। पैजामा-कुर्तामे नहि चलतौक। पहिरि क' देखहीक तँ। ठऽऽऽ।" भौजी बाँहि ध' क' घीचि देलक।

—"फेर की सोच' लगलिऐक अहाँ? देखू तँ कतेक बढ़ियाँ फिटिंग अछि? एकदम अहाँक अपने देहक नापैत अछि। एकदम बैसल।" ओ बिना अपन कार्यक्रममे सफल भ' गेल रहय।

—"हुत्। ढंगोत तँ लगैत अछि। तों खा-न-खा झंझटि कयले।"

—"बेकार ! एहेन सुन्नर लगैत अछि ।" ओ तग आबि क' मोड़ायले रहि गेल कागरकेँ सोझ करबाक आ देखि क' तेना हुषित भेल, जेना ई सभ वैह अपने पहिरि क' तैयार भेलि हो । "आब मनुक्ख जकाँ लगैत छी । जल्दी करु । जाउ आब ।"

—"एह, ई ओढ़ि क' नहि जयबोक हम । हमरा लगैत अछि—नकटे छी । किछु पहिरने नहि छी । हम नहि पहिरबोक ई ।" हम किछु गम्भीरतेसँ कहलिऐक ।

—"रे छौंड़ा, कने एम्हर आ तँ !" ओ प्रायः छौंड़ाकेँ सोर पारलकैक । ओ तुरन्त अयलैक ।

—"देखहुन तँ, ई पैन्ट खूब सुन्नर लगैत छनि ने ! डीस-डाल नहि ने लगैत छनि ?" छौंड़ा बिहुँसैत देखैत बाजल—"हँ, खूब सुन्नर लगैत छनि ।"

—"सोहूँ अद्भुते छै । गवाही ठाड़ क' देलें । हमरा अपना निसफिट बुझाइत अछि । अनकर देहक वस्त्र अनका कतबो ठीक होयतैक तैयो मिसफिट लगबे करतैक ।" ओकर आकृतिसँ बुझायल जे उदास भ' गेलि अछि । हम समर्पण क' देलहुँ । वैह पहिरि क' जायब ।

—"एहिमे हम फाइ आ कागज सभ कत' राखब ? कहु तँ" हम गम्भीर हास्य कयलिऐक अपना भरेत ।

—"आह, ओहिमे कि पाकिट सभ छैक ?" ओ खौंझा गेलि, मुदा मोलायम व्यंग्य कयलक । आ खूब जोरसँ हँस' लागलि, जेना जेबीवला चिन्ताक बात ओकरा बुझायल होइक । ओ हँसैत-हँसैत बताहि भ' गेलि—"नेना-बुढ़का जकाँ जेबी ले चिन्ता' 'टाका राखब की ?"

ओकर एहि नेनपनपर स्वयं हमरो बड़ हँसी लागि गेल । हम ओकर हँसब देखैत विदा होव' लगलहुँ । बरंडा धरि ओ आयलि । जखन हम गलीमे उतरि गेलहुँ तैयो ओ ठाढ़ि छलि । ओकर ई अनुभव हमरा अपन सन्दर्भमे नवे नहि, चिन्हिसो छल । हम झटकारि क' चल' लगलहुँ । आब हमरा माथसँ सब बात छुटि गेल रहय । माथ पैसि गेल रहय इन्टरभ्यू ।

हम अखबारमे लपेटल कागत-पत्रकेँ थोरिया क' काँखमे खेस झटकि क' चलैत गेलहुँ । हमरा पयरमे एतबा दूर धरि चलबाक कारणेँ धूरे-धूरा भ' गेल रहय । पैन्टक कारणेँ चलबामे भारी असौकर्य बुझा रहल छल आ हम अपन एहि मनोवैज्ञानिक भ्रमसँ मुक्त नहि भ' पाबि रहल छलहुँ जे हम नकटे

छी ! हमरा माथमे ई दू टा बात प्रधान छल जे हमरा फैक घेर तेज होइत देहकेँ छानि रखैत छल । हम स्वयंकेँ नग्न चलैत अनुभव क' रहल रही आ 'सेवा आयोग कार्यालय'क सब-पासमे कोनो कल्पित मानसिक अन्वेषणमे लागल रही जे पहुँचैत देरी पहिने पयर धोअब छाबामे नीचो नीक जकाँ । केहन अबद्ध लगैत अछि ? बाबू एहने पयरकेँ देखि क' स्नेहपूर्ण क्रोधसँ कहथि—'पयर जे लगैत अछि हिनक मुसहर जकाँ ।' हमरा बाबू मन पड़ि गेलाह । ई अनुभव भेल जे बाबू बड़ कृतमय मन पड़लाह । हम हुनका ममत्वोंकेँ दू क्षण मन नहि पाड़ि सकैत छियनि । हम एखन इन्टरभ्यूक इन्टरभ्यूमे छी आ अपन मुसहर सन लगैत पयर धोबाक चिन्तामे छी । हमरा सब भावकेँ ई बूझल रहैत अछि जे पिता कुशल-क्षेम छथि कि मरि-खपि गेलाह । बाइत-पीबैत छथि कि उपास पड़ैत छथि ।

सेवा-आयोग कार्यालयक सोझामे एक टा छोट-मोट भीड़ जकाँ रहैक । ओना हम घबड़ा गेलहुँ देखिक' । परंच, एहि ठाम हमर कय बेरक अपन अयलाक अनुभव काज देलक । हमरा बूझल रहय जे ई सभ टा प्रत्याशी एके विषयक लेल नहि आयल होयताह । अनेक विषयक अध्यापकीय प्रत्याशी छथि । तेँ हम बहुत नहि घबड़यलहुँ ।

पहिने ओकर सीढ़ी लगक फूल पटबऽबला पाइपसँ निशोख दुनू पयर धोलहुँ । जतबा पानि रुमालकेँ भीजल पयरक सोखल भेलैक से ओ सोखलक; पाछाँ एकदम भीजि गेल । गारलिऐक ओकरा । फेर पोछलहुँ । फेर गारि क' जेबीमे ठूसि लेलहुँ ।

हमरा बूझल अछि एहि कार्यालयक पछिला सीढ़ी (पछिला दरबज्जा नहि !) । ओतए कय टा प्रत्याशी चढ़ल जाइत रहथि । अपन एखबारी लपेट लेने हमहूँ चढ़' लगलहुँ । एको मिनटसँ कमे ।

बड़का हालमे कैक पतिआनी गजबज भरल कुर्सीक बीचमे एतेक ओत' अधिक बड़का पारसल टेबुल । तन छोअ-पचक्का मशीने । कतोक आकृतिपर अनेरक आत्मविश्वास, कतोक आकृतिपर 'मनहूसी' । कतोक निराश, कतोक उत्साहमे फचर-फचर करैत । की पूछल जयतैक, ताही विषयक छटकार लगबमे अपन तत्कालीक प्रतिभाकेँ पिजा रहल । एहि प्रत्याशी समूहमे हमरो परिचय कोनो फराकसँ नहि करय आ सकैत छल । एक तँ हम फेबाड़े लय ठाढ़ ई सभ किछु देखैत रहि गेलहुँ । भाबी से ककरो किछु चिन्ता वा जिज्ञासा ? हम पछा क' चुपचाप एक टा कुर्सीपर बैसि गेलहुँ । एहन चेष्टासँ,

जे हमरा कोनो चिन्हार नहिञे अछि । हम अपनाकेँ एहेन अनचिन्हार किएक राख' चाहैत छी, से हम अपनो ने जानि पबैत छी । आब जेना एखन, कतेक जनेदबार होयत जे हमरे जेँचक होयत । ओकरो एहि विशाल बेकारीक देशमे नोकरी नहि भेटल होयतैक । ओहो कम काम पिरानियो बन' के कोशिश कयने होयत । तथापि, एखन धरि बेरोजगारीक दाम गुड़ैत होयत । तकरा समयेँ अपनाकेँ मुखाबधाक आवाज की भ' सकैत छैक ? एहिमे संकोचक कारणे की ?

तखन हमर कानमे किछु अतिरिक्त उत्साहक एक टा स्वर पड़ल । एकटा पनखौक, जिनक दंत-पंक्तियुक्त मुँहवला चौकी ल' क' लपकल हमरा दिस । हम संकोचमे पड़ि गेलहुँ ओकर एहि व्यवहारसँ । ओ धकधकायले ठीक हमरा कातमे पहुँचि गेल । बैसल रहथि एक टा आइ साहेब, तनिका निवेदन कयलकनि जे—'कने ओम्हर घसकू ।' हमरा ठोढ़पर दुर्भाग्यहो बिहुँसी अवश्से आबि गेल होयत ।

—"उमेद नहि छल जे तोहूँ भेटबेँ एहि महासभामे ।" ओ ठहक्का मारलक । हम किछु कुंठित अर्थो भ' गेलहुँ । एहि ठहक्कासँ एक टा आर विपत्ति आबि गेल हमर चारू भाग । सभक आँखि ठहक्का-केन्द्र दिस घुमलैक था नोक पाँचेक युवक सभ चोट्टे घूमि क' हमरा दिस बिदा भ' गेल—'अरे रजुआ' "

ई माल' पड़त जे आश्चर्यक सङ्ग सङ्ग सभक स्वरमे प्राचीन, मुदा सहपाठीक एक टा जीवित स्नेहो छलैक । हम अपना प्रति कयल गेल ओकरा-सोकनिक एहि स्नेहसँ भरि गेलहुँ । दू छन तँ खाली सभकेँ देखिते रहि गेलिऐक । सभ कतेक लगक दोस्त रहय ! एक सङ्ग कैन्टीनसँ सड़क धरि ओलाव-उहनायबला । मस्तमौला सभ । बेसीक तँ स्वास्थ्य नीक आ कपड़ा-लत्ता बेस चिक्कन-चुनमुन-दुरुस्त । ओ सभ हमरा घेरि जमा लेलक ।

हमरा बुझायल जे एहि घटनासँ सम्पूर्ण अपरिचित समूहमे हमर अपरिचितत्व लेहन-पान लागल होयतैक ओकरा सभकेँ जे 'चेहरे' बदलि गेलैक सभक । हम अपना प्रति अपने महत्त्वक एहि बातकेँ सोचि क' मने मन ग्लानिसँ भरि गेलहुँ । तथापि, स्वाभिक बादो हमरा मस्तिष्कमे ई बात बैसले रहल जे भविष्यक आइयो हमर उपस्थितिमे ओ बात बाँचल अछि जे ओकर आग्रहसँ आगाँ बढ़ि क' आबि जाइत अछि । हम आब अपनामे प्रसन्न छी । इन्टरभ्यु कोनो चिन्ता नहि रहय ।

हम शान्त भ' गेलहुँ । कुर्सी कम रहैक । ओ सभ हमर सहपाठी एतेक रास उत्सुकता आ स्नेह प्रदर्शित कयलाक बाद प्रायः एक टा बड़ दीर्घ पक्षाघातक अनुभव था चिन्तासँ शिथिल भ' गेल छल । हमरा बुने ई परिस्थिति लक्ष्य कयल भ' गेल । । हमरा एहि बातसँ बोहरा कष्ट भेल जे ई स्नेही लोकसभ जाहि कल्पित आशंकासँ दुःखी आ हुक भ' रहल छथि, से निराधार छैक । ताहूमे एहि कष्टक कारण हम छिऐक । हमरा किञ्चित् हँसी लागि गेल । एक बेर हम एकरा सभपर, फेर पूरा हॉलमे सभतरि नजरि दौड़ौलिऐक । कयटा चिन्हार लोक घुर्इ नाड़ि लेलक । हमरा कोनो तरहेँ बोध पड़ल जे ओहो सभ सङ्ग पड़ैत रहय । ई हमर अनुभव एक टा दोसर महत्त्वपूर्ण पक्ष छल जे हमर उपस्थितिकेँ नकारि रहल अछि । उपेक्षित क' पड़ल अछि । हमरा ताहू बातपर हँसी लागि गेल ।

—"एहन इंटरभ्यूमे आर तँ किछु लाभ नहि सखन एतेक रास पुरना दोस्त सभस भेंट-घाँट भ' जाइत छैक, से धरि बड़का बात । सम्बन्धक नवीकरणक हेतु ई कार्यक्रम बड़ महान अछि, हमरा सब-सब लोकक लेल । ई बात हम जानि-बूझि क' कहलहुँ, दू कारणे । एक टा तँ ई साफ कर' लेल जे 'भाइसभ, यदि हमरा अबलासँ कनियोँ घबड़ाहटि भ' गेल होइक जे आब ओकरा सभकेँ नहि होयतैक, हमरे भ' जायत, तँ से भय मनसँ बहार क' दे । अनेरे ध्यान भरोस काम नहि कर । हमरा कोनो पैरबी नहि अछि, कोनो अभ्यारो ने । योग्यताकेँ अहुआ पुछैत छैँ केयो । आ तँ योग्यता तोरीलोकनिकेँ छौके । दोसर, तोँ सभ सभक हिसाब कायम रखैत जो । हम ओहिना एक टा आर प्रयोगेपर आयल छी ।"

ओकर सभक चेहरापर धुरा बहुत किछु हारि गेलैक, से अनुभव भेल ।

—"खगेन्द्रा भेटलहु अछि कतहु ?" हम पनखौक चन्द्रशेखरसँ पुछलिऐक । ओ हँसल ।

—"प्रचण्ड छेँ तोँ । रे, ओकरा तँ भ' गेलैक कहिया ने ! आब ओ हमरालोकनिक बेकार समितिक सदस्य नहि अछि ।"

—"ओहिना । इन्टरभ्यू देब' नहि ।" हम स्पष्ट कयलिऐक । आ एम्हर ओम्हर देखलिऐक । मनेमन हमरा ई भरोस छल जे खगेन्द्र ग्राफीक अवश्ये । किछु-ने-किछु तिकड़म लगौनहि होयत । तेँ एक बेर हम आँखि पसारि क' देखलिऐक केबाड़ दिस । ई बात लक्ष्य क' गेल ओ हमर पनखौक मित्र ।

—"हुआ। एहि महासभाक रङ्ग नहि बिगाड़। जौं एहिमे कोना बन्हि-थान आबि गेलें से आश्चर्य होइत अछि। सुनलहुँ, खेती-गृहस्थीमे जुमि गेल छें। एक टा—'फुल फ्लेजेड' गृहस्थ भ' गेले अछि। इंस्पेक्टर, ई की" एम टा।" ओकर बात पूरो ने भेलैक, हमरा असाधारण रूपेँ खूब जोर हँसी लागि गेल। ते सभ लक्ष्य कयलक। कय गोटेके विरक्ति भेलैक। कय गोटे हमरासँ मुँह बिचुका लेलक—स्टुपिड सभ! हम अपन एहि व्यवहार पर अपने अधलाह अनुभव कयलहुँ। हमर हँसी तँ रुकि गेल, मुदा हमर भितर अपन कहबाक इच्छा देब' लागल। तोड़ै ने लैक। हमरा बड़ विचित्र लागल।

—"एना हँसैत छिही? लोकके अधलाह' 'आखिर 'दफ्तर' छैक'"।" हम कह' चाहलिऐक।

—'अधलाह आ 'दफ्तर'? हाय रे प्रचण्ड! ई ई तँ घर-आङन भ' गेल अछि हमरासभक। एहिमे उपस्थित पंचानवे प्रतिशत प्रत्याशीकेँ एत'क सभ स्टाफ सङ्गे चाह-पान आ कुशल-क्षेमक सम्बन्ध भ' गेल छैक। बाहरमे कतहु भेटलापर हमरालोकनि एतुका स्टाफकेँ कुशल-क्षेम पुछैत छिऐक, ओहोलोकनि पुछैत अछि। चाहो पिअबैत अछि। आ, चपरासी अछि तँ सलाम करैत अछि। कतेक गोटे आब हमरालोकनिकेँ नामसँ जनैत अछि। आब एहीमे बूझि ले जे मासमे दू बेर तँ अबिते करैत छिऐक। नहि दू बेर तँ एक बेर अवश्यमे कोनो फाङ्क नहि। सभ चीन्हल अछि। बार सँ आर विशेषज्ञलोकनि आब हमरालोकनिसँ किछु किछु नहि पूछैत छथि देख' के। भरिगर बुझाइत छनि जे बेसी देखबैक आ फाटि-चीटि जयतैक तँ अनेरे झंझटि होयतैक बेचाराकेँ। ओहो लोकनि उपाधिक संग जनैत छथि।

पुनरपि भेलापर जखन कोठलीमे प्रवेश करैत छिऐक तँ हँसैत-हँसैत बेचारे-लोकनि पुछैत छथि —"कहिये, कुशलपूर्वक तो हैं?"

—"आपलोगोंके आशीर्वाद से अब तक तो है। देखें कब तक और देना पड़ता है आप महानुभावों को कुशल-समाचार पूछने का कष्ट!' ताहिपर सभ लज्जित भ' जाइत अछि बोहार सभ। तोहर चश्म! हम कुर्सीपर बैसबो नहि करैत छिऐक। बैसलहुँ तँ एक मिनट।"

—"आपका अभी तक कहीं नहीं हुआ न?" बुझना जाइत छल जे ई नाटक देखबैत अछि मिथ्या सहानुभूतिक।

हम हँसि दैत छिऐक आ ठोंठ-पठोठ कहैत छिऐक—"इस प्रश्न का उत्तर भी पहले परीक्षा में देखें।"

ओकरासभक आकृति फक्क भ' जाइत छैक। बेसी सदस्यकेँ तँ क्रमशः बेसी छैक। हमरा तखन कहत जे "शिष्टाचार बरतिये।"

हम कहैत छिऐक—"मैंने कोई असभ्यता नहीं बरती। आप ही लोग एक अनुभवी प्राध्यापक के नाम से मोटे-मोटे नोट्स छपवाते हैं। मैंने उसीमें व्यवहृत भाषा का प्रयोग किया है। आप नहीं लिखते 'दूसरे प्रश्न का उत्तर भी प्रश्नोत्तर संख्या एक में ही खोजें?" से कि कहलिऐक कि की किया जाइत अछि मन।

—"आप जा सकते हैं।" एके बेर सभ झौंड-झौंड भ' उठैत अछि। हम हँसिते घूरि अबैत छिऐक। आ, फेर अगिला आवेदनक प्रपत्र लेबे जाइत छी किरानीसँ माङ्गिक'।

'पहिने एकर दाम नहि लैत छलैक। पागली ईश। आब देखनमैक' बाप रे, एकरो बिक्री बेस छैक। बस, एकटाका आन्हि देलक। पाँच टाका पोस्टल ऑर्डर, एक टाका फी फॉर्म, रजिस्ट्रीक डाक-व्यय आ अवश्यंति से सभ करयाक। पूँजी जे आब तँ परायत छैक। मुदा सारकेँ छोड़बनि कहाँ? हम तँ मरि जयबौक, पिया सप्पत, मुदा किरानी नहि बनबौ। बनबौक तँ यैह प्रोफेसर फलाँ"... से देखी, कहिया धरि ई सभ मिनिस्टर-चीफ मिनिस्टरक नइर-जड़केँ दयबैत अछि आ हमरा छँटैत रहैत अछि।"

ओकर ई उत्साहपूर्ण भाषण बहुत गोटे सुनि रहल छलैक। आ सभक आँखिमे प्रशंसाक भाव छलैक जे "हँ। ई तेहन लोक अछि बहादुर जे विशेषज्ञ आ सदस्यलोकनिकेँ एहेन जबाब द' देलकनि अछि, से अनेक बेर।"

—"चल नीचाँ। कतहु चाह पीबो एक गिलास क'। पहिने पँचटकहीक पोस्टल ऑर्डरमे एक प्याली चाहो दैत छलैक एत'। पाँच रुपैये प्याली। आब सेहो बटलक बैनमासम। हमरा तोँ ओही अनुभवी पाकन लोकनेक सूत्र जे सरकारक सभानाक सुख-भोग सेहो भयो नहि आ महंगियो भोगि रहल अछि आकठ। जेना अङरेजी बहादुरक राज देखने हो आ काँग्रेसी बहादुरक सोराज! अबे रौ, सत्तमसत्त कह तँ, तोहर आँखि नहि चमकनाइत छौक किछु कर' लेल? माथ नहि बधकैत रहैत छौक ई सभ देखिक'"? ओ हमरा हाथ स्नेह, आग्रह आ आक्रोशसँ ध' लेलक। हमरा तेहन तपाक लागल जे बुझायल जेना ओकर देहमे पाँच डिग्री बोखार होइक। से बोखार सब द' हमरो देहमे ढसि गेल हो। हमू गोटे एक रङ्ग चल' लगलहुँ। □

घरमुहाँ

ई एक विचित्र बात भेल रहय हमरासँ। आइतिसँ से सुभीता मतलब आराममे जयबाक चाहैत छल, रस्ता कि ई नगर। से गेलहुँ भरि बाट लोकक मोटापर आ अबैयो काल, जें कि निराश-हताश घुरल रही, तकलीफोमे अबितहुँ। से उनटे परिस्थिति भेल। बेस फैलसँ जगह भेटि गेल। भरि राति पयर पसारि क' लेसर दर्जाक उपरका बर्थपर आँखिपर सहज अन्हारमे पड़ल रहि सकैत छलहुँ। रहबो कयलहुँ। कय बेर एक-एक रत्ती निन्नो भेल, फेर टूटि गेल। आ बुझायल जे हम जहिना गामसँ अयबाक काल पलायन कयने रही, तहिना गामो अयलहुँ अछि पलायन क' क'। ई बात कोनादन लागल।

गाड़ी भोरहरियामे मधुबनी स्टेशनपर पहुँचल रहय। हमरा जाड़' नहि पड़ल। हम लहेरियासरायसँ आयल रही। मोनमे उहिगरहाक बोझमछी पैसल रहय। बड़ इच्छा होइत एक प्याली चाहक। भोरुक लगायबे छटपटी?

मधुबनी स्टेशनपर उतरि क' जेबीक पाइ सभ सोरलहुँ तँ कुल-कुदरति एगारहेटा पाइ। चाह आब सभ ठाम पन्द्रह पाइये बेब' लगलैक अछि। यद्यपि दोकानवला सभ मक्खा लहलहाइत कोइलाक बढ़ैत एक सहस्र सांसक बिहुलासपुर जकाँ लपलपाइत आँचपर धड़का टाक' बैसली चाखिक' बेंच-कुर्सी धो-पोछि रहल छल, हमरा एक बेर भेल जे हम एगारे पाइ ल' क' कोनो दोकानवला लग प्रयास करी। मुदा, से बो नहि तैयार भेल। चाहक इच्छा घरि बड़ रहल। काल्हिये जे पीने रही चारि कि पाँच बजे साँझ पीने रही। ई सोचि क' जे चौबीस घंटासँ ऊपर भ' गेल चाह पीना, मन आर व्यग्र भ' गेल। चाहक आर जरूरति होब' लागल।

हम अपन पोटरी लेलहुँ आ गाम दिस टहलि गेलहुँ। रेलवे दिस बढ़ैत काल अचंभ पहिल बेर हमरा माँ मोन पड़ल। से एक टा विचित्र बात। माँ मोन पड़ल आ हठात् बड़ चिन्ता भ' गेल? फेर गुनधुन कर' लगलहुँ— एना विचार किएक आयल माँक विषयमे? हम अनेरे डेग झटकारि देलहुँ। चाक दिस झलफल छलैक। कतहु-कतहु लोक, एक-आध टा पंडितजी तरहुक लोक, आरिपर कि खेतमे, गालपर हाथ धयने आगाँमे लोटा रखने, धुड़ी लटकौने बैसल रहथि। शेष किछु चिड़ै-चुनमुनीक सिनाद। बस एतबे। डेग अनेरे सटकारल बढ़ि रहल छल। भोरका हवाक सिसी जकाँ लागय। तेँ हमरा गाम पहुँचबामे बुझायल जेना किछु देरी नहि लागल अछि आ ने कोनो तेहन थकान-ठेही। सम्भव छैक जे सुभीता-आराममे आयल रही, तेँ नहि बुझायल हो। मनमे साकांक्ष रही, कैयो भौजी मे सुरैत देखि लेअय। कैयो भेटि ने जाय···।

दरबज्जापर पहुँचलहुँ तँ भोर भ' चुकल रहैक। लोकक बड़दसभ लगातार घर्दनि डोला-डोला नार-पुआर खा रहल छलैक। नार-पुआर खायमे धरबाक सरसराहटि कानमे पड़ैत छल। टालसँ पुरना नार-पुआर खिचबाक आ तकरा चढ़रिपर रखबाक फराक-फराक अपन ध्वनि होइत छैक—अपन संगीत, से नबकाक दोसरे रङ। कानमे स्पष्ट होइत रहय मालजालक उत्साह-

पूर्वक मुट्ठी चोला-चोला खयबाक आभास। सभ माल-जाल अरिमक मालक घरसँ थरिपर बान्हि देल गेल छलैक। मुदा एक आध दुन-दुन गहरसँ जेना एक टा नवे अनुभव पसार' लागल। अगेरे उत्साह कमी भ' गेल। फेर तत्कालै उत्साह मिझा सेहो गेल। बड़िना काल अपन ड्योढ़ी ठाढ़ भए देख एतनी टा नहि देखलिऐक। पीयर-पीयर पसरल खोइया। कहाँ ? केँ ? आ बामा कात खर कनाक खसिहल छलि। रस्सी देल सँतल राखल छलि।

ड्योढ़ी ठाढ़ अतबी दुरुखा देखि क' गेल रही ततबो नहि रहय। कियो ओहुमसँ बुझि पड़ैत अछि झाड़ी-बत्ती खसि क' दे' गेल छलैक कि कोनो माल जाल मौनसँ तोड़ि-फाड़ि क' धूर क' देने छलैक। एक टा खुट्टा फराकसँ ठाढ़ रहैक। पोखर खुट्टा आ ओहि खुट्टामे बान्हि ढ़ जोड़ा पुराए बरीक लाबन्ध। कड़-कड़ही सभ लापता। अोकर देखनाम बुझाबछ। पाथर भ' गेल।

लगभग ठीक ओही कालमे माँ सेहो पहुँचलि ड्योढ़ी ठाढ़ भए ललाकर पाससँ हलमनि करैत। बुझायल जेना हमर अवस्था ओ बुझि गेलि हो। चुप। जैँ कि देखबाक छि ओकर हाथ शिर भ' गेलैक। हम गोड़ लगलिऐक। ओ किछु ने बाजलि।

—"तों कोना बुझलही जे हम आबि रहलहुँ ?"

—"नहिँ दुष्ट देवताकेँ गोड़ लगने आयब।" ओ कहलक।

—"आजि अपघनि। मने मुस्काय दे।" हम आइलसे बढ़ि गेलहुँ। माँक बिछान पसरले रहैक। ओरी एक कात राखि ओलरि गेलहुँ।

चारू भाग उदासी आ निरश्चिाक वातावरण छलैक। चैन-चैनचौपरसौँ ओंघड़ाएल, जेना बाटेपर कोनो मनुक्ख। कियो पुछनिहार ने। उनका सुनपर दू-टू टा कौआ कुचरैत, नृत्य करैत। ओसारापर माझो ठाम भरि मुट्ठा धाधि, अरिसक कद दिनसँ नीपल नहि गेल छलैक। कारण, गोबरसँ नीपल गेलासँ जे एक प्रकारक चरितागा छीट जकाँ तैयार होइत छैक माटिपर सेहो नहि रहैक कतहु। हमरा एहि सभ बातक बड़ आश्चर्य लागल। माँमे ईसभ उदासीनताक भाव कहियो नहि छलैक। तखैयनि ओ सभ वस्तु ठीक-ठाक रहयो, माहि ओकरा माँकेँ बड़ चिन्ता रहैत छलैक। से एना किएक भ' गेल अछि ई ? बुझबहि से काकी भ' गेलि अछि। बहु। बेचिनि चिन्ता क' जबाब-जोग मुदा, पुछबाक कहाँ भेल किछु साहस ?

ओंखि मूनिक' सभ आ परिस्थितिसँ अन्ह होअ' लगलहुँ। बसातक खिड़की कने एक रत्ती आरामदेह बुझाय लागल आ ओहि कालक सभमे हमर मन अपन निराश पूर्वातँ ओहि आदमीमे एको मिझिया मारी आ खिस नहि छल; अपितु हमर मनमे एकटा टटका फुलायल ओइहुल पुर्बाम-पुर्बाक क' गध उड़ैत आ कोनत कार्यक्रम सभ टूह-टूह रङ्गे पनपि रहल छल। आ, हमर मनःस्थिति अनमन ओहने छल जेहन कोनो पथ, फूल आ पातसँ भरल हरियर गाछक होइत होयतैक। (यदि होइत होयतैक तँ) समस्त उमंग आ कार्यक्रम ओहूहुने जकाँ हमर मनमे झुकि रहल छल। हम तकर प्रत्यक्ष अनुभव क' रहल छलहुँ। हमहूँ जेना गहुर-धो क' टटका बनि गेल रही। देखुहँ, मनसँ धकनी आ खिसता धरि गेल रहय। तैयो ओंखि मूनने पड़ल रही।

अरिसक लगमे माँ आबि क' ठाढ़ि भ' गेलि। ओंखि खोललहुँ। ओंचरसँ मुँह-हाथ पोछैत रहय। से ओंचर तनिक बड़ रहैक जे चारि-चारिटा आङुर एकके बेर धूर भाटै बहरा जाइक। देखल नहि गेल तँ फेर ओंखि मूनि लेलहुँ। माँके अरिसक किछु पुछबाक इच्छा छलैक। मुदा, से नहि सकवि, हम प्रतीक्षा करैत रहलहुँ, जे माँ किछु पुछत।

—"माँ एना किएक छौक सभ टा लबगलथल-हलमुड़ायल ? मन बेसी खराब छौक की ?" मूनल ओंखि खोलि क' नहि पुछि सकलिऐक ई बात।

—"की होयतैक सेरि-माँनिक'। ओहूँ नहि छयह। तेँ आरो ने बढ़ाय देलिऐक। पोपर (खाँखी) एकनी एक रत्ती कतल देल पोआ मिनो दियोक आ खेलाइ-नालक मिन। के देखय ? तेँ धमना मायकेँ एकर छोड़ा देलिऐक। अपने, ई आइ कय दिनसँ जड़र भ' आयल अछि (खाँखी) तेँ नहि क' भेल।"

जक् द' हमर ओंखि खुजि गेल। बिना देखनहुँ माँक ई स्वर जेना हमरा समस्त परिस्थितिसँ अवगत करा देलक। बुझयम नटकि-दुबारि माँ। खाँखी भ' रहल छलैक माँकेँ।

हमरा अंगनापर ताकल आ खेद भेल। एहि बातपर कि हम माँक ई निरसविनी दशाकेँ सेहो बिसरि गेल रहिऐक, कोनो ओकरक इतिहास कहाँ अरिसक ? ओकर ओंखि धँसल रहैक आ पीयर, आचुल। ओंखिक नीचाँ कारिख सन चुट्ठा आ घुड़ा उभरल हड्डी। एतेक लगमे ओकरा एना देखि क' हेर सिहरि गेल। मन भ' गेल। ओ जेना भ' क' हमरा देखलक ते हम आकस्मात निराश जकाँ भ' गेलहुँ।

ई परिस्थिति कहब हमरा हेतु कतेक दायक रहल होयत से हमरे मनोरत्नामे ओहि सब बन्धुकेँ बुझा सकैत छनि जे युवा लोक होयब आ बेरोजगार होयब आ भरि संसारमे एकटा माय हुनिक, सेहो माय कोनो घड़ी मरि जायवाली होयब‥‥।

बुझि पड़ैत अछि, माँ तखनि ध' कोनो दिस गेलि। हम ओकर विषयमे ध्यानस्थ आँखि मुनने पड़ल रही। हमर माथ धीरे-धीरे खाली भेल जा रहल छल। हमरा नीक बुझायल।

यद्यपि हमरा ई बात गड़ैत रहल जे माँ हमरा इन्टरव्यूक विषयमे किएक ने किछु पुछि रहलि अछि। हम ई बात बुझैत रहिऐक—एहि बातकेँ माँ सेहो जनैत छैक, हमहूँ जनैत छिऐक। आ शायद तेँ माँ चुप्पी अछि।

हमरा चाहक इच्छा तीव्र पड़ि गेल। चाहक उत्कट इच्छा भेल। मुदा, माँकेँ कहि नहि होइत अछि। भरिसक, जे कतहु माँकेँ चाहक पत्ती नहि होइक तेँ अनेरे ओकरा धीरे-धीरे अइने-अइने बौआय पड़तैक। नहि। मुदा शरीर अनेरे असीमित लागय। अपनाकेँ माँ लग, खाटपर सुतितो अपना जेना असहाय आ उदास लागय। की करी? हम की करी?

पड़ले-पड़ल हम, सब संसारमे एकटा स्थान ताक' लगलहुँ। एकटा एहन स्थान जे हमरा लेल, हमरा सन अशोषित आ असुरक्षित युवा लोकक हेतु अप्पन हो; जत' मन स्थिर आ निश्चिन्त भ' क' सुस्ता सकय।

घड़ अवसरपर बसात सिहकलैक। बन्द आँखिक सपनी‥‥जेना कतेक गप किछु अनुभव भेल। तावत बुझि पड़ल जे माँ आयलि। आँखि लागि गेल होयत।

—"हे बैह, चाह लेह।" माँक बैह स्वर। माँ बैह। ओहिना काक एहेन गिलहिया गिलास। हमर देहमे स्फूर्ति पैसि गेल। माँ चाह दैत चौकीक कोरपर बैसि रहलि। हम चाह पीब' लगलहुँ। भरिसक अपन पड़ोसियाक आङनसँ माङि क' आनि देलक अछि ई चाह। ई माङि क' अनबाबला विषय पर हमर मन फेर खिन्न भ' गेल। पहिन्ने ने पड़ैत अछि एखनो धरि। एत' धरि जे चाहो माङि क' पीबाक बात। तैयो पीबैत रहलहुँ। माँ चुपे रहलि। हमरा असह्य भ' गेल। हम माँकेँ देखलिऐक। पता नहि किएक, बुझायल जेना माँ बैसले बैसल कतहु हेरा ने जाय। हमरा मने-मन घबड़ाहटि होब लागल। तकर कारण छलैक। माँ बहुत बेसी दुर्बलाहि भ' गेलि

छलि। ओकरा खोँखी उठलैक। बैह करेज फाड़ि देब'बला खोँखी। ओहिना डिम्हा निकालि क' ध' देब' बला खकासी—भैइराक, सदनिक सभटा नस-नसकेँ तोड़ जकाँ बाँटि क' ध' देबयबला खोँखी‥‥‥। हमर चाह पीयब बन्द छल। माँ अवरुद्ध छलि। बड़ी कालपर खोँखी तोड़ लेलकैक। हमरा इच्छा भेल जे कोनो दबाइक विषयमे पुछिऐक, मुदा व्यर्थ लागल। हम की पुछि सकैत छलिऐक? कथीपर? एहि बेर, ओहि क्षण अपनाकेँ अपन बालक अपन शरीर अपने आँखि खोलि पर्यन्त—बेसी असहाय अनुभव कर' पड़ि रहल छल। विचित्र बात। माँक खकासी तँ बन्द भेलैक। माँ किछु बजैत अछि किएक नहि? माँ किछु किएक नहि पुछि रहलि अछि? माँ किछु नहि पुछत। भरिसक एहिना आब चुपे रहि जायत।

—"कोनो चिट्ठियो आयल रहैक?" हम जेना अकचकेल पुछलिऐक माँकेँ।

—"कहाँ कोनो?" ओ निस्पृह भावेँ उत्तर द' क' अपन कोरामे हाथ समेटने बैसलि रहलि खूब उदास।

—"तोहर तँ खकासी बढ़िये गेलौक माँ!" हम कहलिऐक। (बेकारे मे कहलिऐक!) एकरा कहब तँ कोनो औषध नहियेँ भ' गेलैक।

—"कहनाक बरक चिट्ठी अयलैक अछि। कहनाक माय ताक' आयलि रहथुन।" माँ कहलक। हम क्षण भरि ठेकान' लगलिऐक, के कहना? मन पड़ल।

—"की लिखलकैक अछि? हमरा किएक तकैत रहथि?" हम पुछलिऐक।

—"नहि जानि। भरिसक किछु उतारा ई सभ लिखयथाक छनि। छौड़ीक बड़ अभाग छैक।" माँक सहानुभूतिक स्वरमे जेना अपनो पराजयक कोनो ध्वनि मिझर छलैक। हमरा बुझायल। आब एहिना सभक दुःखसँ सभक दुःख मिझर भ' गेल छैक। सभक। ककरो दुःख कहाँ छैक फराक। तैयो जानि नहि किएक सभकेँ एकजुट नहि होब' दैत छैक परिस्थिति। सभ लोक किएक अपना-अपनी क' मात्र ओहिना अपने सीमामे सुरक्षित रह' चाहैत अछि। हमरा बुझायल, हम एकटा असमय आवर्तमे ओझरायल जा रहल छी। चाह सेहो भ' गेल छल। एकेँ घोँटमे कंठस्थ करैत गिलास नीचाँमे राखि क' पुछलिऐक—"एहू बेर दुरागमन नहि करौतैक कहनाक सासुरवला?" माँ मूड़ी डोलौलक—"नहि।"

—"फरफट सभ छैक। बेचारो मसोमातकेँ जे लिखल छलनि से तँ

भोगहि पड़तनि । चिट्ठी पढ़यबाक छलनि । तेँ तँ आयलि रहथुन ।'' माँ बाजलि ।

—''हम नहि रहितौँ तँ आन केओ नहि पढ़ि देतिऐक ? ककरोसँ पढ़बा लितथि ।''

—'ककरासँ ? ओ दू गोटे छथि कृष्णकान्त आ भोगेन्द्र से तँ बैह कलकत्ता कमाइत छथि । गाममे के पढ़त ? स्कूलमे पढ़ल खुरचन-छहाली सभ छैक ओ सभ से अंगरेजिए-आरबीमे चिट्ठी लिखि क' पठा दैत छैक । तेना सभ दू-चारि टा जे स्कूलिया छैको तकरा पढ़ले नहि होइत छैक । की उपाय ? बेचारी बड़ चिन्तित छलीह । सरिसवन कतेक भेँट क' अबिहोस ।''

दूसरो मन कहलक—हँ ई बात जरूरी छैक । मुदा बिहुन अविश्वसनीय लगैत छैक ? केओ सुनत तँ हँसत । आइ एहू युगमे एकटा गाम अछि जत' कय-कय दिन धरि एकटा चिट्ठी नहि पढ़ल जा सकैत अछि, चिट्ठी पढ़निहार कोनो पढ़ल-लिखल लोकक अभावमे । आश्चर्य ! कहि गाममे पुल कुहरति तीन टा पड़त ! आ तखन गलन कि स्वतंत्रता भेटलाक बाद शिक्षाक संख्या बहु बढ़ल अछि । लोक शिक्षित नहि रहि गेल अछि आब । मुदा एहि विराट परिस्थितिक प्रतिमेँ हमर एहि व्यंग्यसँ कोनव ठीक बोधिता भेल जेना कोनो बड़का चोरके अपन कोनो अदृश्य शत्रुकेँ फुसफुसा क' नाचि पड़ब । एक टा क्षुद्र मनःतोष अपने हमरा बेसार बुझायल ।

लोक अशिक्षित अछि । एखनो अशिक्षित अछि । सहजता देइ छैक, कारण स्वतंत्रता आ प्रजातंत्र लोककेँ खाली सुनाइ पड़'बला शब्द मात्र लगैत छैक । कुच्छ किछु कहइ किछु सुनय सभी । माने केओ ने बुझैत छैक । ओहन बहुत लोक जे आइयो छैक बैह चालीसवला युद्ध रूबीआ आ अमरेश बहादुर— गाम बाप । अखनो पाठ पढ़ओ आ अखनो बीस-पचीस वर्षक बहुतोंकि-तन माय-बापक तेल ओकरा नजरिमे किछु कोनो मतलब नहि छैक । साधारण जनताकेँ सहयोग विरति छैक । से विचलि बढ़ले गेलैक अछि । साधारण जनताकेँ कोनदन कोन नवका 'भाग्युजारी' सेवी से किनका तकरा संबंध बोध छैक । नेँ जे टेढ़का हुड़ी सभ पीठपर साबुत बाँचल छैल से सभी बोर्ड चरै-नरे भ' रहल छैक । आर किछु नहि बुझल छैक । बाहि पहिने ओकरा नवका शासक मुसलाम सुनाओल आ रहलैक अछि मे भाषा-बोली ओकरा अनचिन्हार छैक । ओ टुकुर-टुकुर ताकैत रहि जाइत अछि । भाषा सुनि क' अपन गामक मुरेठा बान्हिक' माथपर बन्हैत अछि आ ठेका बजा क' टोल

दिस विदा होइत अछि । दुर्गास्थानक तिनकोनमा परती कि महुराजी पोखरिक पछबरिया भीड़ खाली भ' जाइत छैक ।

महुराजी पोखरिक भीड़पर कतेक बेर आ से तेहन-तेहन आडंबरसँ एकसँ एक महापुरुष लौकनिक सभो भाषण सभ भेल अछि—एही बीस-पचीस वर्षमे जे लोकि पोखरिक माछ-काछु आ डोका-बेंङकेँ पर्यन्त स्वतन्त्रताक अधिकार आ प्रजातंत्रक आदर्श अर्थ घोखा गेल होइतैक । आओ सभ पर्यन्त देशक आदर्श नागरिकक हैसियतसँ रहुओ, सभ कर्तव्य करओ ओहि भाषण-महापुरुषलोकनिक से कहब छनि । तेहन-तेहन भाषण । डोका काँकोड़ोकेँ नागरिकशास्त्र पाठ !

हमरा हँसी लागि गेल । ई बात हुनि बिसरि गेल रहिऐक जे माँ लगेमे छथि बैसलि । तखने ओकरा चोँखी उठि गेलैक । नहि तँ ओ पुछितथि जे किए हँसी लगलहु ? चबाति ओतर उकासी-विकृत मुखाकृतिपर हमर हँसीक पुछारीबला भाव छलैक । ओ पुछिये नहि सकैत छथि । तेँ हम जबाब सोचैत रहलहुँ । माँक खोँखी चलिये रहल छलैक । तखन हम आश्वस्त भ' गेलहुँ । आब माँकेँ मोनो ने रहतैक हमर हँसीक कारण आ मतलब पुछब । मने नहि नन रहैत छैक । एहि सभको ओ बिसराहि नहि रहैत तेँ आरो तकलीफ उठबैत । हमरा आँखि मुना गेल किछु काल । तकरा बाद एहन-सन बुझाय लागल जेना केओ उकासी करैत-करैत दूर भेल जा रहल अछि— दूर भेल चल जा रहल अछि । उकासीक स्वर मद्धिम होइत चल गेलैक । फेर लुप्त !

माँ हमर आँखि ध' क' उठौलक तखन हमरा सोझाँमे ठाढ़ि रहथि कहला । ओ बड़ उदास रहथ । हाथमे एकटा अन्तर्देशीय पत्र । हम बुझि गेलिऐक ।

'माँ हमरा कहने रहथ काकीक समाद । हुन आबिये रहल छलियैक तोहर आशा । हेरियौक चिट्ठी ''' ।'' एतहि माँ आँखि ध' क' उठा देलक । हम आँखि मिड़लहुँ । आङन दिस आँखि गेल । राति रौद-बसारत । किछु कड़ंचल रौद । हाली झुकि गेल । माँ खाय लै उठौने होयत । ठीके छैक । भूखो बुझायल । महुयबाक नन नहि भेल । के जाय दुवार पर एखन । शालक ! माँ देखो ठो क' देलक ।

मोन नहि की उसलहुँ आ कतबा । खाली एतबा मोन अछि जे चपलाक अक्षमे नहि जानि भय सुगतर, कोनह पुछि देलथिऐक—''माँ, किछु होइबी बात ?'' माँक आकृति बिजली जकाँ दौसर अकना दिस धुमि गेलैक । माँक

आकृति अनमन तेहने रहैक जेना साफ बेपक सीदार मेघक विशाल टुकड़ी कोरिछोड़ बना देत छैक। अपनापर अनकर। ताहिपरसँ किछु होयबो करत ? अर्थात् दूध कि दही ? हमरा हँसबाक मन भेल। माँ जेना बनलि रहथि जेना ओ हमर प्रश्ने ने सुनने हो। चारो उठौलक आ चलि गेलि। हम मुँह धो फेर ओछाओन पर। तकर बाद चाह पानक दुपहरिया, साँझ धरि हमरा थपरी छौंड़ाक पिहकारी जकाँ सुनाइत रहय कानमे। हम मुँह झाँपने पड़ल। निन्न होअय नहि।

हमरा आँखिमे खाली सुस्मिता ठाढ़ि रहय। अखैन काल हम कहियो क' ओकरासँ भेंट नहि कयलिऐक। हम भेनारि क' ओकरा लोकाँ अपनाकेँ दोषी बनाब' आब' चाहलहुँ। से, ताहिमे सफल भेलहुँ। हमर सम्पूर्ण देहमे ओकर देहक सुगंधि पसर' लागल। हम एकटा उदासीमे माति गेलहुँ। तेँ हमर बन्द पपनीमे खाली रहय—सुस्मिता।

ठाढ़ भयल साइकिलक ट्यूबसँ बहरा गेल हवा जकाँ, कखन इजोत अन्हरा गेलैक, नहि बुझलिऐक। आँखि खोलि क' बरेड़ी परक चुप बगड़ाकेँ देखैत रही कि ओहीमे माँक उकासी उठलैक। बगड़ा उड़ि गेलैक फड़फड़ाय लगलैक।

—"निन्न नहि भेलहु अछि तोरा ?" माँ दम लैत पुछलथि।

हम चुप्पे रहलिऐक।

—"किएक मन्हुआयल छह ? मुँह हाथ धोअह। चाह पीबह, बना दियहु ?"

—"मन नहि लगैत अछि माँ।" हम तत्काल अपन एहि तरहेँ एहन चुप कहि देबासँ लज्जा भेलहुँ। मुदा, ई सत्य जे हमर स्वर ओतबे विकल रहल होयत जतबा अपन माय लग एकटा असहाय बच्चाक रहैत होयतैक।

—"किएक मन नहि लगैत छहु ? मन लगौने लगैत छैक। धापदो छह आइ।" हम चुप्पे रहि गेलहुँ। हमरा मन नहि लगैत अछि, कतहु नहि लगैत अछि।

—"कतहु घुलि-टहलि आबह।" माँ कहलथि। हम अलसायले उठि क' पैजचीसँ पानि ढारि कुरड़ कयलहुँ। दू मिनट बैसलहुँ। फेर उठि क' विदा भ' गेलहुँ। विदा होयबाक काल निर्णय किछु नहि छल। माँ तखन बोलहु नहि छथि। हम आङनसँ बहरा गेलहुँ।

कर'-नाय करबी केनी उठबैत रहथि। मुदा रसीघर चोट द' रहलि छलथि। आब झलफल जकाँ भ' रहल छलैक। पछबरिया असोरापर, रङल मेहीँ सिक्की राभक मुठड़ा धयने, कखना किछु चूनि रहलि छथि। ओ अनस्थित छथि। काजमे मोनि गड़ौने। बड़ उदास चित्त रहैक।

पछिने देखलनि काकिये। हुलिस क' गेलीह। हमरा नाम ल' क' प्रकट भेलीह तँ कहनाक आँखि उठलैक। ओ उठलि, पीढ़ी उठौलथि आ नढ़केक कोरपर राखि क' हमरा गोड़ लगलथि। फेर तसरि क' अपन कारखाना जगा चलि गेलि—सिक्की टाकु लय।

कुशली-क्षेम पुछैत काल काकी अपन बात कहबा लेल चंचल छलीह। उठलीह आ चिट्ठी उठा अनलनि। हेकी धावत बन्द रहैक। दुनू रसी काथल आँचरतेँ निस्संकोच छाती उघारने बसात क' रहलि छलि घाम भरल देहपर।

पत्र पढ़लिऐक। अष्ट अंगरेजीमे लिखल ओहि पत्रक मुख्य कथन छलैक जे यावत धरि हमरा मोटर साइकिल नहि भेटत तावत धरि हम दुरागमन नहि करायब। एखन तँ पाँचे वर्ष भेल अछि, बरि जन्म नहि करायब। आ, एक बालक प्रतीक्षाक बाद आब पत्र पर्यन्त लिखब असंभव।

पढ़ैत काल हमरा तामसो चढ़ल जे फाड़ि क' फेकि दिऐक पत्रकेँ। मुदा, कहलियै नहि। कुशाशल जेना बड़ सूक्ष्मतासँ करनाक हाथक संचालन एक क्षण बन्द भ' गेलक, फेर अनेरे चल' लगलैक जेना लाइन कटि गेलापर बिजली-पंखा-तथा क्षणेमे बंद भ' अनेरे चल' लगैत छैक।

—"सैह, ई होइक बौआ ? भरना-केथरा क' व्यवस्था गललहुँ, बिवाह करौलहुँ। छौंड़ी सुखसँ रहत। हमरा कोन, कुमारी बेचि देब फोनहुना क'। आब ई एना छोटपनी देखलहुँ अछि कतहु ? हम कहाँसँ देबैक मटुर साइकिल ? ई तँ सोनिते बोकरायब भेल ने ?"

ओ हुनका आबेँ चुप रहि गेलीह। हमहूँ काकीकेँ आ खन करनाकेँ देखैत रहलिऐक। करना शान्त भावसँ मूड़ी निहुरौने अपन दुनियामे व्यस्त रहय।

—"अँ एहिमे चिन्ताक कोन बात काकी ? ई सरासर, औझरजीक अन्याय थिकनि। हुनक एहि धमकी देखायबकेँ शोजर ने दियौन। ई कोनो बाते नहि छैक मान'बला। जे मन होइनि, करथु।" हम हुनक चिन्ता कम करबा' ले बजलहुँ।

—"नहि बौआ, सुनैत छी, ओकर बाप दोसर बियाह करा देहल छैक।"

—"कर' दिऔक। भोगतै ने अपने।"

—"हे कोना? हमर बेटी? एकर की होयतैक? एकर दोसमे जे सिन्दुर देने छैक?" ओ विस्मय आ चिन्तासँ बजलीह।

—"काकी, करुनाकेँ अपने खूब योग्य बना दिऔक। ततबा योग्य बना दिऔक जे आर्थिक स्तरपर ओकरा ककरो भरोस नहि कर' पड़ैक। अपन पयरपर ठाढ़ि रहय। स्वावलम्बी। एहन शुद्ध लोकक चक्रे ओकरा जीवन बितब' पड़तैक, ताहिसँ तँ बेहू नीक—एकसरिये रहब—अपन भरोसपर हवसँत आ नीक जकाँ, शान्तिसँ। ई जेहन सुग्गी अछि, एकरा तँ सासुर गेलो उत्तर उला धका क' बा बाइ जयतैक। बड़ा नीच बुझाइत अछि ओ सभ।"

काकीकेँ जेना हमरा कहबापर ठकमुड़ी लागि गेलनि। एहुन-मन जेना, हम ई की बाजि रहल छी! ओ बाजहु लगलीह—"कहु नै, ठीहो भेलैक अछि बौआ? बेटी कतहु एकसरि रहैक नैहर? आ' कतौआ अनि क'?"

तत्यासँ हमरा हँसी लागि गेल।

—"जकरादि होयतैक तँ किएक ने रहतैक? मानि लिय', यदि ओ बिना मोटर साइकिल लेने दोसर दुरागमन नहि करबय तखन?"

—"एहिना द' अयतैक" काकी कहलनि।

—"यदि टप' नहि दैक बरमे? तँ नामसे छोड़िक' पड़ा अयतैक?"

काकी चुप भ' गेलीह। करुनाक मुड़ी झुकल रहैक। मुदा, हाथ चलब बन्द रहैक। ओ सुनि रहलि छलि।

—"आब निरुपाय भ' क' बेटीक विषयमे सोच' पड़त काकी। हम कहैत छी, बेहुन बच्चियों तँ सिक्किया-बुनिया करैत अछि करुना। एहिमे थारी सहयोग द' क' एकरा सियाइ मिशीन द' दिऔक कीनि क', नीक रहत। केहन सुन्दर बुनिया करैत अछि? रंग-बिरंगक उपयोगी वस्तु सब बनाओत आ बेचवा क' सुखसँ रहत। जकरा अपना एहन लूरि-भास रहतैक, से किएक ककरो मुँहतक्कीमे रहत? गाम-घरक आनो छौंड़ी सबकेँ ई सिखत, गुन सिखौतैक। जँहँ टू अक्षर अबैत छैक अपना, तकर ज्ञान करौतैक। औरो छौड़ी सबकेँ भविष्यक रक्षा बनि जयतैक।"

—"ई कि कोनो शहर छैक बौआ?" काकी निरुपाय आबेँ जौँका उठलीह। "गाममे ई सभ चलत? दोसर, ई बात भरि जिनगी निबहय कतहु? दैव की लिखलथिन कपारमे, नहि जानि।" तकर बाद करुनाक सासुरवलाकेँ दस हजार श्राप, गारि-गंजन।

करुना उठि क' घरमे पैसि गेलि।

—"काकी, अखन कोनो रास्ता अछि तँ सैह करयाक चाही।" हम कहलियनि, "मुदा जखन विवाह-दान आइ एना भ' क' खरीद-बिक्रीक वस्तु रहि गेल अपन समाजमे तँ आन की करत? हमरा यदि बेटी रहितय तँ हम नहि सासुर पठबितिऐक, बल्कि हम तँ उनटे नीक घर-वर ताकि क' बेटीक फेरसँ बियाह करा दितिऐक…।"

—"छि: छि: बौआ। एहनो कियो बाजए। एहनो हँसी कियो करय? बेटीक दोसर विवाह? तकौमे कोनो हरज रहत?" ओ व्याकुल भ' गेलीह।

—"काकी, अपना बेटीक हम कंड मोलि देबैक, से तँ पार नहि लागत। किएक नोकबैक? ओकरा पढ़ा-लिखा क' अपन पयरपर ठाढ़ किएक नहि क' देबैक? अपन समय आ परिस्थितिसँ लड़त। नीक वर आ नीक परिस्थिति अथवा लेन अथलाह परिस्थितिसँ लड़त। बाप भ' क' हम ओकर रक्षा लेल ठाढ़ रहबैक, यावत जीवैत रहब। भरि जायब, तावत ओ अपने एकसरे योग्य भ' जायत लड़बाक लेल। बस।" हम विहुँसैत कहैत रहियनि, तथापि गंभीर रही। बेटीक मतलब बेटा होइत छैक। बेटा बेटीयोकेँ समाने अवसर भेटबाक। ई की जे बाप आ माय-बापकेँ विभव छैको तँ बेटा-बेटीकेँ फराक-फराक व्यवहार? बेटी पौष्टिक वस्तु नहि खाय, दूध कि दही कि घी नहि खाय, कि सँ जल्दी समधि भ' जायत! बियाहक माथ दर्द होयत! वाह रे लोकक?"

हमरा बराबरि ई चिन्ता रहय जे हम जे बात काकीकेँ कहि रहल छियनि से तेहन महत्वे कहि रहल छियनि कि नहि जे ओ हमर बातकेँ बुझथि। कतहु पढ़ुआ लोकक भाषा तँ नहि भ' रहल अछि जे उनका गिलासमे पानि भरब जकाँ भ' रहल हो?

काकी चुप। ठकी बस। ओहू दुनू स्त्रीक हाथ अपना-अपना ठोढ़ीपर। आँखि हमरा दिस चिराजल।

हम उठलहुँ एकाएक। एकदम साँझ पड़ि गेल रहैक। आगाँ छोटकी गुहलाक्षा पिपरिया तराइमे पाँच छपड़ सुपारी क' क' करुना ठाढ़ि छलि।

ओकर आकृति अन्हारोमे बड़ प्रसन्न बुझायल । हमरो संतोष भेल । बुआरी उठबैत अ उनटा बहुरा गेलहुँ । अन्हार जंका धरैत कखन अपन बलान दिस अदलहुँ से मुन रहय । सैयो करतहु नहि । आङन गेलहुँ तँ माँक तुलसी-पीड़ा पर दियारी लेसि क' राखल गिलाय-गिलाटपर रहैक । हमरा देखलक । चुप्प रहलि । फेर जेना किछु कहब मन पड़लैक । तावत उकासी उठि गेलैक ।

हमर ध्यान गेल एहि बातपर जे माँक ई उकासी दोसरे प्रकारक उकासीक स्वर छैक । विचित्रताक अनुभव भेल । जेना बूटा आंजनकेँ कियो मजबूत स्वर हुअय, बजा रहल होअय, लगातार ! हमरा किछु भय भ' गेल । एखन विशेष क' भय बुझायल । ई केहन खोखी छैक माँक ?"

फैंक सिलटपर माँक खोखी तोड़ देलकैक । एक क्षण फुक्तावत आँचरसँ लाल आँखि मीड़ैत कहलक : "राति रान्ह क' क' रोटी बना दिय' ?"

हम मूड़ी हिला देलिऐक । हम जनैत छी, माँ हमर मौनक अवसादकेँ, निराशाकेँ एकटा ममत्वपूर्ण अवलम्बनमे बदल' चाहैत छलि, हमरा चूड़ी निराशाकेँ... कर' चाहैत छलि, हमरा रान्ह आयल रोटी नीक लगैत अछि, से आन कोनो साधन ओकरा छैक नहि । जेना ओकर मनमे एकर तकलीफ होयतैक जे ओ हमरा एक बाटी भरल दूध गाढ़ क' क' नहि द' सकल । से ओकर आकृति-पर छैक । हमरा मौन निश्चित रहय, तेँ चाही जे खयलाइए बथा जाइ । माँकेँ अन्हरे पकब' पड़तैक । मुदा, कोनो उपयुक्त कारण कहाँ रहय ? माँ ओत'सँ चल गेलि । घरमे एकटा डिबियाक कारी पातर जीह लह-लह करैत रहैक । हम फेर ओसरि गेलहुँ । पेल से एकटा बेस मोटगर तुराइ ओढ़ि मुँह झाँपि क' पड़ि रही आ से तुराइ क्षण-क्षण हमर देहपर पुरक पहाड़ भेल चल जाय आ ओकरा हम भेदबे नहि करिऐक । ओ तोरी ! लागि गिर' । पता नहि की भेल से । डिबिया बरिते रहल । अबस बहिनयाक आङनमे तखन मानस भ' गेलनि तेँ ओही चुल्हा पर माँ रोटी पका सकलक । ओतबा काल ओँघारल बैसलि रहलि होयत ।

हमरा याद पड़ल । माँसँ किछु गप्प करबाक मोनो भेल तेँ क' नहि भेल । अनठिया क' चढ़ि रहलहुँ । हमरा बुझाइ पड़ैत अछि जे पटनासँ घुरलाक बाद पहिल राति जे ओछाओनपर पड़लहुँ से कय दिनक बाद जगलहुँ । ताही बीच जेना कतेक मासक समय चुपचाप बहि गेल होइक ।

हमरा अजगुत लगैत अछि । कोना माँक उकासी शांखनक वाद्यस्वरसँ बदलि क' अरनीक उकासी बनि धीरे-धीरे निःशब्द होब' लगलैक आ आकृतिपरसँ मांसु आ त्वचा भाक जकाँ उड़ि गेलैक, सेहो जेना जीवित अनुभवसँ नहि बुझि सकलिऐक । ओ बड़ निस्पृह जकाँ भ' क' चिन्हहु नहि लागलि पाछाँ हमरा । आ, बकार एक तँ फूटय नहि । फुटबाक कथो बुझाय सँ खाली बौआकेँ देखबाक पियासक तड़तड़ी बुझाय ओकर टक लागल आँखिमे । बौआ ओकर एक मात्र पौत्र, जे जमशेदपुरमे वर्णमाला पढ़ि रहल होयताह अथवा काड़ुरपर अंक गोड़ि रहल होयताह । हमरा बूझल नहि भेल जेना हमरा सूतलमे ई राम टा घटना घटि गेल होइक । हम माथपर हाथ ध' क' मन पाड़ैत छी । हमरा याद काल किछु नहि अछि । चुपचाप माटि लेबल खरही आ आंगनक भीत । टटका छछारल देबाल-घर असोराक बीच हम एकसरे जीबैत छी । माँक मरिक लेल मात्र एक टा घटना भेल छैक, हमर माँ स्वर्ग-वासी भ' गेलीह । सोझामे, लगमे माँक हमहीँ । बेटा पुतहु सब कियो कतहु, कियो कतहु । बूढ़ी बड़ निस्पृह भ' क' मरलीह । कहियो कोनो तीर्थ नहि गेलीह मुदा हाय रे पुण्य ! दिव्य मृत्यु !

ई एकटा घटना, हमर एकमात्र सब किछु माँक मृत्यु छल । हम एकसर एहि घर-असोराक नाबालिग अधिकारी जकाँ एकटा कोठलीमे पड़ल बिना कनने-खिअने सोचैत रहैत छी ।

'मनकेँ मारि क' नहि रही' दुःख सम्वादिता नहि रहैत छैक' 'भगवान न्याय नहि केलखिन हे' 'आब ओहर तकलीफक दिन बीति रहल छहु' 'एतेक मन नहि घोर करी'··· 'बड़ दिन तँ माटि धयलहु अछि । भगवती करथुन तँ नीके-ना सुखसँ रहबहु'····

माँक एहि रुमःसंवादक व्यूहमे हम बौआयत-बौआयत कतनो काल भनेमन भोकासी पाड़ि क' कान' लगैत छी । आब हम कत' जाउ ? सोँ घर, आब हम की करू ? कत' जाउ ?

हमरा तुरन्त छछारल घर असोरामे नहि रहल होइत अछि । हमरा सूतल-जागल निःशब्द नचार उकासी सुनाइ पड़ैत अछि । हमर हृदय फाट' लगैत अछि ।

हमरा एहि अनोचक छछारल घर असोराक अपन रहब बड़ व्यर्थ, अनसोहाँत लगैत अछि । हम माथपर हाथ धरने, किछ हँसोथैत बड़ी काल बैसल रहैत छी । □

माटि, पानि, आकाश

काल्हि बैलका गाड़ीसँ लाल भाइ सनच्चिार जमशेदपुर गेलाह। बड़का भाइ चारिमे दिन गेलाह। आन सभ सम्बन्धीलोकनि चल गेलाह आर पहिने। गाछ काट क' गेलनि। भोक आसमे सभ केयो जूझल छलहुँ। किछु दिन आङन-दरबज्जा सिनरिया बटक बेरा अर्थ रहलैक। फेर जेना ओ टटघर आ तंबू सभ उखाड़ि गेलैक। हम सभ घटनामे रही।

घरसँ कोनो वस्तु नहि बहरयलनि। भाय सभ खोजलाह। उपाय? हुनि सबहुँ कोनो जोगरक नहि। की दितिअनि पाइ-कौड़ी? बोनिहार जकाँ एक डाकघर ठाढ़ रहलियनि। से लगातार चौदह दिन।

जयबाक काल लाल भाइ कहयो कयलनि—''आब तों की सोचलह? नहि हो तँ चलह जमशेदपुर।''

हम गुम्मी लाधि लेलहुँ। मन भेल फुर्तीसँ आङन जा क' माँकेँ पुछि अबिऐक! फेर बकोर लागि गेल। आब हम ई कोनो विचार माँसँ कहियो नहि पुछि सकबैक। हमर मूड़ी गड़ि गेल। ई गप्प चलानेपर ठोड़ल रहैक। काका सभ चुपे रहथि बैसल।

—की सोचलह?' फेर पुछलनि लाल भाइ। बौआ हमरा कानमे ठाढ़ भ' क' आङुर तीरै लगलाह। अर्थात् 'हँ' कहिऔक। चलू अहूँ। हम चुप रही।

—'होइतनि तँ बड़ दीब।' बड़का काका कहलथिन। 'एह' आब एकसर की करताह? रहतो कोना करताह? भोजनोक प्रबन्ध तँ अपने करे पड़तनि। बनाय तखन खाय। नीक तँ होइतनि।'

मुदा, हमरा मनकेँ एक टा दोसर प्रश्न घेरि क' छानि देने रहय। 'ई बात माँजी किएक नहि कहलनि एको बेर? बस, हमर निर्णय एतहि भ' गेल। हम मूड़ी झुकओने कहलियनि—''एखन किछु दिन गाममे रहब। घर-आङन तुरन्ते भक पड़' लागत। माँकेँ घर-आङन बड़ प्रिय छलैक। हम एखन गामे रहब।''

हमरा बुझायल, हमर एहि निर्णयसँ भाइकेँ गुम्मीते लगलनि। आगाँ कोनो बात नहि भेलैक। सभ चुप्पे रहल। हम टहलि क' आङन चल गेलहुँ। तकरा बाद फेर हुनकालोकनिक जयबाक तैयारी भ' गेलनि। बैलगाड़ीपर लदा क' सभ केयो जाइत गेलाह।

बाट देल भौजी किछु बनओने छलीह, करिसब ठकुआ-लड़ुआ, से एक टा अखबारक टुकड़ीमे लपेटि क' हमरो देल राखि गेलीह जे हम स्टेशनसँ घुरब तँ खायब।

हम, स्टेशनसँ गाड़ी खुजलाक बाद, जीवनमे एतेक ठोस आधारपर प्रायः प्रथमे बेर एहन निरहेतु मनक अनुभव क' रहल छलहुँ।

प्लेटफार्मसँ बाहर आबि क' हमरा किछु फुराय नहि जे हम कत' आ किएक जाइ? अन्हेरे जेम्हर पयर जाय लागल, हम जाइत गेलहुँ। शहरक सड़कपर बहुत दिनक बाद एना चलैत रही। चललहुँ।

मनमे कोनो प्रकारक इच्छा नहि रहय । मात्र एकेटा अनुभवक भारसँ बोझल रही— अपन निरुद्देश्यताक भारसँ । हमरा, जयबाक लेल कोनो स्थान नहि रहय, आ करबाक लेल कोनो काज नहि ।

बड़ भयावह बुझाइत तेँ टहलैत मधुबनीक गंगासागर पोखरिपर बैसि गेलहुँ । एक समयमे, साँझुक पहर क' कपारपर विभूति लगाब' आ कालीकेँ गोड़ लाग' आबी, शहरक हज्जारो सफलताकामी विद्यार्थी सभ जकाँ ।

भीड़ आइयो छलैक । हम ओहि शब्द सभकेँ धर' चाहैत छलहुँ जे पोखरिक पानिमे लोक सभक पयर धोलासँ उत्पन्न होइत छलैक । कतोक बीचाक पसरल पनिसोखपर शान्तिपूर्ण इजोरिया छलैक । साँझ भरलाक बाद पहिल इजोरिया ।

हम उठि क' फेर विदा भ' गेलहुँ । एहि बेर गाम दिस । भरि बाट, अनेक लोकक जिज्ञासाक जवाब दैत, गुम-सुम । गाम पहुँचबामे देरी भेल कि जहिना पहुँचि गेलहुँ, मन तकर किछु पुछारी नहि कयलक । आङन अन्हार जकाँ रहय । फेर ध्यान आयल, ठीके इजोरिया । तखन आङन किछु इजोत लागल ।

तीनू कोठली बन्द रहय । उतरबरिया कोठलीक जिंजिर खोलि क' अन्हारमे डिबिया ताक' लगलहुँ ताखपर । ओतहि दियासलाइयो छलैक उठल । लेलहुँ । एक टा देह भुलका देब'बला भय भेल । अन्हारमे बेसी टोइया-टापर नहि देब' पड़य से सोचि क' जेना माँ अपने ओरिया क' सलाइ राखि गेलि हो ताखपर । कारण, हमरा मन छल जे सलाइ ओत' हम अपने तँ नहिये टा रखने छलहुँ । माँ बड़ जोर मन पड़ि गेलि ।

हम चौकीपर ओँघरा गेलहुँ । चारमे चरैड़ी सभ अन्हार रहैक । आ किछु-किछु खरखर करैत रहैक । अनठा क' सूत' लगलहुँ । हमर घरमे अथवा खबरि, लग-पासक कोनो घरक एको व्यक्तिकेँ नहि भेलन्हि ।

लागल जे हमरे टा ल' क' ई संसार छैक । हमहीँ टा शेष छी ।

हमरा कोनो कार्यक्रम स्थिर करबाक व्यग्रता 'होब' लागल । से भ' नहि पावय । कानमे साँझ उदासी बाज' लागय । आ हम सकदम्म भेल किछु किछु बातक—एकदम नहि बुझलहुँ जे कोन बातक—प्रतीक्षा करैत रही । किछु होअय नहि ।

हमरा भूख-पियास किछु नहि छल । पते नहि चलय जे भूख-पियास किए नहि लागल अछि ? साँझ मुहमुहेँ हम अनाथ भ' गेल रही, से सत्य, मुदा एखन हम एकोरत्ती ओकर दुःखसँ कातर नहि रही । जे यदि किछु रही तँ अपन कार्यक्रमहीन आ निरुद्देश्य जीवनक आशंकासँ त्रस्त रही । काल्हि भोर हम की करब आ कत' रहब, से हमरा नहि देखाय । आ, मन सेहो देखबाक लेल व्याकुल रहय जे काल्हि भोर हम की करब ? भोरक हेतु हमरा कोनो कार्यक्रम नहि रहय । किछु सोचो नहि सकैत रहय । डिबियोसँ बेसी बाध जा क' चौन्हुत कोला सभकेँ फेर एक बेर देखि आयब, तकर बुझि-पासक पम्ही छूबि आयब, आरिपर टहलि आयब । एहिसँ फाजिल किछु नहि ।

देह हमर, पयरे चलबाक कारणेँ थाकल रहय । से बोध भेल जे मन सक्रिय रहय मुदा शरीर असोथकित जकाँ भोंगड़ाय लागल, हाथ-पयर अनेरे पसर' लागल ।

पुबारि टोल दिससँ एक टा करुण गीत गीतक भास बसातपर उधियाइत आबि क' सिरमामे घुरियाय लागल : "नव घर बान्हि गेलै, नैही पुरान भेलै हे सखिया''समयक एहि एतेक टा अन्तरालमे बापरक टूभि त्रिभुवन भ' गेलै''नोन-तेल पैंच भ' गेलै''देहक बस्तर रत्ती-रत्ती फाटि गेलै''" हमरा मन नहि जे कखन, विचारक कोन लहरिपर आँखिक पल पर देहक नाव बहय लागल ।

कोनो एक टा मनहूस तारीखमे किछु मास डायरी लिखने रही । बड़ भावुकतापूर्ण । आ अपन आभ्यन्तर तीव्र यथार्थक कटुता सहने रही । ओहिना दुपहरिया क', बीच दुपहरिया क' पटना आकाशवाणीसँ सरोदपर बैरागी या अहीर भैरव बजैत छैक । बीच धड़-धड़ करैत रहैत छैक । रिक्शाक पहिया सड़कसँ सटि जाइत छैक—चिप्-प्-प्-प्-प् बजैत रहैत छैक, मुदा जकाँ ई स्वर पातर भेल चल जाइत छैक जे मनक अन्हार उमससमे बेपटाव लगैत छैक, सभ टाकेँ ओसरा दैत छैक । ओहिना सरोदपर किछु-ने-किछु बाजि उठै छै—लगातार । एहि ध्वनिमे किछु नहि रहि ज इत अछि । अपन अस्तित्व निसान्त संगीतहीन पदार्थ जकाँ शीशमे ओँघड़ा जाइत अछि । जेना कोनो लोक अँइठ-कुइठ बचबैत, कात भ' क' डेग राखय, तहिना अपन सभ लोक 'गुजरि' जाइत अछि । पड़ल-पड़ल सभ टा अनुभव करैत छी । आँखि मूनि क' पड़ल रहैत छी । मुनल सिरमीपर कोनो रिक्शा बाटिक चलैत

छाया यदि भाइल अछि तँ बुझाइत अछि, जेना केवेक छाहरि पड़ि गेल हो। बड़ी कालसँ एहिना फुलि मेघक—मेघक स्नायक प्रतीक्षा करैत रहैत छी। हमर चारू कात रहोस्थक टूटल तार सभपर मनकल मोति जकाँ ओकर स्वर सभ छितिआयल रहैत अछि। ककरो आकृति साफ नहि छैक। एकदम अनचिन्हार। ओकर मनकल मोति तान स्वर आ टूटल तार सभक मध्य कोनो स्थिति नहि छैक अत' हम अपन मनक कोनो व्यक्ति, घटना आ प्रसंग बैसा क' जोड़ सकी। किछु नहि। सभ टा कड़ाक-कड़ाक भेल ओहिना रौदमे हटाइत रहैत छैक। हमहूँ सिनेमी सुनने भेलक शीतल छाहरिक बाट तकैत रहि जाइत छी। सम्पूर्ण दुपहरिया, तथापि, नहि बीतैत अछि। सड़कपर एतेक ओत' धरि रौद तानल रहैत छैक।

भरि दुपहरिया पटना आकाशवाणीसँ सरोवर किछु-ने-किछु प्रस्तुत करैत रहैत अछि। आ, शान्ति नहि, पेहन अलचड़ लोक अछि ई पड़ोसी। हरदम रेडियो लगौने रहैत छैक, आ से बेस ऊँच स्वरपर। हुनका तँ कहलो गे पार लगैत अछि। कय बेर दुनिया-अफ्ता क' ओकरा मना कर' चाहलियैक, मुदा से क' नहि भेल। तकरो अफसोच अछि। मुदा, बेसी अफसोच एहि बातक अछि जे आब हमर सभ पड़ोसी एहि प्रकारक अनचिन्हार आ हृदय-हीन भ' गेल अछि। वास्तवमे तँ सोचि आब जेना बेसाहैत अछि। तैँ। संसारक प्रति किछु तेहन भ' गेलैक अछि—तेहन दिआमे—जे सभ किछु कठिन। भावुक मनमे सभ टा सपना पिंजड़ा भ' गेल अछि। एकरा एखन घनश्याम मानू—सभ भरोस करबाक योग्य एक टा मित्र, से अगिले क्षण जरनाथ भ' जायत। नितान्त अविश्वसनीय, अयोग्य, अहाँकेँ हानि करबला।

विचार आइ तकरो नहि छैक। सड़क विष ई शीतल। दुहत छैक तँयो ओतबे दूर धरि जाइत छैक जतबा दूर धरि ओ अछि, आ टूटल-बहल छैक तैयो ओतबे दूर धरि जाइत छैक, जहाँ धरि ओ अछि।

सम्बन्धमे ई बात एहन सपाट आ ओस-मास नहि छैक। से खूब मे अर्थात अछि। सम्बन्ध तमक पारस्परिक घात-प्रतिघातकेँ बड़ यथार्थवादी भ' क' देख' पड़त आब। बुझल मन, माथ आ मूड़ल आँखिएँ। ओ समान्तिरिपूर्ण भजरि आब एको डेग काज नहि देत। आइ धरि छुच्छ यावतीक रोमेंटिक हृदयहलसँ बड़ भकड़ करैत रहल। जतबा दिन ओहि महलमे मौज करलहुँ, बहुत भेल। आब नहि। आब हमहूँ। नहि तँ फेर

ओहि खण्डहरमे ओहिना, जीवनक बहुत वर्ष वालु परक घी जकाँ हेड़ाइत रहत। से रहड़ाक बात मे तँ समये अछि, ने अवसरे। तेँ सोचि-बुझि लिय'।

हम मनक ई बात मानलिऐक। आ तीन वर्ष पहिने जे हम मनकेँ अपन शत्रु मानैत रही से आइ मनकेँ मित्र क' बुझलहुँ। तप कएलहुँ जे हमर ई मन बड़ समयपर चेतओलक अछि। आब हम घोर यथार्थवादी थिकहुँ। जे छैक आ जेना छैक सैह देखि लेनिहार। जेना कोनो संसार अछि—उपयोगिताक। उपयोगितापर केन्द्रित संसार बहुतलोभ चल आ रहल अछि। से जखन बुधि नहि रहल अछि जेयाँ एहि भयसेँ, तँ हमरो कोन क्षति ? आ मात्र एहुँ बातपर, जे लोक भेँड़ी-बकरी जकाँ दहाइत जा रहल अछि, एक टा खूब दुर्गम सुभीता आ संभावनाकेँ ठोकरबैत रहब कोन अक्लमन्दी थिक ? ई सभ टा बेकार थिक—फूसि। गुंजाइश आ सम्भावने थिकैक सभ किछु। आजुको एहि लेल सभ टा करैत अछि। जे चतुर-चलाक रहैत अछि से एकरामसँ आगाँ बढ़ि जाइत अछि। मीत-मेघवला अदर्शवादी लोक अपन कायरताकेँ अपन तीनताक भाषेँ सेधने पड़ल रहैत छथि। अपन सिद्धान्तक मदाडोपकेँ ओ दुपहरियाक छाहरि बुझि क' सन्तुष्ट रहैत छथि। से सभ आब बेराग। नहि तँ कालिहुये भोरतँ एक टा सबकाह, निष्कर्ष आ पाखण्डी लोक बुझल जयताह। से सभ कहबनि। एत' धरि जे बेटा-पुतहु, बेटी, स्त्री। सभ कहतनि जे ओ चरित्रहीन छथि। पाखण्ड करैत छथि। दब्बू आ अज्ञी लोक छथि। किछु कयल पार नहि लगैत छनि, अपना बुते, तँ युगधर्मकेँ दुराचार खराबी आ 'धांधली' कहि क' अपन दायित्व छोड़ लैत छथि। रहैत छथि एहि शताब्दीमे, बुझैत छथि जे महाभारतयुगक थिकहुँ।

ई सभ टा हम की लिखैत छी अरे-दरे। होइत अछि जे फाड़ि-चीड़ि क' फेकि दिऐक सभ किछु। सेहो कहाँ होइत अछि कयल।

अपन लिखनाहा शब्द-समूहसँ अतिरिक्त मोह स्वयं अपनोसँ ओतबे मोह रखबाक लक्षण थिक। आ, अपनासँ एतेक मोह रखबाक माने थिक भारी तकलीफ, भारी संघर्ष। कारण जे, समय तँ नहि बुझत हमर मन, मनक मोह। ओ अपन दिशामे बढ़ैत चल जायत। अहाँ अपन मोह आ भावना ल' क' लीकपर पड़ल रहब। ऊपरसँ सभ टा गाड़ी बढ़ैत चल जायत। अहाँ मन मसोसि क' पड़ल रहब। यावत् होश रहत अहाँ मन मसोसि क' सोचैत रहब अपन गलती, पिछड़लपन आ असफलता, तकर 'खोखलापन'। अहाँ की करब ? अहाँ अपन आकृतिपरसँ धूरा पर्यन्त नहि झाड़ि सकब,

किएक तँ अहाँकेँ हरदम बुझायत जे आब ई जरल मुहँ झँपने पावी। ई अहाँ एकसर बीच बाटपर पड़ल रहब आ ऊपर द' क' पूरा समय आ गाड़ी धुन्धेल करैत बढ़ैत रहत। बढ़ैत रहत।

हम पढ़ले-पढ़ल बूढ़ भ' जायब झुरकुट्ट !

आकाशवाणीसँ 'युववाणी'क लेल एक टा अनुबन्ध-पत्र अछि। 'तरुणाईके बोल' ओकर शीर्षक छैक। परसूसँ लागल छी, एक टा पाँच-सात मिनटक कोनो वस्तु बनय, जकरा हम 'तरुणाईक बोल' कहि सकिऐक। तकर दू टा आवश्यकता। पहिल तँ, तत्काल किछु टाका चाही, दोसर सांस थिक ई। दोसर जे एहिमे जे किछु बाँचि जायत से होयत एत'सँ मधुबनी धरिक रेलक मासुल।

ओना जरूरति अट्ठारह टा आरो टाकाक मानैत छी, जकरा ल' जा क' गाँक रक्तहीन तरहत्थीपर ध' दितेक—"ले माँ ! जनिकातँ हथपैंच छलैक पुरा बहुत।" मुदा, से अत्यन्त कठिने नहि, असम्भव अछि। तेँ असम्भवकेँ अपना लग घीचि अनबाक चेष्टा नेनपने होयत ने !

हम तथापि बड़ कठिनतासँ, बड़े प्राणायाम क' क' दू पृष्ठमे मात्र किछु पाँती वा वाक्य बनाने छी :—

'हम बहुत राव कविता पढ़ने छी,
निरालासँ खाली धरिक बहुत रास कविता।
जाहिमे, पुरान, जर्जर बेकार सभ भागो।
नव प्रभविष्णु आ मेधावी संकल्पक बौद्धि-पात
फड़फड़ाओ, नव बात, नव लोक आबओ
—रहैक लिखल।

से सभ किछु कतहु नहि अछि,
वैह बूढ़ पाकड़ि ससरल अछि रातियेसँ
सय सवा सय थाकल बटोही, बहुलमाग माल लदल
गाड़ीक सभ टा रखवार

पुरने लोक—पाकल मोछ
सभ ठामक अध्यक्ष थिकाह
सदस्य अकादमिएक वा अकादमी पुरस्कृत बैसो बयोवृद्ध
जनिक सेहन्ता आब कविता नहि छनि

कविसापर सम्मतिक प्रभाव छनि।
हुनक चिन्ता-क्षेत्रमे कोनो नव क्षितिजक
संवेदनाक जीवन्त टटका रंग नहि,
मिझायल लालटेन।

नव स्वरपर धम-विस्फोटसँ चौंकल जकाँ
आकृति बेस चोहार सन लगैत छनि
से मुदा ओ कखनो पाग, कखनो तौनी आ कखनो
पागसँ झाँपि लैत छथि
कखनो मोट बतहपोतसँ।

समीक्षामे छपैत छथि : 'नव कविता विधाक प्रतिनिधि,
विद्रोही कवि श्री फोनदत्त झा सिंह मिश्र 'आकान्त'।
(वयस पचपनसँ साठिक मध्ये)

कोष्ठमे अपन सर-सम्बन्धी
वा कात-करोटमे इष्ट-अपेक्षितक तरेह
शेष सभ संस्कारहीन भ्रष्ट।
तेँ, ने कवि, ने समालोचक छथि।
अरे के पूछैत, आइ तँ सभ कियो समालोचक छथि
(जेना स्वयं ओ)

चनकल चश्माक बरारिसँ सोँसे साहित्यक बिस्तृत पृष्ठ
बीचोबीच फाटल लगैत छनि।
से मुदा हुनक दृष्टिदोष नहि छनि !
किएक तँ, सेवा आयोगसँ ल' क'
नियोजनालय धरिक अधिकांश कुर्सी खाली छनि हुनके लेल।
वैह ओहिपर कय पुस्तसँ बिराजमान छथि
यावत धरि हुनक सन्तान बालिक नहि भ' जयतन्हि
तावत धरि करब जायत राजकीय प्रतीक्षा—
नव प्रभात गुरुचक।

लक्षक लक्ष 'बेरोजगार' आँखि, हाथ, बुद्धि-मात्र, पेट टूटैत रहताह
एहिना अन्हार।

ग्राम पंचायतसँ दिल्ली सरकार धरि
हुनके वंशक चलाए छनि।
हुनका ओत' कोनो वस्तिया नहि पड़ैत छनि।
सभ ठा निश्चिन्त भ' क' उपयुक्त खाद, पानि, बसात
पाबि रहैत छनि—फलैत छनि।

शासन संरक्षित हुनक परिवार बेस सुन्दरता पसैत छनि।
छोट-छोट खिस्सा नाहक तुपायल 'टौवा'
एक दोसरपर औंघड़ायल ओलरायल अछि।
सभ जे मुखाक' खसि पड़ल,
तकर सभक बेंह एकेटा कथा अछि
दुस्सह रोटीक पिहासि।
यद्यपि तकरा सरकारी-गैरसरकारी अध्यक्षलोकनि,
कहैत छथिन—
मात्र समय, समयकें नहि तहि सकबाक लोकक
अपन निर्बलता।

अखन ओ जन-साधारणपर ई अभियोग लगा क'
अपनाकेँ दायित्वमुक्त करबाक चेष्टामे बनैत रहैत छथि
ताहू क्षण हुनका मुँहक बढ़मान नक्शमे
झूठ उघबाक, आरोपक पिहासनमे
सौंसे समाज विक्षिप्त होइत अछि।
एहि विक्षिप्त होयबाक अपनो देन आपके ओ
नव पीढ़ीक असहनशीलता कहैत छथि।
रोटी आ घरक नित भरि-भरि मासक बुझनुक लोकक
लड़ब आ बेर-बेर हारि जयबाकें ओ
मात्र नव लोकक अधीरता आ आक्रामकता कहि-कहि
क' छुट्टी ल' लैत छथि।
फेर पाठन करैत रहैत छथि तावत धरि
यावत धरि आकस्मिक कोनो ठामक विद्यापति-स्मृति-पर्वक
मुख्य अतिथि वा विशेष वक्ता होयबाक
रजिस्ट्री नोत नहि धरा जाइत छनि।

आब फेरसँ ओ पुरान आओ,
नव आबओ फेर वर्क तैयार कर' लगैत छथि,
जे विद्यापति कि कबीर सनक
महाकविक वास्तविक श्रद्धांजलि होयतनि।
मंच पर भाषण बोकड़लाह!

एकटा कोनो घर-आङन कोना नितान्त अनचिन्हार आ तेहुलटा लाग' लगैत छैक, से तकर अनुभव हमरा बहुत लगसँ होअ' लागल। पहिने तँ बड़ी काल धरि ई स्वीकारे नहि कयल होअय, मुदा एहि यथार्थकें बहुत काल धरि टारलो नहि जा सकैत छल। तँ हम अपन मनकें ई मानि लेबा लेल बाध्य कर' लगलिऐक जे सोझाँमे जे किछु छैक ताहिमे कोनो नवजीवन नहि अछि सकैत छैक, खाली अपन मनक विश्वासक मकरध्वजो पोरि-पोरि निर्जीव। ई चेष्टे किछु मात्र मनकें समझयबाक। आन कोनो अर्थ नहि होयतैक। एक ठा फेर मने। अखन एहि यथार्थकें बुझितो कतहुसँ किछु भाईल छल, से बेस नहीँ। तेँ ने हमरा ओकरो बेर थोड़ी मोहल्ला आ मकान दिस अकेलतक, से हमरो हेतु बहुत अनचिन्हार भ' चुकल होयत! ई बात हम जानी। अहाँकेँ आश्चर्य होइत होयत। मुदा, ई निर्भेक धरि सत्य।

ताहिमे ओकरा घर दिस विदा भेल रही। बेहु परिचित चौबट्टीपरसँ निकली गुड़कैत गमी कमर-कसर अन्हार राहपर, बड़ अभ्यास भ' गेल रहय चलबाक। अनेर ठेस ओही दिस विदा भ' जाय तँ बड़ी दूर आगाँ जा क' बुझिऐक, जे आब तँ ओहू आगाँ बढ़िक' ओ घर छैक ओकर। कहियो-कहियो तँ एकदमसँ अखन भीतर पैसि जाइ आ कुर्सी वा पलंगपर बैसि जाइ, तखन पता चलय जे हम आबि गेल छी, सेहो सही-सलामत। अहाँकेँ हमर एहू बातपर विस्मय होयत। भ' सकैत अछि, अविश्वासो होअय, मुदा हम एतबे कहब जे हमरा द्वारा भेल ई घटना कोनो असाधारण घटना नहि छल। से कियो होय कयने होयत तनिका अनेरे अपन-अपन संदर्भमे एहि अनुभवक दस्तखत बुझा जायत। तेँ एहि विषयपर विशेष नहि कहब हम।

हँ, ओहि साँझ ओहि चौबट्टीपरसँ जखने मुड़क' लगलहुँ कि बुझायल जे किछु तेहन बात कर' जा रहल छी जे रोगाक पयरकें, देहकें अनुभव होइत छैक, दू-चारि दिन धरि। हम अपन एहू अनुभवपर चुपचाप बताहु जकाँ हँसलहुँ।

तुरत-तुरत एम्हरसँ एकटा छोट-छीन थाकल भीड़ ओम्हर बढ़ि जाय। कखनो ओकरे प्रतिच्छवि जकाँ एकटा आर ठेहिआयल भीड़ ओम्हर चलि जाय। सभ अनचिन्हार लोक। अनायास हमरा अपना द' बुझायल जे हम ओहि भीड़सँ छूटि गेल छी। से एकसरे छूटि गेल छी। तकर चिन्ता नहि रहय। अपना छुटबाक कोनो अभावो नहि बुझाय। कारण जेना हम एखने कहलहुँ, गुड़क' लगलहुँ। से सैह। गुड़कैत गेलहुँ। आ, अन्तिम ढलानपर जेना गुड़कैत वस्तु मन्द होइत चल जाइत छैक—समतलपर, तहिना हमहूँ अपनाकेँ अनुभव करलहुँ। तुरन्ते आबि गेल पँच-पँच छड़सँ घेरल बुद्धक कारी महामूर्ति। पद्मासन। बन्द मुख्य द्वारपर मोटका सिक्कड़ आ ताला। लोहाक एहि गोल घेरल मूर्तिक ऊपरसँ बीचोबीच दू दिशामे जाइत एक टा पातर तार लटकल। तारहिपर भरिसक २०-२५ पावरक बल्ब। तकरे रोशनी कुहाकसँ हेड़ा गेल दूध जकाँ टघरल रहैक। हम सोझे-सोझ बन्द लौह द्वारपर जाक' ठाढ़ भ' गेलहुँ।

जानि नहि किएक, हमरा बुझायल जेना हम एतहि अयबा लेल एतेक व्यग्र रही। हम एतहि आब' चाहैत रही। आब हमरा एत'सँ कतहु जयबाक नहि अछि। हम एकटा भावुक उच्छ्वासक संग, अपन दुनू हाथक दसो आङुरसँ दूटा स्वतंत्र मोट-मोट लोहाक छड़केँ धरैत बन्द बुद्धकेँ देख' लगलहुँ। आ ई सोचैत लागल रहलहुँ जे हमर ई उच्छ्वास आ ई चेष्टा कियो देखि तँ नहि लेलक अछि ?

हम दुनू कात देखलिऐक। फेर एक बेर बड़ अपनत्वसँ ताला-बन्द बुद्धकेँ देखलियनि। आब हमरा बुझायल जे हम बुद्ध भ' गेल छी। हम बन्द छी। आ बहुत दिनसँ एकै ठाम बन्द छी—स्थायी। अपनाकेँ हम बड़ बेबस अनुभव करैत छी। अपन एही विवशतामे माथ टेकि लैत छी लोहाक बन्द फाटक पर। मुदा, तुरन्त उठा लैत छी। हमरा सन्देह होब' लगैत अछि जे लोक देखि रहल होयत, से 'देवदास' तरहक लोक बूझि क' हँसत। हम सोझ-साझ भ' क' ठाढ़ भ' जाइत छी। यद्यपि हमर दुनू हाथमे एखनो लोहाक दूटा छड़ पकड़ायल रहैत अछि। सोझेमे मोटका झुलैत-सिक्कड़ि आ ताला......।

हम सोचैत छी—ई सभ की भ' रहल अछि हमरा बुतेँ! हम की क' रहल छी ? हम एहन हल्लुक-फल्लुक व्यवहार क' क' एकटा चंचल चित्त कालेजिया 'हीरो'सँ बेसी किछु लगैत होयब ? कतहुसँ हम कनेको गंभीर बुझाइत होयब जे कि हमरा बुझाबक चाही! ई बाट परहक नाटक हमरा

अपना असह्य बुझायल। तेँ चाहलहुँ जे पड़ाइ एत'सँ। मुदा, एहि निर्णयक बादो हमर पंजाकेँ छड़ दुनू छोड़ल नहि गेलैक, हम ठाढ़े-ठाढ़ जेना अपने विवशतापर पड़ि गेलहुँ......।

ओहि साँझ क' ठीकम ठीक पाछाँसँ आबि क' भौजी हमर दिराग कान्हु-पर अपन तरहत्थी राखि देने रहथ।

—"की भ' रहल छैक एत' एकसरे ?"

—"अरे, तोँ भौजी ?" हम चोट्टे घूमि क' देखलिऐक। ओकर आँखि सिलमिल रहैक।

—"चल। आ।" भवेश आदेश जकाँ दैत, घीचि लेलक। तखन हम तीनू गोटे गेल रही मिलाइ काफेमे चाह पीब'।

ओहि साँझ हम कच्चल रहिऐक। ओकरेलोकनिसँ कशल रहिऐक।

हमर स्थानपर अहाँ रहितहुँ तँ अहूँ लंक लागि क' पड़ैतहुँ—अपन एहन कोनो दुस्सह अतीतसँ पड़ैतहुँ। मन अवचेतनमे कन्हापर चढ़ि गेल मोलायम खड़िया जकाँ, ओकरा झमारि क' फेकि दितिऐक। यद्यपि अहूँकेँ बुझल रहैत जे खड़िया कोनो तरहेँ अहाँक अनिष्ट नहि करत। एत' धरि जे नोछरबो नहि करत। तथापि, अहाँ ओकरा झमारि क' फेकि देतिऐक।

चाह पीबाक काल केओ बेसी नहि बाजल। भवेशो अपन स्वभाव मोताबिके एक-दू टा वक्रोक्तिक चमत्कार देखाक' गुम-सुम छल। हमरा एहि चुप्पीसँ कोनाबम बुझा रहल छल। कारण रहैक। हमरालोकनिक उपस्थितिमे एहि प्रकारक चुप्पी नवे बात रहैक। तेँ भाहो तँ अनसोहाँत जकाँ लगैत रहय। अस्तु, भवेश उचारलक।

—"तोरा तसे अक्किलक छूतियो नहि छौक। कहू तँ मरैत छै' कि जीवैत छै' से पर्यन्त नहि कहि गेलें। एम्हर हमरालोकनि व्याकुल रही। भारी मूर्ख छें। हारि क' आइ निश्चय कयलहुँ दुनू व्यक्ति जे अवश्ये ई छौंड़ा कतहु मरि-खपि गेलैक। चली पता क' क' एखबार-सबबारमे छपा दिऐक। आइ भोरे अलबम ताकि तोहर फोटो लयलहुँ अछि। मजमून तैयार करबामे तँ कराकसँ समय दिया गेल। "खोये हुए बालक की सूचना। गत कई दिनों से मेरा भाई, जो बाईस वर्ष का बालक है, खो गया है।"

हमरा बड़ जोर हँसी लागि गेल 'बाईस वर्ष का बालक' सुनि क'। भौजी मुदा बरक एहि उक्तिपर हँसलि नहि, एको रत्ती बिहुँसलि। बरकेँ

भौजीक' देखलक आ बाजलि—"अहाँ सभ बाबकें अट्ठामे उड़ा देल छिऐक। आब ई दुधपीबा बच्चा छथि ने जे हर्रैत छथि ! कहू तँ, एतेक-एतेक दिन बिना कोनो खबरि-सूचनाक लापता रहि जायब नीक बात छैक ? आ कथीक लागल ?"

हम भौजीकें देखबाक साहस कयलहुँ। ओमहर आँखिमे बेह सूखल छिलमिली। एहन मार्मिक क्षणमे हम अपन स्वभावपर पश्चाताप छी, से बड़ गहींर। मनकें धिक्कारलहुँ। एके क्षणमे एहन अपन परिवारक लेल भरि जन्म वास्ते कृतज्ञ होइत संकल्प कयलहुँ—आब नहि ई आचरण। भरि जन्म नहि।

—"आ चलाकी हिनक। हरदम कोठलीमे ताला बन्द क' गायब। की तँ केओ आबि नहि जाय। तामसो तँ होइत छल जे करि जन्म हिनक मुह नहि देखी। मुदा। बाहर बेर घुरलहुँ। हारि क' सबसँ पाक घुरलहुँ। आ केओ कोनो हमरे सन हठे ? एको रत्ती मनमे विचारो छनि बौआक मुदुक्कें ?" भौजी क्रोधित छलि।

भौजी एक क्षण जेना तारतम्यमे पड़िक' चुप रहलि। फेर बजनाइ शुरू कयलक।

—"ओ छौंड़ी नहि भेटलि रहितय घुरतीमे तँ हम सत्ते हिनकासँ भरि जन्म यदि बजितियनि तँ एक बापक बेटी……। इकासलि-पियासलि ओहि छौंड़ीकें देखिक' आश्चर्य भ' गेल। कहू तँ ओकरा हरान-हरान क' देलथिनहें।"

'छौंड़ी' पर मयेश चौंकल—"ओ, आब छौंड़ीक चक्कर शुरू भेलैक अछि ? बेस। तँ एहि भरोसे जे होइ जे ओतबली सा क' ई लोक जमानति लेल भ' से बिगारि जाइ।" फेर अपन कनियाँकें पुछलकैक—"कोन छौंड़ी ?"

—"अनेरे फेर ठट्ठा नहि करू। जकरे अभाव हुनि तेहि किने—वैह इला……।"

मयेश तुरन्त बदलि गेल। इलाकें ओ अपन सहोदर बहीन तीरासँ कम नहि मानैत छैक। ई बात ओकरा बुझल छैक जे ओकर बहीनक ई सखी बड़ अभागलि अछि जे हमरा सन लोकाक स्नेहमे बेहाल अछि। एहि सम्बन्ध मर ओ गंभीर अछि। हम मूड़ो निहुरौने चाह घोँटैत रहलहुँ। मन आर भारिया गेल रहय। ओ कैक बेर आबि क' घूरि गेलि रहय। हम जनैत

रहिऐक ई बात, मुदा उदास घूरलि रहय, से पता नहि। किएक हम सोचि नहि सकलिऐक जे एहन घूरब उदासे घूरब होइत छैक ? हमरा बड़ अफसोच होब' लागल।

—"अनेरे आयलि। हम कोनो बजौने रहियैं जे घुरलि तँ हमरे दोष ?" हमर एतबा वाक्य खतमो ने भेल छल कि मुह दुसैत भौजी बजलि—"हम कि कोनो बजौने रहियैक ? हाय रे मनुक्ख ! ओ हरान होइत रहलनि आ हिनका एतबा विवेक नहि ? छिः छिः ?" भौजी बड़ क्रुद्ध छलि।

—"से तँ ठीके। एक दिन तँ हम घुरैत सेहो देखलिऐक ताकि क'। ओहि दोगिबला दोकानमे चाह पीबैत रही बैसि क'।" हम जेना खौंझेलिऐक।

—"लाज तँ होइत नहि अछि। चाह पीबैत रहथि। अहाँक जे हालत होयत से अहीं भोगब। कनी हिनक बदली तँ होब' दियौन एत' तँ। सभटा मचाबी भोसड़ल। हिनका लेल ओ कतेक प्राण धुकलनि तकरा लेल हिनकर चेंहु किरदानी। केहन मनुक्ख भेलहुँ, नहि जानि।'

मयेश गंभीर भ' गेल छल। चुपचाप। भौजी सेहो चुप्पे छलि आब। हम मनेमन इलाक संग भ' गेल रही। संगे, ओकरापर अन्याय भेल रहैक। हम यद्यपि जनैत रही जे ई प्रसंग एतहि खतम नहि छैक। भौजी, एकसरमे हमरा आरो भाषण देत। उचितो छैक। हमर इलाक सम्बन्धपर ओ कैक बेर बुझा चुकलि अछि—किछु अन्यथा वा निराशावादी नहि, अपितु किछु विचारपूर्वक आ सोचि-बूझिक' एकर निबाहमे रही, ताही हेतु भेलोनो हुनक विचार स्वाभाविक छलैक। हम ओकरा प्रतिमे फेर आभारसँ भरि गेलहुँ जे हम जानैत रहलहुँ जे भौजिये छिक ओ प्रथम गाछ जकर छाहरिमे हमरा-इलाक सम्बन्ध परिस्थितिक प्रचण्ड रौदमे मुरझाइत अछि, एहन लू-तापमे अपन अस्तित्व बचा पबैत अछि। ओ हँ ओ सत्तेक छाहरि अछि जकर तरमे हमरा लोकनिक इकासल-पियासल स्नेह मुरझाइत बौचल अछि—मुरझायल नहि अछि। इला कते जिद्दी छा नहि रहितय तँ भौजन आर मुश्किलतर रहितय। सेहटा बड़ भारी दुर्गुण छैक। ओना हमरा अपनेमे ई दुर्गुण कम कहाँ अछि ? तेँ ने ई लगाव आ दिनक दिन मनक तनाव बढ़ब……।

एक क्षण हमरा अपन दोष बड़ पहाड़-सन बुझाय लागल। एकरे' से हरान करलिऐक से कचोट भेल। ओ एखनो रत्ती उदास होइत अछि तँ

अघलाइ लगैत अछि। मुदा, अपन एहि मनःस्थितिसँ उबरि सकबाक कोनो रास्ता नहि छल।

"कत' जयबै"—थाह भरिसक खतम करैत भवेश बाजल। हम एहि प्रश्नसँ हड़बड़ा गेलहुँ।

"जयबाक अछि एक ठाम। किछु काज अछि....।" हम झठ बजलिऐक जे हमर कहबे कहि देलकैक ओकरा दुनू व्यक्तिकेँ। फेर खौंझायलि भौजी। "जयबाक अछि अनाथ जकाँ बुद्धमूर्त्तिक लोहाथि एखनसर ठाढ़ होब', बड़का काज। बहुते गे तँ अपने खुशी रहि सकैत छी, से लोककेँ खुशी रह' द' सकैत छिऐक। अनचक्के नहितन।" ओकरा एहिसँ आगाँ किछु नहि फुरलैक। चुप भ' गेलि।

—"अनका हम किएक नहि खुशी रह' दैबैक? कोना हम अनकर खुशी लूझ' जाइत छिऐक की? आ कि कियो हमरा वास्ते सिनेमा जायब छोड़ि दैत अछि? पिकनिकमे राजगीर-नालन्दा नहि जाइत अछि? कि हँसैत-गबैत नहि अछि...?"

हएह आब मनक विष बहराइत अछि ने। हाय रे बुद्धि!

ओ बड़ क्षुब्ध भेलि। जेना, की बाजली, फुरा नहि रहल छलैक। भवेश दिस देखि क' जेना हमर भर्त्सना करबाक समर्थन प्राप्त क' रहलि हो तहिना एक क्षण चुप रहलि, फेर बाजलि, "सभ जाइत छलैक। पूरा कॉलेजक बैच। लोक घीचि क' ल' गेलैक बेचारीकेँ। ओ तैयो कहैत रहैक नीराकेँ जे हमरा पिकनिकपर जयबाक बातसँ बड़ तामस होयतनि। से तँ हमरा सोझाँक गप्प थिकैक। ताहिपर नीरे कहलकैक, चल ने। भौजी कहि देथिन।' ओ बेचारी ताहूपर कहलकैक जे ओ एहिना कसम छथि, आरो तमसा जयताह। ओकर एहि चिन्तापर हमरे तामस उठि गेल। हमहूँ जबर्दस्ती जाय कहलिऐक जेना हिनक बहु रहथि जे सभ बात हिनकासँ पुछिये क', आने सँ' क' सकथि? आ सेहो पिकनिकसँ घुरलि तँ कहलक ने नीरा जे एकरा दुआरे बोर भ' गेलहुँ छोड़िया कखनो खुलि सकलि ओत'क कोनो कार्यक्रममे? गेल मुह लटकौने, आयलि मुह लटकौने। नोर।" हमर आँखि अनायास आकाश दिस गेल। दू-चारि टुकड़ी मेघ छलैक से कतहु ससरि क' चल गेल छलैक। आकाश स्वच्छ रहैक।

"तोरालोकनि कत' चललेँहेँ?" हम प्रसंग बदलबाक उद्देश्यैँ पुछलिऐक भवेशकेँ।

'फिल्म देख', तखन?' भौजी व्यंग्यकेँ यथासाध्य धार बाढ़ करैत बाजलि। ओकर तामसपर हमरा हँसी लागल।

ओ बर विग तकैत बजलीह—"ओहि दिन जे हमरालोकनि सिनेमा गेलि रही ने, सिहुजी जे आयलि नहुथि, जबर्दस्ती घीचि-घाचि ल' गेलाह। तकर बड़ अधलाह लगलनि बाबू साहेबकेँ.....।"

"बेकार। हमरा किएक अधलाह लागत? अहाँलोकनि सिनेमा गेलहुँ ताहिमे हमरा अधलाह लगबाक आधार?" हम कहलिऐक।

—"जाउ-जाउ। अधलाह लगबाक आधार? बताहो लोकक व्यवहारक लेल आधारिक जरूरति होइक छैक? जाउ तँ सम्पत। अहाँ किएक रूसल रही?" ई एक टा तेहन स्थिति होइत छैक कोनो तीक सम्बन्धक, जत' आदमी बहुत इमानदारीसँ संवेदित होइत अछि। हम उदास भ' गेलहुँ। कने तँ चुप रहलहुँ। फेर किछु जवाब देब आवश्यक बुझायल।

—"एक तँ रूसल नहि छी। जँ छीहो तकर कारण ई नहि छैक।"

—"की छैक तखन?" भौजी पुछलक।

—"कहियो कहब। एखन उपयुक्त नहि होयत।"

—"कहू ने, तावत गढ़ब कारण। हम नहि बुझैत छी की अहाँक पेट?" भौजी बाजलि।

हम बहुतमे नहि पड़ि क' चुप्पे रहब उचित बुझलहुँ।

—"उठ। चल आब।" भवेशक प्रस्तावपर सभ गोटे उठलहुँ। आ, हम सोच' लगलहुँ जे आइ हमरा की फुरायल जे बुद्धमूर्तिये लग ठाढ़ भ' गेलहुँ जा क'? हमरा अपन एहि व्यवहारपर अपन अवचेतन मनक षड्यन्त्र लागल। भीतरसँ उठल फुटपाथपर आबि क' हमरालोकनि ठाढ़ भेलहुँ तँ फेर एक बेर कार्यक्रम तय करबाक आवश्यकता उठलैक। हम चुपचाप ठाढ़ रही। भवेश विहुँसि क' हमरा दिस देखलक आ अपन आँखि घुमा क', गाल फुला क' संकेत कयलक जे भौजी हमरापर बहुत तमसायलि अछि। हमरा हँसी लागि गेल ओकर अभिनयपर। भौजीकेँ बुझा गेलैक जे हम दुनू गोटे नयनेमे किछु गप्प क' लेलहुँ अछि ओकरा ई बात बुझल छैक जे हमरालोकनि काय बेर एना गप्प क' लैत छिऐक, आ से ओकरा नीक। एखन ओकरा मुहपर जौँहा जयबाक चेन्ह लागल छलैक।

—"हमरा एक टा बात फुराइत अछि। एत' धरि अयलहुँ, कनेँ मिस्टर मिश्राकेँ भेँट कयने चली। की विचार ?" भवेश प्रस्ताव रखलक। हमरा दिस तकलक।

—"हम की करब ओकरा ओत' जाक ?" हम चिंतित रही जे भेटैक जिद्द नै ठानय।

—"हुँ, तरवामे मेंहदी लागल छनि हिनका।" भौजी बाजलि।

फेर एक क्षण चुप रहि क' हमरा दिस तकलक। एहि बेर ओ हुनर चेहरा पढ़बाक विचारसँ देखने अछि, से हमरा बुझायल। हम कते-मने मन सिहरैत सतर्क भ' गेलहुँ।

—"आ वस्तु-जात नहि कीनब अपनेक ? अहूँक बिनाश अद्भुते अछि ! देरासँ चलल गेलैक अछि बजार करबाक लेल, आ, एत' बाटमे मिश्रासँ मिलबाक ओहि ठाम...।" भौजी खौंझायलि रहथि।

—"मिश्रा तँ पाछाँ, पहिने तँ दएह छथि नकुल-बुद्ध। से अहाँ बोधे नहि देतैक। दएह भिड़क भेटल। दु दिन धरि क्याल रहितय तँ किछु घटि जइतैक एकर ?"

—"भेल। अहाँकेँ तँ बात भेटल शायद। आ अपन-बोधकेँ अलकर भेटुत सगर क' म'भाक त' चला देलहुँ।"

एहि बातसँ हम आब निश्चिन्त भ' गेल रही। भौजीक स्वर आब हुनर संरक्षणक भार उठा लैत छल। आब जे हमरा पक्षेँ बरेकेँ गंजन क' ध' देतैक, ई बात हम जनैत छलिऐक।

—"एकटा करैत छी। नहि तँ अहाँ आउ मिश्रा ओत'। हम हिनका सङ्गेँ बजारसँ वस्तु-जात ल' क' डेरा घुरि जायब। आ अहाँ कोनो 'चीज' सेहाय नहि बैसि जायब, सकाले घरि आयब डेरा।"

भवेश ई प्रस्ताव तुरन्त मानि लेलकैक। ओकर मुद्रासँ बुझायल, ओकरा एक टा विलक्षण मनोरंजन भेटैक अछि। दोसर दिस हम कते-मने अवश्य बन्दी अनुभव कयलहुँ।

—"दस मिनटक लेल चलि एथीक ओत' जयबाक छथि। ओतबा भ' क' ओकर साथ बजबओतै रहय। की बुझलि ? नहि होयत तँ हिनके ल' क'..."

—"हम नहि जायब आइ।" हम हड़बड़ा क' आपत्ति कयलिऐक। ओ बिगड़ि गेलि।

—"नहि जायब तँ कहबो नहि करब। हमरा कि कोनो देखल नहि अछि वा कि अहाँ ओकनिक सङ्गेँ नहि जाइ तँ हमर एक टा काज पड़ल रहि जायत ? चलू आउ।"

भवेश आनन्दित्याक' हमरा देखलक आ बदलामे खिसिआयल। फेर भौजीक ओहि दलदैत, दुटू हाथ जोड़ि क' परिहास भगवानकेँ गोड़ लागलक हमरा सहानुभूतिमे जे आइ भेलहु तोहर दुर्गति...। हमरा बड़ी जोर हँसी लागि गेल। भौजी हुनकाओकनिक हँसी संकेत-भरल बुझलक। मुदा कुछ ओतेक कड़ा नहि रहैक एहि बेर। ओकलायम रहैक।

—"रिक्शा रोकय एक टा से नहि !" ओ हुकिम तागसँ बाजलि।

एक टा रिक्शावालाकेँ बजओलिऐक। बैसि क' विदा भेलहुँ। मुदि बाद केओ नहि बाजल किछु। सड़कपर ओतबा बेस रसगर भीड़-भाड़ आ-जाहि रहल छलैक। खूब व्यस्त। हल्लो-गुल्लाक पर्याप्त। तथापि रिक्शापर गप्प नहि कयल जा सकैत छलैक, से बात नहि। तँयो हमराओकनि चुपचाप बढ़ल जाइत रही।

हमर मन कैं कि आब स्वच्छ छल। मनक विषाद समाप्त भ' गेल छल आ हुनाक प्रसंग मनसँ पसरि गेल छल जे, मने हम किछु उन्मुक्त अनुभव क' रहल छलहुँ। हम हजार बेर परतिया क' देखलिऐक अछि जे अपन एहन मानसिक स्थितिमे हम सामान्य स्वभावक विपरीत बड़ मुखर आ दुष्टतापूर्ण भ' जाइत छी। मुदा, से सम्भव सकैं नहि। अपने निकटक ओकरा पड़ै। हमरा शैतानी फुरायल।

—"सङ्गे चलैत छी से बड़ दिव। मुदा, हम दालानमे नहि जायब से जानि लिय'।" हम ओकरा खौंझओलिऐक।

—"बुझल अछि। लगक दोकानसँ चूड़ी कीनिक' अहाँकेँ पहिरा देब। रिक्शापर बैसल रहय होयत कि केओ उठा क' पड़ा जायत ?" ओ कहलनि।

हुनर दुष्टता निष्फल गेल। कारण जे हुनर जतेक अनुमान छल ओकर बिगड़बाक, ततेक ओ नहि बिगड़लि।

हमरा दोकानक घरि नहि जायब ओकरा कोनो अधलाह नहि लगैत छैक। एहिना हमरा बैसा दैत रिक्शापर—'दू मिनटमे अबैत छी।' ई सब बात नहि ठीक। जँ हमर दोकान नहि जयबापर ओकरा वास्तविक क्रोध नहि, कृत्रिमे क्रोध होइत छैक।

भौजीकेँ दोकानमे प्रवेश कयलाक बाद रिक्शापर हम व्याजी हुनाक विषयमे सोचैत रहलहुँ। मानू ओकरे प्रसंगहीन प्रसंग सभ। पूरा शरीर आ मनपर पहिने दबी जेना बोझा गेल रहय। हम स्वयंकेँ बेस स्वच्छन्द अनुभव

करैत बैसल रही रिक्शापर। आ निश्चित जे बेसी पिछुआर नै भेटि जाय। अबेरे आब ओकरासँ मेंभिलाम करहि पड़त—तुच्छ औपचारिकता। ई बात कम परिश्रम, हैँ। तावते सौंखी लिफाफक बंडिल सब हमरे भौजीकेँ पुरैत देखलिऐक। बेस। ओ सत्ते जल्दिये घुरि आयलि। रिक्शापर बैसि गेलि। हमरालोकनि डेरा दिस विदा भेलहुँ।

एक बेर भेल जे पुछियैक—की सब लेलक अछि, मुदा नहि पुछलिऐक। ओहो बड़ी काल चुप्पे रहलि। मुदा, ओकर हाव-भावसँ बुझायल जे कोनो एक टा बात ओकरा मनमे अड़ोंडिया काटि रहल छैक।

—"अहाँकेँ की भ' जाइत अछि? भरि संसारमे अहींक लेल कियो विश्वसनीय लोक नहि? लोकक स्नेहपर अहाँकेँ एना सन्देह किएक होइत रहैत अछि?" भौजी एकाएक फूटल रहथि। ओकर स्वरमे साफ-साफ अभियोग छलैक। मन भारी भ' गेल। हम अपनो ई बात बुझैत छिऐक, ई कमजोरी अछि हमरामे। मुदा, हम लचार छी। एको रत्ती उपेक्षाक आशंको भ' जाइत अछि तँ हम बड़ दुःखी होब' लगैत छी। अपन स्वभाव।

—"आब भेला नहि छी। अहाँकेँ बूझल अछि? एहि एक हफ्तामे की-की घटना घटि गेलैक अछि? इला द' किछु अछि बूझल?"

—"इलाऽऽ?" हमर करेज धक् द' उठल। की भेलैक अछि? इलाकेँ की भेलैक अछि? हमर मन एहि प्रश्नपर चकभाउर देब' लागल। यद्यपि हमरा बूझल अछि जे होयतैक किछु एहने, मुदा एखने, हमर अज्ञानेमे घटित भ' जयतैक तकर आशंका नहि छल। हम कातर भ' क' भौजीकेँ देख' लगलिऐक। ओ क्षण भरि दोसर दिस ताक' लागलि—पलायनमे। फेर हमरा दिस घूमलि—'एक ठाम करीब-करीब ठीक भ' चुकल छैक। परिवारक देखबाक लेल अबीतैक आइ।" एक सेकेण्ड जेना अपनाकेँ संतुलित कर'मे चुप रहलि। "ओकरो अभागे छैक कि! छटपटायलि फिरैत रहैत। अहाँक कतहु पता नहि। अहाँ अपने स्वभावक कारणेँ खता खायब, बल्कि खता खा गेलहुँ।" भौजी चुप भ' गेलि।

हमर मनक धपकर एकै ठाम छिन्न-भिन्न भ' क' पसरि गेल। मनपर धधका लगबाक बादक वातावरण जतेक अवसन्न भूक रहैत छैक! लोक अपनाकेँ खाली ठाढ़ अनुभव करैत रहैत अछि—ठाढ़। शुष्क ठाढ़। कोनो प्रकारक आन विकार किछु नहि। मात्र गतिहीनता, जड़ता।

भरि बाट प्रायः हम आ भौजी एकै टा चिन्तामे रही। सेहो चिन्ता तेहन अमूर्त जकाँ रहय, जकर विषयमे बहुत साफ-साफ कहल-सुनल नहि जा सकय। यद्यपि दुनू गोटे मने-मने एक दोसराकेँ किछु कहबा लेल तैयार होइ, मुदा से क्षण जेना बाटेमे बिला जाय। होअय जे की बात होयतैक? आएह ने किछु गप्प जे ई हमरा कय बेर बुझा चुकल अछि? संभव, भौजी सेहो हएह सोचि क' चुप रहलि हो जे की गप्प? हएह। तँ ने अपन ई कहिए चुकल अछि कैक बेर। आगाँ कोनो परिवर्तन तँ भेलैक नहि परिस्थितिमे।

मुदा, ई केहन परिवर्तन छलैक परिस्थितिक, जे तत्काल नहि देखल जा सकितैक, से भरि रस्ते।

एहि प्रसंगपर मन तते कसमसित भ' रहल अछि आइ जे मन होइत अछि बहुत रास लिखैत चल जाइ। तते दूर धरि, जकर कोनो ओर-अन्त नहि होइक। कारण, आइ हमर पूरा जीवनो तँ ओहने-सन अछि ने! ओर-अन्त नहि छैक जकर। कारण देखिऔक, परिस्थिति जीवनमे सब रंग अनैत छैक तँ मनुष्यपर ओकर प्रभावो सब रंग पड़ैत छैक। से प्रभाव तेहन अवश्य होइत छैक जे मनुष्यक मनपर पहाड़ जकाँ ठाढ़ो भ' जाइत छैक ओकर-कोखल कोनो बातक तेहन पहाड़ मन पर ठाढ़ भ' जाइत छैक जे ओकर ऊँचाइ आ विस्तारमे आँखिक सोझाँक सब वस्तु नुका जाइत छैक—अज्ञात बनि जाइत छैक। हमर मनपर एक टा भारी पहाड़ छलि बैह—इला। ओकर चरित्र। हम ओकर बदलामे संसारक कोनो वस्तु नहि चाहैत रही। एहि संसारक कोनो लोक हमरा हेतु ओकर बादे किछुओ महत्त्वक रहय। ओना, कखनो काल मनमे ईहो प्रश्न उठय जे जीवनमे रुपैया-पैसा, आरामक आवश्यकता होइत छैक लोककेँ, ताहि रुपैया, धन आ वस्तुक लेल लोककेँ जान-जी उनटि क' उद्योग कर' पड़ैत छैक आ से उद्यम तखने संभव होइत छैक जखन कि समय भेटय, समय रहय। तखन जँ सब टा समयकेँ इलेक लेल सौंपने चल जा रहल छी तँ कत' ठाढ़ रहब आ कोना? कतहु ठाढ़ होयबा लेल दू हाथ भूमि चाही आ माथ नुकयबाक लेल एक टा एकचारी, से कत'सँ आ कोना?

अहाँकेँ विश्वास नहि होयत भाइ, मनक एहि जिज्ञासापर मन घृणासँ विष भ' जाय—धिक्कार! हम ओही सब लेल जन्म लेने छी? रुपैया-धनक लेल? हम जन्म लेने छी मात्र इलाकेँ प्रेम करबाक लेल। बस। आ, लिख'-पढ़' लेल। सौंसे संसारक लोकतँ एही हेतु जन्मे लेने अछि, तकरो

झेग कर' लेल आ लिख'-पढ़' लेल। जीब' लेल प्रेम आ प्रेमकेँ जीबाक लेल क्रिया। सैह क्रिया लिखब-पढ़ब, कि खेती-बारी, कि चित्रकारी। एकर अतिरिक्त आर की ? सेहो अनिवार्य विषय होइत छैक, पढ़हि पड़त, तहिना प्रेम। प्रेम करहि पड़त। बिना एकरे एको डेग कहाँ लगत ? तखन किछु आग बात, 'पेट' भरि के भात-रोटी। तेँ कहलहुँ जे प्रेमकेँ जीबाक हेतु अन्न चाही।

कखन डेरा पहुँचलौं किछ्ता, से ध्यान कैक दहर' शाल। हमरा एहि बातक बड़ संतोष भेल। खैर, अपन जीवनक ई घटना कमरेँ कम एतबा काल तँ हमरा लगलकैन। नहि तँ कहाँ कोनो घटना आब भगार असरि करैत अछि ?

पहिले कोठलीमे नीरा चुपचाप बैसलि रहथि। आराम कुर्सीपर। उठबाक पहल अलसाय। भौजी नमा क' देलकैक।

—'अहूँ' दियौक। तखन हृदयहीन लोकामे ई भावना ! पाँच दिनसँ जहर लागल छल से तखन फेर अहाँकेँ पूछहु लगलाह जे—'हँ हम नीरा, केहन मन छौक ?' भौजी धड़फड़ाइत भीतर चलि गेलि। नीरा हमरा प्रणाम कहलथि। मात्र एक क्षण देखि आँखि नीचाँ दिस गिरा लेलक। हमहूँ कोठलीकेँ तेना देख' लगलहुँ जेना बहुत दिनपर आयल रही, बल्कि पहिले पहिल आयल होइ।

—"आर की हालचाल नीक ?" हम जेना ठेलि-ठालि क' ई प्रश्न पूछैत भीतरसँ बहार कयलहुँ। नीरा मात्र एक बेर देखलक हमरा दिस। हम हटि देखलिऐक—ओकरो आँखिमे ओएह अभियोग भीजि रहल छैक। हमरा ओकरा आँखि दिस देखबाक साहस नहि भेल। हम एम्हर-ओम्हर देख' लगलहुँ। पाँच मिनटधरि ओहिना ई चुप्पी रहल होयतैक।

ओम्हरसँ भौजी दुनू हाथमे दू गिलासी चाह लेने आयलि। नीक लागल। एखन छल इच्छा चाहक। हमरा आ नीराकेँ देल, एक हाथमे दुनू हमर ऊपर सँ प्याली धरि क' एक टा कुर्सीपर बैसि गेलि। हमरा हँसी जकाँ लागल ओतर नहि बैसलीपर।

—"अहाँ पीबू चाह।" हमरा कहलक। "की करबैक ? कहाँ नहि जाइ। अबइत छी।" नीराकेँ कहलकैक।

हमरा ई बुझायल जे ल' आबस अबएबे ई चाह हम नहि सोचि पाबी जे

स्वयं हम की सोचैत छी ? की बुझि रहल छी ? हमर मन ने भारी छल, ने हल्लुक।

—"हमरा नहि जयबाक इच्छा होइत अछि भौजी।" हम एक बेर टारबाक पहल कयलिऐक फेर।

ओकरा दुनू गोटेक आँखिक भूख आ विवशताक छाप जीवनमे पहिले-पहिल देखल छल। रोइयाँ सिहरि गेल। ओहि भावक आत्मीय आँखिक छायाक गम्भीरतासँ चेतना भेल। रहस्य जे ई घटना सबसँ बड़ दारुण घटना छिऐक। नहि तँ एहन व्याकुलता किएक होइतैक। ई एतेक-एतेक राता अभियोगमे स्नेह कोना चुप-चाप रहितैक ! हम मुड़ी निहुँरा क' फेर एक बेर सोच' लगलहुँ। भौजी बढ़ि क' चलि गेलि। हमहूँ उठलहुँ आ बरण्डासँ बाहर डोकीक कतहु बढ़ि क' किछु छन ठाढ़ रहलहुँ। पयर मन दू-चारि-टा डेग कें ओतहि निहुरि-निहुरि क' छूबि रहल छल। नजरिमे धुआँ पैसि गेल। अनायास सुखि क' ठोढ़' लगलिऐक। दू टा फूल आयल हायबे। बाबा कहलक जेबीमे धरैत फेर ठहुक' लगलहुँ। हम जनैत रही, हमर एहि व्यवहारक अर्थ भौजी आ नीरा ओएह लेत जे छैक। ओना हम सेहो जनैत रही जे ओ दुनू की बीनू गोटे हमर परिस्थिति जनैत अछि। हम कैयो की करैत छिऐक ? बहुतो स्थितिमे काज कैयो की क' सकैत छी ? तथापि, ओकरा हमरा सामनेमे भरिये छैक। तैं, ओहि तानसमे अपने तनि रहितो, हमहूँ शामिल छी। तखन ओएह, खाली नामसँ क' सकैत छी, सैह जखन कि क्रियाहीन भावना तँ कोनो समाधान नहि थिक। बल्कि किछु नहि। हम सिराक्षित मनमे घुरि-फिरि क' फेर ओही कोठलीमे आबि क' बैसि गेलहुँ। बैसलाक बाद पता लागल जे दोसर कुर्सीपर बैसि रहल छी। एहि बेर नीराक दुविधाह आकृति सोझाँमे पड़ैत रहय। ओ माथ झुकौने रहय। एकाएक ओकरा प्रति बड़ आवेश भेल। ओकरासँ गप्प करब आवश्यक बुझायल। एक बेर देखलिऐक।

—"नीरा, तोंहो कि हमरे कहैत छौक जे एहिमे हमरे टा दोष अछि ?"

नीरा चुपचाप रहलि। भरिसक ओकरा कमबाक स्थिति म' गेल रहैक। ओ दाँतसँ ठोर जँतबाक यत्न क' रहलि छलि। हमरा ओकर आयत निर्वेही लागी। ई प्रश्न ओकरे जीवनसँ लागल रहैक—सुख-दुःखक निर्णयक प्रश्न छलैक। ओकर दुःख उचित रहैक। हँ, ओकर एहि व्यवहारक असरि हमरो पर गहीँर पड़ल, से सत्य। कारण, दोसर पक्ष हमरे छल। परंच हम एकसर

रही । हमरा प्रतिक सहानुभूति बढ़ देखावल रहय जेना नीरोक, भावेशक, वा स्वयं नीराक । ई बात सोचि क' हमहूँ उदास भेलहुँ । नीराकेँ हम फेर देखलिऐक । एहि बेर ओकर आँखिसँ आँखि मिलि गेल ।

—"तों ओकर अभिन्न सखी छहीक, नीरू । तेँ तोरासँ बुझ' चाहैत छियौक जे सबटा दोष हमरे ?"

—"तँ ककर ? ओ कुमारि-वारि अहाँक पाछाँ बौआइत रहलि आखिर ओ करैत की ?" नीराक स्वर आक्रोशेँ व्याकुल छलैक ।

—"मानलियौक । मुदा, हमहीँ की क' सकैत छिऐक ?" हम कत' रखबैक ओकरा ? की खोआबबैक ? सबसँ पहिल आ भयावह प्रश्न तँ ई अछि हमरा आगाँ ।"

—"की खोआबबैक ! अहाँलोकनिक यैह चिन्ता अद्भुत होइत अछि । एतेक लोक खोआबैत छैक, रखैत छैक कि नहि ?"

—"ताहिमे अंतर छैक ने । खाली भावुकतामे सोचि लेलासँ समस्याक समाधान नहि ने छैक नीरू ! तोँ ई समस्या एखन नहि बुझबहीक । आ ने, ओकर हमे बुझैत छैक । हमर सभ किछु खोखला-कमजोर बाटो, समयक एहि सीमामे ओकर परिणाम बदलल नहि जा सकैत छलैक । हम तेँ तँ अपनाकेँ कष्ट रहैत छी । ओकरो दिनसँ अपना पर अपने क्षुब्ध रहैत छी—घृणा करैत छी । मुदा, ई क्रोध आ घृणा तँ कोनो समाधान नहि ने भेलैक ! हमरा द' तों अनैत छेँ । हमर ई बेकारी कहिया धरि रहत, किछुओ निश्चित नहि अछि । एहनामे हम ओकरा कोना बुझबैक ? ई कथा एहि दुआरे कहि रहल छिऐक जे जरूरति लागौक त कहिहो ओकरा कहिहैक । ओकर मनक विष हमर एहि स्पष्टीकरणसँ कम होइक तँ हमरो किछु सुभीता होयत जीवनमे ।

—"तुच्छ भावना किछु नहि छैक नीरू । कारण, कैकटा महान महान भावना पर्यन्त शुद्ध लौकिक स्तरक भौतिक अभिव्यक्तिक बिना व्यर्थ होइत छैक झूठ । आ लौकिकता कि कोनो प्रकारक भौतिक अभिव्यक्तिक आधार छैक—अर्थ, रुपैया । तेँ आइ मात्र यैह छैक पूरा जीवनकेँ निर्धारित करनिहार कारण । से सम्पूर्ण पक्षक प्रेमसँ ल' क' मात्सर्य धरि ।"

हमरा ई बोध रहल जे नीरूकेँ हमर ई बात सभ अरुचिकर लागि रहल छैक । तैयो हमरा कहबैक रहय—"की करबैक ! एहन तँ विवशता छैक ।

हमरा लोकनिक जीवनक सभसँ बेसी महान् चिन्ता आइयो धरि अन्न आ घरे बनल अछि । उपाय ? अपन मन आ सुभीताक लेल ककरो नरकमे ठेल' देब उचित नहि ने ! हमरा मजबूरी सैह सोच' पड़ल । निर्णय लेबामे, अपना जनैत हम कोनो पक्षपात नहि कयलहुँ अछि, नीरू । से आत्मा साक्षी अछि ।" हम चुप भ' गेलहुँ । फेर सोचलहुँ जे आत्माक गवाही हम किएक देलिऐक ? हमर मनक कोन अन्हरिया अछि जे आब साक्षी सभ जुटा-जुमाक' अपन निर्णयक समर्थन करा रहल अछि ?

ओना सत्य बात तँ ई जे कोनो निर्णय छलैक की ! इलाक बेहु निर्णय होइतैक, सेहो ओकर परिवारक लोक द्वारा, सैह हमरा भेटि जाइत । एकरामे अन्तर तँ किछुओ आनल नहि जा सकैत छलैक । तेँ मूड़ी निहुरा क' प्रतीक्षा करू—सैह साध्य । आ रही जे ओकर हित होउक । सुखी रहओ, जे कि सभ चाहैत अछि । अपन इष्टजनक हेतु भावनासँ सभ चाहैत अछि ।

भौजी आयलि । एक क्षण हमरा दुनू गोटेक बीच ठाढ़ि भेलि । फेर आदेश दैत जकाँ बाजलि—"उठ' ।" हम नीरूकेँ देखलिऐक । ओकर आँखि बुझायल जेना हमरा धकेलि रहल हो । उठलहुँ, आ चुपचाप भौजीक संग लागि गेलहुँ । खाली एक बेर मन धक् द' अवश्य रहल जे एहि बेरक इलाक ओहि ठाम जायब आब बेर जकाँ नहि अछि ।

ओहि दिन इलाक ओहि ठाम जयबाक घटना एतबे मोन अछि । भरि बाट हम दुनू गोटे चुप रही । किछु पता नहि कखन होअय । ओठ लग आबि-आबिक' बात घूमि जाय ।

ओकरा ओत' जखन पहुँचल रही तँ परिवारमे, हमरा दुनू गोटेक पहुँचबाक प्रसन्नता रहैक । इलाक माय भौजीपर स्नेहसँ उलहन दैत रहलैक जे "एना तँ उचित नहि । कय-कय बेर अहाँकेँ कहा पठओलहुँ, तखन पर्यन्त नहि अयलहुँ ।"

हमरा दिस देखि क' बजलि—"बहुत दिनपर ! कतहु बाहर रही की ?" हम ओकर प्रश्नपर कनेक बनौआ बिहुँसी दैत ठाढ़ रहलहुँ ।

—"इला कहाँ अछि ?" भौजी पुछलक ।

—"आब कत' होयति ? अपन काल-कोठलीमे ।" माय किंचित खौंझाइत बजलैक । तथापि, ओकर स्वरमे एक टा दबल प्रसन्नता रहैक से बुझा गेल । "एकर अर्थ, बात पक्का भ' गेलैक अछि ।"

—"चलू, वैह ने जाउ ! भवेश बाबू नहि अयलाह ?"

—"एक टा जरूरी काजे बाहर गेलाह अछि।" भौजी संक्षिप्त-सन उत्तर देत, हमरा "आबय" कहैत हुनका कोठली दिस ल' गेलि।

कोठलीमे मात्र ओतबे प्रकाश रहैक जे बाहरसँ खिड़की बाटे आबि रहल रहैक। जखन हमरालोकनि पहुँचलहुँ तँ ओ खाटओलपर बैठ पड़लि रहथ कुड़िया-मुड़िया क'। अंदाज लागल जे ओकर जबर्दस्त 'मेक-अप' कयल गेल छैक— मस्त! ओतेक कम्मो प्रकाशमे से बात देखा गेल। हमरालोकनिक आहटिसँ ओ हड़बड़ा क' उठि बैसलि। भौजीए ओकर कोनपर भौजीकेँ बैस' के संकेत कयलकैक। हमरा बैस' कहलथि भौजी कोनके राखल खटिया कुर्सीपर।

—"एना अन्हार कयने अजन्ता जकाँ की पड़लि छलीह?" भौजी कहलकैक। "रोशनी बारि दहीक।"

—"की होयतै भाभीजी। ठीक तँ छैक। रह' दियौ ने।" ओ विरोध कयलकैक। ओकर शब्द बहुत दिनपर सुनने रहिऐक से मनमे औंटल दूध जकाँ सेना उतरि गेल, जे असह्य भ' गेल। बड़ उदासी रहैक ओकर बोलमे।

—"किएक? कतेक देखबौ भरि आँखि तोरा। केहन लगैत छें?" हम हल्लुक वर्णन कहलिऐक, तत्काल दू टा अर्थसँ। एक तँ ई जे हम एहि घटनासँ गंभीर नहि छी, दोसर ओहो हमर गंभीर नहि होयबाक बातक प्रतिक्रियामे अपन उदासी त्यागि लेअय। कि उदास वा दुःखी रहय।

हमर कहब खतमे टा भेल छल कि ओ उठलि। आब' हुट द' बिजली बारिक' ठीक हमरा लगसँ ठाढ़ि भ' गेलि। हम छलौंह स्तब्ध रहि गेलहुँ। फेर सहज। रोशनीमे ठाढ़ि हुनकेँ बड़ी काल देखल जा सकैत छलैक। मुदा, तेँ कारणेँ हमर आँखि नहि ठहरि सकल। एतबा भान अछि जे ओकरा आँखिमे कतहु कोनो ताप नहि छलैक, एकटा मंथन अभियोग भरि छलैक हमरा प्रति। से जीवन भरि रहतैक, ई अनुमान हम जोड़ि लेलिऐक। तँ ओकरा बेसी नहि देखल गेल।

हँ, गलत नहि बिएक, तकर तुरन्त बाद जे पहिल चिन्ता भेल से छल— "आब जीवन भरि हम एकरा छूबि क' स्नेह नहि क' सकब।" हम हताश, मूड़ी निहुरा लेलहुँ। होअय जे तुरत पड़ाइ। हुनका गुलाबी साड़ीक लहीक फूल सभ हमरा आँखि-ठोहकेँ भींजब' लागल। ओकर समस्त शृंगार हमरा उद्विग्न क' देलक। आ हम अहाँकेँ कहैत छी जे, जतबा ढाकाक साड़ी पहिरि क' हम एहि जन्ममे कहियो द' सकितिऐक, सेहो सन्देह। सत्ते। आ, हमरा

ईहो स्मरण अछि जे जीवनक सबसँ ओहन गम्भीर क्षणमे हम ओकरा देह परक साड़ीक दामक अंदाज कर' लागल रही। मन कहने रहय, बड़ दामी छैक, तेँ अपन असमर्थतापर उदास भ' क' टहल रही। चुप।

हुनका सेहो चुप्पे रहय। जाय' अपन जगहपर बैसि गेलि। भौजी सेहो चुपचाप। जेना किछु फुरा नहि रहल होएक। हमरा ई बात कौताहल लागल। जो किछु बजैत अछि ने किएक? हम चाहे भाग अवेरे देख' लगलहुँ। एही देखबामे एक बेर हुनका आँखिसँ मिलि गेल। क्षणो। हम तुरन्त पकड़लहुँ ओकर नजरिसँ। ओहो मूड़ी गोँतने बैसलि रहलि।

—"देखि जाइ गेलहुँ?" भौजी पुछलकैक।

हुनका कान' लगलैक। ओकर कानब देखल जा सकैत छलैक। हिचुकि-हिचुकि' ओकर कनबाक सुनल जा सकैत छलैक। नाहक पुछलासँ पछताबा भ' रहल छलैक आ हमर हुनकासँ कलेश।

ई बड़ विचित्र बात जे एक दिन ओकर 'नहि कनबासँ' हमरा दुखायल रहय जे एकरा अपन एहि परिणामपर तकलीफ नहि छैक आ दोसर दिस कान' लागबसँ दुखायल जेना हुनकेँ बड़ कलेश छैक। जखन कि सत्यता तँ ई होयबाक छे जे तकलीफ होयबाक तँ दुनू हालतिमे एक रंग। नहि तँ एखनो नहि। मात्र नाटक जकाँ एक आर दृश्य!

तखन ओकर माय अयलैक आ हल्लुके स्वरे भंजन कर' लगलैक ओकरा।

—"ई बड़ काल ठीक छैक दिनसँ। गेलहुँ तँ, एहन शुभ-शुभ क' ई परिस्थिति भेल अछि आ ई अलच्छि जकाँ कानब की चिकैक? एकरा कनबाक चाहिएक एहि बातपर? ओहो सुनत से की कहत।"

(खिचड़ीमे देखैत सिनेमा किस्मक किस्सा टूटि गेलैक। सीसे पर्दापर कारी मूरता। नि:शब्द।)

हमरा एखनो आँखि नहि खुजैत। दू टा बच्चा खईत-खईत छातिपर चढ़ि पड़ल। आँखि चक द' खुजि गेल। तखने एकाएक भोरका सभ टा ध्वनि कानमे अबेरे पड़' लागल। आँखि मीड़ैत देखलिऐक जे राति भरिक बिनु केवाड़ बन्ने कयने सूति रहल छलहुँ। कोनो क्षति नहि। केओ लैयो जाइत, तँ एहि घरसँ की ल' जाइत? आब यदि कोनो-चोर आयत तँ छुच्छे। आ रहय तँ कोनो कोहरमे कि अपने टांग दू टा चारि टा पाइ-कौड़ी राखि देत। आब तँ सेहो सतरथ।

मनमे एकाएक पैघबर आशा जागल। कतहु माँ कोनो कोहा-तौलामे राय टू राख राखि ने गेलि होअथ हमरा ले। अबङाक चाही। फेर हँसी लागि गेल। फेर घृणा भ' गेल।

छाती तर गेड़ुआ धयलहुँ आ की करी आब से स्थिर कर' चाहलहुँ। किछु नहि क' सकलहुँ। खौंझा गेल मन। प्रायः भूख बेहोश लागल रहय। मोजर नहि दियैक तकरा। मुदा, किछु बेचैनी तँ लगातार बुझाय। तखन अगन टुगर होयब गड़' लागब। मनमे बतैन भेल। की करी? कत' जाइ? ककरा लग?

एक पियाली चाह चाही। एके पियाली चाह चाही। के देत? माँ? इला, भाभी, सुस्मिता, बौआ, के? छातीमे गेड़ुआ गड़' लागल। दुनू हाथमे मुँह नुकाक' पड़ल रहलहुँ। ई किछु विचित्र बात छल जे हमरा आखिर एक पियाली चाहुक अभाव एना भ' क' तोड़ि देलक···

तखने हमरा बुझायल जे चौकठि लग आबि क' केयो ठाढ़ भेल अछि। से अनेरे बुझायल। तैयो भ्रम मानि क' पड़ले रहलहुँ। तखन जे टुनटुना क' खटल किछु, से आहिसँ सोर-सोर्ह उठि गेलहुँ। चौकठि लग कथना ठाढ़ि रहय। शान्त। ओ हमरा सोर कयने रहय। हाथमे एकटा मोटरी रहैक। हम हड़बड़ा क' बैसि गेलहुँ। विश्वासे नहि भेल।

—"की बात छैक···कथना?"

ओ कोठलीमे आबि, चौकीपर एक कात मोटरी राखि देलक आ दुनू हाथ आगाँ खटका अपन पंजा बसाक' ठाढ़ि भ' गेलि। ओकर आकृतिपर कतहु कोनो घबड़ाहटि वा व्यस्तता नहि छलैक। मात्र एकटा निर्णयक स्थिर विश्वास जगल रहैक। हम काँपि गेलहुँ ओकरा देखि क'। आँखि नहि ठहरल।

—"की बात क···कथना?" हम फेरो तोतरा जकाँ गेलहुँ।

—"कहाँ किछु? अहाँ एखन धरि सुतले रहब, राजा भाइ। उठबैक नहि?" ओ अतेक निरुद्विग्न भ' क' बाजलि जतेक आर हमर हलदिली किछु बढ़िये गेल।

"—नहि बुझलियहु। तोँ भोरे-भोर अयलह अछि। कथी पठओलकहुँ अछि?"

—"हम अपने अयलहुँ अछि। अपने काजे। हम एत' रह' अयलहुँ अछि।"

हमर तँ माथे सन्न द' ल' लेलक। अवर्ध करैत अछि छौंड़ी। हमरा किछु फुरबे ने कयल। की कहियैक, की नहि?

—"एना जे तोँ अयलेँ अछि, लोक की कहतौक? ई बड़ अनुचित काज कयलेँ कथना।" हमरा स्वरमे किछु भर्त्सना छल।

—ओ निचैन छलि। बाजलि—"लोके दुआरे तँ दिनमे अयलहुँ अछि। भरि राति अहुँछिया कटलहुँ अछि। अहाँ रातिसँ भुखले होयब, हमरा बुझल छल। तैयो एही लोकक दुआरे हम दिन-देखार अयलहुँ अछि। हम अहाँक ओत' चोरा-नुकाक' नहि, देखाक' अयलहुँ अछि, राजा भाइ।"

कथनाक स्वरक दृढ़तासँ हमरा भय जकाँ भ' गेल।

—"छि: छि:; ई कोना फुरयलौक तोरा? समाज की बुझतौक तोरो, हमरो? एना भेलैक अछि कहियो कतहु? दोसर, हम तँ सोचनो नहि रही जे तोँ एना भ' क'··

ओकर आकृति पहिल बेर मिझा गेलैक, उदास भ' क' झुकि गेलैक। हमर प्राण अवग्रहमे, जे केयो अयतै आ देखलकैक तँ भरि गाम ठट्ठा-ठठोलि पर्यन्त भ' सकैत छैक। थूक फेकत लोक, से तँ फराक। हमर हृदय काँपि रहल छल। किछु ने फुरय।

—"हम तँ किछु सोचियेक', विश्वासे क' क' अयलहुँ, राजा भाइ। हमर आर कोन बाट अछि?" एक पल ओ जेना किछु सोचलक। "दोसर, ईहो बाट तँ अहीँक देखाओल। हम कहिया धरि ओ अन्याय आ कष्ट सहैत रहब? हम अपन जीवनक विषयमे निर्णय अपने किएक नहि ल' सकैत छी? अहीँ तँ मायकेँ कहने रहिऐक। आइ अहीँ अनचिन्हार जकाँ······"

—"कहने रहियनि कथना। मुदा, से व्यक्ति हमहीं नहि ने होइ। तोँ तँ बताहि भ' गेलेँहेँ। तोरा ई बुझल छौक जे अपना दुनू गोटेमे सम्बन्धो अछि······। तोँ तँ एकदम बताहि भ' गेलेँहेँ। छि:। जो, तोँ घूरि जो।"

—"हम नहि मानैत छी। लोक कहयो कुलटा। हम नहि मानैत छी। अहाँसँ बेसी एहि बातकेँ आर के जनैत अछि राजा भाइ जे हम अहाँक भरोसापर एतेक भयावह विचार भ' क' पहिल बेर, आ पहिलुक आखिरीयो बेर जे अहाँक घरमे आयलि छी—हम अहाँ लग रह' आयलि छी। अहाँकेँ आब के मानस क' क' देत? अहाँ कोना खायब? कखन खायब? एहि घर-अघोराकेँ के बहारत-सोहारत? अघोरापर बैसि क'··"

हम ओकर बातकेँ बज्र जकाँ सहैत रहलहुँ कान कपारपर । कहलिऐक, "करुना, ऐना जकाँ नहि कर । भरि गामक लोक हुनू गोटेकेँ कोठलीमे बन्न क' क' आगि लगा देतौक । दुनू गोटेकेँ ।"

ओ निर्भीक, भभा क' हँस' लागलि । हम डेरा गेलहुँ । एहि बतहीक स्वच्छन्द हँसी सभ सुनतैक आ दौड़त एहि आङन । हम संकोचेँ गड़ल जाइत रही ।

—"राजा भाइ, परवाहि की ?" ओ बाजलि 'ककरो गोटेक जेँ की सकब, मोनि देवैक सतुक । जखन नहि सकब, ओ सभ डाहि देत । ठीक छैक । जेँ हम अहाँपर भरोस नहि करी, अहाँ हमरा एकपरि पुरा दी, ई कोन बुधियारी ?" ओ हकमि जकाँ गेलि । एक क्षन चुप रहिक' देखलक । बाजलि—"ओना राजा भाइ, अहाँ कहब तँ फेरो हम घुरि जायब । फेरो ओही अन्यायक वातावरणमे घुरिक' डूबि जायब । काल्हि जखन कोनो बात अन्याय बुझना जाइत छैक, ओकर छुटकाराक बाट सुझल भ' जाइत छैक, मनुष्यकेँ से रहता अपनाक' अपनाकेँ सुखी बनएबाक अधिकार बुझल भ' जाइत छैक, तँ फेरसँ पुरना अन्याय आर बेसी भयावह बुझाय लगैत छैक, नहि सहल होइत छैक । नहि जानि आब कोन दिन हमरा बुझेँ होयत सहल ओ वातावरण'''''' ।"

ओ फेर एक क्षन चुप भेलि । जेना सुस्ता क' सोचलक ।

—"एत' अयलहुँ अवश्ये । मुदा, जखन अहाँ नहि आनलहुँ एकरा तँ कोन पुजापर शंख बाजत ?" ओ चुप भ' गेलि । चेष्टासँ बुझायल जे ओकर हाथ आब मोडरी दिस बढ़तैक । हमरा मनमे बड़ी जोरसँ किछु बाजल ।

आब हम निर्भय रही । हम एक टा निश्चयपर पहुँचल रही ।

—"करुना, सह' सभ टा सोरे पड़तौक । सभ अपमान आ दुर्गजन । हम, तथापि, पुरुष छी । बेसीसँ बेसी मर' पड़त । सोचि लेलही ?"

ओ हमरा देखलक । विहुँसलि । आ, तन आबिक' ठाढ़ि भ' गेलि । आब हमर मनक सभ उत्तेजित वस्तुन खुलि गेल । एहि समुद्र हेलबमे हाथ महक हलाक मुहन पर्यन्त गलि गेल ? पता नहि कोना गलि गेल—कोन स्थानपर'''''? पानिक कोन ओआरिपर'''''?

बुझाय लागल जे हम एत'सँ जीवन दिस जा रहल छी । मृत्युक वाता-वरणकेँ हम बिता क' आगाँ बढ़ि गेल छी ।

आब एकर प्रतीक्षामे रही जे कोनो क्षण दस गोटे लाठी-भाला गड़ाँसि लेने, कि ओहिना चिकरैत दुआरी टाट लग आबि क' ठाढ़ भ' जायत आ हल्ला कर' लागत, फज्झति कर' लागत । तखन लगड़ा । फेर किछु आर, किछु आर''''' । मुदा हमरा हँसी लागि गेल । हम उत्साहसँ अँगेठी-मोड़ कयलहुँ । हमर सम्पूर्ण देहपर करुनाक आँखि घूमि रहल छलैक । हमरा नोक लागल । बड़ थाकल आ हताश रही । ओकर आँखिसँ अपन देह सोहरायल जायब बड़ आरामदेह लागल ।

ओकर गोर-नार हाथपर मोट-मोट मेहदी लागल रहैक । कपारपर सिन्दुरक लाल ठोप । हाथमे खूब चक्-चक् करैत एकेक-एकेक क' चूड़ी । हम ओकर हाथ घीचिक' अपन आँखिपर ध' लेलहुँ । हू क्षण !

ओ आस्तेसँ अपन हाथ छोड़बैत हमर पयर पर राखिक' गोड़ लगलक । "नव चूड़ी पहिरलहुँ अछि आइए''''' ।"

—हम ओकरा देख' लगलिऐक । तावत आङनमे दोलक कँकटा स्त्रीगण टाकू-तन आँखि भोँकि रहल छलीह । ओही गरोहमे हमर काकी छलीह । हमरा हुनक आकृति सड़ल गोबरसँ नीपल आङन जकाँ बुझायल । हम क्षण भरिक लेल दबाड़राइयो क' स्थिर विहुँसय लगलहुँ ।

ओहि राति करुना-माय काकी अयलीह आ जे गारि-धाप देबाक छलनि द' गेलीह । पंचैती बैसयबाक धमकी द' गेलीह । करुना निर्विकार चूल्हि फूकैत रहलि आ आँचरसँ धुआँक नोर पोछैत रहलि । हमहूँ चुप्पे रही । ई घटना हम अपन सम्पूर्ण विश्वास आ उद्देश्यसँ स्वीकारि चुकल रही । एकरासँ फीरि जायब हमर जीवनक सभसँ पैघ मर्दुमकता होइत । एकरा अस्वीकार कयलाक बाद हमरा हेतु मात्र आत्महत्ये टा बचैत । हम जीव' चाहैत रही । आ सेहो, हमरे मनक आदर्श करुनाक रूपमे यथार्थ भ' क' सोझाँमे आबि क' ठाढ़ि भ' गेली तँ ओकर अस्वीकार हमरा हेतु लज्जाजनक छल । हम करुनाकेँ घुरा नहि सकैत छलिऐक ।

गाम भरिक अनादि कालसँ चल आबि रहल तथाकथित प्रतिष्ठापर ई घटना भारी बड्ड लगओलकैक । लगलौक, परवाहि नहि । करुना आ हम कतेक दिनसँ सङ्गे रहैत छी । क्रोध आ प्रतिशोधमे करुना, बिना हमरा कहने अपन सासुर हमरा एहि विषयक पत्र लिखि देलकैक । हमरा सभसँ सब घृणा करैत अछि । सभ चाहैत अछि जे ई हुनू मरि जाय । मारहु चाहैत अछि ।

पंचैती बैसल। डेराओल-घनकाओल गेल। किछु नहि। भरि गाममे एकसर भेल दुनू गोटे रहैत अयलहुँ अछि। मुदा ई गीत कहिया धरि चलतैक ? जेना-तेना जोड़ि-जाड़ि क' एखनधरि तँ चलल अछि, एक संझी-दुसंझी, मुदा भविष्य !

राति बड़ी राति धरि हम आ करुना गप्प करैत रहलहुँ जे आब आगाँ की होअय ? गाम छोड़ि क' चली की ?

करुनाकेँ ई प्रस्ताव सम्पूर्णतः अस्वीकार छैक। ओ हमरा हमर बाँक बात मन पाड़ि दैत अछि बेर-बेर "माटि धयल'हु-ए, नीक छँ। इष्टदेवता करथुन तँ सुखसँ ...।"

एहि दबावमे करुणा हमरा रोकय' चाहैत अछि। की हो, कोना हो ? खेती-पथारी तँ हो, मुदा कोना ? कतसँ ई सभटा सरंजाम जुमय ?

एक टा बड़दसँ खेती होअय ? सकठैती करबे रही ओहि बेर। मुदा से तँ एहि घटनाक बाद सभ समाप्त अछि। आब कोनो बाट नहि। हमरा दुनू गोटे कोना सुतैत छी, कोना जगैत छी, से हमरा सभसँ बेसी टोलबैये-लोकनिकेँ बूझल छनि।

निराधार छी। भविष्यहीन छी। एहि गुनि-धुनिमे, जानि ने, कोम्हर बाटे हमरा लम्बोदरक हँसी मोन पड़ल। चारि-छ' दिन से तँ ओहो मुह फुलओने रहल। मुदा, आब ओ सहमत अछि। आब तँ ओ चिक्कस-चाउर पर्यन्त पहुँचा जाइत अछि, मुदा नुकाक'। लम्बोदरक अतिरिक्त कोनो बाट नहि। ई बात हम बाजिक' कहलिऐक करुनाकेँ। ओकरा हँसी लागि गेलैक, "पहिने तँ हुनक एक सय गंजन सुनू तखने कोनो बात। बेस गप्प करू।"

कोठलीमे आयब पहिने तँ गछबे ने कयलक। फेर कहुना क' आयल। कहाँ तँ पहिने अबयो नहि गछय। "दोस्ती कमी नहि करबौक। मुदा समाजोकेँ तँ देख' पड़त। जीब' तँ एतहि पड़त भरि जन्म। चाहे जेहन भारी काज तों बुझैत होइहीक एकरा, समाजक नजरिमे तँ अनर्थ क' देनही ने ! तेँ की करू ? तोरो नहि छोड़ल जाइत अछि आ लोकोकेँ नहि।"

लम्बोदर कहलक, "हम हरवाहोक इन्तिजाम क' देबौक। सभ टा कोना एखन धरि अकाड़े पड़ल छौक तोहर ? बड़ाइयो जकरा देल गेल छैक सेहो तेहन कोढ़ि सन अछि जे एको रत्ती बेगर्ता लगैत छैक जे खत' चासबो करौक ? की कहियौक, जमाना बड़ जुलुम बीति रहल छौक।"

साँझमे ओ चोर जकाँ नुका क' आयल। उदास आ फक्सति करबाक मुद्रामे चौकीपर अँगपोछा बजारैत बैसल। जेना फुफकारैत बाजल—"तोहर रहब कठिन छौक। हरवाह पर्यन्त एको टा तैयार नहि होइत छौक तोरा नामे। आ, बटैदारो सभपर सेहो दबाव छैक। तेँ छोड़ने छौक परता। कोन उपाय होउक, किछु ने फुराइत अछि। आ, आब समय एकदम नहि छैक। खेतकेँ तैयार नहि रखने तँ फेंटो-फाटमे पड़ि जयबेँ। पछता से होयतौक। आ, खेत आबाद नहि होयतौक तँ खयबेँ की ?"

करुना हमरासँ बेसी चिन्तित छथि। हमहुँ चिन्तित रही। सभ तरहेँ अपनाकेँ घेरायल बुझि क' जे हताश-भाव रहैत छैक मनपर, रहय। तखन कनेकर मन खौंसाय।

—"तखन ?"

—"कहु ने तोंही ?" लम्बोदर देह पटकि देलक। ओकर साहसो की रहैक बेचाराक ? हम सोचमे पड़ि गेलहुँ।

—"कियो हमरा नामे तैयार नहि भेलौक ?"

—"कियो ने।" ओ खौंझाइत कहलक।

—"हम ककरा विरुद्ध कोन काज क' देलिऐक जाहिसँ ककरो किछु क्षति भ' गेलैक, लम्बोदर ? तोँ सोचि सकैत छेँ जे बिना कोनो अपन हानि पओने समाजक ई लोक हमरा किएक शत्रु मानि लेलक अछि आ किएक तबाह कर' चाहैत अछि ? ककरो कोनो हानि भेलैक अछि हमरा चुतेँ ?"

लम्बोदर निरुत्तर मूड़ी गोँतने बैसल रहल। हम बड़ गम्भीर अन्त-र्द्वन्द्वमे घेरायल रही।

—"हर जोतब बड़ कठिन काज छैक ?" हम अनचोके पुछलिऐक "देखबामे तँ नहि बुझाइत छैक।"

—"अनठये की ? सभ चुते नहि ने होअय !" ओ ठोढ़मे तमाकुल ठुसलक।

—"तैयो अभ्याससँ आबि जाइत हेतैक ने रौ ?" हम पुछलिऐक तँ ओकर तमाकुल सरि करबा कालक ठोढ़-ठोढ़क चलब बन्द भ' गेलैक। हमरा तौलबाक नजरिसँ देखलक।

—"मतलब की छौक तोहर रौ ?" ओ पुछलक।

—"हमरा मोन होइत अछि जे हम अपने एक बेर हर जोति क' देखि-ऐक।" हम एक क्षण चुप रहि क' जेना अपन विचारकेँ आर गम्भीर आ विश्वसनीय बनबैत कहलिऐक, "हँ, कारण जे भरि जन्म हमरा गामबला

सकू नहि देत तँ भरि जन्म हम परखी रखने बैसल रहब ? किछु तँ हमरा अपने कर' पड़त ।"

हमर गम्भीरतासँ लम्बोदर घबड़ा उठल। "तोँ," बूझि पड़ैत अछि, सनकि गेलेँ। डाकू नहितन। रे ब्राह्मण भ' क' तोँ हर जोतबेँ ? एक टा तँ ई काण्ड कयने अछि। दोसर, ई हर जोत' जयबेँ। एहि बेर गोआँ भकसी झोंका क' मारि देतौक। ईह, अनर्थ करैत अछि ई पाहुआ बाबू साहेब। बुझाइत छैक जे ई आगि मूतत आ समाज सहि लेतैक ! मगहिधर कर, नहि तँ लाहेब भ' जयबेँ। कहि देत छियौक।" ओ कुद्धो छल आ आशंकितो। हम ओकर कोनो बातकेँ गम्भीरतासँ नहि लेलिऐक।

करुणाकेँ देखलियैक। फेर लम्बोदरकेँ कहलियैक—"भाई, सुन। ओहुनो तँ मरिये रहल छी। ब्राह्मण छी तँ कोन ऐश करैत छी ? असल बात तँ ई छैक जे एक टा बेकार बोनिहार छी। बोनि कयने बिना जीबि नहि सकैत छी। तखन ई विचार कोन जे ई बोनि नीक, ई बोनि अधलाह वा किछु ? बोनि बोनि छैक। हम बोनिहार छी। ई हमर अस्तित्वक प्रश्न अछि। तोँ हमर मदति कर।"

—"अहुआ मदति कर। तोँ तँ हमरो नाश करबेँ जे लक्षण छौक तोहर। लोक से बुझतौक जे परखो बाबूक महान कुल-शीलक बेटा फरुआ आ कान्हपर हऽर लदलनि आ खेतमे हऽर जोत' गेलाह तँ बड़ आदर्श कयलनि। लोक तँ थू-थू करतौक। हमरा खा जायत सभ।"

—तोँ चुप रहिहेँ। खाली तोँ एतबे सहयोग क' दे लम्बोदर। तोँ सभ टा सरंजाम दलाने पर राखि क' काल्हि भोरे कतहु बाध दिस टहलि जैहेँ। दू दिन लोँ हमरा खातिर काल्हि भरि हऽर। हम जयबौक आ अरबधि क' काल्हि अपने खेतकेँ जोतबौक। जाहि जे भ' जाय।"

—"राजू, तोँ तँ सत्ते सनकि गेलेँ। एतेक टा जुलुम ? डाकू, तो हऽर जोतबेँ तँ ई संसार रहतैक ? अनर्थ करबेँ। तोँ अनचेँ रोची। कहु तँ ब्राह्मण कतहु महादेवकेँ जोतय ?"

हम आ करुणा बड़ जोर द' क' कहलिऐक जे एतबा मदति तोँ क' दे, भरि जन्म हम उपकार मानबौक। एहि बात पर ओ रुष्ट भ' गेल। "बूझि क' मरि जो दछिनबारि बाधक पोखरिमे। ई बात सोचलेँ तोँ जे हम उपकार करबौक, उपकार ? जेँ एतेक बदनामी लेँ ईहो। जेँ चालीस तँ पचचालीस। मुदा, देहुन सुसके नहि छैक हरवाही बीया। दोसर, जँ बड़दकेँ फाड़-ताड़

लगा देबही। ताहो छथि छुट्टी। मुदा जो। सैह तँ सैह। ल' पैहेँ। आब जाइत छियौक बुढ़िया गंजन क' क' ध' देत। बहु सुनैत रहैत अछि आ बुढ़िया मारैए टा नहि, सभ दशा क' दैत अछि। सातारामा। हुनके राज छनि। मुदा, बुढ़िया केँ हमरा विषयमे पुतहुओपर विश्वास नहि छैक। बुकैत रहतौक मनमामे, मुदा आबत हम नहि खा लेबैक कचोरेँ' खयतौक अपने ! चललियौक। जय भोलाबाबा।"

स्वभावतः माँ सब पढ़ि गेलि। करुणाकेँ मुहँमे आबि गेलैक। ओ हमर पीठ लग आबि क' ठाढ़ि भ' गेलि। ओकर आँचर हमर गर्दनिकेँ छूब' लागल। —'चलू, खा लिय' ग'।' ओ कहलक।

भरि राति हमरा निन्न नहि भेल। फछमछ करैत रहलहुँ। असाध्य गर्मी उमस। कतबो कोशिश करी, तैयो निन्न नहि। बेचैनी लागय। हो, जे कखन भोर होयतैक। मुदा, भोर सेना कतहु बाटमे सूतल रहल छलैक, होयबे नहि करैक। कय बेर भेल जे कुजरटोलीमे बजलैक मुर्गा कतहु। मुदा भ्रम। भोर एखनो बहुत दूर।

एकाएक करुणा खूब झकझोरि क' उठा देलक। हम चिहुकि क' उठलहुँ। फरिच्छ जेकाँ होइत रहैक। करुणा लोटामे पानि देलक आनि क'। जल्दी-जल्दी खाली कुरड़ टा कयलहुँ। आ, बिना किछु कहने, धड़फड़ायल विदा भ' गेलहुँ। ड्योढ़ी टाट धरि करुणा आयलि। पाछाँ हम देखबे नहि कयलिऐक। हम झटकारि क' बढ़ल चल जाइत रही लम्बोदरक दरबज्जा दिस। ओकर अनुसार सभ वस्तु खोंसेमे बेहिसाब राखल। बड़दक मोड़-मुड़ा द' देल गेल छलैक। नाक आ थुथुनमे एखनो लागल छलैक। हम अतिरिक्त उत्साहसँ थर-थर करैत रही। ओलतीक कोड़ोसँ, पहिने हरलधड़ा उतारलहुँ। पहिने झटपट ह'र सधलहुँ। पालो स्थिरे नहि रहय, ढील बन्हा जाय। दू-बेरे बात किछु जमल। फेर दुनू बड़दकेँ जाबी देलिऐक। खूट्टासँ खोलि दुनूकेँ जोड़लहुँ। चारक बत्तीसँ पेना खिचलहुँ आ कान्हापर ह'र ध' क' विदा भेलहुँ बाध दिस। बेस भारी होइत छैक ह'र।

हम जाइत रही तँ पुरहित जकाँ निरसू मुखिया धरिक आँखि फटले रहि गलैक। सभ आश्चर्यें व्याकुल। कैक गोटे तँ छौड़ा जकाँ हमर पाछाँ-पाछाँ लागि गेल। एकटा बेस मनलग्गू घटना रहैक ई। हमरा बुझाय जे एखन हम एकटा बानरक तमाशा देखब'बला लगैत होयब कि बताह।

हम खूब दृढ़ भावेँ अगिला टोल दपैत बड़द हुँकने चल जा रहल रही। तकरा तुरत बाद तँ बाध छैक। हम बाधमे प्रवेश कयलहुँ। अपन कोला धरि, चीन्हैत-चीन्हैत चीन्हल भेल। उतारलहुँ हु'र आ दुनू बड़दकेँ स्वतंत्र करैत, एक बेर सम्पूर्ण बाधकेँ देखलिऐक। एको टा खेतमे एखन धरि कोनो हरवाह नहि आयल छलैक। लोको नहि क्यो। हम एक क्षण विचारमे पड़ि गेलहुँ। हमर हाथ-पयर, देह थरथरा रहल छल। जानि नहि कोना हमरा दुधोढ़ीटाइ लग आबि क' ठमकि गेलि करणाक आकृति मोन पड़ि गेल। हमरा लगपासमे कत मोहेँ विस्मयक मुद्रामे ठाढ़ रहय।

हम धोतीक भाँचीकेँ ठेका जकाँ खोँसैत, पेना उठाक', पता नहि ककरा स्मरण कयलियैक मनेमन। फेर दुनू बड़दकेँ जुआ क' थर-थर हाथे लागनिक मुठ्ठी कसिक' जेहने, बड़दकेँ नवसिखुआ टिटकारी देलिऐक। दुनू बड़द नाङ्गरि उठैत चलि पड़ल। थोड़ा पाछाँ हम असंतुलित, बेसम्हार भेल घिसियाय जकाँ लगलहुँ। मन साकांक्ष रहय, कतहु फाड़-ताड़मे लगैक बड़दकेँ। किछुए क्षण ई बेसम्हार हालति। लागनिपर अपन पूरा देहक दबाब देने हम बड़द हुँकैत रहलहुँ। हमर दहिन छाती, अकाड़ खेतक माटि कोड़ैत हु'रसँ खूब जोरसँ दलक' लागल। सिराउरपर दुनू बड़द बढ़ैत रहल आ हमर कान्ह, छाती, बाँह आँखि एक भावसँ माटि कोड़ैत रहल। बज्र माटिकेँ कोड़बाक 'रोमांस' हमरा पहिले बेरि बूझल भेल। हमरा स्वयः बुझायल जे हम आब जीवन जीबा दिस बढ़ि गेल छी।

हमर मुट्ठी सक्कत भ' गेल आ शरीरक भार पचगुणा बेसी। नीचा देखलिऐक, माटिक पँथ-पँथ खेप ओदरि-ओदरि क' सिराउरक दुनू कात पसरि रहल अछि।

अगल-बगलक दू-चारि कोसाक आरिपर एक टा दू-टा क' लोक आबि-आबि क' ठाढ़ भ' रहल अछि, अनमन तहिना स्थिर अछि, जेना कोनो कठमस्त मुसहरक कोदारिपर कटा-कटा क' माटिक टडक। बड़का दलसभ आरिपर ठाम-ठाम राखल जा रहल हो।

हमर हाथ लागनिपर गसिया क' धयल छल। तरहत्थी घमा गेल रहय। हु'र चोँचिया रहल छलैक लगातार।

तखने हमर देहपर दू-चारि टा शीतल बुन्न पड़ल। बड़ नीक बुझायल। आँखि उठाक' देखलियैक तँ बड़ जोर मेघ लधने रहैक। सौँसे आकाश छनने रहैक। □